॥ श्रीः ॥

स्त्रीसुबोध.

(चारों भाग ४.)

जिसको
हंठीप्रसाद वकील-बांसगाँव जिला गोरखपुरने
निर्माण किया ।

और

खेमराज श्रीकृष्णदासने
बंबई
निज "श्रीवेङ्कटेश्वर" स्टीम्-यन्त्रालयमें
मुद्रितकर प्रसिद्ध किया.

संवत् १९६६, शके १८३१.
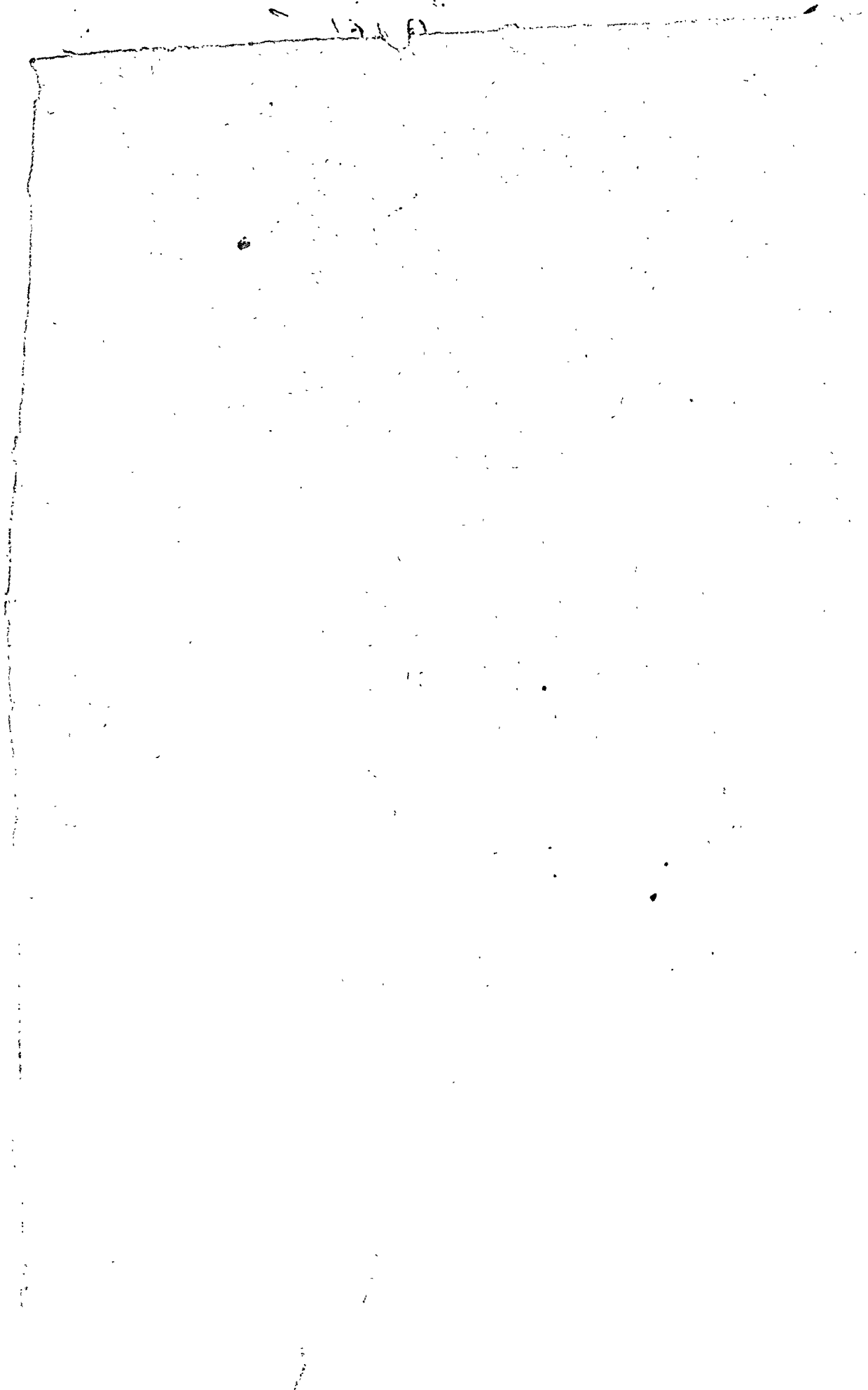
॥ श्रीः ॥

स्त्रीसुबोध ।

क ख ग घ ङ

च छ ज झ ञ

ट ठ ड ढ ण

त थ द ध न

प फ ब भ म

य र ल व श ष

स ह क्ष त्र ज्ञ

अ आ इ ई उ ऊ ए ऐ

ओ औ अं अः

ा ि ी ु े ै ो ौ ं ः

१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १०

सवैया ।

लखिकै जगमें गति नारिनको,
अति खेद भयो उर शोच समानो ॥
हा यह शिक्षा विना गतिहै,
मति मेरे यही तिहि हेतु पिछानो ॥
कीजै प्रबन्ध कछू तिनके हित
या चितमें इत मोरे समानो ॥
इस्त्रीसुबोध रचो यह ग्रन्थ,
पढे जो अजान ह्वै नारि सुजानो ॥

(इस सवैयामें ग्रन्थकर्त्ताने ग्रन्थ रचनेका वास्तव हेतु दिखलायाहै)

॥ श्रीगणेशाय नमः

स्त्रीसुबोध ।

इस ग्रंथके आरंभका कल्पित कारण ।
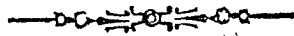
जिसमें ग्रन्थकर्त्ताने अशिक्षितपनेसे स्त्रियोंकी दुर्दशा, और शिक्षाके प्रबन्ध रचनेकी आवश्यकता स्पष्ट रीतिसे सूचित कियाहै ॥

सोरठा—हरन विघ्न अघ शूल, दोष दुःखदारिद दरन ॥
होहु सो जन अनुकूल, जय गणेश मंगल करन॥ १ ॥

एक दिन मैं जगत्के मामूली काम धन्धेसे निवृत्त होकर यह शोचने लगा कि "आज कल्ह पेशेके कामसे छुट्टी बहुत रहतीहै, और यह सुन्दर समय यहां वहांके घूमने घामने इनसे उनसे बोलने बतियाने, और हाहा शपमें व्यर्थ व्यतीत होरहाहै, कोई ऐसा प्रबन्ध रचना चाहिये जो परोपकारार्थ हो, अर्थात् जिससे जातिउन्नति और देशउन्नतिकी आशा होतीहो" यह शोचते शोचते "राति अधिक व्यतीत होचुकी थी" नींद लगगई तो एक विचित्र स्वप्न दृष्टि आया ।

स्वप्न ।

देखता क्याहूँ कि एक सघन वनहै, उसके मध्यमें भगवतीजीका एक विचित्र मंडपहै जिसके चहुँफेर मंदार आदिक अति सुगन्धित फूलोंकी बाडी लगी हुईहै, और कहीं कहीं अम्ब कदम्ब आदिक के छोटे छोटे मनोरम[1] वृक्ष भी तपस्वियोंकी भांति एक पाँवसे खडेहैं, जिनपर अनेक प्रकारके पक्षी नाना भांतिसे सोहावन और मनभावन शब्द उच्चारण कर रहेहैं, मानो सब भगवतीजीका गुणगान कर रहेहैं मंडपकी रम्यता[2] वर्णनके योग्य नहीं है।

---

१ मनको प्रसन्न करनेवाला । २ शोभा ।

उस मंडपके किनारे किनारे अमूल्य पत्थरोंके छोटे छोटे स्थानभी बने हुयेहैं जिनमें पंडित लोग आसनी बिछा आसन जमाये कोई अति मधुर स्वरसे स्तुति कररहाहै, कोई आंखें बन्दकरि ध्यान धर रहाहै, कोई हवन कर रहाहै, कोई मौनहो पूजा पाठमें लीन होरहाहै ।

मैं घूमता घामता जो उस मंडपके फाटकपर पहुँचा, तो देखा फाटक बन्दहै, पुजारी आदिक सब बाहरखडेहैं, पूंछनेसे मालूम हुवा कि कोई कुलीन और नवीनवधू पूजा कर रहीहै मैं भी बाहर द्वारपर बैठगया तो उस स्त्रीको इसप्रकार विनय करते सुना ।

चौ०जयजगदम्ब जगतकीकारिनि।निज भक्तन सुखप्रद दुखहारिनि
आदि अंत तेरो किन जाना । श्रुती शेष बहुकियोबखाना ॥
तुम अम्बे हो जगकी तारन । सकल पाप संताप निवारन ॥
जय जगदम्ब अम्ब तू मेरी । मैं सेवक तवचरणन केरी ॥
तुम्हरे पावँ लगूं मैं अम्बा । त्रिन के आपुहि अवलम्बा ॥
तियनके आपुहि लाज रखैया।तियनकि आपुहि ज्ञान सिखैया।
तुमहिं पूजि हम होत सनाथा। हमरी गति पति तुम्हरे हाथा ॥
तुम्हरी शरण परी मैं आई । जानि आपनी सकल भलाई ॥
आई आज करन फरीयादा।सुनहु मातु मम तियन विषादा ॥

दोहा—अपनो दुख कछु कहहुँगी, मातु हजूरे तोर ॥
भली भांति पद बूझिके, न्याव करो तुम मोर ॥

चौपाई—मातु जन्म जब भो जगमाहीं।कछुदिन तो जाना कछुनाहीं
नहिं जाना मैं को कहँ आई । काकी सुता काहकी जाँई ॥
जब कछु होशदार मैं भई । बालपने की जड़ता गई ॥
बूझन लगी कछुक जग बाता । येहैं ये इनसे यह नाता ॥

बहिन मेरी यह मेरा भैया। यह मम पितु यह मेरी मैया॥
था यह अवसर विद्या पढ़ती। औ क, ख, कछु अक्षर लिखती
जाते कछुक बुद्धि मोहिं आती। बुद्धिते सब जग काज बनाती
हा! मोहिं मातु न पितुही कह्यो। "बेटी तुम कछु विद्या पढ़ो॥
मति बेटी तुम घूम बहूता। पढु विद्या अपने भरि बूता॥
पढ़नो बड़ा नीक वस्तुहै। पढु जो अच्छी बेटी तू है" ॥
ग्वहिं फुसिलाय औ नहिं रिसिआई। मोको पढ़ने माहँ लगाई
मै अपने मन सखियन संगा। खेलत[1] मलहि मचावत[2] दंगा
दिन औ रात गांव भरि घूमत। कबहुँ बैठि अन्यासहि दूमत
करत विविध तकतान फजूले। रहत रही जस मदं मत भूले
व्यर्थहि खोयों दिन औ राती। हा! सो समुझि फटतअब छाती

दोहा—हा भूले मम मातु पितु, हमहिं न दीन्हों ज्ञान॥
जाते वे यश पावते, होत मोर कल्यान॥

चौ०—जब कछु और भयो तनु तेजा। प्रौढ़ भये कछु और कलेजा
वैसं[3] निकट तरुणाई[4] केहैं। दिन दूने मनुसाई केहैं॥
था यह औसर मातु सिखाती। मेरो चाल सुभाव बनाती
कछु विद्या आरंभ कराती। कछु आछे व्यवहार सिखाती॥
हा! मोहिं वाहि समय नहिंकह्यो। बेटी तुम कछु विद्या पढ़ो
मैं लागी चहुँओर निरेखन[5]। बोल चाल निज घरके देखन॥
मातु लडत देखी चाचीसे। पतिसे सुतसे औ निज धीसे[6]॥
देखाकरकच प्रतिदिन[7] आंखन। लगी सो मैंहूँ निजहियराखन
जसमैं देखेवँ मातु चलावा। सोइ चाल मैंहूँ मनलावा॥
मैंहूँ लडन लगी सबही सों। भाय बहिन सों मातु चची सों॥
हा! मोहिं कियो मना नहिं काऊ। बेटी तुम तजु लडनसुभाऊ

---

१ खेलकार। २ मतवारा। ३ उमिर। ४ जवानी। ५ देखना। ६ बेटी। ७ रोजरोज।

बेटी लडनतियन को बाउर । त्यागुलड़नको लखि जनमाहुर
मैं घूमत यह घरसे वह घर । शंकन मातु बापको नहिंडर
डर कैसे मोरे जिय आवत । डरती तब जब कोउ डरावत ॥
देखत बाप घूमते आंखन । यक दोबार नहीं वह लाखन ॥
खडी द्वार मैं इत उत झाँकत । पितु सौंहे परपुरुषन ताकत ॥
हा जो पितु मोहिं कबहुँ रिसाते । एकहु बार मोहिं समुझाते
बेटी बाहर घूमैं मत तू । हो विद्या गुण ढंग में रतेतू ॥
द्वार खडी कबहूँ मति हो तू । मारूंगा आई फिर जो तू ॥
घरमें रहुकछु गुणढँग सिखतू।कबहुँकि पढुअरु कबहुँकिलिखतू
दोहा—हाहा उचित सिखावनो, पितु मोहिं कबहुँ न दीन्ह ॥
मोहिं दियो दुख जन्म भरि, निज शिर अपयश लीन्ह ॥
ौ०—मातु दुलारन हमहि विगारयो।हमसे कछु उद्यम न करायो॥
कहत जो कोउ यहि भीतर[3] भेजो । मातु मोर देखलावततें[4]जो॥
कहति किये बचिया कहँ जैहै।आग निकट वह अति दुख पैहै॥
गरमी होय पसीना होइहै ॥ देखत मोहिं कभी ना ह्वैहै ॥
मैं मरिगइ,की लूज भई हौं । येतने लायक तो अबहीं हौं ॥
अच्छा कछु सियना यह सीखै । यामैं तो कछु श्रम[5]हु न दीखै॥
मातु कहत नहिं नहिं ममबचिया।बैठीरहौ अभी तुम मचिया
कहीं सुई गडि जैहै तोरे । करकैंगी छाती सो मोरे ॥
तोर बलाय जाय सीनेको । बेटी ले खाने पीने को ॥
भूजा भरी कि देउँ बतासा । मिश्री देउँ कि मेवा खासा ॥
हा।यह मातुउचितनहिं कीनो।कछुगुणमोहिसिखननहिं दीनो
बोलत खहस मातुके आगे । देत गारि मोहिं शंक न लागे ॥
चलत कुचाल मातुकेदेखत । हँसत मातुममशिशुपन[6] पेखत॥

---

१ सन्मुख । २ प्रवृत्त । ३ रसोइया । ४ गुस्सा ५ मेहनत । ६ लड़कपन ।

कहत जो कोउ यह घूमत इत उत। मातु कहत तब का तेरो दुंत
है तुम सबकी नीयत खोटी । फूटत आंख देखि मम बेटी ॥
घुमिहै सहसबेर मेरी बच्ची । का करबे तैं दुरहो लुच्ची ॥
कबहुँ नबरजेव मातु हमारी । मति अस बोलु नचलुरे प्यारी॥
नीक बोल अरु ठीक चलावा। हा। मोहिं मातु न कबहुँ सिखावा
नैहर की बिगडी मैं माई । अब अपने सासुर में आई ॥
दोहा—हा मोहिं कछु गुण मातुने, नाहिं सिखायो मात ॥
आयके अब मैं सासुरे, हूँ बहुतैं पछितात ॥
चौ०—भला मातु पितु कियो सो नीका। अब मैं हाल कहूं निजपीका॥
पियहु न देख्यो यह कस नारी। हैकछु सिखीकि निपट अनारी
कायहि उचित सिखावनदीजै। केहिविधि यहि सुंदर तिय कीजै
कछु विद्या महँ याहि लगैये । कछु याको तिय धर्म सिखैये ॥
सेवा करै यह सास श्वसुर को । मानै देवर और भसुर को ॥
अदब करै जेहिं भाँति हमारो । याको चाल सुभाव सुधारो ॥
था पियको तो करनो ऐसो । उन कीनो जस बरणों तैसो ॥
तरुणाईवश रूप भुलाने । सब जाने पर भये अयाने ॥
निरखतमुख हरषत हिय माहीं । जुदो होन क्षण चाहत नाहीं॥
दिन दिन मोपै प्रीति बढायो। भलेहि भांति मोहिं शीश चढायो
मैं लागी तब करन ढिठाई । बरजत नाहिं पिय हँसत ठठाई ॥
कबहुँ न कह्यो कि या विधि रहुरी। ऐसो बोल चाल अस गहुरी
यहपढुयह लिखुयह सिखु बामा। याविधिकरु गृहको सबकामा
हा नैहरकी मैं बनिआई । यहाँ पियहु मोहिं भलेहि बनाई ॥
दोहा—जब बीते कछु काल यौं, ढील भये कछु अंग ॥
तबतो लागे होन कछु, पियको औरहि रंग ॥

---

१ दूसरो। २ मनाकरना। ३ क्यों। ४ व्यंग्यवचन तात्पर्यबिगडी हुई।

चौ०--चाहत पिय तिय सुन्दर बोलै।और स्वभावहु होय अमोलै[1] ॥
मेरो कहो नेकु[2] नहि टारैं। जोमैं कहौं सोइ उर धारैं॥
अदब करैं यह बहुत हमारी। सेवा हूते दे सुख भारी॥
नहिं जाने यहि काह सिखाया।याकहँ क्या तिय धर्मबताया॥
क्या याको व्यवहार बनाया। क्या याको गुण दोष जनाया॥
मैं जब कहो न मानत पीको।तब पिय दुखित करत निजजीको
सुनत बोल जब बाउर मेरी। तब डांटत मोहिं करत करेरी ॥
लड़त जो मैं ननदी के संगा।करत जो मान जेठानि को भंगा[3]
औ देवरानिहुँ को झकझोरत। सासहु ते लड़ि नातो तोरत ॥
सुनि पिय तब मनमें पछिताते।हा!आई यह नारि कहांते॥
चिढि २ डांटत मोहिं बहूता। कबहुँ कि धावत लै कर जूता॥
दोहा–पहिले तो सिखयो नहीं, अब चाहत सिख दीन॥
वाउर दुष्ट स्वभाव को, भला भलो किन कीन॥
चौ०–भला मैं अब कबहूं मनवैया। पिय को मैं अब क्या जनवैया।
पहिले तो मोहिं शीश चढायो। अब चाहत हैं अदब करायो॥
बाउर बान पड़ी जब जाको।को अस आन करै फिर ताको॥
विगड़ो नान्हें केर स्वभाऊ। अब क्या ताहि बनावै काऊ[4] ॥
देत जवाब बरावर पीको। करत शंक नाहिं एक रती को ॥
वह डाटत मैंहूँ झिझकारत। मैं पकरत करँ[5] जव वह मारत॥
पिय वल करि जव पकरत झोटा।मैंहूं झपटि धरत पिय नोटा[6]॥
या विधि भलहि होत झकझोरा।कर मींजत रोवत पिय मोरा॥
मैंहूं समुझि समुझि जियरोवत।रोय रोय निज जाँगर खोवत ॥
पर अव काह करूं मैं रोके। वैठी हूं हा अवसर खोके॥

---

१ उमदा अच्छा। २ जराभी। ३ तोड़ना। ४ कोई। ५ हाथ। ६ गला (यह आशिष्ट [illegible] वर्णमाला बोली है)

दोहा—कहहु मातु तुम बूझिके, कौन मोर अपराध ॥
काके कीने मैं भई, ऐसो रोग असाध ॥
चौ०-अबकहुँ पिय झंखत मनमाहीं।सास ससुर अब कहुँरिसियाहीं॥
सुनि मम यश मातहु दुख पावत।करतधरत कछु नहिं बनिआवत
तब चेते नहिं मातु पिताने । कहा होत अबके पछिताने ॥
हा मम मातु पिता अरु पीने।मोपै बड़हि जुलम इन कीने ॥
काहे नहिं सिखलायो माने । काहे सुबुधि[1] न दीन पिताने ॥
भला जो उनने नहिं,सिख दीने।काहे नहिं सिखलायो पीने ॥
काहे जन्म नष्ट मम कीने । काहे निज माथे दुखलीने ॥
अब क्यों सबही गल मम रेतत।अपनी करणी क्यों नहिंचेतत॥
दोहा—हा भूले सुधि तियन की, पुरुषनेन लखि नीच ॥
नहिं जानेव मोहिं रहनहै, इन नीचन के बीच ॥
चोपाई—अब मैं मातु तोर पद लागूँ । दीजे वर सो जो मैं मागूँ ॥
आप सकल घटकीहैं वासी । आप सबै उर माहिं निवासी ॥
यह जग आपुहिको है ख्याला।आपुहि बालक आपु हिबाला॥
विनुशिक्षा भइ मम गति जैसी । हा शत्रुहु[2] की होय न ऐसी ॥
खैर जो बीती मोशिरबीती । अबहूँ सो बदलै यह रीती ॥
पुरुषन के हिय आपु समावैं । तिय शिक्षा की डगर चलावैं ॥
शोचैं पुरुष तियनके गतिको ॥ देखैं विनु शिक्षाके मतिको ॥
विनुशिक्षा दुख है अति तियको।ता तियतेदुखहै अतिपियको
दुख पावत दंपति[3] विनु शिक्षा।देखैं पुरुष जो करहिं परीक्षा ॥
मम सुख नहिंदेखैं मति देखैं । पर आपन सुख तौ वह लेखैं ॥
हमरे संग उनै रहनो है । दुख सुख हमरे सँग सहनो है ॥
हमजो नीक तो वे सुख पैहैं । जो वाउर तो दुखहि गवैहैं ॥

---

१ अच्छीबुद्धि । २ हुई । ३ दोनों ।

समुझि सो करै कछुक परबंधा। नाधैं तिय शिक्षा को धंधा ॥
सुंदर सुंदर ग्रन्थ बनावैं। सुंदर छापे माहँ छपावैं ॥
बोल चाल गुण दोष बखानैं। पतिव्रत को कछु कहैं विधानैं॥
भाषैं सकल उचित तिय धर्मा। समुझावैं सब उत्तम कर्मा ॥
जाते तिय शिक्षित ह्वै नीके। सुखदैं मातु पिता अरु पीके ॥

दोहा—मातु कहाँ लगि मैं करूं, तुमसों विनय बखान ॥
एक नजर में मातुके, है हमरी कल्यान ॥

यह विनय करि जब वह स्त्री चुप हुई और अतिप्रेमयुक्त भगवतीमूर्त्तिके चरणोंमें पडी, तुरतही मंडपमें महा हांहा शब्द हुवा और करुणावश मूर्तिमें भगवती प्रगट होकर बोलती भई ।

भगवती उवाच ।

दोहा—सत्य जो पुत्री तैं कहेसि, पुरुषनको अपराध ।
पुरुष नहीं तैंने किया, अपनो रोग असाध ॥
अच्छा तू अब धीर धरु, मैं कछु करब उपाय ।
पैठि काहु के हिये में, शिक्षा देब सुहाय ।

यह कहि भगवती मूर्त्तिमें अन्तर्द्धान होगई और वह बाला फिर भगवतीजीके चरणों पडि सखियन सहित अपने शालाको सिधारी मैं जो बैठा बैठा उस स्त्रीका सच्चा विलाप और यथार्थ प्रलाप सुनता था मेरा हृदय फटा जाता था और कलेजा मुँहको आताथा उसी समय मनमें ठान लिया कि "स्त्रीशिक्षाका प्रबन्ध अवश्य रचना चाहिये"।

यह शोच विचार किया कि "मंडपमें चलकर इसकार्यकी सिद्धि अर्थ भगवतीजीसे विनय करूं"।

१ गम्भीर । २ कृपा । ३ गायब । ४ वर । ५ सोना ।

ज्योंही मंडपके द्वारपर पहुँचा त्योंही मंडपमें महागम्भीर शब्द हुवा और फाटक बन्द होगया ।

मंडपके पुजारियोंने मुझसे कहा "किसी अपराध पर भगवती जी अप्रसन्नहैं आपको महारानीका दरशन न होगा" ।

मैं द्वारके सामने खड़ाहो स्तुति करने लगा ।

स्तुति ।

चौ०—मातु तोरजय तीनों काला । जगहै तेरो जगमग ज्वाला ॥
मातु तुही भव विभव विभूति । रूप अनूपम शक्ति अकूती ॥
उत्पति पालन औ संहारा । मातु तोरहै एक नजारा ॥
शिव अज विष्णु सकल वशतोरे । विनवत तोहिं सबै करजोरे ॥
मातु तुमहिं पूजत सब देवा । सकल जीव तोहिं लावत सेवा ॥
हे अम्बे मैं सुत हौं तेरो । हू तेरो चरणनको चेरो ॥
यद्यपि हूं अति अधम अशंका । तदपि मातु तूहै अति वंका ॥
स्वप्न मांह सुमिरै तोहिं जोई । ताकर सकल पाप गत होई ॥
तू जगदीश्वरि जगकी स्वामिनि। सकल जीवकी अंतरयामिनि
मातु मोर अपराध न देखो । निज प्रभुताकी वोर निरेखो ॥
हे स्वामिनि प्रभुता तव ऐसी । दाहै अघ तृण दामिनि जैसी ॥
मातु रूसनो क्याहे सुतते । दरश दे अम्बे दामिन द्युतिते ॥

सोरठा—मातु चरण बलिजाय, क्षमा करिय अपराध मम ।
दर्शन दीजै माय, मोहि जानि निज पुत्र सम ॥

यह उपरोक्त विनय करतेही चट फाटकका पट खुलगया और भगवतीजीकी अति प्रसन्नमूर्त्ति "मानो हँसतीहों" इस प्रकार मुझसे बोलती भई ।

---

१ तेज । २ संसार । ३ बहुत । ४ मना । ५ नाश । ६ बिजुली ।

श्रीभगवती उवाच ।

हे सुत ! इस स्त्रीका विलाप तैंने सुना है ? जबसे मैंने सुनाहै मुझे अति करुणा होरही हैः—

(१) हा ! पुरुषोंने क्या समझके इनके शिक्षाका प्रबन्ध नहीं बाँधा ? क्या, ये शिक्षाके अयोग्य ठहराई गईं वा शिक्षाकी आवश्यकता इनपर सिद्ध न हुई ? ॥ १ ॥

(२) हा ! पुरुषोंने यह नहीं विचार किया कि विना इनके शिक्षित भये हमारा गृहस्थाश्रम किसप्रकार सुखसे इनके साथ व्यतीत होगा ? ॥ २ ॥

(३) क्यायह न्याय नहीं है कि पुरुष आपतो अनेक प्रकारकी विद्या, बुद्धि, गुण, ढंग सीखते, और उससे लाभ उठातेरहैं और स्त्रियोंको सिवाय घर बोहारने, चौका लीपने, और रसोइयाँबनाने और खिलाके सोरहनेके और कुछ नहीं सिखलाते, क्या शिक्षा नपर निष्फल होती, अथवा शिक्षा देना उन्हें पाप समझा गया ? हाय, इतना भी विचार नही किया कि हम सब सीखके क्या करेंगे, जो यह नहीं सीखैंगी, तो इनके मूर्खता और हठके आगे हमारा सीखना सूखना सब भूल जायगा ॥ ३ ॥

(४) अति आश्चर्य है कि अशिक्षित स्त्रियोंकी संगतिसे पुरुष जिस जिस प्रकारके दुर्दशा, और दुर्गतिको प्राप्त होरहे हैं वह कहते सकुच आती है "पुरुष आपतो बड़ी पगड़ी वांधि वाहर बैठेहैं और भीतर स्त्रियां अपनी मूर्खतासे उनकी पगड़ी हेठीकररहीहैं" "पुरुष वाहर राजसभाओंमें आपतो ऊंची गर्दनकरि बैठेहैं और भीतर स्त्रियां अपने नानाप्रकारके कुमति और कुचालसे उनका शिर नीचा

कररहीहैं" हाय, यह अशिक्षित पनकी दशा देखते हुये भी, और देखना क्या भुगुतते हुये भी पुरुषोंने स्त्रीशिक्षाका प्रचार नहीं किया।

(५) यह बात भी पुरुषोंके विचार करने योग्यहै कि स्त्रियां पुरुषोंकी अर्द्धांगी बनाई गई हैं, फिर मैं पूछतीहूं कि आप शिक्षित और उनको अशिक्षित रखना, यह ऐसा नहीं हुवा, कि मुखके एक दिशा चंदन और दूसरी ओर कारिख लपेटना, वा एक आंख फूटी और दूसरी आंखमें अंजन लगाना ॥ ५ ॥

(६) लिखाहै "हित अनहित पशु पक्षिहु जाना" मैं आश्चर्यमें हूं, कि पुरुषोंने अपने हित अनहितका विचार भली प्रकार नहीं किया, यह नहीं जाना, कि इनका सुधार, इनका शिक्षित व्यवहार हमींको सुख देगा, इनका सुबोल सुचाल हमाराही मन प्रसन्न करैगा, इनकी प्रीति रीति हमींको आनंद देगी और इनके अच्छे पनेके यश सुननेसे हमींको ऐसा हर्ष होगा, कि फूले न समायँगे, हा! क्यों ऐसा विचारके पुरुषोंने स्त्रीशिक्षाका प्रबन्ध नहीं किया ६॥

(७) स्त्रियां पुरुषोंको जन्मसंघाती मीत मिलती हैं मीतका धर्म है कि परस्पर एक दूसरेको सुख और सिख देवै, स्त्रियां तो इतनाभी करतीहैं कि भोजन बना आपको खिला देती हैं, जिस भोजनसे यह शरीर रक्षित है, आपके शून्यस्थानकी संगी होकर आपके शरीरको सुख और मनके तापको मिटा देतीहैं, पुरुष कहैं कौन मिताई उनके साथ करते हैं, ? यदि कहैं "हम भोजन और बसन उन्हें देतेहैं" तो मैं कहतीहूं कि तुम्हारा केवल बहानाही मात्रहै वास्तव सब कोई अपना प्रारब्ध भोग करताहै, आपकी मिताई तो यहथी कि उनको विद्यापढ़ाते; उनकी बुद्धिको बढ़ाते जिससे उनका बोल चाल सुधरकर और नानाप्रकारके गुण ढंगसे लक्षित होकर आपको सुख देतीं; और आप जगतमें यशपातीं ॥ ७ ॥

(८) पुरुषोंने इतना भी विचार नहीं किया कि हमारा बहुतसा कार्य इनके आधीनहै, घर गृहस्थीके पदार्थोंकी रक्षा, बालकपने तक बालकोंकी शिक्षा, समय पर भोजनादिक पदार्थोंसे शरीरका पोषण, दिलगिरीमें अनेक प्रकारके विनीत वचनोंसे मनका तोषन, संतानका पालन, बालकोंका लालन, हर्षमें हर्ष बढ़ाना और शोकमें शोकका हरण करना, यह सब काम इन्हींके आधीन हैं, फिर विना शिक्षाके किस प्रकार यह आशा कीगई कि यह सब काम विधिपूर्वक यह अंजाम करैंगी ॥ ८ ॥

(९) हे सुत ! उस स्त्रीका विलाप सुनके मुझको बड़ा पछतावा होरहाहै, क्या स्त्रियोंको भगवानने पुरुषोंके अधीन इसीवास्ते किया है कि पुरुष उनपर जुल्म करैं, उनकी गरदन रेतैं, आखिर नहीं देखते कि उसका बदला उनको तत्कालही कैसा दुःखदाई मिलताहै, तात्पर्य यह कि स्त्रियोंकी अशिक्षितपनसे पुरुष कैसी शोक करने योग्यदशाको प्राप्त होतेहैं ॥ ९ ॥

(१०) हेसुत ! अपने आधीनको अशिक्षित रखना इससे बढकर कोई जुल्म और हत्या मैं नहीं समझती, स्त्रियां पुरुषोंके आधीन बनाई गई हैं और पुरुष उनको शिक्षा नहीं देते, तो फिर यह हत्या नहीं तो और क्या है, आखिर हत्याका फल दुःख हत्या करनेवालेको मिलजाताहै, पुरुषोंको उनकी संगतिसे दुःख मिलताहै वही हत्याका फलहै ॥ १० ॥

हे सुत ! इस हत्याके प्रायश्चित्तका अवश्य प्रयत्न करना चाहिये अर्थात् इनके शिक्षाका प्रबंध रचना चाहिये ।

मैंने विनय किया, कि हे ! माता हे अम्ब ! आपकी आज्ञा तो ब्रह्मादिक देवताभी नहीं टालसक्ते, तो में कैसे टाल सक्ताहूं, पर

१ निष्कृतिका उपाय ।

हे स्वामिनि ! मुझे विद्या बुद्धि बहुत थोडीहै, आपकी कृपा और सहायता विना किसप्रकार मैं इस प्रबन्धको रच सकताहूं ।

श्रीभगवती उवाच ।

हेसुता तू कुछ चिंता मतकर; तू कोरा कागज और मसी लेखणी लेकर बैठजाना, जो बात मैं तेरे हृदयमें ल्यावों वह बात तू कागजपर लिखता जाना, बात मेरी रहैगी और नाम तेरा रहैगा ।

यह सुन भगवतीजीके चरणोंको नमस्कार किया त्योंही मेरी आँखैं खुलगईं देखा तो भोर होगया मैं उठ नित्यकर्मसे निवृत्त होकर बैठा, और स्वप्न कल्पित भगवतीके वचनोंको स्मरण और जागृत कल्पित भगवतीको सुमिरण करि, इस (स्त्रीसुबोध) नामक ग्रंथके रचनेका प्रबंध बाँधा ।

(अथ ग्रंथका अनुबंध)

इस ग्रंथका (विषय) स्त्रीशिक्षा, और सर्व अशिक्षित स्त्रियां (अधिकारी) हैं अशिक्षितपनेसे जन्य दुःखकी निवृत्ति,और शिक्षितपनेसे जन्य सुखकी प्राप्ति इस ग्रंथका (प्रयोजन) है अधिकारी और ग्रंथका बोध्यबोधक भाव (सम्बन्ध) है ।

ग्रन्थ बनानेका वास्तव हेतु, जिसमें पांच पदोंके आदि अक्षर मात्रा सहितसे ग्रन्थकर्त्ताका नाम (हठीप्रसाद) वो ६ से ११ पद तकके आदि अक्षर मात्रासहितसे पिताकानाम (लक्ष्मीनारायण) वो १२ से १६ तक ज्येष्ठ भ्राताका नाम (हर्षलाल) वो१७से२२ तकमें लघु भ्राताका नाम (गोरख प्र०) वो २३ से २८ तकमें ग्रामका नाम (वनवारपार) वो २९ से ३३ तकमें जिलाका नाम (गोरखपूर) निकलताहै ।

चौपाई–हसने देखा तियन हवाला । ठीक न पाया बोलाचाला ॥
प्रनत ग्रस्त मुरखता रोगा । साँच रहित नित नीति वियोगा ॥

१ स्त्री । २ रहित ।

दरद नहीं इनके मन नेका । लखत नहीं हित अनहित एका॥
क्षेमिय चूक यह गुण नहिं तिनसों।नाहिन पतिसेवा कछु इनमों
राहचलत जो अविहितं वेदा । यह मनभावत कलह विभेदा ॥
नहिं जानत गृह संयम भेवा । हर्ष न सासु श्वशुरकी सेवा ॥
रहत सदा अपने मन माना । खरुसबोल बहु बाउर बाना ॥
लाज न बदनामी को नेका । लगत नीक अनहित अविवेका
गोर वदन लखि गर्व मतीहैं । रखत रती नहिं मान पतीहैं ॥
खर भर मचो रहत घर भरमें।प्रकटत गुण निजदेश नगरमें ॥
सासु मनहुँ इनकी है चेरी । दबत सबै इनकी गति हेरी ॥
वरणों कहँ लगि इनको हाला । नहिं वर्णनके योग हवाला ॥
वार पार नहिं हैं अवगुणके । रहत होश गुम चतुराननके ॥
पांतिन लिखित यदपि बहुतनसें।रहत स्वभाविक अवगुण इनसें
गो यह ठीक तदपि मम जाने । हैं शिक्षा बिनु अधिक अयाने॥
खबर जो होत उचित अनुचितकी।पुण्यपापकीहित अनहितकी
रहतीं अस नहिं निन्दित रीती।कछुस्वभाव होतो युत नीती॥
शिक्षा को परताप बडोहै । शिक्षानृपको हुकुम कड़ोहै ॥
शिक्षाते पशु होत सुजाना । नर शिक्षा बिनु पशू समाना ॥
शिक्षा अवगुणसकल हरतहै । हित अनहित सब सूझ परत है॥
गुणी होय गुणवान कहावैं । शिक्षा हीते सब गुणआवैं ॥
लोक लाहु परलोक सुधारा । शिक्षाही को सब व्यवहारा ॥
यह गुणिरचो ग्रन्थ तिन हेता। पढ़ि होइहैं तिय सुघर सचेता॥
सुकवि जननते विनती मोरी।है मम विद्या औ बुधि थोरी॥
लेहिं सुधारि भूल जहँ पावैं । कछु कर्त्ताप्रति हँसी न लावैं ॥

---

१ निषद्ध । २ विगाड़ ।

दोहा–तियन बोध हित ग्रन्थ यह, रचों स्वमति अनुसार ॥
पढि सुबाल शुभ गुण लहैं, होय सुयश विस्तार ॥

इस ग्रन्थके विषयोंका सूचीपत्र–(इस ग्रन्थके चार भाग हैं)

भाग (१)

पहिले भागमें ग्रन्थ आरम्भकी भूमिका और छोटे छोटे प्रसंग और बोल चाल स्वभावके गुण दोष आदिक जिनकी शिक्षा लड़कियोंको आवश्यकहै वर्णन किया गयाहै और उसमें (३१) बोधहैं।

भाग (२)

दूसरे भागमें ५ बोधहैं (१)बोधमें संक्षित रामायण जिसमें सातों कांड रामयणका संक्षित वृत्तान्त और कोई २ प्रसंग, जैसे शिवजी का विवाह धनुष तोडनसमय महारानी सुनयनाका व्याकुलतायुत सखीसे वचन और सखीका अतिविनीत वचन महारानी जीसे इसीतरह और प्रसंगभी कवित्त सवैयामें करदिया गयाहै जिससे यह बोध अति ललितहै और इस रामायणसे पांच शिक्षा स्त्रियोंके योग्य अंतमें दिखलाई गई हैं। (२) बोधमें भारतवर्ष का संक्षित इतिहासहै इसमें हिन्दू राजाओं, मुसल्मान बादशाहों और तत्पश्चात् श्रीमहारानीविक्टोरियाका राज्य और उसके राज्य- में जो जो व्यवहार प्रजानके सुख देनेवालेहैं उनका वर्णनहै। (३) बोधमें स्त्रियोंका धर्म अधर्म, और पतिआदिकसंबन्धियोंसे यथा- योग्य वर्त्तनेका प्रकार सुन्दर रीतिसे वर्णन किया गयाहै इस बोधकी शिक्षा स्त्रियोंको अति आवश्यक और दोहादिककी बाहुल्यतासे यह बोध बहुतही ललितहै (४) बोधमें घर गृह- स्थीके संयमका वर्णनहै (५) बोधमें गर्भवती स्त्रियोंके लिये उचित व्यवहारका वर्णनहै।

भाग (३)

तीसरे भागमें दो बोधहैं (१) पहिले बोधमें बालपनेके व्याहका निषेध है (२) दूसरे बोधमें चन्द्रकलाके व्याहका वर्णन है ॥ जिसमें व्याहसंबंधी समय समयके अनुसार स्त्रियोंका उचित व्यवहार दिखलाया गयाहै तथा गीत और कवित्त आदिकोंसे यह बोध अतिललित होगयाहै ।

भाग (४)

चौथेभागमें चन्द्रकलाका ससुरालको जाना और गंगाजीकी स्तुति करना, और निंदित स्वभाववाली देवरानियोंको सुधारना, स्त्रीसभा कायम करके निंदित व्यवहारोंके तिरस्कार और वंदित व्यवहारोंके प्रचारके निमित्त व्याख्यान देना इत्यादिका वर्णनहै और कोई व्याख्यान ऐसा नहींहै जिसमें दो एक कवित्त आदिक नहों इससे यह भाग अत्यंत ललितहै ।

इस ग्रन्थभरमें सिवाय (संक्षिप्त रामायणमें गोसाईंजीके वचनोंके) और कहीं अन्य कविकृत कोई दोहा चौपाई वा कवित्त नहींहै सब ग्रंथकर्त्ता कृतहैं पर जहां देवी सुबोध कुँवरिका व्याख्यानहै वहां कवित्तमें उन्हींका नामहै और जो कवित्त देवी-चन्द्रकलाकुँवरिके व्याख्यानमें हैं उसमें उन्हींका नामहै बहुतोंमें किसीका नाम नहीं है परन्तु सब नवीनहैं ।

प्रार्थना ।

देशहितैषी महाशयोंसे आशा और प्रार्थना है कि, स्त्री शिक्षाका प्रचार अति आवश्यक समझकर इस ग्रन्थको अपनी २ कन्याओंको पढावें इस ग्रन्थका पढना स्त्रियोंको सर्वथा गुण-दायक होगा ।

इति ।

ॐ

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

अथ स्त्रीसुबोध.

प्रथम भाग।

ग्रन्थारंभ भूमिका।

दोहा—श्रीभगवान पद वन्दिके, विनऊँ शारद मात ॥
देहु सो वर जेहि तियन कहँ, अति हित है ममवात ॥

भरतखंडके मध्य श्रीगंगाजीके तटपर एक आनन्दपुर नगरी थी. उस नगरीमें मुन्शी सर्वसुखलाल जाति कायस्थ श्रीवास्तम धर्मशील नामक राजाके दीवानथे, जैसा नाम था, वैसाही सर्वसुख उनको प्राप्त था; उनकी स्त्री (देवी सुबोध कुँवारि) रूपकी राशि, शीलकी सागर, विद्याकी खांन, बुद्धिकी निधान थीं; जैसा उनका नाम था, वैसेही सर्व व्यवहारमें परम सुबोध थीं; पातिव्रत धर्ममें जो उनकी अचल निष्ठाथी, वह मानो सोनेमें सोहागा पड़ाथा, पूजा करतीं तो अपने पतिकी, ध्यान धरतीं तो अपने पतिका, अपने पतिको परमेश्वर समान जानके सदा उनके प्रसन्नता हेतु यत्न करतीं।

घर गृहस्थीके कार्यमें भी वह अति कुशलथीं, दीवानजी सिवाय कमाकर देवीसुबोधकुँवारिको दे देनेके और कुछ नहीं जानतेथे कि कहां क्या होताहै:--बाजारसे जिन्स पात मँगाना, नौकरोंको तनख्वाह देना, आये गयेका आवभगत करना, नेवता हँकारी देना

---

१ ढेर—समूह। २ खान। ३ सिद्धाई। ४ एकनिश्चय। ५ खातिरदारी।

विहारीका मुनासिब बन्दोबस्त करना, सबका जमा खर्च लिखना, और महीने पीछे दीवानजीको समझादेना, यह सब काम देवी-सुबोध कुँवरिके अधीन (तअल्लुक) था ।

"ओहो ऐसी रूपवंती गुणवान् पतिव्रता जिसकी स्त्रीहो" "उस को सर्वसुख प्राप्तहो" इसमें क्या संदेह है ।

दोहा—पतिव्रत रत तिय जासुकी, विद्या बुधि संयुक्त ।
ता पति लहि जग सकल सुख, अंतकाल हो मुक्त ॥

भगवान्की कृपासे गवन आनेके दूसरेही साल देवी सु० कुँ०के एक गर्भसे दो बालक एक पुत्र एक कन्या उत्पन्न हुये, ज्योतिष-शास्त्रकी रीतिसे पंडितोंने जन्मलग्न आदिक विचार कर कहा, "लड़केका यश, प्रताप सूर्यके समान होगा" ताते उसका नाम (भानुप्रताप) रक्खा, और "लड़कीका शील स्वभाव चन्द्रमाकी नाईं शीतल सर्वको सुखदाई होगा" ताते उसका नाम चन्द्रकला रक्खा ।

देवी सु० कुँ० दोनों बालकोंका पालन पोषण भली प्रकार करतीं, नालायक औरतोंकी तरह न कभी उनका निरादर करके झिझकारती मारती; न कुबुद्धि स्त्रियोंकी नाईं अत्यंत मोहकरके उनपर जान वारती ।

नौकर चाकर लौंडी नफर जो लड़कोंके खेलानेको नियतथे, उनसे दे० सु० कुँ० की यह आज्ञाथी, कि लडकोंको हर साइत गोदमें न लिये रहें, धूर माटीमें उन्हें अधिक बैठने और खेलनेदें कि इससे लड़के मजबूत (पुष्ट) होतेहैं ।

तीसरे वर्षमें उनका मुंडन, कर्णछेदन आदिक संस्कार विधि-पूर्वक दीवानजीने किया. साधु ब्राह्मण भाट भिखारी सबको दान सम्मानसे प्रसन्न करि सबसे शुभ आशीर्वाद पाया ।

---

१ कारबारी । २ धर्मेश्वरमें लीन होजाना । ३ नेछावर करना । ४ मुकर्रर ।

जब पांचवर्षकी अवस्थामें दोनो पहुँचे, तब दीवानजीने पंडित बुलाय शुभसाइतमें दोनोंको विद्या आरंभ कराया।

भानुप्रतापको तो संस्कृत और अंग्रेजी शुरू कराया, और चंद्रकलाको पंडितसे क, ख, आदिक अक्षर प्रारंभ कराके देवी-सुबोध कुँ० को सौंपकर कहा "इसकी शिक्षा तुम्हारे तअल्लुकहै, तुम इसको देवनागरी अक्षर सिखलावो, स्त्रीशिक्षाके विषयमें जितने ग्रन्थ भाषामें हों उनको पढ़ावो, सीना पिरोना कशीदा काढना रसोंई पानी बोल चाल जितनी बातें रईसोंकी लड़कियोंको उचित हैं सो सब सिखलावो।

(दे० सु० कुँ०) महाराज! आज्ञा शीशपर।

अब जिसप्रकार देवी सु० कुँ० ने चंद्रकलाको शिक्षादिया वह प्रकार लिखतेहैं, सर्व स्त्रियोंको उचितहै कि जिस रीतिसे देवी सु० कुँ० ने अपनी कन्याको शिक्षा दिया, उसी तरह अपनी अपनी कन्याओंको शिक्षादें और सर्व लडकियोंको उचितहै जैसे चन्द्रकला अपने मांकी शिक्षासे लायक और गुणवती हुई, है, वैसेही सर्व लडकियां शिक्षित हों, जिससे नैहरमें, सासुरमें, देशमें, मुल्कमें उनकी प्रशंसाहो।

(बालकोंको यत्नसे इधर उधरके घूमनेसे निवारण करना चाहिये)

देवी चन्द्रकला कुँवरि भोर होतेही लडकियोंमें खेलनेको बाहर चली जाती, और दो एक घड़ी पीछे चली आती। एक दिन जब वह बाहर खेलने चली, तो देवी सु० कुँ० ने कहा "बेटी ठहर जावो, हम तुम्हारेवास्ते एक लड्डू धरेहैं, इसको खायलो तो जाव" यह कहि उठी और लड्डू उसके हाथमें दे प्यारसे गोदमें ले कहनेलगी।

---

१ तारीख़।

(दे० सु० कुँ०) बेटी बतावो तो हम तुम्हारी कौनहैं ?

(दे० चं० कुँ०) तुम हमारी अम्मा हो ।

(दे० सु० कुँ०) तो बेटी हमारा कहा मानोगी कि नहीं ?

(दे० चं० कुँ०) अम्मा काहे न मानैंगी, तुमतो दूध पिलाती हौ, लड्डू खिलातीहौ, रातको गोदमें सुलातीहौ, तो तुम्हारा कहा क्यों न मानैंगी ।

(दे० सु० कुँ) अच्छा बेटी बतावो तो तुम इसवक्त रोज कहां जातीहो ?

(दे० चं० कुँ०) अम्मा तुम नहीं जानतीहौ ? घरके दक्खिन जवन रास्ताहै, उहां बहुत सा बालूहै, वहीं बैठके हम और चन्द्रहास, चन्द्रमुखी, चन्द्रज्योति, सब कोई घर घरौना खेलतीहैं.

इतनेमें जब नियत समयपर चन्द्रकला उसदिन उस जगह खेलने न आई, तो चन्द्रहास आदिक तीनों लडकियां घबराकर इनके घर आय आँगनमें खडी हुईं, उन्हें देखकर.

(दे० चं० कुँ०) अम्मा देखो यही लोग हमारी सखीहैं (अपनी मांकी गोदमें मचलाकर) अब हमैं जानेदो माई.

देवी सु० कुँ० ने उन तीनों लडकियोंको बुला प्यारसे अपने पास बैठाला, और एक एक लड्डू उनके हाथमें देकर कहा बेटीखावो, और बतलावो तो कि तुम लोग इसवक्त कहां आईहौ ?

(दे० चन्द्रमुखीकुँ०) हम लोग अपनी सखी चन्द्रकलाकुँ०को बुलाने आईहैं.

---

१ हुर्कत—मानुषी ।

(दे० सु०कुँ०) बुलाके कहां लेजावगी और क्या करोगी ?

(दे०चन्द्रज्योति कुँ०) हम लोग रोज एक जगह बैठके घर घरौना खेलतीहैं.

(दे०सु०कुँ०) जो हम यहीं बालू मँगायदें तो तुम लोग यहीं आँगनमें न खेलोगी ? ।

(दे० चन्द्रहासकुँ०) देवीजी काहे न खेलब ।

(दे०चन्द्रकलाकुँ०) अरी ये अम्मा ! कल्ह तो हमलोग वहां खेलती रहीं यतनेमें मरकहवा सँडवा आया; हमलोग तो देखकर भागगईं, बाकी घिराऊ कहारका लड़का उधरसे आतारहा, बस दौड़कर उसको सींगपर उठायके फेंकदिया, वह (अंगुलीसे इशारा करके) वोत्ती दूरपर जाके गिरपड़ा, उसके पेटमें चोट लगगई, तबसे ये अम्मा वहां जाते तो बड़ीडर लगती है ।

दे० सु० कुँ०-(छातीपर हाथ रखकर) अरी बेटी उहां अब कभी मति जाइयो, वह तो बड़ा मरकहा साँडहै, भला बड़ी बात जो तुमलोग कल्ह बचगई. देखो हम यहीं बालू मँगायदेतीहैं तुम लोग यहीं खेलो ।

यह कहि पुकारा (मनेकिया)अभी जा और मेरी लड़कियों-के खेलनेको ढेरसा बालू ले आ ।

मनकिया तुरंत गई और एक दौरी बालू उठाय ले आई सब लडकियां खुशहो वहीं खेलने लगीं ।

दूसरे दिन देवी सु०कुँ०घरके ओसारेमें चटाईपर छोटा कालीन बिछाकर बैठीहै, चार पुस्तक बडे चमकीले दफ्तीके अपने आगे धरेहैं, लड़कियां आंगनमें खेलरहीहैं, यतनेमें चन्द्रकलाकी दृष्टि दफ्तीपर पड़ी: दौड़कर मांके पास आ कहने लगी ।

---

१ लौंडीका नाम ।

(दे ० चं ० कुं) अम्मा यह क्याहै हमैं देव.

(दे०सु० कुँ) नहीं बेटी यह तो पढ़नेकी पुस्तकैंहैं तुम्हैं न दूंगी

(दे ० चं ० कुँ झुँझुलाकर) हां तुम्हैं न दोगी काहे न दोगी.

(दे ० सु ० कुँ) बेटी यह खेलौना नहींहै कि तुम्हैं देदें यह किताबहै, जो पढ़ताहै सो पाताहै, तुम्हैं देदें तो तुम बालूमें इसे मैला न करडालोगी ?

(दे ० चं० कुं०)मैला न करोंगी तुम देव तो सही. मैंभी पढौंगी बालूको कहो तो धूर माटी आजहीसे न खेलैं ।

(दे० सु० कुँ०—चन्द्रहास आदिककी ओर ताकके) क्योंजी तुमलोग भी किताब पावो तो पढ़ोगी ? खेलोगी तो नहीं

(चन्द्रहास आदिक) हां देवीजी पढ़ैंगी खेलैंगी नहीं ।

(चन्द्रकला मचलाकर) मां कै बेर कहैं, कहती तो हैं कि नहीं खेलैंगी नहीं खेलैंगी नहीं खेलैंगी, खेलनेमें का कुछ मिलजाताहै औरो कपड़ा देह सब मैला होजाताहै, जब पसीना होताहै तब बदन खिसखिसाने लगताहै ।

(दे०सु० कुं०) हां बेटी ! ठीक कहतीहै अच्छा लेव यह कहि कर चारोंको एक एक पुस्तक देकर कहा “ देखो इसमें कैसी सुंदर सुंदर तसवीरै हैं । ”

सब लडकियां पुस्तक खोल खोल तसबीरोंको देख देख खुश होहो हँस हँस कर एक दूसरेसे कहने लगीं ।

“ हेदेखो हमरे पुस्तकमें ऐसन तसवीरहै ”

(दे ० चं ० कुँ) मां तैनी बतायदो यह किसकी तसवीरहै ?

(दे०सु०कुँ०) यह बायें तरफ मांकी तसवीरहै और उसकी

१ चित्र ।

गोदमें उसकी लडकीकी तसबीरहै, मां अपनी प्यारी बेटीको गोदमें लेकर पढ़ा रहीहै।

(दे० चं० कुँ०) तो तुमभी हमारी मांहो हम तुम्हारी प्यारी बेटीहैं इसीतरह तुमभी हमको पढ़ावो।

(दे० सु०कुँ०) क्या तूही अकेले पढ़ैगी कि, यह लोगभी पढ़ैंगी

(चं० हास आदिक) नहीं देवीजी हम लोगभी पढ़ैंगी, हम लोग तो संघतियाहैं, जो काम एक करैगी वह सब कोई करैंगी।

(दे० सु० कुँ०) अच्छा कल्ह सवेरेसे पढावैंगी।

यह सुनि चन्द्रहास आदिक अपने २ घर चली गईं और चंद्रकलाभी दूसरे काममें लगगई।

"प्यारी मावो! तुम भी अपनी प्यारी लडकियोंको इसीतरह यत्नसे पढ़नेमें लगावो कि, विद्यासे सर्वप्रकारकी बुद्धि और भलाई प्राप्त होतीहै"।

दूसरे दिन भोर होतेही चारों लड़कियाँ अपनीअपनी पुस्तकें ले, दे० सु० कुँ० को घेरकर बैठीं और कहने लगीं।

(दे० चं० कुँ०) मां पढ़ावो।

(दे० सु० कुँ०) पढो।

बोध १.

(मां बापका कहना मानना चाहिये)

प्यारी लड़कियो! अपने मां बापका कहना मानो, उनका कहना कभी न टालो. देखो; उन्होंने तुम्हें जन्मायाहै, दूध पिलायाहै गोदमें सुलायाहै; सर्व प्रकारसे तुम्हारी रक्षा कियाहै।

जो लड़के अपने मां बापका कहना नहीं मानते उनसे उनके मां बाप खफा रहतेहैं, उसको प्यार नहीं करते, मिठाई खानेको नहीं देते, रिसवश उसको मारभी देतेहैं।

और जो लड़के कहना मानतेहैं उससे उनके मां बाप खुश होकर सुन्दर सुन्दर खिलौने, ताजी ताजी मिठाई, अच्छी अच्छी वँघरी वोढनी उसके वास्ते लेदेतेहैं ।

(दे. चं. कुँ) अम्मा ईतो सच लिखाहै जब हम तुम्हारा कहै न मानैंगी, तो काहेको तुम हमैं प्यार करोगी, काहेको हमारे खाने, पीने, पहिनने, वोढनेका खोज करोगी, अच्छा अम्मा अब खेलने जायँगी ।

(दे. सु. कुँ.) जावो ।

बोध २.

(लड़कियोंको बाहर घूमना न चाहिये)

(दे. चं. कुँ.) अम्मा आज्ञादेव तो आज बाहर जाकर खेलैं ॥

(दे. सु. कुँ.) नहीं बेटी अब तुमको बाहर घूमना उचित नहीं है, और बाहर घूमनेमें लड़कोंको बडे बड़े जोखिमभी रहतेहैं बैल गोरू सांड़ भैंस आते जातेहैं लड़के उनके धक्केमें पडिजातेहैं ।

(दे. चं. कुँ.) हां अम्मा ! जैसे सरकहवाके सँड़वा धक्केमें घिराऊका लड़कवा पड़गया रहा ।

(दे. सु. कुँ.) हां बेटी वैसेही और छपंहारेभी बाहर घूमा करतेहैं लड़कोंको पातेहैं तो पकड़के कुच कुच सूईसे छेद देतेहैं ।

धोकर कसवेभी घूमते रहतेहैं, लड़कोंको धोकरीमें कस कर ले भागतेहैं, यतना पढकर ।

(दे. चं. कुँ.) अरी अम्मारी अम्मा ! अब हम बाहर नाहीं जावै बाबू नाहीं तो धोकर कसवा पकड़ लेजाई ।

(दे. सु. कुँ.) हाँ बेटी क्या झूँठहै अभी दोसालकी बातहै तुम्हरे

---

१ इसमें विन्द्रना मेरा तात्पर्य नहींहै किन्तु बाहर घूमनेका निषेध मेरा तात्पर्य है ।

नानिहालमें एक लड़का बहुत घूमता रहा एकदिन धोकर कसवा उसको पकड लेगया फिर उसका पतै न मिला।

दूसरे दिन जब पढनेका समय हुवा तो वे तीनों लडकियां न आईं दे.सु.कुँ.समझगई कि,हो न हो धोकरकसवाके डरसे वे सब नहीं आईं पुकारा (अमौवा[1]) तू जा और चन्द्रमुखी, चन्द्रज्योति, चन्द्रहास तीनों लडकियोंको अपने साथ लिवा ला।

अमौवा—बहुत अच्छा सर्कार, यह कहगई और तीनों लडकियोंको बुलालाई वे सब आय दे० सु० कुँ० के पाँव लागि बैठगईं।

(दे० सु० कुँ०) क्योंजी तुमलोग काहे जूनपर पढ़ने न आईं॥

(च० हास आदिक) देवीजी धोकरकसवाके डरसे जबसे हम लोग घरगईं तबसे कहीं बाहर न निकलीं.

(दे० सु० कुँ) अच्छाकिया, बाकी रहा आनेमें सो कुछ डर मतकरो इस महल्लेवाले धोकर कसवाको तो हाकिमने पकड़वाके कालेपानीको भेजदिया,और फिर धोकरकसवोंके यहां इस बातका कसम[2]है, कि जो लड़के पुस्तक हाथमें लिये रहतेहैं और विद्या पढ़तेहैं उनको वे नहीं पकड़ते.

यह सुनि लड़कियां खुशहो कहने लगीं“ अच्छा देवीजी अब हमलोग पुस्तक हाथमें लिये बेधडक चलीआया करैंगी.”

बोध ३.

(लड़ाकियोंको चिढ़ना न चाहिये)

(दे० चं० कुँ०) अम्मा हमको सोनकलिया चिढातीहै।

(दे० सु० कुँ०) क्या चिढ़ातीहै ?।

(दे० चं० कुँ०) हमारी तरफ ताककर कहतीहै “क्यों क्यों”

(दे० सु० कुँ०) हँसकर—तब तुम चिढ़ती क्यों हो।

१ लौंडीका नाम। २ सपथ।

(दे० चं० कुँ०) अम्मा वह च्यों च्यों कहै और हम न चिढ़ैं?

(दे० सु० कुँ०) नहीं बेटी तुम किसी बातपर चिढनेकी आदत मतडालो, चिढ़ना बहुत खराब बातहै. चिढ़नेवाले लड़के कभी चैन नहीं पाते, उनको चिढ़ाके सब तंग किया करतेहैं।

चिढ़ना मूर्खता (बेवकूफी) का चिह्नहै. जब तुम चिढना छोड़दोगी तो एकबेर कोई चिढावैगा फिर कभी कोई न चिढावैगा।

बोध ४.

(लड़कियोंको जिद्द) हठ (नहीं करना चाहिये ।)

(दे० चं० कुँ०) अम्मा हमारा सलमा सितारा लगाहुवा दुपट्टा दो वोढैंगी. ।

(दे० सु० कुँ०) कुछ काम नहीं जो वोढोगी।

(दे० चं० कुँ०) नहीं अम्मा देव।

(दे० सु० कुँ० नहीं देंगी।

(दे० चं० कुँ०) नहीं देव।

(दे० सु० कुँ०) खबरदार बेटी तुम किसी बातपर जिद्द न कियाकरो जिद्दी लड़कोंको कोई प्यार नहीं करता, जिद्दीलड़का सदा मारखाया करताहै, जिद्दी लड़केको सिवाय दुःखके सुख नहीं मिलता, अच्छे लड़के जिद्द नहीं करते।

बोध ५.

(लड़कियोंको ठठायके हँसना न चाहिये)

प्यारी लड़कियो! तुम बहुत ठठायकै न हँसाकरो, ठठायके हँसना कमीनी लड़कियोंका कामहै, अच्छी लडकियां ऐसा हँसतीहैं कि दांत नहीं खुलनेपाता।

१ स्वभाव।

(दे० चं० कुँ०) अम्मा तुम भी तो कभी कभी ठठायके हँसतीहो, क्यों ?

(दे०सु०कुँ०) बेटी हां कोई कोई बात ऐसी भी होतीहै जिसपर बेअखतियार (अकस्मात्) बहुत हँसी आजातीहै, पर हरसाइत हरबातपर ठठायके हँसना उचित नहींहै।

"स्त्रियोंको सर्वथा मन्दमुस्कानही शोभाहै"।

बोध ६.

(लड़कियोंको रोना न चाहिये)

प्यारी लडकियो ! रोनेकी आदत भी बहुत खराब आदतहै रोइने लड़केसे सबलोग नाखुश रहतेहैं, खुद तुम्हारे मां बाप खफा होकर तुमको मारेंगे, तुम्हारे बदनमें चोट लगैगी, तब और रोवोगी और बहुत रोनेसे शिरमें दर्द होजायगा, जिस्से तुमको क्लेश होगा, इसलिये रोनेकी आदत छोड़दो।

(दे० चं० कुँ०) अम्मा कोई बात रोने लायक होतीहै तब न हमलोग रोतीहैं कि, अनाशय रोतीहैं।

(दे० सु० कुँ०) बेटी बात कौन ? कोई नहीं, लड़के बेबातकी बातपर रोया करतेहैं।

(दे०चं० कुँ०) नहीं अम्मा ऐसा नहीं, अच्छा देखो जैसे हमने कहा "मेलेमें जायँगे और तुमने न जानेदिया तो क्या हम न रोवैं।"

(दे० सु० कुँ०) रोवैं क्यों इसमें रोनेकी कौन बातहै ? मेलेमें न गई न सही, क्या न जानेसे कुछ चोट लगगई जो रोवोगी ? ।

(दे० चं० कुँ०) हँसकर हां अम्मा चोट तो नहीं लगी ईतो सचहै, बाकी अच्छा जैसे मिठाईवाला आया हमने पैसा मांगा तुमने न दिया तो का तसौं न रोवैं।रोयके दिक करके जो पैसा न लें तो तुम्हारी बान पड़जायगी जब मांगैंगी तब कहदोगी कि, पैसा

---

१ सब प्रकार।

नहींहैं और जब दो एकबेर तुम्हैं दिक्क करके लेलिया तो जब मागैंगी झटसे देदोगी, जानोगी कि न देंगी तो यह दिक्क करैगी ।

(दे० सु० कुँ०) हँसकर—नहीं बेटी ऐसा नहीं जब पैसा रहैगा और मिठाई खानेमें तुम्हारा नुकसान (हानि) न देखैंगी तो जरूर दे देंगी और जो न दिया तो जानिजाव, कि तो अम्माके पास पैसा नहींहै कि तो कोई बात समझके नहीं देतीहैं; ऐसा समझके चुपरहै; रोवै क्यों; यह तो पाजी लडकियोंका कामहै, कि मां बापसे किसी बातके वास्ते हठ करैं, रोवैं, दिक्ककरैं, अच्छी लडकियोंका यह काम नहीहैं ।

(दे० चं० कुँ०) तो मां हम लोगोंकी यतनी समझ थोडै होतीहै।

(दे० सु० कुँ०) तो बेटी विद्या इसीवास्तेहै, जो लड़कियां विद्या पढतीहैं उनको सब समझ आजातीहै ।

बोध ७.

(लडकियोंको चंचल रहना न चाहिये)

प्यारी लडकियो ! तुम चंचल न रहाकरो, चट बैठीं, झट उठीं, इहां आईं, उहां गईं, ऐसा नहीं, जहां बैठो, सावधानीसे बैठो, उचित स्थानपर बैठो, कपडे लत्तोकी खबर रक्खो, यह नहीं कि आईं और किसीके ऊपर गिरीं धम्मसे, वा जमीनमें बैठ गईं घस्सदे, कपडाँ लत्ता खराब होगया; उठीं तो ऐसा आंधीकी तरह कपड़ा झाड़ा कि, औरोंके ऊपर गर्दा पडा, कोई मारने दौडी, किसीने कहा "दुर नालायक"

नहीं जैसे रईसोंकी लडकियां सलीके (सुरीति) से अदब (नम्रता) से चुपचाप उचित स्थानपर बैठती और उठतीहैं वैसेही उठना बैठना तुम भी अखैतियार[1] करो ।

---

१ अंगीकार ।

बोध ८.

(लडकियोंको सफाईसे रहना चाहिये)

प्यारी लडकियो ! तुम अपने हाथ मुँहको साफ रक्खो; मैले लड़केसे सब किसीका जी घिनाताहै, कोई उसको प्यार नहींकरता, न कोई गोदमें लेताहै, मैलेपनसे रोग उत्पन्न होतेहैं, इसलिये तुम सफाई रक्खो, जब कहीं वदन[1]में मैल लग जाय, तो धोडालो, जो जाडेमें नहीं तो न सही पर गर्मी और वर्षातमें तो अवश्यही प्रतिदिन स्नान कियाकरो ।

कीच कूँचमें बहुत मति घूमो ।

कपड़ा जब मैला होजाय उतार डालो, धोलाया कपडा पहिनलो ।

तन वसन[2] साफ रहनेसे अपना चित्तभी साफ रहताहै, और दूसरे लोगभी प्यार करतेहैं ।

चन्द्रहास आदिक तीनों लडकियोका कपडा कुछ कुछ मैला था जब वे इस पाठको पढचुकीं तो अपने कपडोंको मैला देख मनमें सकुचगईं और दूसरे दिन धोलाई सारी पहिन कर आईं, उनको देख ।

(दे०सु०कुँ०) आज तुम सबकी सब धोलाई सारी पहिन कर क्यों आईहो ? ।

(चं०हास०कुँ०)देवीजी! कल्हकी पाठमें जब पढा कि मैला कपडा नहीं पहिनना चाहिये, तबै हमलोग मकानपर पहुँचि मैले कपडे उतार धोलाई सारी पहिन लिया ।

(दे०चं०कुँ०)अम्मा ! पढना तो इसीवास्ते न है कि जैसा पढ़े उसीके अनुसार अपना चाल व्यवहार बनावै सकोसनेके वास्ते तो नहिं न है इस बातपर सब हँस पडीं ।

---

१ शरीर । २ वस्त्र ।

बोध ९.

(लडकियोंको सवेरे उठना चाहिये)

(दे०सु०कुँ०) बेटी उठो, देखो सूर्यनारायण उदय[1] होगये ।

(दे०चं०कुँ०) नहीं अम्मा ! अभी सोनेदो ।

(दे०सु०कुँ०) नहीं बेटी उठो, और हररोज सवेरे उठाकरो दिन चढ़ेतक सोना मनाहै, जो आदमी दिन चढ़ेतक सोताहै उसको देवता शाप देतेहैं, वह आदमी अकसर बीमार रहताहै, उसका चेरा सुस्त, और मनमलीन रहताहै, उस घरमें बरकतभी नहीं होती ।

(दे०चं०कुँ०) अम्मा! देवता तो ऊपर देवलोकमें रहतेहैं, वह हमलोगोंका सोना जागना कैसे देखतेहैं ? ।

(दे०सु०कुँ०) बेटी ! देवता पहररात शेष[2] रहेसे सूर्य उदयतक मृत्युलोकमें घूमते और सबका समाचार[3] देखते फिरते हैं, जो स्त्री वा पुरुष सूर्यउदसे पहिले उठतेहैं, उनको वे आशिर्वाद देतेहैं, और जो दिनचढे पीछे उठताहै उसको शाप देतेहैं. देखो मैं इसपर एक इतिहास[4] कहतीहूं ।

इतिहास ।

एक समय शिवजी नन्दीबैलपर सवार वामभागमें[5] श्रीपार्वतीजी विराजमान डिमिक २ डमरू[6] बजाते मृत्युलोकमें घूम घूम सबका हाल देखते रहे ।

घूमते घूमते जब उज्जैन नगरीमें पहुँचे तो देखते क्या कि एक गरीव क्षत्रियकी लड़की दोघडी रात बाकीरहे उठ मुहँ हाथधो, घर आँगनबोहारि, दीपक जला, घरमें बैठी पुस्तक हाथमें लिये पढ़िरहीहै, उसकी बूढ़ी मां चारपाई पर लेटी सुनरहीहै ।

---

१ उगिगये । २ बाकी । ३ हाल । ४ कहानी । ५ बायेंतरफ । ६ शिवजीके हाथमें यही बाजा रहताहै ।

उसका यह व्यवहार देख महादेव बाबा बहुत प्रसन्न हुये, और उसको आशिर्वाद दिया कि "तू राजाके घर वरैगी और सदा सुखी रहैगी"।

आगे चलकर एक घर जाके देखा कि, इधर सूर्यउदय होगयेहैं उधर एक अमीरकी कन्या पलँगपर सोरहीहै, शिवजी ठहरकर देखनेलगे कि यह कबताईं सोतीहै दोघडी दिन चढ़तक देखतेरहे पर वह न उठी सोतेही रहगई, तब शिवजीने उसे शापदिया "कि जिस घर तू जायगी वह घर कंगाल होजायगा, और सदा दुःखमें रहैगी" और कहा-"हे पार्वती तुम जानलो कि जो सूर्यउदयसे पहिले उठैगा उसको हमारा आशिषहै कि, वह सदा सुखीरहैगा" और जो दिन चढे पीछे उठैगा उसपर हमारा शापहै कि "वह सदा दुःखीरहैगा" यह कहि शिवजू महाराज कैलासको चलेगये।

(दे० चं० कुँ०) अम्मा ! यह तो कुछ जबरदस्ती ऐसी मालूम होतीहै, भला जिसकी नींद न टूटे वह कैसे उठै सोनेमें कोई जानताहै कि रातहै वा दिन या यह चेतरहताहै कि अब दिन चढा उठजावो, " सोया मूया बराबर" मसल मशहूरहै।

(दे० सु० कुँ०) नहीं बेटी ! जबरदस्तीकी बात नहींहै, वह सबबात आदत और अभ्यासके अधीनहै. जो देरतक सोताहै वह यदि चाहै कि हम सवेरे उठैं तो दिनमें दो चार बार यह चिंताकरै कि "हम देरतक सोतेहैं बेजा करतेहैं, हमको सवेरे उठना चाहिये" तो अवश्यही उसकी नींद सवेरें टूटजायगी. इस बातको तो सब कोई जानताहै कि सोतेसमय जिसवक्त उठनेके वास्ते चिंता करके सोवै उसीसमय उसकी नींद टूटजाय।

---

१ ब्याहीजायगी।

(दे०चं० कुँ०) अच्छा अम्मा ! आज हम इसबातकी परीक्षा लेंगी यह कहि सब उठीं और दूसरे कार्योंमें लगगई ।

बोध १०.

(लडकियोंको सबेरे उठ क्या करना चाहिये)

प्यारी लडकियो ! जब सबेरे उठो तो मुँह हाथ अच्छी तरह धोडालो, विना मुँह हाथ धोये किसीके सामने न जावो, और जब मुँह हाथ धोचुको, अपने मांके अपने चचानियों और दीदियोंके प्रेमसे पांवलागो ।

फिर जैसे पुरुष लोग सुबहको उठकर आपुसमें सलाम व्यवहार करतेहैं वैसेही तुमलोग भी अपनी प्यारी बहिनोंसे संगियों और हम जोलियोंसे दोनों हाथोंसे नमस्कार करि एक दूसरेसे हँसकर मिलो, मीठी २ बातैं करि चट तुमलोग झाडू ले कोई यह वसारा कोइ वह घर, कोई दालान, कोई आँगन बोहार डालो, कूडा आदिमीसे तुरत बाहर फेंकवादो, घरमें बोहारन पडा नरहै, गृहस्थ को दोषहै ।

(दे० चं० कुँ०) अम्मा ! तब फिर क्या करैं ? ।

(दे०सु० कुँ०) फिर दतुइन कुल्ला करके मुँहमें भिगोया चना डाललो वा कोई मेवा, बदाम, पिस्ता, किशमिश, छोहारा, या कोई मिठाई जिसमें चीनी कमपडीहो सोभी कभी कभी, वा दो चार गुलगुले या थोडासा हलुआ बनाकर खालो, वा गौका दूध जरा गर्मकरके पीलो, तात्पर्य यह कि जिसको जो मवस्सरहो वह मुँहमें डालले जिसमें खराई मिटी रहै ।

(दे० चं० कुँ०) अम्मा ! तब फिर ।

(दे० सु० कुँ०) फिर अपनी २ पुस्तकैं लेले बोस्तानीके निकट जाकर उनको शिरसे नमस्कार करि पढने बैठजावो, और अपने अपने पाठमें ध्यान लगावो ।

बोध ११.

(लडकियोंको किस तरह खाना चाहिये)

(दे० चं० कुँ०) अम्मा ! कल्ह राजाजीके वहांसे जो मिठाई आईहै उसमेंसे थोडासा हमको दो।

(दे० सु० कुँ०) चार लड्डू लाकर चं० कुँ० के हाथपर रखदिया

(दे० चं० कुँ०) अम्मा ! सब मैंहीं खाजाँव।

(दे० सु० कुँ०) नहीं बेटी जब कोई चीज खावो तो अकेले न खावो, अपने भाई बहिनों; अपनी सखी सहेलियोंको बांटकर खावो.जब तुम्हारे खाते समय किसी गरीबका लडका खडा ताकताहो तो थोडासा उसको भी देदो,नहीं तो उसका मन उस चीजपर लगा रहैगा तो अच्छा न होगा। हां जब कोई दूसरा पासमें न हो तो कुछ बातही नहीं पर जब कोई अच्छी चीज पावो तो अपने भाई बहिनोंका हिस्सा उसमें जरूर लगाओ।

खडेखडे रास्ताचलते वा बहुत लोगोंके सामने कोई चीज मति खावो; खातेसमय हँसना बोलना भी न चाहिये।

जहांतक होसकै सिवाय सीधी रसोईके बहुत अगड बगड भूजा भरी न खावो।

मिठाई, खटाई, तिताई तेल यह सब चीजें नुकसानकीहैं, भूजा भरी खानेसे मेदा (आंत) बिगडि जातीहै,चूडा और अरवा चावलका भूजा आँव पैदा करताहै, मिठाई खटाई ज्यादा खानेसे खून बिगडि जाताहै, बदनमें फोडे फुनसी निकल आतेहैं, आदमी कमजोर बलहीन हो जाताहै:अग्नि ठंडी पडजातीहै, बुद्धि मन्द होजातीहै मुँह पीला होजाताहै,और भी बहुतसे रोग उत्पन्न होजातेहैं।

(दे० चं० कुँ०) अम्मा ! जरा ठहरजावो, मुझे एक शंकाहै उसे निवृत्त करतीचलो।

(दे० सु० कुँ०) क्या शंकाहै ?।

(दे० चं० कुँ) आपने अभी फरमायाहै कि "मिठाई खानेसे अग्नि ठंढी पडजातीहै" सो यह क्योंकर, मिठाई मैं खाऊँगी तो चूल्हेमें जों आग जलतीहै वह कैसे ठंढी पडजायगी ?।

(दे० सु० कुँ०) हँसकर–नहीं बेटी चूल्हेके आगसे यहाँ तात्पर्य नहीं है, अग्नि दोप्रकारकी है, एक सामान्य जो सब काष्ठोंमें रहती है और मथन करनेसे प्रगट होतीहै।

दूसरी विशेष वह तीन नामोंसे विदितहै; एक वडवाअग्नि जो समुद्रमें रहती और योजनभरका जल रोज सुखाया करतीहै।

दूसरी जठराग्नि जो सर्व प्राणियोंके, पेटमें रहतीहै और भुक्त अन्न और जलको पचातीहै इस प्रसंगमें उसी अग्निसे तात्पर्यहै।

तीसरी अग्नि वहहै जो संसारमें प्रकट है अर्थात् जो महानंस आदिकोंमें जलतीहै।

(दे० चं० कुँ०) मिठाई खटाई बहुत खातीथी जब यहांतक पढचुकी तो माँसे कहनेलगी।

(दे० चं० कुँ०) तो अम्मा ! अब मैं मिठाई खटाई न खांव।

(दे०सु० कुँ०) नहीं बेटी खावो परन्तु कभी कभी और थोडा-सा, चाट न लगावो, देखो ! रघुवंशी रोज मिठाई खातीथी अपने मांको मिठाईके वास्ते कैसा दिक्क करतीथी, आखिर अभी थोडेही दिन नहुवा कि तमाम शरीर उसका सड गयाथा बहुत दवा हुई तब अच्छा हुवा।

खटाई तिताई भी अन्दाजसे खाना चाहिये, किसी तरकारीमें पडीहो खालो, यह मना नहींहै, पर बहुत लडकियोंकी यह आदत

---

१ रगड । २ मशहूर । ३ चारकोस । ४ खाया पिया । ५ जहां रसोइयाहों ।

पडजातीहै कि जब खाने चलीं तो दो चार मिरचा लेलिया वा इमलीकी पिडिया वा अमचूर वा अचार बिना वह खातीही नहीं, यही आदत खराबहै, इन चीजोंके खानेकी बान न लगाना चाहिये ।

(दे०चं०कुं०) तो अम्मा ! आजसे मिठाई खटाई तो हाथसे न छुवोंगी और और नुकसानकी चीजें भी न खाऊंगी ।

(दे०चं०हासकुँ०) देवीजी ! यह चंद्रज्योतिभी मिठाई खटाई बहुत खातीहै ।

(दे०चं०ज्योतिकुँ०) हां देवीजी सत्यहै पर जबतक गुण अवगुण नहीं जानतीथी तबतक खातीथी,अब जो खांय तो गुनहगार और यह हसें तो कहतीहैं पर देवीजी इनसे पूँछिये, यह जब चौकेपर जातीहैं तो कै मिरचा लेकर जातीहैं ।

(दे०चं०हासकुँ०) हां देवीजी ! इनका कहनाभी ठीकहै, पर अब हमभी न छोडदेंगी और चं० सुखीका हाल सुनिये कि, जब वह चौकेपर गई और उनके आगे चटनी वा अचार वा आलूकी रसेदार तरकारी न रही; तो बस झिनझिना भिनभिनाके तुरत चौकेपरसे उठि आई, क्या मजाल कि विना इन चीजोंके कभी वह कौर उठावे ।

(दे०सु०कुं०) यह सब बहुत खराबहै, अच्छी बात यहहै कि चौकेपर जाय और सोटामिर्ती,रूखा सूखा, जो आगे आजाय वह शीशचढायके खालेकभी न कहे "कि यह चीज नहीं वह चीज खायँगे" अच्छा अबसे तुम लोग अपनी यह सब आदतें छोड़देगी ? ।

(सबोंने) हां देवीजी जरूर छोड देंगी ।

बोध १२.

(लडकियोंको बड़ी बूढ़ियोंकी सेवा करनी चाहिये)

(दे॰सु॰कुँ॰) बेटी तू हमारा पैरवैर कभी नहीं दाबती।
(दे॰चं॰कुँ॰) पैरवैर दाबनेसे क्या मिलताहै? ।
(दे॰सु॰कुँ॰) बड़ा फल मिलताहै।
(दे॰चं॰कुँ॰) मां कितना बडा ? ।
(दे॰सु॰कुँ॰) बेटी बहुत बडा।
(दे॰चं॰कुँ॰) मां बड़े बैल बराबर ? ।
(दे॰सु॰कुँ॰) बेटी और बडा।
(दे॰चं॰कुँ॰) क्या कोंहडे बराबर ? ।
(दे॰सु॰कुँ॰) और बडा।
(दे॰चं॰कुँ॰) क्या हाथी बराबर ?
(दे॰सु॰कुँ॰) बेटी और बडा।
(दे॰चं॰कुँ॰) क्या ताड बराबर ?
(दे॰सु॰कुँ॰) और बडा।
(दे॰चं॰कुँ॰) क्या पहाड बराबर ?
(दे॰सु॰कुँ॰) बेटी और बडा।
(दे॰चं॰कुँ॰) क्या पृथ्वी बराबर ?
(दे॰सु॰कुँ॰) बेटी और बडा।
(दे॰चं॰कुँ॰) क्या पृथ्वीसे आकाशतक ?
(दे॰सु॰कुँ॰) बेटी बेशक. इसवास्ते कि बडी बूढियोंकी सेवा-करनेसे इसलोकमें यश और परलोकमें वैकुण्ठका सुख मिलताहै।

इसलिये बेटी मांके, चचानियोंके और और जो घरमें बडी औरतें हों, उनकी सेवा टहल करनेमें आसकत मत क

शिर दाबो, पैर मलो, उनके शरीरमें उबटन लगावो, उनके दतुइ-न कुल्लाको पानी रखदो, उनका बिछावन बिछादो, समयपर उनको पान सुरती देदो, अपने आछत उनसे काम न करावो ।

प्यारी लडकियो ! जेतनहीं बडी बूढियोंकी सेवा करोगी वोतनहीं दूध पूत सुख सोहागसे भरपूर रहोगी ।

बोध १३.

(लडकियोंको अपनी चचानियोंको भी मांकी बराबर जानना चाहिये)

(दे० चं० कुँ०) अम्मा ! कल्ह तो गुलाबकुँवरिकी मांसे जो चची कहलातीहैं हमसे लडाई होचुकीथी ।

(दे० सु० कुँ०) काहेको किस बातपर ? ।

(दे० चं० कुँ०) कल्ह मैं और गुलाबकुवरि उनके आंगनमें खेलती रहीं बस हमलोगोंने उनके ऊपर धूल डालदिया, बस गुलाब-कुँवरिको तो उन्होंने पकड़के एक लप्पड जोरसे लगाया, और मेरी-तरफ घूरके कहनेलगीं "क्यौंरे तैंभी इसके साथ बिगडी जातीहै" बस यह सुनकर मेराभी मिजाज बिगडगया, जीमें तो आया कि लडबैठूँ, पर चुप होगई ।

(दे० सु० कुँ०) हां बेटी लडना तो जरूर चाहताथा क्यों नहीं लडी?

(दे० चं० कुँ०) मां तुम्हारे डरसे, कहा कि तुमसे पूँछलें तो न आज दूसरे दिन सही ।

(दे० सु० कुँ०) तो जा आज लड आ, किस्से लडेगी तीरसे कि तल्वारसे ? ।

(दे० चं० कुँ०) मां जबानसे लडूँगी ।

(दे० सु० कुँ०) बेटी किसतरह ? ।

(दे० चं० कुँ०) वह कहैगी "तैं" मैंभी कहूँगी "तैं" वह कहैगी सेब० "तुम्हो लुच्ची" मैंभी कहूँगी "तुम्हो पाजी" बस इसीतरह लडूँगी ।

(दे॰सु॰ कुँ॰) हां बेशक, लडना तो तुझे आताहीहै, तो फिर देर क्योंकरतीहै जा, लड आ, नालायक कहींकी, क्योंरे पाजी ! एकतो तूने उनके ऊपर धूल डालदिया, और उन भले आदिमी-ने न तुझे मारा न पीटा, केवल एक साधारणबात कहि दिया, तिसपर तू कहतीहै "कि मैं लड बैठती" खैरियतहुई कि, तूने बे-अदबीकी बात कुछ नहीं कहा; नहींतो तेरे पीठपर आज एक चाम नहीं रहता, मैं जराभी नहीं समझती "कि तू मेरी बेटीहै" मारही डालती. खबरदार ! कान ऐंठ और मेरी बात तुम सब लडकियां याद रक्खो, "कि अपनी चचानियोंको भी अपनी मांके बराबर जानो, उनका अदब करो, उनका कहना न टालो"।

(दे॰ चं॰ कुँ॰) और जो वह अलगहों।

(दे॰ सु॰कुँ॰) तो भी वह तुम्हारी चचीहैं, अलग विलग होना तो दुनियेका धंधाहै, अलग होजानेसे नाता रिस्ता थोडेही छूट जाताहै, तुमको सदा उनका अदब करना चाहिये

(दे॰ चं॰ कुँ॰) और जो मांसे चचानी लडैं तब तो मांकी ओरसे हमको भी लडना चाहिये ?

(दे॰ सु॰ कुँ॰) नहीं बेटी कभी नहीं, वह बहिन बहिनहैं, पाटउपटहैं, वे आपुसमें लडैंभिडैं, जो चाहैं, सो करैं तुमको उनके साथ बेअदबी न करना चाहिये।

चचेरे भाईको भी अपने सगेभाई बराबर समझो, जो चीज खाने पीनेकी अपने सगे भाईको दो, यदि चचेराभाईभी वहांहो तो उसे भी दो, तुम विनाय न करो. अपने परायेका विनाय करना नालायक औरतोंका कामहै, अच्छी स्त्रियां विनाय नहीं करतीं।

अपनेको तो सभी मानतेहैं, जब परायोंको अपने बराबर मानै उसकी तारीफ है।

बोध १४.

(लडकियोंको मेहनतकी आदत लगाना चाहिये)

प्यारी लडकियो! तुम मेहनत करनकी आदत लगावो, मेहनत करनेसे शरीर पुष्ट होताहै, जो खावै पीवै, सब हजम होजाताहै, रोग निकट नहीं आता, शरीरमें फुरती बनी रतीहै, आलस निकट नहींआती, चित्त प्रसन्न रताहै।

सुकुवार मति बनो, सुकुवार होना जिन्दगी नष्ट करना और रोग लगानाहै।

(दे० चं० कुँ०) अम्मा मेहनत तो नान्हजातकी औरतैं करतीहैं बडे आदमीकी औरतैं कौन मेहनत करैं, कहीं आना न जाना न खेत गोडना, न कुदाल चलाना, और फिर मेहनत करनेसे तो आदमी थक जायगा, शरीर दुबला होजायगा, तो फिर मेहनत से क्या फायदा?।

(दे० सु० कुँ) बेटी मेहनत करनेसे न आदमी थक जाताहै न दुबला होजाताहै, और नान्हजातकी औरतैं देखो शरीरसे कैसी पुष्ट और आरोग्य रहतीहैं, क्यों, इसी मेहनतसे, जैसा मेहनत करनेसे तन पुष्ट और मन प्रसन्न होताहै, वैसा सौ रुपयेकी दवासे नहीं होसकता।

और जिसने मेहनतकी आदत नहीं लगाया, उसने अपनी जिंदगी नष्ट किया, दूर क्यों जातीहो, घरहीमें देखलो गुला कुँवरिकी मां जो तेरी चचीहै, वह काहे सुकसुकाई रहतीहैं चेहरा जर्द[१] रहताहै, भलेखायाभी नहीं जाता और जो खातीभी है, वह पचता नहीं, थोडा भी काम करतीहैं, तो कमर थामलेतीहैं बूढीभी नहींहैं, हमसे उमरमें कमहैं फिर क्या कारणहै? यही सबबहै

१ पीला।

के उन्होंने लडकपनमें मेहनतकी आदत नहीं लगाया, सुकुवार बनीरहीं, अब वही सुकुवारपना उनको दुःख देरहाहै ।

देखो ! हमारी सरकारकी भी यह आज्ञाहै कि मदरसोंके लडके डंड़ करैं, मुद्गर हिलावैं, गेंद खेलैं, कुस्ती करैं ।

हमारी जातिमें जो महापुरुषोंकी सभा होतीहै, उसमें भी यह तजबीज पास हुई है कि, कसरतमें लडकोंकी परीक्षा हुवाकरै, जो इसगुणमें निपुण होवैं वे इनाम पायाकरैं ।

(दे० चं० कुँ०) तो क्या स्त्रियां भी दंड, मुद्गर, कुश्ती सीखैं ?

(दे० सु० कुँ०) हँसकर—नहीं बेटी यह तो मर्दोंके कसरतहैं और-तोंके कसरत औरहीहैं, तुम थोडा गेहूँ चक्कीके पास लेचलो तो मैं औरतोंकी कसरत सिखलादों ।

(दे० चं० कुँ०) क्या अम्मा ! कूटने पीसनेको कहोगी ? कूटना पीसना तो नान्हजातिके औरतोंका कामहै वा उनसे जो गरीबहैं, बडे आदमियोंकी स्त्रियां थोडेही कूटती पीसतीहैं सिवाय तुम्हारे कि नौकर चाकर लौंडी नफर सब कुछ भगवान्ने दियाहै, पर तुम रोज थोडा बहुत कूट पीस लेतीहो ।

(दे० सु० कुँ०) बेटी नान्हजाति और बडीजातिकी इसमें कोई बात नहीं है, यहतो शरीरकी पुष्टि वास्तेहै, मैं जो थोडा बहुत इस कामको करलेतीहों तो कुछ लाभही समझके करतीहूं, तुम लोगभी जब करोगी तो तुम लोगोंको भी फायदा बुझायगा ।

यह कहि चं० कुँ० को ले चक्कीके पास बैठ पीसनेलगीं ।

फिरतो रोजका यह नियम होगया कि, जब पाठसे छुट्टी पाती तो चारोंलडकियां थोड़ा बहुत कूट पीसलेतीं ।

बोध १९.

(भिक्षुकको द्वारसे फेरना न चाहिये)

(दे०चं०कुँ०)अम्मा ! न जानैं कौन द्वारपर टर टर कररहाहै?।

(दे०सु०कुँ०) क्या कहताहै ? ।

(दे०चं०कुँ०) कहताहै" सरकारकी जय रहै, कल्यान रहै"

(दे०सु०कुँ०) तो बेटी उसे भीख भेजवा देतीहै,कि कहती है "टर टर कररहाहै" ।

बेटी जब देखो कि भीखमंगा(भिक्षुक) द्वारपर खडा कल्यान मनारहाहै, तुरत उठो और भीख दे आवो वा किसीसे भेजवादो, असकतके मारे यह न कहिदो कि "चलो फेरा करो" ।

द्वारपरसे मंगनके फिर जानेसे लक्ष्मी रूठ जातीहै वह घर थोडे दिनोंमें दरिद्र होजाताहै ।

और जिस घरसे मंगन फिरने नहीं पाते वह घर सदा सुखी रहताहै, देखो गोसाँई तुलसीदासजीका वचन है ।

चौपाई—मंगन लहहिं न जिनके नाहीं । ते नरवर थोरे जगमाहीं ॥

इसका अर्थ यहहै कि जो मंगनेको द्वारसे फेरता नहीं ऐसे श्रेष्ठ पुरुष इस संसारमें कमहैं ।

(दे०चं०कुँ०) अम्मा ! सौ १०० मंगन दिनभरमें आवैं और हरएकको आध आध पाव दिया जाय तो साढेबारहसेर ऽ१२॥ अन्न रोज घरसे निकलैगा तो इतना अन्न प्रतिदिन निकालनेसे महीने वो सालमें कितना निकलैगा मैं तो जानतीहूँ कि,बखारका बखार गायब होजायगा ।

(दे०सु०कुँ०) बेटी हिसाब लगानेसे ऐसाहीहै पर यह धर्मकाजहै धर्मके प्रतापसे अन्न घटता नहीं गोसाँई तुलसीदासका वचनहै ।

दोहा—तुलसी पक्षिनके पिये, घटै न सरिता नीर ॥
धर्म किये धन ना घटै, जो सहाय रघुबीर ॥

बेटी बात यहहै कि, जो कुछ थोडा बहुत होसकै वह मंगनको देदेना चाहिये, निराश फेरना न चाहिये ।

बोध १६.

(दीपकके विषयमें)

प्यारी लडकियो ! देखो संझा(संध्या)समयहै, दीपक जलादो, पहिले सब घरोंके दीपक इकट्ठे कर उनको साफ कर डालो, कल्ह-की जलीबत्ती आज न जलावो, रोज ऐसे अन्दाजकी बत्ती बनावो, कि दूसरे दिनको न रहिजाँय, जो कुछ रहि भी जाँय, तो निकाल डालो, साफ और मिहीं कपडेकी ऐसी बत्तीबनावो कि, जलनेमें न यह बुझाय कि मशालहै, न ऐसा मध्यम जलै कि, सूझ न पडै।

दीपकमें एक बत्ती न डालो, न तीन, दो बत्ती डालो जब वह जलजाय तो और बत्ती डालदो ।

तेलभी दीपकमें अन्दाजसे डालो, न ऐसा कम कि तुरत चुकि जाय न इतना अधिक कि उठाके रखते न बनै ।

दीपक धरनेकी जगह देखलो, ऐसी जगह नहो कि, पीछे खाली हो; और तेल टेमतक न पहुँचै, जो जगह खडबड हो तो मिट्टी वा बालू रख दुरुस्त करदो ।

रातको जब सोनेलगो,तो दीपक बुझादो, ऐसा नहीं कि बेकाम रातभर जलतारहै, हां जहां रातभर जलनेकी जरूरतहो वहां जल-नेदो ।

(दे० चं० कुँ०) अम्मा ! दीपक किसजगह रातभर जलना चाहिये ?

(दे० सु० कुँ०) चार जगह ।

१ जिस घरमें कोई बीमारहो।
२ जिस घरमें लड़का जनाहो।
३ जिस घरमें खजानाहो।
४ जिस घरमें नई दुलहिनहो।

दोहा–रोगी औ व्याहुर तिया, कोश[1] रहै जेहि ठाम॥
जलै दीप तहँ रातभर, जहँ गौनेकी बाम॥

बोध १७.

(पानके विषयमें)

प्यारी लडकियो! देखो तुम्हारे वहां सबकोई पान खाताहै, तमीज़से उसको रक्खो, अन्दाज और सफाईसे बीड़ा लगावो, फूहड औरतोंकी तरहनहीं कि पान आया पनौठीमें रखदिया, न धोया न धाया, न कपडा भिगोया, जैसेही आया, वैसेही पडाहै, गरमीका दिन दोघडी पहर भरमें सूख साखके निरस होगया, पान, धान यह दोनों सूखनेपर कामलायक नहीं रहते।

चूनाहै तो वहभी पत्तेपर पडाहै, थोडी देरमें वहभी सूखगया बीड़ा लगाना हुवा तो उसीसूखे चूनेपर पानी रगडकर बीडा लगा दिया, जिसने खाया उसका मुँह बिगड गया, थूकदिया और कहा "अरे किस नालायकने ऐसा खराब बीडा लगायाहै"

जब पान आवै, अच्छीतरह धोडालो, सडा गला अलग करदो, कपडा भिगो उसमें लपेटकर रखो सूखने न पावैं।

चूना मिसलकै तो पत्थरका रहै, सीपका चूना दाँतोंको कम जोर करदेताहै; जहाँ पत्थरका चूना न मिलै, वहां सीपहीका चूना पाव आधपाव मँगा पानीमें घोलकर छानलो, बरतनमें रख उसको ढांपदो जिसमें गरदा आदिक न पडै।

---

१ खजाना।

कत्था भी छानलो जिसमें मैल निकलिजाय, मिलै तो केवडेमें पका डालो ।

सोपारी भी बनै तो केवडे वा गुलाबमें, नहीं तो पानीहीमें सही भिगोदो, भिगोनेसे उसकी गर्मी निकल जायगी और फालभी अच्छा होगा ।

बीडाभी न ऐसारहै कि मुँहमें न समाय न ऐसा कि दाँतहीमें अटक जाय, अन्दाजका बीडाहो ।

चूनेका दूना खैर, खैरका दूना सोपारी, यह पानका एकमोटा अंदाजहै।

बोध १८.

(लड़कियोंको क्रोध करना न चाहिये)

(दे० चं० कुँ०) मां ! मुझे गुस्सा बहुतहै क्या करूँ ।

(दे० सु० कुँ०) बेटी डूबमरो ।

(दे० चं० कुँ०) मां ! डूब क्यों मरूं ।

(दे० सु० कुँ०) न डूबमरो तो क्रोध मति कियाकरो, क्रोध करनेसे खून (रक्त) जल जाताहै, बुद्धि भ्रष्ट होजाती है, भले बुरेका विचार नष्ट होजाताहै, लडाई भिडाई झगडा तकरार सब इसी क्रोधकी बदौलत होजाताहै ।

"जो नहीं कहना और करना चाहिये वह रिसमें आदिमी कहि और करि डालताहै" ।

"क्रोध पिशाचरूप है, जिसके शिरपर रहताहै उसको बडा कष्ट देताहै"

"क्रोध सर्व पापोंका मूलहै नरकमें वास करताहै" ।

गोसांई तुलसी दासका वचनहै—

दोहा—लषण कह्यो हँसि सुनहु मुनि, क्रोध पापकर मूल ॥
जेहि वश नर अनुचित करहिं, चलहिं विश्व प्रतिकूल॥

"क्रोध ऐसी खराब चीज संसारमें कोई नहीं है"

(दे०चं०कुँ०) अम्मा! क्रोध भी तो किसी कारणसे न होता है क्या अनायासही कोई रिस करताहै?।

किसीने मिथ्यादोष झूठा इलजाम लगा दिया वा कटु वचन कहि दिया वा गाली देदिया तो क्रोध न करै क्या, करै।

(दे० सु० कुँ०) बेटी! यह बात ठीकहै, पर क्रोधसे कोई काम बनता नहीं, औरो बिगडि जाताहै जिससे कुछ कामबनै, वह बात करना चाहिये जो किसीने मिथ्या दोष लगादिया तो क्रोध मतकरो किन्तु बुद्धिमानीसे कहनेवालेको झूठा बनाके लज्जित करदो

वा किसीने गाली देदिया तो यदि तुम क्रोध न करके धीरेसे उससे कहिदो कि "क्योंजी! तुम बडी भली आदमी मालूम होती हो, जो मुँहसे गाली निकालतीहो, यह तो कमीनोंका वतीराहै" फिर देखो गाली देनेवाली कैसी खिसियाती है।

(दे० चं० कुँ०) हां अम्मा! आपका फरमाना बहुत ठीक, बाकी जब इतना सहन हो तब तो।

(दे० सु० कुँ०) बेटी! जो विद्या पढताहै वह बातका सहन करनाभी सीखताहै, जब बातका सहन न हुआ, तो विद्या पढनेका उसको कुछ फल न मिला।

जब देखै कि किसी बातपर हमको क्रोध आताहै, उसी समय चेत कर ले, कि हमने पढाहै "क्रोध नहीं करना चाहिये" बस तुरत अपना मन रोक ले।

बेटी! जो बात सहन करजाय वह मानुष नहीं देवताहै, संसारमें उसकी बडी प्रशंसा होतीहै, उसका मन सदा सुखी रहता है।

सो बेटी! बातका सहन अति उत्तम गुणहै इसको कभी भूलना न चाहिये, गोसाईं तुलसीदासजीका वचनहै।

दोहा—मूरखमुख जनु विवरहै, निकसत वचन भुजंग ॥
ताकर औषध मौनहै, विष नहिं व्यापै अंग ॥ १ ॥

बेटी ! मैं अपना हाल कहतीहूं कि जब मैं दश वर्षकी थी, तो एकबार अपनी चचेरी बहिनसे किसी बातपर लडनेलगी, मा कहीं बिरादरीमें गईथीं, जब आईं और यह हाल सुना, तो मुझे बुलाके कहा " क्यों बेटी ! यह तेरी अकिलहै, भले आदिमीकी लडकियां भी कहीं किसीसे लडती झगडतीहैं, लडाई झगडेका नाम सुनके लज्जा खातीहैं, लडना झगडना नीचोंका कामहै, खबरदार कान ऐंठ और शपथकर कि अब कभी न लडूंगी" ।

मैंने रोदिया और अपने हाथसे अपना कान खूबजोरसे ऐंठा और प्रण किया कि जबतक जीवोंगी, तबतक किसीसे न लडूंगी।

बेटी ! उस दिनसे आजतक मैंने किसीसे लडाई झगडा न किया और अपने मनमें यहांतक सोचेहूं, कि जो कोई हमें मार भी देदेगा, गालीभी देदेगा तो भी सहिलोंगी, पर लडाई झगडा कदापि न करूंगी ।

बेटी ! क्रोधहीसे लडाई झगडा होताहै और लडाई झगडासे स्त्रियोंकी बडी बदनामी होतीहै, इसलिये वातका सहन करलेना अति उत्तम है ।

(दे०चं०कुँ० आदिक) अम्मा ! वहुत ठीक बहुतठीक निस्संदेह बातका सहना बडा सुखदाई है, हमलोग ऐसेही करेंगी, यह बडे हितकी बात ज्ञात[१] होतीहै इस्से हमलोग बदनामीसे वचैंगी, जगत्में मर्याद पावैंगी, और हम भगवानसे मनातीहैं, कि हमलोगोंको वातके सहनकी शक्तिदे जिसमें भाई वहिन देवरान जेठान अपना पराया किसीसे झगडा लड़ाई नकरैं ।

---

१ मालूम ।

(झूठ और सच बोलनेके गुण दोष)

बोध १९.

(दे० सु० कुँ०) बेटी तू कहां गईथी ? ।

(दे० चं० कुँ०) अम्मा सच कहूं वा झूठ ।

(दे० सु० कुँ०) बेटी तुम कभी झूठ न बोलो, झूठ बोलना बडा पापहै, झूठेको कोई प्यार नहीं करता, न उसकी बातको कोई प्रतीत करताहै ।

झूठे आदिमीसे भगवान बहुत नाखुश होतेहैं, उसको कभी सुख नहीं देते ।

तुमको सदा सच बोलना चाहिये, सच बोलना बहुत अच्छाहै सच्चे आदिमीकी बातपर सब कोई विश्वास करतेहैं, सच्चेको कभी दुःख नहीं होता, मसलहै "साँचको आँच नहीं।"

सच्चे आदिमीसे परमेश्वर राजी रहते हैं ।

दोहा—साँच बराबर तप नही, झूठ बराबर पाप ॥
जाके हिरदय साँचहै, ताके हिरदय आप ॥

(दे० चं० कुं०) क्यों अम्मा ! हमसे कोई कसूर होजाय और तुम पूछो "यह काम तैंने कियाहै" तो क्या हम झूठ न बोलैं ? सच कहैंगी तो आप रिसियावगी नहीं जरूर नाखुश होकर मारोगी और झूठ कहि दिया बच गई ।

(दे० सु० कुं०) नहीं बेटी यह बात नहीं, विचार करो कि एक कसूर तो करचुकी अब उसके छिपानेको झूठ बोली तो दो कसूर होगये यह अच्छी बात नहीं है ।

और झूठ बोलकर हमसे बचभीगई तो क्या परमेश्वरसे तो नहीं बचसकती क्योंकि वह सबकुछ जानता सुनता और देखताहै ।

और सच बोलनेसे कोई नाखुश न होगा किंतु तुम्हारा अपराध क्षमा करदेगा ।

देखो इसपर एक इतिहास मैं कहतीहूं सुनो ।

इतिहास ।

एक आदिमीको किसी अपराधपर राजाजीने फांसीका हुक्म दिया, उस आदिमीने राजासे कहा "महाराज आज्ञा शीशपर, पर मैं एक मित्रकी अँगूठी मँगनी लायाहूं और आजही उसको वापस देनेका करारहै, जो आज न दूँगा तो झूठा होजाऊंगा, सो मुझे छुट्टी मिलै तो मित्रको अँगूठी देकर कल्ह भोरही हाजिर होजाऊंगा"

राजाजीने उसकी झुठाई सचाई देखनेको उसे छुट्टी देदिया और अपना एक आदिमी उसके पीछे करदिया कि वह छिपके चुपके उसका हाल देखै कि वह कहां जाताहै और क्या करताहै ।

वह आदिमी अपने मित्रके घरगया और कहा मित्र अपनी अँगूठी लो हम जाते हैं ।

(मित्र) कहां जातेहो ।

(मित्र) हमको फांसीका हुकुम होचुकाहै, तुम्हारी अँगूठी तुम्हैं देनेको राजाजीसे छुट्टी लेकर आयारहा, अब तुम्हारी अँगूठी तुम्हैं दिया अब जाताहूं ।

(मित्र) अजी तुम तो बडे नादान मालूम होतेहो, कोई आपसे आप फांसीपर जाताहै, कहीं छिपरहो वा भागिजावो, दो चार दिन, वा दो चार महीने राजा इधर उधर खोज करैगा, फिर भूलि जायगा, जान बचिजायगी ।

(मित्र) भाई यह बात तो सचहै कि यदि हम भागिजाँय तो बचि जायँगे, पर राजाजीसे तो हम झूठे पडेंगे और झूठा होकर

संसारमें जीना हमको पसंद नहीं, सचाईके साथ प्राण जाँय तो हम बहुत प्रसन्नहैं।

यह कहि उठा और ठीक अपने करारपर राजाके पास हाजिर हुवा।

वह आदमी जो छिपा छिपा उसके संग लगाथा, उसने सब वृत्तांत राजाजीसे निवेदन किया, राजा उसके सचाईसे बहुत प्रसन्न हुवा और उसको फांसीसे छोड दिया और अपने यहां नौकर रखलिया।

देख बेटी! सचाई ऐसी चीजहै कि जानभी बचगई और नौकरभी होगया।

इसलिये "सदा सच बोलना चाहिये"

(दे० चं० कुँ०) अम्मा मैंने सुनाहै कि कहीं कहीं झूठ बोलनाभी दूषित नहींहै।

(दे० सु० कुँ०) बेटी शास्त्रमें पाँच जगह झूँठ बोलना पाप नहीं समझा गयाहै (१) दिल्लगीके प्रसंगमें (२) स्त्रीका मन प्रसन्न करनेके लिये (३) विवाहके समय (४) प्राणसंकटमें (५) सर्वस्व नाशसमय।

श्लोक—न नर्मयुक्तं वचनं हिनस्ति न स्त्रीषु भूपे न विवाहकाले॥
प्राणात्यये सर्वधनापहारे पंचानृतान्याहुरपातकानि॥

बोध २०.

(बोलचालके गुण दोषका वर्णन)

(दे० सु० कुँ०) जिस गुणसे भले आदमी और कमीनोंका पँहचान होताहै।

जो गुण सब गुणोंमें ऐसा उत्तमहै, जैसा नदियोंमें गंगा, तारोंमें चन्द्रमा, शृंगारोंमें सेंदुर और नरोंमें राजाहै, जिस गुणसे स्त्रियां ऐसी शोभा पातीहैं, जैसे स्त्री पुरुषसे, शरीर प्राणसे, सरवर जलसे और

जल कमलसे शोभा पाताहै, प्यारी लडकियो बतलावो तो वह कौन गुणहै ? अच्छा हमीं बतलाती हैं तुम सुनो ।

दो गुणहैं सुबोल, सुचाल ।

जिसका सुन्दर बोल चालहै, उसको जाने रईसकी कन्याहै, और जिसका बोल चाल अच्छा नहीं, वह चाहै कैसेहू सुन्दरहो कितनहू गहना पहिने कैसहू धनवालीहो, पर जानो कि वह दो कौडीकीहै ।

बोल ।

बुद्धिमानोंने बोलके इतने गुण कहेहैं ।

दोहा—सफल मधुर सत साफ ह्वै, और समय अनुसार ॥
बोलीके ये गुण कहे, कवि कोविद[1] निरधार[2] ॥
इतने गुण युत बोल जो, सो सुबोल पहिचान ॥
नरह्वै अथवा नारिह्वै, तेहि बडभागी जान ॥

अब बोलके दोष सुनो—

दोहा—कटु असत्य लागुन खरुस, और समय विपरीत ॥
इतने अवगुण बोलके, भाषत बुधजन नीत ॥
ना अस धीरे बोलिये, पडै न नेकु सुनाय ॥
ना अस बोलिय जोरसे, सुनत कान फटिजाय ॥

(दे॰ चं॰ कुं॰) अम्मा ! आजका पाठ तो बडा सुन्दरहै भले समझाय दीजिये !

(दे॰चं॰कुं॰ज्योति आदिक) हां देवीजी हम लोगोंकी समझमें भी ये गुण अवगुण भले नहीं आये, आप कृपाकरके भली प्रकार समझा दीजिये, जिसमें हमलोग भी अपने बोलसे

---

१ पंडित । २ निश्चय ।

दोष दूरकरके गुणोंको धारण करैं, और संसारमें नेकनाम रहकर आपका यश गावैं ।

(दे०सु० कुँ०) प्रसन्न होकर हां हां मैं भले समझा दूंगी जो न समझमें आयाहो वह पूछलो ।

(दे० चं० कुँ) पहिला गुण लिखाहै (सफल) हो जिसका अर्थ यह हुवा कि फलसहितहो, तो फलतो वृक्षमें लगतेहैं बातमें फल कैसा ?।

(दे०सु ०कुँ) हां ! बेटी सफलसे यह मतलब नहीं कि बोलनेमें इमलीका फहुवा वा आमका टिकोरा लगजाय, इस्से यह तात्पर्य है कि किसी प्रयोजनके साथ हो,निरर्थक न हो,जैसे हम कहैं:—फलानेके मुँहमें इतने दांतहैं, फलानेकी इतनी लाम्बी दाढी है । भला बतलावो ऐसी बातोंसे कौन प्रयोजन सिद्ध हुवा ।

और गुण ढंगकी कोई बात करना, शास्त्रविद्याकी कुछ चरचा करना, घर गृहस्थीके विषयमें बात चीत करना, यह सब बातें सफलहैं, तात्पर्य यहहै कि जिस बातसे सुननेवालेको कुछ लाभ,वा कहनेवालेको कुछ फायदा हो वह बात सफलहै ।

(दे० चं० कुँ०) हां आम्मा ! यहतो मैं समझगई, अब दूसरा गुणलिखाहै, (मधुर) अर्थात् मीठा, सो मीठाई तो गुडमें, मिश्री में होतीहै, बातमें कैसी मिठाई ? ।

(दे० सु० कुँ०) बेटी बातमें जो मिठाई होतीहै, वह किसीमें नहीं होती ।

बेटी ! जो बात वेकपटकी होगी, प्रसन्नमनसे कही जायगी; हितसाधक होगी;मधुर स्वरसे बोली जायगी, वह बात ऐसी होगी कि, अमृतका रसभी उसको न पावैगा, गुड चीनीकी कौन बातहै ।

सवैया ।

बोलीये री सखी माधुरी बोल जो दे दिलखोल सुनै जो ये बोलन॥
बोलको मोल नहीं सजनी ये गिनीगई वस्तुनमाहिं अमोलन ॥
सत्यहो,साफहो,हो फलसों,छलसों न छुआव नहो श्रुति छोलन ॥
ऐसो सुबोलहै बोल किधों है सुबोध किधों श्रुति अमृतघोलन॥१॥

(दे० चं०कुँ०) तो अम्मा जो मीठा बोल बोलता होगा वह मिठाई तो न खाता होगा उसका मुँहतो बोलनेहीसे मीठा होजाता होगा ।

(दे० सु० कुँ०) हँसकर–बेटी बात समझकर मसखरापन न कियाकर. नहीं तो मारूंगी ।

(दे०चं०कुँ०) बडे आदबसेः--मां आपकी मार तो दूसरोंके प्यारसे अच्छाहै पर मुझे भले समझा दीजिये, कि जब बात मीठी होतीहै, तो बात करनेवालेका मुँह क्यों नहीं मीठा होजाता ?

(दे०सु०कुँ०) बेटी मुँहकी जीभ गुड़ चीनीकी मिठाईसे मीठी होतीहै और बातकी मिठाई हृदयकी जीभको मीठी करतीहै बेटी बातकी मिठाईसे यह तात्पर्यहै कि, सुनने वालेका मन प्रसन्न होजाय, उसका चित्त चाहै कि इनकी बात सुनाही करैं ।

बेटी बहुत ऐसी स्त्री बहुत ऐसे पुरुषहैं कि, जिनके वचन सुननेसे मन नहीं अघाता ॥

दोहा--तुलसी मीठे वचनसे, सुख उपजै चहुँओर ॥
वसीकरन यह मंत्रहै, तजिये वचन कठोर ॥

(दे ० चं० कुँ०)हां अम्मा यह तो समझगई अब तीसरा गुण लिखाहै (सत्य) तो यह तो में समझती हूँ कि "जिस बात वा

१ कान ।

जिस समाचारको जैसा आँखोंसे देखै, कानोंसे सुनै, हृदयसे जानै, वैसा ही मुखसे कहै।

(दे० सु० कुँ०) हां बेटी बहुत ठीक और निर्दोष लक्षण सचाईके हैं।

(दे० चं० कुँ) अम्मा यह आपकी शिक्षाका प्रतापहै नहीं तो हमें अभी दहिना बायां हाथभी नहीं जनाता, और लक्षण तो बहुत दूर, हां अम्मा! चौथा गुण लिखाहै (साफ) हो, तो साफ क्या जैसे धोलाया कपड़ा।

(दे० सु० कुँ०) हँसकर धोलाया कपड़ा नहीं, जैसे तेरा शिर नालायक कहीं की, जब देखो तब मसखरापन किया करतीहै नालायक सुन, साफ़से यह मतलबहै, कि पूरीबात हो, अर्थात् सुननेवालेको कहनेवालेका पूरा मनंसा[१] समझमें आजाय।

बहुतलोग अधूरी बात कहतेहैं, जैसे किसीने पूछा "घीका घडा कहां है" कहिदिया "पश्चिमके घरमें है" मानिलो कि पश्चिमके घरमें बहुतसे घडे रक्खेहैं, अब वह किस घडेको घीका घडा जानैगा, और यही बात यदि यों कही जाय "पश्चिमके घरमें दक्षिणदिशाकी दीवारमें जो पूर्व किनारे ताखहै उसमें कपडेसे मुँह बँधा हुवा जो घडाहै वही घीका घडाहै" अब देखो कि इस बातका सुननेवाला अंधेरेमें चलाजायगा और घीका घडा उठाय लावैगा, और अधूरे बातका सुननेवाला चिराग लेके भी जायगा तो उसको घीका घडा न मिलैगा।

(दे० चं० कुँ०) अम्मा! पूरे और अधूरे बातका निर्णयतो आपने भलीप्रकार किया, अब पाँचवाँ गुण जो लिखाहै (समय अनुसार) इसकोभी भलीभांति समझा दीजिये।

---

१ तात्पर्य।

(दे॰सु॰कुँ॰) बेटी बातकी शोभातो जबही है जब समय अनुसार हो, और समयविरुद्ध बात अच्छी नहीं होती ।

जैसे व्याहके समयकी गाली सबको भली लगतीहै, और वही गाली दूसरे समयपर विषसमान बुझतीहै ।

हास विलासकी बात सेजसमय सुख देतीहै, और क्रोधसमय वही बात अधिक क्रोधको बढातीहै ।

(सवैया)

बात न नेकु सोहात समै विनु पाय समय् सोइ होत सोहावन ।
क्रोधमें हास बढावत क्रोध रु सेजसमय् सोइ हर्ष बढावन ।
गारी की बात सोहात न काहुपै व्याहमें होत सोई मनभावन ।
बोलिये ताते समै अनुसार सुबोध बधू सुनु मोर सिखावन ॥

बेटी ! बात जब समय विपरीत होगी तो भली न होगी जैसे पुरुषका तो आज यह हालहै कि, कचहरीमें एक टका मिलानहीं द्वारपर लाखूशाह और भीखूमलके आदमी तकाजेको बैठेहैं, घरमें खानेको न जिन्स न मँगानेको बाहर रुपयाहै इसका अलग तरद्दुद, लाला साहेब घरमें गये कि चलैं प्रियाके साथ बोल बतिआयके जी बहलाय आवैं,वहां प्रियाजी लाला साहेबके पास आय खडी हुई और मिजाजका हाल तो जाना नहीं, कहने लगीं "अरे हमरे नथिअवोकै कौनी फिकिरहै, दशो रुपया औरो पडिजात तो भला पचास कतो ह्वैजात, आ, करधनियां तो बनिन चुकल जबसे डोलीपरसे उतरली तबसे कहत २ मुँह वेहया होय गइल बाकी नाहियैं बनल, नाहियैं बनल, अच्छा आज चारि रुपया तो देव करनफूलवै बनवायलेई ढरकीकानेमें नाहीं सहिजात ।

बस लाला साहेब तो मारे रिसके जल भुन गये और दो चार बातें सख्त सुस्त कहिकर मुँह ऐसा मुँहलिये बाहर चले आये ।

बेटी देख समयविरुद्ध होनेसे दोनोंको खेद हुवा ।

(दे० चं०कुँ) बेशक बात समय पहिचान कर बोलना चाहिये ।

अच्छा अम्मा बोलके गुणोंको तो समझगई, अब दोषोंको भी समझा दीजिये ।

पहिले लिखाहै (कटु) अर्थात कडू सो अबताईं तो मैं जानती थी कि अफयून कडू होताहै पर अब मालूम होताहै कि बात भी कडुई होतीहै ।

(दे० सु० कुँ०) बेटी हां बातमें जैसेही मिठाई होतीहै वैसेही कडुआईभी ऐसी होतीहैकि अफयून क्या हलाहलको बात करतीहै।

(कवित्त १)

बातसी न मीठी अली डलीहोत मिश्रीकी, बातसी न खट्टी कोऊ चूकमें खटाई है। बातसी न कडुवाई होतहै हलाहलमें, अमृतमें होत कहां ऐसी मधुरताई हैं। कहत सुबोध बात अजब करामात यामें, निकम्मे रोलावत और हँसावत हरषाई है । बातहीते भाई कोऊ खात है मलाई सुख, कोऊ जूताखाय निज दांतहू गँवाई है ।

(कवित्त २)

बातते सुजात औ कुजातहू लखायजात, बातहीते कोऊ मेवा खात कोऊ लातहै । बातहीते बात बनिजात औ बिगडि जात, बातहीते जात रंज और बढिजातहै ॥ बातहीते हिय हरषात रिसिआय जात, नातते वेनात औ बेनात होत नातहै । बात ऐसो तात-भलो बुरो कोऊ बात नहीं, बातें हाथीपावै हाथी पाँवतलेजातहै २

बेटी जिसबातसे किसीका दिल दुखै, किसीका मानभंग होय कोई गुप्तदोष बदनामीवास्ते प्रगट कियाजाय, वह बात अवश्य कडुई होगी ।

जैसे कोई कोई नालायक स्त्री झगडे तकरारमें कह बैठतीहैं, "तेरा पूत भतार मरिजाय, तेरी बेटी रांड होजाय" भला सुननेवाले को ऐसी बात कैसे कडुई न लगैगी।

बहुधा देवरानियां लडाईमें क्रोधवश अपने जेठानीको अपने सासको तैतुकार करदेतीहैं जिस्से उनका मानभंग होजाताहै, ऐसी बातें कडुई कहलातीं हैं।

(दे० चं० कुँ) अय अम्मा। क्या कोई औरत ऐसाभी कहिदेती हैं कि "तेरा पूत भतार मरिजाय"।

(दे० सु० कुँ०) बेटी कमीनी और नालायक स्त्रियां कहनेको तो क्या नहीं कहिडालतीं, पर हां भलेआदमीकी बहू बेटियें कदापि ऐसी बात मुँहसे नहीं निकालतीं।

(दे० चं कुँ०) माँ मैं तो भगवान्‌से मनातीहूँ कि जिस दिन मेरे मुँहसे ऐसी बात निकलजाय उसीदिन मुझे मौत भी आजाय, कि फिर मैं किसीको मुह न दिखलाऊं।

अच्छा अम्मा, एकबात और भी समझा दीजिये तो अब हमलोग दूसरा कार्य करैं।

यह जो लिखाहै कि "न धीरे बोलिये न जोरसे" तो यह क्या?।

(दे० सु० कुँ०) यह क्या इसका तात्पर्य तो खुला हुवाहै बहुत औरतैं नाक दबाके मिन मिन बोलतीहैं, कोई कोई बिना नाके दबाये ऐसा मिही काततीहैं कि सुनाई नहींदेता, सो ऐसा बोलना न चाहिये न ऐसे जोरसे बोलना चाहिये कि, दीवारके बाहर मरदोंके कानतक पहुँचि जाय।

(दे० चं० कुँ०) अम्मा दीवारके बाहर आवाज मरदोंके कानतक पहुँचि तो इससे क्या?।

(दे० सु० कुँ०) अरी बेटी! तैने तो गजब किया जो कहतीहै "इससे क्या" भला जिस बेटी पतोहकी बोल बाहर मरदोंके कान तक पहुँची वह जन्मतेही क्यों न मरगई।

अरी बेटी उस मरदकी नाक कटिजातीहै, उस मरदकी पगडी हेंठ होजातीहै, जिसकी औरतकी बोली दश मरदोंमें सुनाई देतीहै।

वह घर दरिद्र हो जाताहै, वह औरत आपभी दुःखी रहतीहै और सारे संबंधियोंको दुःखी रखतीहै।

बेटी जिस औरतकी बोली मरदोंने सुनलिया, मुझको आश्चर्य-के ऐसी बेहया औरत कैसे जीतीहै, ऐसी निलज निकम्मी कैसे किसीको मुँह देखलातीहै, वह क्यों चुल्लूभर पानीमें डूब नहीं मरती, वह विष खाय क्यों नहीं मरजाती?।

बेटी! स्त्रियोंकोइस बातका बहुत खयाल चाहिये कि चाहै नैहरहो वा सासुर, सब जगह ऐसे अन्दाजसे बोलै कि बाहर न सुनाई दे।

दोहा—तुम बोलत क्यों जोरसे, सुनिहैं बाहर लोग ॥
बडी लाजकी बात यह, पतिको बाढत सोग ॥
पुत्री तुमहिं न चाहिये, बोलहु बचन कठोर ॥
अस बोलो जाके सुने, सुख उपजे चहुँओर ॥
सबसों मीठो बोलिये, सबसों रखिये प्रीति ॥
उचित यही अरु है यही, बडे घरनकी रीति ॥

बेटी विना विद्याके बुद्धि नहीं आती, और बुद्धि विना लोकका कामहो वा परलोकका कोई नहीं सुधरता।

(दे० चं० कुँ०) अम्मा! विद्या धन्यहै जो आदमीको गुण अवगुणका ज्ञान कराके अवगुणका त्याग और गुण ग्रहण करनेकी सामर्थ्य देतीहै।

(दे० चं० हा० कुँ० आदि) देवीजी आप धन्यहैं जो ऐसी हितकी बातैं सिखलातीहैं, नहीं तो हमलोगभी मूढ और नालायक औरतोंकी तरह बोलतीं और धिक्जीवन बनी रहतीं ।

यह कहि सबोंने दे० सु० कुँ० को नमस्कार किया ।

(दे० चं० कुँ०) अम्मा ! बोलका गुण दोष तो आपने वर्णन किया, अब इसी प्रसंगमें चालके भी गुण दोष वर्णन कीजिये ।

(दे० सु० कुँ०) बेटी अब कलह, आज भोजनका जून होगया

बोध २१.

(चाल)

(दे०सु०कुँ०)बेटी जब चलो नीची निगाहकिये चलो, रस्ता देखती चलो. धीरे धीरे चलो; बहुत उतावल पांव मति डालो,धब धब पैर बुलाती न चलो ।

जो उतावल पांव चलताहै वह दरिद्री रहताहै जो ऊंची निगाहकरके वा इधर उधर ताकता चलताहै, कभीतो उसके पाँवमें कांटे गड़ जातेहैं, कभी ठेस लगजातीहैं, कभी सांप, बिच्छू काटखातेहैं, इसलिये तुम ऊंची निगाहकिये मत चलो ।

तुम अपने गहनोंको झमकाती, बदनसे अठिलाती मत चलो, यह पतुरियोंका वतीराहै, तुम्हारी उपमा शास्त्रमें (गजगामिन) लिखाहै, जैसे हाथी शिरपर चला आवै तो आहट नहीं मिलता, उसी तरह तुम्हारे चालकी आहटभी किसीको न मिलनी चाहिये ।

तुम ऐसा सम्हालके चलो कि,कडा,छडा, घुँघुरू,पाँवजेब,बाँके बिछुआ सब कुछ पहिने हो, तौभी किसीका झनकार नमालूम हो-

(दे० चं० कुँ०) अम्मा यह कैसे हो सकताहै कि घुँघुरू पाँवमें रहै और चलतेहुये न बोलै ।

(दे० सु० कुँ०) घुँघुरूदार पायजेब पहिनकर घर आंगन सब घूमआई और घुंघुरू न बजे ।

(दे० चं० कुँ०) हां अम्मा ! आपतो पैर जल्दी जल्दी भी डालतीथी पर घुंघुरू सच नहीं बोले, अच्छा अब हमलोगभी ऐसेही चलना सीखेंगी ।

(दे० सु० कुँ०) बेटी बेशक चाल अच्छीही सीखना चाहिये, बेटी जब मैं पढतीथी तो मेरी मांने इसी बोल चाल पर कुछ दोहे लिखदिये थे, वे मुझको अबतक यादहैं ।

दोहा—चलिये चाल सुचाल अरु, बोलिये बोल सुबोल ॥
जातेसकल बखानही, लखि स्वभाव अनमोल ॥
पितुकुलसरकी कमलनी, पतिसरकी तुम पाग ॥
चाल चलो अस सुन्दरी, लगै न कुलको दाग ॥
तुमतो हौ अस्थानकी, उत्तमकुलकी बाल ॥
चाल चलो मरजादकी, सब लखि होहिं निहाल ॥
चलतीहौ अठिलात तुम, नहिं आवत तोहिं लाज ॥
भलेलोग क्या कहैंगे, यह नीचनको काज ॥
शिर निहुडाये चलहु तुम, धीरे धरिये पाव ॥
चालचलो अस लाडिली, रहै बापको नाव ॥
पति निजपति कुलकी अहौ, पितुकुलकी मर्याद ॥
पुत्री चलहु विचारते, लहु जीवन सुख स्वाद ॥
बदनामी जाकी भई, दश मरदनके बीच ॥
मरिजावो तेहि है भलो, खायके माहुर मीच ॥
जीवन ताकर है सफल, सबै बखानै जाहि ॥
जाके चाल स्वभावपर, फीसधरै कोउ नाहिं ॥

१ तालाब ।

जेहि कुलवंती नारिको, सब कोउ करत बखान ॥
ताकर पति अतिसुख लहै, मानहु आतमज्ञान[1] ॥
लगै नीक नहिं काहुको, भलो कहै कोउ नाहिं ॥
ता पतिकी छाती फटै, रहै दुखित मन माहिं ॥
गहनेको झमकाइबो, है वेश्याको चाल ॥
पुत्री तुम अस मति चलो, तुम कुलवंतीबाल ॥
आँधी अस मति मग चलो, धरो न धब धब पाव ॥
यह लुच्चिनकी चालहै, जात मात को नाव ॥
मात कोख कीजै सफल, धन्य कहै सब कोय ॥
सुन्दर शील स्वभावते, अति गुणवंती होय ॥

बोध २२.

(सुन्दर स्वभाव किसको कहतेहैं)

(दे० चं० कुँ०) अम्मा, कलहके दोहोंमें एकजगह सुन्दर स्वभावका शब्द आयाहै, सो मुझे समझा दीजिये कि सुन्दर स्वभाव किसको कहतेहैं ।

(दे० सु० कुँ०) बेटी जिसके स्वभावमें क्षमा, दया, शील, संतोषहो वह स्वभाव सुन्दर कहलाताहै, सो जैसे आकाश तारोंसे और भूमि राजासे शोभा पातीहै, वैसेही स्त्रियां सुन्दर स्वभावसे शोभा पाती हैं ।

(दे० चं० कुँ०) अम्मा! इन चारोंका लक्षण वर्णन कीजिये जिसमें हमलोग उनको समझकर अपने स्वभावमें उनको धारणकरें

(दे० सु० कुँ०) सामर्थ्य होते हुये किसीके अपराधका सहन करके उसको दंड न देना, यह क्षमाका लक्षणहै ।

---

१ परमेश्वरका ज्ञान ।

जैसे नौकरने कोई अपराध किया, और हमारा पूरा अख्तियारहै कि जो दंड चाहैं उसको दें, और हम उसको दंड न देकर उसका कसूर माफ करदें तो यह क्षमाहै ॥

क्षमावानका कलेजा सदा ठंढा, और चित्त प्रसन्न रहताहै, कोई संकट उसके निकट नहीं आता और जो दैवसंयोगते कोई संकट भी आय जाताहै तो क्षमाके प्रतापसे तुरन्त निवृत्त होजाताहै ।

क्षमावानके पास लक्ष्मी सुख सोहाग निवास करतीहै और क्षमा रहितके पास दुःख दरिद्रता वास करतेहैं ।

जो औरोंका अपराध क्षमा करताहै उसका अपराध भगवान् क्षमा करतेहैं इसलिये अवश्य क्षमाका स्वभाव रखना चाहिये ।

(दयाका लक्षण)

किसी दुःखीको देखकर मन दुःखी होजाय और यथाशक्ति उसके निवृत्तिका उपाय करै, यह दयाका लक्षणहै । सो दया दो प्रकारकी है, एक परायेपर दयाकरना, दूसरे अपने ऊपर दया करना ।

जैसे देखा कि; कोई क्षुधाजन्य दुःखसे दुःखीहै, और उसको कुछ अन्न भोजन देदिया, जिससे उसका भूँखजनित दुःख निवृत्त होगया यह परदयाका लक्षणहै, और अपनेमें कोई ऐसी बुराईहै जिससे बदनामी होतीहै और उस बदनामीसे अपनेको क्लेश होता है, हम उस बुराईको अपने स्वभावसे निकालदें और बदनामीके दुःखसे बच जायँ, तो यह अपने ऊपर दयाहै ।

सो मेरी मति तो यहहै कि परायेपर दया करनेसे अपने ऊपर दया करना अति उत्तम और आवश्यक है ।

५

(शील)

शीलके अर्थ तो स्वभावकेहैं, पर उस स्वभावको लोग शील कहते हैं जिससे किसीका दिल न दुखे, अर्थात् सबकी मुहब्बत रखना, सबको यथायोग्य सन्मानकरना, यहभी गुण मनुष्यमें अतिउत्तम है।

(संतोष)

यथा प्राप्तमें संतुष्ट रहनेका नाम संतोष है अर्थात् जितना मिलै उतनेहीमें संतुष्ट रहकर अधिककी तृष्णा न करै ।

बेटी संतोष परमसुखका देनेवालाहै, जिसको एक जून भोजन प्राप्त हो और मनमें उसके संतोष हो तो जो सुख उसको है, वह उस राजाको नहींहै जिसकेपास सातोंद्वीपका राज्यहै और संतोष नहींहै-

शास्त्रमें लिखाहै, "संतोषं परमं सुखं" अर्थात् संतोष परम-सुखका साधनहै ।

दोहा-जाके हिय संतोषहै, ताके हिय सुख खान ॥
राज मिले नहिं मिलतहै, सुख संतोष समान ॥
जो सुखहै संतोषमें, स्वर्ग माहिं सो नाहिं ॥
सुमुख तिया संतोषको, धारो निज मनमाहिं ॥
सुखदायक सुखको सदन, सुखस्वरूप सुखमूर ॥
जाके हिय संतोषहै, ताके सब दुख दूर ॥
दुख रवि ताप नशावनो, क्षमा छांह घन जान ॥
सुख कुमुदिन विकसित करन, शीतलचन्द्र समान ।
दया दुगुन सुख देतहै, क्षमा छगुन सुखदाय ॥
सत्तशील संतोपते, सतगुण सुख अधिकाय ॥
दुखसागरते तरनको, है संतोष जहाज ॥
मिलै न सुख संतोष बिनु, सात द्वीपको राज ॥

(दे०चं०कुँ०) अम्मा ! आप दो ऐसी स्त्रियोंका समाचार वर्णन कीजिये, जिसमें एकका तो सुन्दर स्वभावहो, और दूसरीका

विरुद्ध, और अपने अपने स्वभावसे दोनों जिस जिस दशाको प्राप्त हुई हों उसकाभी वर्णन कीजिये।

(दे० सु० कुँ०) बेटी! मैं सुनीहुई नहीं, किन्तु अपने आंखों-की देखीहुई कहतीहूं।

भावनगरमें जहां मेरा ननिहालहै, वहाँ दो चार बार मैं अपनी माके साथ गईहूं, वहां सोहनलाल और मोहनलाल दो भाई थे मोहनलालकी स्त्रीका बडा सुन्दर स्वभाव था, क्षमा, दया, शील, संतोष सब उसमें था।

मैंने क्या! किसीने किसीपर क्रोध करते उन्हें नहीं देखा, जिसको रिसातीभी थीं, तो ऐसे हँसते स्वभावसे कि उसको मालूम होताथा, कि हमपर कृपा कर रहीहैं।

अपना, पराया, छोटा, बडा सब उनसे प्रसन्न रहते, और सब उनकी स्तुति किया करते थे।

हमने उनमें एक यह गुण भी विशेष पाया, कि वे अपने लड-कोंको साधारण रीतिसे, पर दूसरोंके लडकोंको विशेष रीतिसे मानती और प्यार करती थीं।

पराये लडके जो उनके लडकोंको कभी मारदेते तो कुछ नहीं, पर उनके लडके जो दूसरे लडकोंको कभी मारदेते तो अपने लड-कोंको बहुत डाटतीं और दंड देतीं।

दयाभी उनमें ऐसी थी कि किसी दुखियाका दुःख देख नहीं सकतीथीं, जहांतक उनका वश चलता, उसके दुःख दूर करनेका उपाय करदेतीं।

शीलकी तो मानो सागर थीं।

उनके संतोषका हाल सुनो कि सोहनलालने अपनी औरतकी सीखमें आकर मोहनलालको अलग करदिया, और घरका धन दौलत सब आप लेलिया, उनको कुछ न दिया।

उस समय सोहनलाल आबकारीके दारोगा थे, बहुत कुछ कमा-तेथे, और मोहनलाल पढलिख चुकेथे, पर कहीं नौकर नहीं थे, अलग होजानेपर बडी तंगीसे उनका दिन कटनेलगा ।

मोहनलालने चाहा कि, हम अपने भाईपर आधे धन दौलतका दावा करैं, पर उनकी स्त्रीने समझाया कि, "महाराज ! संतोषमें सुखहै, धन दौलतमें नहीं. जानेदीजिये, हमारे भाग्यमें जितनाथा, उतना हमको मिला, आगेभी जितना हमारे भाग्यमें होगा हमको मिल जायगा" ।

उस तंगी दशामें भी किसीने कभी उनका चेहरा उदास नहीं देखा स्त्री जब कभी मोहनलालको उदास देखती तो तुरंत आंच-लसे मुँह पोंछ कहती, "प्राणनाथ ! आप काहे उदासहैं, सर्वप्रका-रकी सेवा टहल करनेको तो मैं आपकी लौंडी मौजूदही हूं, जो रुपये पैसेकी जरूरतहो, तो यह मेरा गहना लीजिये, गिरो गट्टेसे अपना काम चलाइये, आप कुशल रहेंगे तो फिर हो जायगा, और जो न भी होगा, तो भी कुछ चिंता नहीं, मेरे भूषण तो आपहैं, दूसरे गहनेको तो मैं मिट्टी बराबर समझतीहूँ" ।

कभी कहती "महाराज ! दुःख, सुख, सम्पत्ति, विपत्ति यह दोनों रात दिनकी नाईं साथीहैं, न किसीको सदा सुख रहताहै न दुःख. क्योंकि दुःखके पीछे सुख और सुखके पीछे दुःख अवश्य होनेवालाहै ताते प्राणपति ! आप सोच न करैं" ।

कभी कहती, "हे स्वामी ! यह हमारी परीक्षाका समयहै [illegible]द करनेका अवसर नहींहै" । लिखा है:—

चौपाई-धीरज धर्म मित्र अरु नारी । आपदकाल परखिये चारी ।

ऐसे ऐसे अनेक प्रकारके विनीत वचन कहि अपने [illegible] (मोहनलाल) का मन प्रसन्न करदेती ।

[illegible]ाचार [illegible]रीका

अब सोहनलालकी स्त्रीका हाल सुनो, इनका स्वभाव राम राम ऐसा झंझाकाल था कि किसीसे नहीं पटती थी, दिनरात चांय चांय मचाये रहती थी, किसीने जराभी कुछ छेडदिया तो बस उसको जी छुड़ाना मुश्किल होजाता था ।

नौकर चाकर दो एक महीनेसे अधिक उसके यहां नहीं ठहर-तेथे, बात बातपर झिझकार, दुकार, मार पीट, डांडबांध लगाये रहतीथी, अपना पराया कोई उनसे खुश नहीं रहताथा, घर घर उनकी बदनामी फैली हुईथी ।

सोहनलालभी उनकी बदनामी सुन सुन अपने भागोंको झख-तेथे, पर मजबूरथे कुछ करनहीं सकतेथे ।

अब अपने स्वभावसे दोनों जिस जिस दशाको प्राप्त हुईं वहभी सुनलो ।

मोहनलाल अलग होनेके थोडेही दीन पीछे फौजदारीके सिरिस्तेदार होगये, डेढसौ १५०) रुपया तनख्वाह होगई, चार लडके और दो लडकियां थीं लडके सब सुन्दर और लायक पढ लिखके होशियार, लडकियां सब सोहागवतीं और सुचित घरोंमें पडीथीं ।

और सोहनलाल अलग होनेके थोडेही दिनों पीछे नौकरीसे बरखास्त होगये, घरमें चोरी होगई, बहुतसा धन दौलत उठगया।

दो बेटे और एक बेटीथी, उनमेंसे बडा लडका तो ब्याह होतेही जाता रहा, छोटा जो था वह अवारा अर्थात् कुमार्गगामी होगया, लडकीभी गौना होतेही रांड होगई, थोडे दिनोंमें यह दशा होगई कि, खाने पीनेको मुहताज होगये ।

जब बहुत तंगी आगई, तब मोहनलालसे उनकी स्त्रीने विनय किया, कि महाराज हमारी जेठानीजी बहुत तकलीफमें हैं; मुझसे उनकी तकलीफ देखी नहीं जाती अब इनको मिला लीजिये ।

(मोहनलान) तुमको क्या उनकी बात भूलगई उन्होंने क्या क्या तकलीफ हमलोगोंको नहीं दिया ।

(स्त्री) महाराज मेरी ढिठाई क्षमा कीजिये, उनकी बातें भूल-जाइये, अब यही समझिये कि जो कुछ दुःख सुख हुवा अपने प्रारब्धसे हुवा, जो कोई अपना अपकार करे उसका उपकारही करना आप सरीखे सत्पुरुषोंका कामहै ।

इस तरह बहुत समझा बुझा, आरजू मिन्नतकारि कबूल कराया और बडे आदरसे उनको अपनेमें मिला और घरका उनको मालिक बना आप उनके आज्ञानुसार बरतने लगी और पीछली बातोंका कभी चरचातक न किया ।

(दे० चं० कुं० आदिक) बलिहारी २ धन्यहै ऐसे स्वभावको, और धन्यहै ऐसे स्वभाववाली स्त्रीके माताकी कोखको ।

और मां ! आप आशीर्वाद दीजिये कि हमलोगोंका भी ऐसाही वंदित स्वभाव प्राप्त हो ।

बोध २३.

(दे०चं०कुँ०) घडीकी ओर देखकर, अम्मा ! यह क्या है ?

(दे०सु०कुँ०) बेटी यह घडी है ।

(दे०चं०कुँ०) अम्मा इसका हिसाब मुझको समझा दीजिये ।

(दे०सु०कुँ०) बेटी, साठ ६० सिकन्डका एक १ मिन्ट और साठ ६० मिन्टका एक १ घंटा होताहै; बारह १२ घंटोंका एक दिन और रातभी बारह घंटेकी होती है ।

(दे॰ चं॰ कुँ॰) अम्मा ! महीना कितने दिनका होताहै ।

(दे॰ सु॰ कुँ॰) बेटी, तीस ३० दिन और ३० रातका एक महीना और बारह महीनेका एक १ साल वा वर्ष होताहै ।

(दे॰चं॰कुँ॰) अम्मा ! महीनोंके नाम हमको बतला दीजिये ।

(दे॰ सु॰ कुँ॰) बेटी मुझको हिन्दी, अंग्रेजी, अर्बी तीनों किसिम (प्रकार) के महीनोंके नाम याद हैं मैं उनको कहतीहूं, तुमलोग सुनों ।

हिन्दी महीनोंके नाम ।

कुवांर[1] कातिक अगहन पूस मांघ फागुन[6] चैत वैसांख जेठ आसांढ सांवन[11] भांदों[12] ।

अंग्रेजी महीनोंके नाम ।

जनंवरी फर्वरी[2] मार्च अप्रेल[4] मई[5] जून[6] जुलाई अगस्त सितम्बर[9] अक्टूबर[10] नवम्बर[11] दिसम्बर[12] ।

अर्वी महीनोंके नाम ।

मोहर्रम[1] सफर[2] रबीउलऔवल[3] रबीउस्सानी[4] जमादिउलअव्वल[5] जमादिउस्सानी[6] रज्जब शाबान रमजान शौबाल जीकाद[11] जिलहिज्ज[12]।

(साल)

साल चारतरहके हैं फसली १ ईस्वी २ हिजरी ३ सम्वत् ४ ।

(फसली साल)

कुवारसे शुरू और भादोंमें खतम (समाप्त) होताहै यह साल जलालुद्दीन अकबर बादशाहके वक्तसे जारी हुवाहै।

(ईस्वी साल)

यह साल हजरत ईसाकी पैदाइश (जन्म) से है, और जनवरीसे शुरू और दिसम्बरमें खतम होताहै इसमें चार महीने ३० दिनके हैं और सात ३१ दिन और फर्वरी २८ दिनका ।

दोहा—अप्रेल[1] जून[2] सितम्बर[3], और नवम्बर[4] चार ॥
तीस ३० दिवसके होतहैं, बुधजन कहत विचार ॥

होत अठाइस २८ दिवसको, एक फर्वरी मास ॥
और सात ३१ एकतीसके, कहूं नाम मैं तास ॥
जनवरी मारिच औ मई, जौलाई पुनि बाम ॥
अगस्त अक्टूबर सातवां, अहै दिसम्बर नाम ॥

(हिज्रीसाल)

मुसलमानोंके पैगम्बर मुहम्मदसाहब मक्केसे मदीनेको गये, उस समयसे यह साल हिज्री जारी हुवाहै और यह साल मोहर्रमसे शुरू और जीहिज्जको खतम होताहै, और हिन्दी महीनेके सुदी २ से हर महीना शुरू होताहै ।

(सम्वत्साल)

यह साल राजा विक्रमादित्यका जारी कियाहुवा है, और चैतसे शुरू और फागुनमें खतम होताहै ।

बोध २४.

(दे०चं०कुं०) अम्मा ! हमको रुपये पैसेका अंक लिखने नहीं आता आप बतला दीजिये ।

(दे०सु०कुं०) अच्छा मैं लिखेदेतीहूं तुमलोग उसको सीखलो ।

३	दमडी	‿।।।	तीनपाई
६	छदाम	-‿	एक आना
१२	अधेला	=‿	दो आना
२८	पैसा	≡‿	तीन आना
१।	एक टका	।‿	चार आना वा (एक सूका)
२।	दो टका	॥‿	आठ आना वा (दो सूका)
३।	तीन टका	।॥‿	बारह आना वा (तीन सूका)
‿।	एक पाई	१‿	एक रुपया
॥	आधआना		

इसी तरह जै रुपया लिखना होतैका अंक लिखकर उसके आगे ऐसो विकारी दे दे जैसे १) २) ३) ४) ५) ६) ७) ८) ९) १०)

चारपाईका एकआना और चारआनेका एक सूका और चार सूकोंका एक रुपया होताहै।

लिखनेकी यह रीतिहै कि, पहिले पाई तब आना तब सूका तब रुपया लिखा जाताहै। छोटी रकम दाहिने और बडी उसके बायें लिखी जातीहै जैसे १।-)। एक रुपया एकसू० १ आ० १ पाई मगर पढा इसतरहसे जायगा कि, एक रु० पांच आना एक पाई—वा एक रु० सवा पांचआना।

(सेर छटांक)

सेर छटांकभी उसी तरह लिखा जाताहै जिसतरह रुपया आना लिखा जाताहै मगर इसकी विकारी टेढी होतीहै जैसे ऽ

ऽ-	एक छटांक	ऽ३	तीन सेर
ऽ=	दो छटांक	ऽ४	चार सेर
ऽ≡	तीन छटांक	ऽ५	पांच सेर
ऽ।	एक पाव	ऽ६	छः सेर
ऽ॥	दो पाव	ऽ७	सात सेर
ऽ≡	तीन पाव	ऽ८	आठ सेर
ऽ१	एक सेर	ऽ९	नौ सेर
ऽ२	दो सेर	ऽ१०	दस सेर

चार छटांकका एक पाव और चार पाव वा सोलह छटांकका एक सेर होताहै और मन चालिस सेरका होताहै।

सेर सरकारी अस्सी रुपये वा २० गंडेका होताहै बाकी देशी सेर कई तरहके हैं कहीं २५ गंडेका कहीं २८ गंडेका कहीं ३२ और कहीं ३६ गंडेका।

रत्ती और मासोंसे सेर सरकारी इस तरह बनताहै, कि ८ चावलकी १ रत्ती और १२ रत्तीका १ मांसा और ८ मासेका १ तोला और ५ तोलेकी १ छटांक और १६ छटांकका १ सेर

विगहा विस्वा ।

वीस २० धुरका एक विस्वा और २० विस्वेका एक बिगहा होताहै. धुरको विस्वांसी भी कहते हैं यह भी सेर छटाँककी तरह लिखा जाता है।

विस्वा और विस्वांसी एक १ से चार ४ तक हिन्दुसे वा अंकोंमें लिखे जातेहैं और पांचकी शकल ।ऽ या होतीहै ।

विकारी विस्वांसीके बायें और विस्वेके दाहिनी ओर होती है जैसे पांच ऽ। विस्वांसी और ।ऽ पांच विस्वा ।

		॥	दश वि.
१	एक विस्वांसी	॥१	ग्यारह वि.
		॥२	बारह वि.
२	दो विस्वांसी	॥३	तेरह वि.
३	तीन वि.	॥४	चौदह वि.
४	चार वि.	॥।	पन्द्रह वि.
।	पांच वि.	॥।१	सोलह वि.
।१	छः वि.	॥।२	सत्रह वि.
।२	सात वि.	॥।३	अठारह वि.
।३	आठ वि.	॥।४	उन्नीस वि.
।४	नौ वि.	ऽ१	एक विस्वा०

इसी तरह विस्वा भी लिखा जाता है ।

१।१=१ एक बिगहा एक विस्वा एक विस्वांसी.

२।२=२ दो विगहा दो विस्वा दो विस्वांसी.

३S३=३	तीन बिगहा तीन विस्वा तीन विस्वांसी.
४S४=४	चार बिगहा चार विस्वा चार विस्वांसी.
५।S।	पांच बिगहा पांचविस्वा पांच विस्वांसी.
६।१S।१	छः बिगहा छः विस्वा छः विस्वांसी.
७।२S।२	सात बिगहा सात विस्वा सात विस्वांसी.
८।३S।३	आठ बिगहा आठ विस्वा आठ विस्वांसी.
९।४S।४	नौ बिगहा नौ विस्वा नौ विस्वांसी.
१०॥S॥	दस बिगहा दस विस्वा दस विस्वांसी.

बिगहा दो तरहका होताहै कच्चा (खास) पक्का (पोखता) बारह विस्वा पक्केका एक बिगहा कच्चा होता है।

बोध २५.

(भूत प्रेतके विषयमें)

(दे० चं० कुँ०) अम्मा! मुझको एक बातकी बडी शंका रहतीहै, मेरी बुद्धि कुछ काम नहीं करती, न यह बात मेरी समझमें आतीहै कि, क्या है? सुनाहै कि, चचा त्रिलोकनाथकी जो पतोह आई है वह अकसर अभुआतीहै हाथ पांव फेंकतीहै, बेहोश हो हो जातीहै, महंगू चमार, शिवगुलाम धोबी, जिआवन धरिकार, साधोतेली, यह सब रातभर उनके घरमें वोझाई करतेहैं पचरा गातेहैं परंतु कुछ अवकाश नहीं होता, उनके नैहरसे एक अहीर जब आताहै दो चार दिन देखता सुनता है तब फुरसत हो जातीहै।

सो अम्मा। यह क्या बात है, भूत प्रेत क्या वस्तुहैं और कैसे यह किसीके वदनमें समाजातेहैं? सो हमको भले समझा दीजिये जिसमें मेरा संदेह मिटिजाय।

(दे० सु० कुँ०) वेटी! हम इसका उत्तर क्या दें कलियुगमें जैसे सब पापहैं तैसे यह भी है किंतु मेरी जानमें तो सब पापोंका बापहै,

देखो मेरे मेजपर सब्ज दफ्तीवाली एक छोटी पुस्तकहै उसको उठालावो उसका वीसवां पाठ पढो तो मालूम हो जायगा कि यह क्या बातहै ।

(दे॰चं॰कुँ॰) अम्मा ! आपही फरमाइये, आपके मुखारविंदसे बहुत अच्छा मालूम होताहै और भले समझमें बात आजातीहै ।

(दे॰सु॰कुँ) बेटी ! वह पुस्तक देख, भगवतीजीका वचनहैं हमलोग तो मनुष्यहैं हमारे कहनेका वोतना विश्वास नहीं हो सकता जितना देवतोंके वचनका ।

(दे॰चं॰कुं) अम्मा ! मेरे तो आपही देवताहैं मैं आपका वचन देवतोंके वचनसे कम थोडे समझती हूँ ।

(दे॰सु॰कुँ॰) बेटी ! अच्छा क्या हुवा भगवतीजीका वचन देखले तो मैं भी कुछ कहि दोंगी ।

(दे॰चं॰कुँ॰) पुस्तक उठाय ल्याई और पढने लगी ।

पाठ २०.

(भगवतीजीका वचन)

स्त्रियो ! हमारे वचनपर विश्वास करो, हमारी बात हृदयमें धरो मैं तुम्हारे बडे हितकी बात कहतीहूँ उसके माननेसे तुम सदा सुखी रहोगी, सदा तुम्हारा कल्याण होगा।

तुमको भले विश्वास करके जानना चाहिये कि, भूत प्रेत कोई वस्तु नहीं है न यह किसीके वदनमें प्रवेश करतेहैं यह वेसमझ (अवोध) और नालायक (निन्दित) औरतोंका ढकोसलाहै यह दो तीन तरहपर होताहै ।

एक तो यह कि स्त्रियोंको सदा इसकी शंका वनी रहती है कि स्त्रियोंको भूत चुडइल लगतेहैं कोई बीमारी उनको हुई वस उन्होंने

निश्चय किया कि यह नैहर वा सासुर वा जहांकी शंका पुष्ट हुई वहाँका भूतहै बस धोबी चमार घरमें आने और सूसू करने लगे।

दूसरे यह कि, अँधियारेमें कहीं बाहर भीतर निकलीं और जैसे रस्सीका सांप और ठूँठका चोर मालूम होताहै वैसेही कोई चीज देखकर डरीं बस उनको शंका हुई कि, हमको भूत लगाहै और ऐसी शंका बहुधा नापाक स्त्रियोंको होजातीहै।

इसीतरह और भी बहुतसे लुचपनके भावसे झूँठ मूठ जाहिर करदेतीहैं कि हमें भूत लगाहै और इसी बहाने ऐसा ऐसा खराब और निंदित व्यवहार करती हैं जिसकारण घोर नरकमें पडती हैं।

प्यारी लडकियो! तुम सच जानो कि, भूत प्रेत कहीं कुछ नहीं है. सब जगह भगवान हैं, देखो किसी यूरोपियन औरतको भी सुनाहै कि भूत प्रेत लगाहै वा उनके घरभी कभी वोझाई सोखाई होतीहै. क्या भूत प्रेत वास्तव कुछ होते तो उन्हें छोड देते।

मर्द लोग रात बिरात जंगल मैदान सब घूमतेहैं कहीं सुनाहै कि उन्हेंभी भूत लगाहै इससे समझलो कि, यह कुछ वस्तु नहीं है यह लडकोंका कोकोहै कि कहनेको है और है कुछ नहीं।

इसका शंका और संदेह ऐसा चित्तसे भूलना चाहिये कि कभी स्वप्नमें भी याद न पडे और कोई सोनेका आयके इसका जिकिर करै वा इस मामिलेको सच कहै तो जिकिर न सुनै न सच मानै किंतु उसको निरा नादान समझै।

प्यारीलडकियो। जो तुम रईसके घरकी कन्याहो जो तुम अपने माँ बापकी असल हो तो खबरदार अपने मुँहसे कभी न कहना कि हमको भूत लगाहै प्राण निकल जाँय तो निकल जाँय पर यह न करना कि अपने घर वोझा सोखा बुलाना।

जिस घरमें बोझा सोखा आतेहैं वह घर अशुद्ध हो जाताहै, शास्त्रमें लिखाहै कि इन आदमियोंकी गति नहींहोती ये घोरनरकमें पडतेहैं ।

(सवैया)

भूत लग्यो हमको जो कहै अरु भूतको पूजन जो करते ।
जो कहो कि बुलाइये बोझनको जो बोझाईके उद्यमको करते ॥
ल्यावतहैं जो बुलाय तिने करते विशवासहै जे नर ते ।
तर्ते ना भाषत भागवती छवो सीधहि नर्कमें हैं परते ॥

(दे० चं० कुँ०) अम्मा ! कौन ऐसी स्त्री होगी जो भगवतीजीका वचन न मानैगी और मैं जानती हूं कि जो भगवतीजीका वचन न मानेगा उसका कल्याणभी न होगा, अच्छा अम्मा कुछ आपभी फरमाइये ।

(दे० सु० कुँ) बेटी ! मैं क्या कहूँ, मुझे तो इस नामसे चिढहै चालीस वर्षकी मेरी उमर हुई आजतक मैं कभी भूत जाना न प्रेत।

मेरी अम्माने लडकपनमें एक बार मुझसे कहाथा, कि "बेटी ! और कोई बात मेरी मानना चाहे न मानना पर एक बात मेरी अवश्य मानना कि चाहै कैसीही बीमारी हो प्राण निकलतारहै पर वोझाई सोखाई कभी न कराना न भूत प्रेतका नाम लेना सब पापोंसे बढकर यह पापहै ।

जब कोई बीमार पडे तो हकीम वैद्य बुलायके दवा इलाज कराना पूजा पाठ कराना, दान पुण्य कराना, पर वोझाई सोखाई की राह मत चलना" ।

बेटी ! मैं वही बात गठिआईहूँ, मेरे गाँवमें तीन बडे करेर वोझा रहे लोग उनकी बडी मानता करते और सब उनसे डरते थे

जब किसीके घर कोई बीमार पडता; तुरत वह बुलाये जाते, और इनसे बोझाई सोखाई कराई जाती।

एक बार हमारी मां बीमार पडी मर्द कोई द्वारपर रहा नहीं हमारी चचानीने मांके बिना जनाये तीनों बोझोंको बुलाया वे सब आय पचरा गाय गाय बोझाई करनेलगे।

जब मांको यह हाल मालूम हुवा तो चचानीपर बहुत नाखुश हुई, उसी समय हमारे भैया भी नौकरीपरसे आगये ज्योंही वह मांके पास आय नमस्कार किया त्योंही आशीर्वाद के बाद मांने कहा "क्यों बेटा हमको नरकमें डालतेहो हमारे घरमें बोझाई सोखाई कैसी, और क्यों यह नापाक सब हमारे घरमें आने पाये, इनको अभी निकालो और पूरा दंड इनको दो"।

बस तुरंत हमारे भैयाने तीनोंको, पकडवाके पहिले खूब तेलही से उनकी जयाफत किया फिर बेलदारोंको अपने साथ लेजाकर उनके घरोंमें जो देवीका चौतरा था सबको खुदाकर फेंकवादिया, और उन सबोंसे इकरारनामा लिखवालिया कि अबसे जो कहीं बोझाई सोखाई करैं तो पचास रुपया दंडदें।

गाँवभरमें इसबातकी चरचा होनेलगी कि, यह बडे करेर बोझाहैं इनकी भवानी बडी जागती और जालिम जोरहैं देखैं लालाका क्या हाल होताहै, सब कहतेही रहिगये और कुछ न हुवा उसी दिनसे गाँवभरकी बोझाई सोखाई वन्द होगई।

बेटी! उसी समयमें मेरी माँने कुछ दोहे इसी विषयमें मुझको लिख दियेथे वे मुझको अबतक याद हैं।

दोहा—कहु पुत्री कस भूतहै, कस मशान कस देव॥
जैसी तुम करनी कियो, तैसो दुख सुख लेव॥

राम दोहाई खात मैं, नहिं कछु भूत मसान ॥
तोर भर्म तोहिं देत दुख, तजु सो नारि अयान ॥
भूत वस्तु कछु है नहीं, है यक मनको भर्म ॥
होत सो नीचनके हिये, नहीं भलेको कर्म ॥
पुत्री जो तव माथमें, लिख्यो विधाता रेख ॥
सो दुख सुख भोगन पडै, भूत भर्म मति लेख ॥
आयू तुम दरगाहमें, भूत छोडावन हेत ॥
हाय तुम्हैं लज्जा नहीं, कस भइ नारि अचेत ॥
तुम जो आई किछवछे, हजरत की दरगाह ॥
भल मानुस तू है नहीं, यह लुच्चिन की राह ॥
बडे शरम बड लाजको, काज कियो तुम नारि ॥
दसमें जो अभुवातहो, मनको मकर पसारि ॥
गिरिते गिर मरि जाव भल, भरि चिल्लू जल माहिं ।
पुत्री भूतको आवनो, करहु नेकु हिय नाहिं ॥
तू बेटी किहि बापकी, काकी अहै पतोह ॥
तोहिं अस दसके बीचमें, नहिं अभुवाइव सोह ॥
क्यों लुच्ची अभुवात तू, दस शोहदनके बीच ॥
तोहिं लाज लागत नहीं, हे नारी तू नीच ॥
भूत कहै पूजैं तिसे, पुजवावै जो नारि ॥
देखै सुनै बुलावई, जायसु नरक मँझारि ॥
पुत्री अतिहित जानिकै, मानहु वचन हमार ॥
भूत भावना स्वप्नमें, मति अपने मति धार ॥
नाहिं कोउ भूत न प्रेतहै, सबमें हैं भगवान ॥
जियकी शंका त्यागिदे, तू तिय परम सुजान ॥
मानहु पुत्री मम वचन, अतिहित अपनो जान ॥

भूत भावना त्यागिकै, भजलो श्रीभगवान ॥
दुखहै जो तव देहमें, लखो पुर्बला कर्म ॥
करु औषध औ दान जप, तजो भूतको भर्म ॥
को नारायण ते बडो, देखहु हृदय विचार ॥
फिर क्यों भूतहि पूजिये, क्यों न भजिय करतार ॥
भूत आदिकी भावना, अति नीचनको काम ॥
ताको तजु भजु रामपद, जो पूरण सुखधाम ॥

(दे०चं०कुँ०) अम्मा! मैं आगेसे भी इस बातको झूँठ जानती थी, पर अब भगवतीजीके वचन और आपके फरमानेसे दृढ विश्वास होगया कि, यह सब मामिला झूँठाहै और बिलकुल नीच और नालायक औरतोंका मकर और पाखंड है और आपके चरणोंकी शपथ करतीहूं जबतक जिवोंगी कभी भूत प्रेत बोझाई सोखाईका नाम न लूंगी।

बोध २६.

(स्त्रियोंका पतिही गुरु और देवताहै)

(दे० चं० कुँ०) अम्मा। आज मैं नौलखा फूवाके घर जातीहूं वह आज गुरमुख होनेवालीहैं मां तुम गुरमुख भईहो कि नहीं।

(दे० सु० कुँ०) नहीं।

(दे० चं० कुँ०) अम्मा काहे।

(दे०सु०कुँ०) बेटी! हमारे तो गुरुदेव, इष्टदेव, और परमदेव सब तेरे लालाहैं मैंतो उन्हींके चरणोंका ध्यान धरतीहूं और उनहींकी सेवासे अपनी गति मानतीहूं।

(दे० चं कुँ०) तो सब लोग तो गुरमुख होतेहैं काहे?

(दे० सु० कुँ०) अपनी मूर्खतासे।

(दे०चं० कुँ०) मूर्खता कैसी? क्या शास्त्रमें स्त्रीको गुरु करनेका निषेध है।

(दे०सु० कुँ०) बेटी शास्त्रोंमें अनेक वचन इस विषयमें हैं पर एक कवित्त मुझको याद पडता है जिससे साबित है कि स्त्रियोंका गुरु और देवता पति है दूसरा नहीं ।

कवित्त ।

तियनको धर्म एक पतिपद स्नेह सांचो बचो रहे राचो मन पर पुरुषानते । पतिको कलेश होय तुमते कदापि नहीं बोल चाल रीत प्रीत कवनो विधानते । आज्ञाको पालन करै धरै शीश आयसुको पूजै तेहि बड जानि सब देवतानते । स्त्रीके पतिही गुरू हैं और परमेश्वरहैं साबित सुबोधहै ये वेद औ पुरानते ॥ १ ॥

और बेटी शास्त्रमें चाहे जो कुछ लिखाहो, पर हमारे मनसे सिवाय तेरे लालाके दूसरा कोई समाताही नहीं यह कहि पतिप्रेममें मग्न हो यह कवित्त पढनेलगी ।

कवित्त ।

नैननके तारे हिय गृहके उजारे मेरे, यह दिलदारे पिय प्राणहू ते प्यारे हैं ॥ जाहिके निहारे सुख पावत अपारे हिय, चहत ना छने कहो नैननते न्यारे हैं ॥ जाहि संगहारे तन वच मन सारे सखी, जाहिते हमारे दिललहत करारे हैं ॥ पग बलिहारे तेहि पायँ शीश धारे रहौं, जीवन हमारे सखी जाहिके अधारे हैं ॥

(दे० चं० कुँ०) तो अम्मा ! हमभी गुरु न करैं ।

(दे०सु०कुँ०) बेटी ! गुरुतो गतिके वास्ते होतेहैं सो स्त्रियोंकी गतितो पुरुषहीकी सेवा और प्रसन्नतासे होती है, जो गुरुभी करै और पतिकी सेवा मन वच कर्मसे न करै तो यदि ब्रह्माभी गुरुहों, तो उसकी गति नहीं होसकती, और जो पति प्रसन्न रहैं, तो जानो भगवान् प्रसन्नहैं, गति उसके आगे हाथ जोडे खडी रहतीहै ।

दोहा—पति परमेश्वर देवता, पति गुरु पति पतिप्रान ॥
सकल भाव तेहि सेइये, जो चाहिय कल्यान ॥

बोध २७.

(लडकियोंको सिवाय गुणवान् स्त्रियोंके दूसरोंकी सोहबत नहीं करनी चाहिये)

(दे० चं० कुँ०) अम्मा ! आप आज्ञादें तो दीदी नौरतन कुँवरिके घर जाऊं ।

(दे० सु० कुँ०) जा, परन्तु इधर उधर बहुत मत जायाकर नहीं तो तेरे लाला सुनेंगे तो मुझको तुझको दोनोंको फजिहत करेंगे।

(दे० चं कुँ०) अम्मा ! आप बूझ लीजिये कि, मैं कहां जातीहूं सिवाय दीदी नौरतनकुँवरि और भैया राम अवतार-लालके दुलहिनके, दूसरेके घर मैं कभी नहीं जाती और इन लोगोंके पास इसलिये जातीहूं कि, यह लोग विद्यावान्, सुशील और निहायत गुणवान् हैं, जब मैं जातीहूं तो मुझको बहुत प्यार करती हैं और कुछ न कुछ लिखने पढने, गुण ढंगहीकी बात चीत हुआ करती है, सास ससुर, देवरान, जेठान, सबलोग उनसे अतिप्रसन्न रहतेहैं, बोलतो उनका आजतक बाहर किसीने सुना नहीं, और चालभी उनकी ऐसी है कि इतना गहना लादे हैं, पर क्या मजाल कि चलनेमें जरा भी झनकै मनकै ।

मैं जब जातीहूं तो कभी उनको पढते लिखते, कभी सीते धुरते, कशीदा काढते, कभी सासका बदन मलते, कभी जेठानका बाल हेरते, शिरमें तेल लगाते, इन्हीं सब बातोंमें पातीहूं ।

जाडेके दिनोंमें देखाहै कि, अकसर गरीब औरतोंको कहीं कुरता देदेती हैं, कभी उनको छोटे बच्चोंके अंगा, कुलही सीदेती हैं कभी किसीको अनाज पानी देदेतीहैं, पर अम्मा ! गरीबहीको और जिसको जानती हैं कि, इनको कमी नहीं है, और लालची बातबनाके लिया चाहती हैं उनको नहीं देतीं, हिकमतसे उन्हें टालदेती हैं ।

अम्मा ! जब कभी मैं जातीहूँ तो मुझसे धायके मिलती हैं, और जल्द आने नहीं देतीं, इसीसे मैंभी कभी कभी जाया आया करतीहूं ।

और ये अम्मा ! वह तो अपने देवरके सामनेभी बहुधा नहीं होती, न कभी उनसे हँसी ठट्ठा होते हमने देखा है, जब कभी कोई जरूरत होती है तो उनके देवर आके झुकके नमस्कार करते हैं, और बडे अदबसे कुछ बात कहते हैं, तब वह जवाब देती हैं ।

और ये अम्मा ! उनके बहनोई आये थे कितना उन्होंने भेंट करनेको कहा, पर उन्होंने भेंट नहीं किया, कभी दशदिन होताहै कि उनके नन्दोई आये थे, और बहुत चाहा कि हमसे वह भेंट करैं, बाकी उन्होंने नाहिंएं मंजूर किया, इसपर उनके नन्दोई नाखुशभी होगये ।

(दे० सु० कुँ०) बेटी इन व्यवहारोंसे मालूम होताहै कि वह एक लायक औरत है देवरसे हँसी ठट्ठा कैसा, भौजाई तो देवरके लिये मांकी जगहपरहै, हँसी ठट्ठा उनमें बहुत नामुनासिबहै और उन्होंने जो नंदोई बहनोईसे भेंट नहीं किया, यहभी बडी लियाकतका काम कियाहै, मैं इस बातको बहुत पसंद करतीहूं, पराये पुरुषोंसे चाहे वह कोईहो, अकेलेमें बैठके भेंट करना कभी उचित नहीं है. यह रसम हम लोगोंमें बहुत खराब है,इसके बदौलत बहुत जगह फसादभी उठे हैं, बदनामीभी बहुतोंकी हुई हैं, लायक स्त्रियां अवश्य इस निंदित रसमको बंद करैं ।

बोध २८.

(दे० सु० कुँ०) बेटी ! देखो, सीना पुरना भी थोडा बहुत अवश्य सीखना चाहिये, यह बडे काम आताहै, गरीबीमें तो यह बडाही उपकार करताहै, और अमीरीमें लडकियोंकी शोभाहै ।

(दे०चं०कुँ) अम्मा! सीना तो दरजियोंका कामहै, सबका कपड़ा वही सीते हैं, हमलोग सिलाई सीखके क्या करैंगी?

(दे०सु०कुँ०) बेटी! यह बात ठीक है, पर दरजी उसीका कपडा सीते हैं, जिसका तार पाते हैं भले आदमीकी औरतें उनके सामने होती नहीं, इसलिये उनका कपडा वह नहीं सीसकते, और जो बिना तारपाये सीधाभी तो कहीं छोटा होगया, कहीं तंग, चलो कपडाभी खराब गया, सिलाईभी डांड परी।

और अपने हाथका सिया हुवा बहुत अच्छा होताहै, न ढीलाहो न तंग, न सिलाई देना पड़े।

और फिर मानलिया, कि आज तुम्हारे पास रुपयाहै, चार रुपया महीनेमें दरजियोंहीको सही, कल्हको गरीबी आगई, तुम्हारे पास रुपया न रहा, तो अब बतलावो कैसे कपडा सिया जायगा? दरजी बे सिलाई-पाये सीयेगा नहीं; तुमको सीने नहीं आता।

और यदि कहो हमतो अमीर हैं गरीबी कैसे आजायगी? तो बेटी इसपर भूलना न चाहिये, गरीबी अमीरी आते जाते कुछ देर नहीं लगती, यह तो चार दिनकी चांदनी और फिर अँधियारा पाखका सासिला है जो आज अमीर थे वे कल्ह गरीव होगये, जो आज जगतसेठ थे वे कल्ह दरिद्र होगये, हां गुण रहै तो सब ठौर काम आताहै।

हमारे देखते यह बात हुई, कि तेरे नानिहालके पश्चिम जो राम नगरहै, वहांके रहनेवाले मुन्शी सुखलालसिंह परमिटके जमादार थे २९) रु. माहवारी तन्ख्वाह पातेथे, निदान किसी कसूरमें बरखास्त होगये।

दो चार महीने तो कुछ कमाईकी बचत थी वह खाया पिया, फिर कोई ठिकाना न रहा।

उनकी स्त्री सिलाईका काम अच्छा जानतीथी उन्होंने इसी कामको जारी किया, तमाम टोले महल्लेकी स्त्रियोंकी कुरतियां; लडकोंके अंगे, कुरते, टोपी, कुलही सब सीने लगीं, और इसीमें उन्होंने १०) रु. महीनेका निकास करलिया, मियां बीबी मजेमें खाने पीने लगे।

बेटी! देख जो सिलाईका गुण उनके पास न होता तो मियां बीबी दोनों जने अन्न बिना टपटपायके मरजाते वा भीख मांगके पेट पालन करते।

सिलाईके साथ कशीदा काढनाभी सीखना चाहिये. इसीके बदौलत तो एक स्त्रीने अपने पतिको जो किसी भरभूंजेके वहां भार झोकनेपर नौकर था राजा बनादिया।

(दे०चं० कुँ०) हां अम्मा कैसे क्या हुवा? जरा कहती चलो।

(दे०सु०कुँ०) मालूम होताहै कि, तेरा मन किस्से कहानीमें बहुत लगताहै।

(दे०चं०कुँ०) मा! आप सच फरमातीहैं पर मैं किस्सा कहानी इसलिये सुनतीहूँ, कि उसमें जहां कोई बात शिक्षा वा परीक्षाकी नसीहत वा चतुराईकी हो, उसको मैं खयाल करलेतीहूं।

(दे०सु०कुँ०) हां बेटी! जरूर अच्छी बातोंको खयाल करलेना चाहिये, अच्छा सुन मैं इतिहास कहतीहूं।

इतिहास।

एक राजाके सात कन्याथीं, एक दिन राजाने सब लडकियोंसे पूछा "सुखसे सेज कहो को सोय" छः लडकियोंने तो इसका यह उत्तर दिया।

सुखसे सेज सोई नर सोय । जापर कृपा आपकी होय ॥

पर सातवीं लडकी जो सबसे छोटी पर गुण ढंग और विद्या बुद्धिमें सबसे बडीथी उसने कहा महाराज !

सुखसे सेज सोई नर सोय । जासु नारि गुणवंती होय ॥

बात तो उसने अच्छी कहीथी, पर राजाने अपना अपमान समझ क्रोध करके वा उसके गुणकी परीक्षा निमित्त उसका विवाह एक ऐसे आदमीसे करदिया जो जातिका तो क्षत्रिय और राजकुलका था, पर समयने इस दशाको पहुँचायाथा, कि एक भर भूजेके वहां आने रोजपर भाड झोंकनेको नौकर था।

राजाने व्याहकरि तुरत उस कन्याको उसके साथ बिदा करदिया कहार भरभूजेके मकानपर डोली उतार कर चले आये।

वह राजकन्या डोलीसे उतर उसी भडभूजेके घर एक कोनेमें शीश नवायके बैठी।

हायहाय! कहां वह राजकन्या शीशमहलोंकी रहनेवाली दूधके फेन ऐसा गुलगुल सेजपर सोनेवाली, सैकडों लौंडियां सेवा करनेको मुँह जोहती रहतीथीं, अनेक प्रकारके सुगन्धोंसे घर सुगन्धित रहताथा, आज वही राजकन्याहै, जो एक झोंपडीमें बैठी है ऊबड खाबड भूमिका सेजहै, मसा मच्छड सिवाय कोई संगी नहींहै अगरके सुगन्धित धुवोंकी जगह भाडका आंख फोडनेवाला धुवां है।

हायहाय भाडके आगके लपकसे उसका कोमल वदन पचिला जाताथा धुयेंसे उसकी आँखें फूटी जातीथीं।

यद्यपि यह समय अत्यंत व्याकुलताकाथा, तोभी बलिहारी उसके धैर्यको कि ऐसे समयमेंभी वह धीर्यवान् रही।

जब कभी बहुत क्लेशहोता तो कहती हे भगवन्! जो इस दशामें मुझको प्राप्त कियाहै, तो कृपा करके मुझे संतोष और धैर्यभी देना।

कभी कहती "हे नारायण ! इस दशाकी प्राप्तिसे मुझको खेद नहीं है, खेद तब होगा जो संतोष और धैर्य उस समय मेरे पाससे चले जाँयगे।"

कभी कहती "हे मन खबरदार! घबराना मति यह तेरे धैर्य-की परीक्षाका समयहै।"

कभी कहती "हे मन! तू क्यों घबराताहै, यह तेरेही करतबका तौ फलहै, जो उस जन्ममें तू पापकर्म न करता, तौ आज यह दुःख काहेको भोगता"।

कभी मनहीमन यह सोरठा पढ़ती।

सोरठा—हे मन तजौ न धीर, यद्यपि तनु गाढे परौ॥
सुमिरो सिय रघुवीर, जिन प्रहलाद उबारेऊ॥

इसीतरह अनेक प्रकारके वचनोंसे अपना मन समुझाती।

जब भडभूजेने देखा कि हमारे नौकरकी औरतभी आगई तो ~) और बढादिया ≈) प्रतिदिन देने लगा।

राजकन्या -)॥ में दोनों जूनके भोजनका सामान करती और)॥ बचाये जाती।

एक दिन उस राजकन्याने अपने पतिसे कहा "सुनते हैं कि यहां लकडी बहुत महँगी बिकतीहैं, एक बोझका ।) मिलताहै, सो आप जंगल जाके लकडी तोड लाइये और ।) में उसे बेचि ≈) का जिन्स और -)का ४ गिरह तनजेब और)॥ की पक्की सूइयां और)॥ की बारीक बही लेते आइये, उसके पतिने ऐसाही किया।

तब उस राजकन्याने रातमें ३ टोपी सीं, उसमें उमदा वेल बूटा बना, सुबहको पतिको देकर कहा, इन टोपियोंको बाजारमें लेजाकर ॥।) को बेचिये ≈) का जिन्स और ।)का पक्का रेशम, और ।)का महीन तनजेब एक रूमाल भरको ले आइये, ≈) बचाये आइये।

उसके पतिने ऐसाही किया, तब उस राजकन्याने कहा "हे स्वामी! इस भडभूजेके घरमें रहना ठीक नहीं, आप कल्ह आठ मजदूर करदीजिये फलानी जगह नेव खोदकर बारह हाथ लंबी और ६ हाथकी चौडी एक दालान कच्चे ईंटकी तैयार करदें, परदेके वास्ते एक चहारदीवारी उठादें" यह कहि रातको उस रूमालपर कढाव करि सुबहको इधरतो मजदूर लगगये, उधर रूमाल अपने पतिको देकर कहा "आप इस रूमालको बाजारमें ३) पर बेचिये, उसमेंसे १) का लाल और हरा पक्का रेशम और १) का २४ गिरह अरजका २४ गिरह उमदा मलमल लीजिये और १) बचाये आइये, मजदूरी दीजायगी" उसके पतिने ऐसाही किया।

तब उस राजकन्याने कहा "आठ मजदूर कल्ह और करदीजिये, और एक आदमी ईमानदार ३) महीने तनख्वाहपर नौकर रखलीजिये जो मकानके छवानेका सामान जुटावे" यह कहि रात भरमें उसने एक बडा रूमाल बूटेदार तैयार करके सुबहको अपने पतिको देकर कहा "हे नाथ! इसको बाजारमें लेजाकर ५०) को बेचिये, उसमेंसे १५) में अपने अंगे, पायजामें, कुरते, दुपट्टे, शिरबन्दके लिये अपनी रुचि अनुसार कपडा लीजिये और ८) में दो सारी तंजेबकी मेरे लिये लेते आइये, एक महीना होगया कपडा नहीं बदला, और १०) में पक्का रेशम सबरंगका और ५) में ४ गज तनजेब बडे अरजका लीजिये, और १६) बचाते आइये कल्ह मकान छाजाय और पाँच ब्राह्मण भोजन कराके उसमें प्रवेश किया जाय।

उसके पतिने ऐसेही किया।

निदान घर छवाय, पांच ब्राह्मणोंको विधिपूर्वक भोजन कराय, दान दक्षिणादे, नये घरमें प्रवेश किया ।

अब उस राजकन्याका यह नितका नियम होगया कि, दिनरात, कशीदेका काम करती, और हजार बारहसौकी चीज तैयार करि बेंचवा मँगाती ।

सुनते हैं कि दो महीनेमें ६५०००) की चीज उसने बेंची, एक दिन उस राजकन्याने एक चादर पलंगका राजाओंके योग्य और कुछ मेवात आदिक देकर कहा "हे स्वामी ! आप राजाजीके दरबारमें जाकर इन सब चीजोंको भेंटमें दीजिये, और विनय कीजिये, कि मैं बम्बईका रहनेवाला सौदागर हूँ, मेरा जी चाहताहै कि जो सरकारसे परवानगी मिलै तो एक मकान, बावली, बगीचा, कुँवा आदिक तैयार कराके कुछकाल आपके नगरमें निवास करूं । जब राजा आज्ञादे, तो परवानगी लिखा दस्तखत मोहर करा ले लीजियेगा ।"

उसके पतिने उसके कहने मुताबिक राजाजीके दरबारमें जा भेंटदे, निवेदन कर, दशबिगहे १०८ जमीनकी परवानगी लिखा, दस्तखत मोहर करा, घर आये ।

तब उसने २५ सिपाही पांच २ रुपयेके नौकर रख हुकुम दिया, कि कोट बनानेका सामान दुरुस्त करैं और अपने पिताके कोटका नक्शा खींचकर कारीगरोंको देकर कहा "इसी नक्शे मुताबिक कोट तैयार हो"

अब कोट बननेकी तैयारी हुई, काम जारी होगया, सुनते हैं कि दो वर्षमें ३२००००) के लागतमें कोट तैयार हुवा ।

सिपाहियोंने इत्तला किया, घरभोजकी साइत ठहराईगई, सवा-लाख १२५००० ब्राह्मणको विधिपूर्वक भोजन करा, दान दक्षिणादे, शुभ साइतमें कोटमें प्रवेश किया ।

दोसौ २०० लौंडियां अपने वास्ते, और ५० नौकर अपने पतिके वास्ते और ५०० सिपाही दरवाजेपर रहनेके लिये नौकर रख, राजसुख भोग करने लगी।

एक दिन उस राजकन्याने अपने पतिसे कहा "आप जाकर, राजाजीको मये वजीर, अमीर, दीवान और मुसद्दीकेनेवति आइये"

वह जाकर नेवति आये।

इधर इसने सब भोजन राजाओंके योग्य तैयार किया उधर राजा दो हजार २००० आदिमियों समेत नेवता खाने आये।

इसने इसविधिसे सबको भोजन कराया कि सबलोग दंग होगये।

जब खाने, खिलानेसे छुट्टी मिली, तब अपने पतिसे कहा "आप शीशमहलमें पलंग पर चादर तानि; सोरहिये, मैं राजाको कोट दिखलाते जब यहांतक ल्यावों, और राजाजीसे यह बात कहूँ "सुखसे सेज सोइ नर सोय, जासु नारि गुणवंती होय" तब आप पलंगसे उतरि राजाजीके चरणोंपर गिर पड़ैंगे"।

यह सुन वह तो उधर शीशमहलमें जाय, गंगाजमुनी पलंगपर सोनहरा चादर तानि सोरहे, इधर इसने राजाजीसे विनय किया "महाराज, आपके कृपा करनेसे मैं परम बडापनको प्राप्तहुई, अब मेरी यह विनयहै, कि घरोंमें भी सरकारका चरण घूमिजाय, तो सारा घर पवित्र होजाय"।

राजा तो कोट देखना चाहताहीथा, तुरत उठिखडा हुवा और उसके साथ साथ मकान देखने लगा।

अपने कोटकीसी बनावटी देख देख, राजा आश्चर्यमान होहो अपने मनमें कहताथा; "यह कौनहै, और इतना रुपया इसने कहां पाया, और कैसे मेरे कोटका नकशा इसको मालूम हुवा"।

देखते देखते जब राजा शीश महलमें पहुँचा, तो देखा, एक पुरुष बडे विभव और सुखसे पलंगपर सोरहाहै, यह देखि, राजा ने पूँछा "यह कौन पुरुष सुखसे सेजपर सोरहाहै" राजकन्याने हाथ जोड़ कर कहा, "सुखसे सेज सोई नरसोय। जासु नारि गुण-वंती होय"।

यह वचन सुनि राजा चकितहो, उसकी ओर देखने लगा, इतने में वह पुरुषभी पलंगसे उतरि राजाजीके पाँवपर गिरपडा, राज-कन्याने कहा "महाराज ! मैं वही आपकी कन्याहूं जो आपके घर जन्मीथी, और यह वही भरभूँजेका नौकरहै, जिसके साथ आपने मेरा विवाह करदियाथा।

राजाने लज्जित होकर दोनोंको कंठसे लगालिया और कहा, हे पुत्री ! तू धन्यहै, और तेरा गुण धन्यहै, मैंने बडा अपराध किया जो तुझ ऐसी कन्याका मैंने ऐसा निरादर किया।

अब हमारे अपराधको क्षमा करो, और घर चल कर अपनी मा बहिनोंको सुखदो।

यह कहि राजा बेटी दामादको साथ लेकर घर आये और राज-काज अपने दामादको सौंप आप भगवान्का भजन करने लगे।

यह इतिहास सुनाय देवी सु० कुँ० बोली।

(दे०सु०कुँ०) देख बेटी! जो राजकन्याके पास गुण न होता तौ वह किस दशाको प्राप्त होती, और गुणसे किस विभवको प्राप्तहुई।

(दे० चं० कुँ०) अम्मा ! गुण बेशक बड़ा चीजहै।

बोध २९.

(रसोइयोंके विषयमें)

(दे० सु० कुँ०) बेटी ! लिखना पढ़ना, सीना पुरना, कशीदा काढ़ना, यह सब कामतो भगवान्की कृपासे तुमने सीखलिया, अब एक काम और है जो स्त्रियोंको अवश्य सीखना चाहिये।

(दे० चं० कुँ०) अम्मा ! क्या रसोइयां बनाना।

(दे० सु० कुँ०) बेटी हां तैंने खूब समझा।

(दे० चं० कुँ०) तो अम्मा ! आज हमको अपने साथ रसोइयांमें लेचलो और सब चीज सिखलावो।

(दे० सु० कुँ०) अच्छा बेटी जरा कोई पंडित आजाय भरणी भद्रा पूछलें।

इतनेमें बाबू भानुप्रताप द्वारेसे आये, और कहा "पंडित दूधनाथजी आयेहैं, लालाने कहाहै कुछ पूछना हो तो पूछलें"।

(दे० सु० कुँ०) बेटा जाके पंडितजीसे कहो, कि रसोइयां बनानेको एक अच्छा दिन बतला दें।

बाबू भानुप्रताप पूछकर आये और कहा "पंडितजीने कहाहै कि कल्ह पहर दिन चढे पूर्व मुँह बहुत अच्छी साइतहै"।

(दे० चं० कुँ०) अच्छा अम्मा कल्ह साइतहै तो कल्ही सही, पर आज कुछ भोजनोंके नाम और उनके बनानेकी विधि वर्णन कीजिये।

(दे० सु० कुँ०) बेटी, जब तू मेरे साथ रसोइयांमें चलैगी तब पटरस भोजनोंके नाम और उनके बनानेकी विधि बतलाती जाऊंगी, यूं कहनेसे कोई लाभ न होगा।

(दे० चं० कुँ०) अम्मा पटरस कौन कौनहैं।

(दे० सु० कुँ०) बेटी हजारों तरहके भोज्य पदार्थ संसारमेंहैं पर इन्हीं पटरस युक्त होतेहैं।

दोहा—लौनें तिक्त अरु कटु मधुर, आमल छठे कषाय॥
पटरस यादीको कहत, चित रक्खो चितलाय॥

१ लौन अर्थात् नमकीन।

२ तिक्त अर्थात् तीता।

३ कटु अर्थात् कडुवा।

४ मधुर अर्थात् मीठा।

५ अम्ल जैसे आँवलेका रस।

६ कषाय जैसे हड आदिकके रस।

(दे० चं० कुँ०) अम्मा! पाक सबम्बन्धी कुछ और बातभी कहिये।

(दे० सु० कुँ०) बेटी! जिसके अधीन (तअल्लुक) यह काम हो, उसको पहिले यह अन्दाज करलेना चाहिये कि कितने आदिमी चौकेमें खानेवालेहैं, उस हिसाबसे जिन्स लेना चाहिये।

२ जो जिन्स पकानाहो, उनको अच्छीतरह साफ कर डाले चावल बीन, फटक डालै, आटा चाल डालै दालकीभी तिरछी कँकरी आदिक निकाल डाले।

३ फिर दाल चावलके अदहनकाभी अन्दाजा करले।

आटेका अच्छी तरह मरदन करना चाहिये, जिससे रोटी अच्छी और नरम हों।

४ रोटीको अच्छी तरह सेकना चाहिये।

चावल भलीभाँति गलाना चाहिये, कच्चा चावल बडा अवगुण करताहै, बंगालियोंकी कहावतहैकि 'चावलकी कनी बरछीकी अनी'

५ दालभी अच्छी तरह गलाना चाहिये निमक अन्दाजसे छोडना चाहिये।

६ जिस चीजका जो मसाला हो दो बातोंका खयाल रखना चाहिये १ अन्दाजके साथहो २ खूब बारीक पीसा जाय।

७ इस बातकाभी बहुत चेत रखना चाहिये कि मरदोंके भोजन का जो नियत समयहो उसी समयपर भोजन तैयार होजाय।

८ जब भोजन तैयार होजाय तो उससे पहिले कि लोग चौके-पर उठैं, परोसनेका सब सामान दुरुस्त करले देखले कि कितने आदमी खानेवालेहैं और उन सबके लिये बरतनहैं वा नहीं।

९ तरकारी आदिक परोसनेके लिये कूडिया कटोरे दोने आदि सब पहिलेसे मँगाले।

१० जहाँ लोग भोजन करने बैठैं वहांके दीपककोभी देखले, आदमीसे तेलबत्ती सब दुरुस्त करादे।

परोसनेमें फ़ुरती रक्खै, सब चीज क़रीने (सुरीति) और अन्दाजसे परोसै कि न बहुत कमहो न अधिक छूटिजाय।

फूहड औरतें पहिलेही इतना परोस देतीहैं कि देखकर खानेवा-लेका जी घवडा जाताहै।

जो बेतमीज औरतें पहिलेसे सब बातोंका खयाल नहीं करलेतीं उनका तो यह हाल होताहै कि जब भोजन करनेवाले चौकेपर बैठगये तब भीतरसे चिटकोरी बजने लगी "क्याहै" कोई घी लेजाय फिर चिटकोरी बजी क्या है? कोई कटोरे लेजाय।

बस कोई कटोरे खोजरहाहै कोई थाली मांज रहाहै अब भोजन करनेवाले बैठे ताक रहेहैं और मनमें कहरहेहैं "बडी बेहूदी औरतहै, पहिलेसे सब चीजोंका बन्दोबस्त नहीं करलिया"।

खैर किसीतरह परोसाभी गया तो इधर दीपक बुझने लगा, अब खानेवाले हैरान कि क्या करें चौकेसें बाहरके आदमी जा नहीं सकते चौकेपरके लोग भोजन करें कि उठ २ तेल बाती दुरुस्त करें लाचार करनाही पड़ा।

इसलिये इन सब बातोंका बन्दोबस्त और चेत पहिलेहीसे कर रखना चाहिये।

(दे॰चं॰कुं॰) अम्मा फूहड औरतके इतनेही लक्षण हैं कि और कुछ।

(दे० सु० कुँ०) औरभी जैसा एक कवित्तसें कहाहै ।

कवित्त ।

गोहरा अस मोटी रोटी थोंपथाप धरदीनी कीनी दाल जामें गले बेकना देखाते हैं । लपसी अस भात तरकारिहूँको तारेव भले मारेव मुँह रस्से को मुखमें न जातेहैं । गजबज सब एकहीमें दाल भात तरकारी परसनके शऊर हम उनके बतातेहैं । सीनाहै न पुरना अरु दूनों नून हुरना भले फूहडके लक्षण सुबोध जन गातेहैं ॥

बोध ३०.

९ बजेका जून, देवी सुबोध कुँवारि लडकियोंको पढारहीहैं, इतनेमें दीवानजी (मुन्शी सर्वसुखलाल) बाहरसे आये, देवी सुबोधकुँवारि खडाऊंकी आहट पाकर चट उठ खडीहोगई, दीवानजी घरमें जाय पलँगपर बैठगये, यहभी पीछेसे जाय अदबसे खडीहुई, और आज्ञा पाय चौकीपर बैठगई ।

(दीवानजी) कल्ह हम तुम्हारे नैहर गयेथे, बाबू चंदीपरसाद

(दे० सु० कुँ०) के भाईके दुलहिनका जी अच्छा नहींहै, बुखार आताहै, कोई उनके घर रसोई बनानेवाला नहींहै, जबसे वह बीमारपडीं तबसे कभी बाबू चन्दीपरसाद खुद बनालेतेहैं, कभी शंभूनाथके घरके लोग आकर बना देतीहैं ।

बाबू चन्दीप्रसादने कहा "कि दीदीसे कहि दीजिये दशदिनके वास्ते चन्द्रकलाको इहां भेजिदें जब उनको फ़ुरसत होजायगी तब वह चली जायगी" मैंने उनसे कहा कि, अच्छा मैं कहदूंगा— सो तुम्हारी क्या रायहै, कुछ हर्ज न हो तो भेजिदो ।

(दे० सु० कुँ०) महाराज वह तो मेरा नैहरहीहै और वह मेरे भाइहीहैं, कुछ अदावत तो मुझसे है नहीं, और हर तरहपर आपका अख्तियार है, जिसको जहां चाहिये वहां भेजदीजिये, बाकी,

मुझसे जो राय पूछतेहैं तो मैं चन्द्रकलाका जाना वहाँ पसन्द नहीं करती, पहिले तो चन्द्रकला आज कल्ह कुछ गणितविद्या सीख रहीहै, और कुछ नये किस्मका कशीदा काढ रहीहै, इसका हर्ज होगा, दूसरे उनका घर इसवक्त बे मेंडकी दौरीहै, नौकर चाकर सब घरमें हलेरहतेहैं, अचंभित लालके लडके रमेसर, बिसेसर, नगेसर सब दिनभर घरमें आवा जाही लगाये रहतेहैं, इसके वास्ते मैंने कईबार चंदीसे कहा पर उन्होंने कुछ ख्याल नहीं किया, चन्द्रकला अब सयानी हुई इसको ऐसे बेफाट जगहमें मेरा नैहरहीहै तो क्या मैं नहीं भेजसकती, न चन्द्रकला खुशीसे एक दिनभी वहां रह सकतीहै, यों तो आपकी लड़कीहै, वनमें भेजदीजिये, तो वह उज्र न करेगी, हां हुकुम दीजिये मैं चलीजाऊँ।

(दीवानजी) नहीं नहीं, तुम कैसे जा सकतीहो, तुम्हारे जानेसे तो सब काम घरका बिगड़ जायगा, मैं सिवाय कचहरी दरबारके और कुछ जानताही नहीं कि, कहाँ क्या होताहै, तुम्हें जानेको मैं न कहूँगा, तो फिर चन्द्रकला न जायगी तो आखिर तुम्हारे भाई नाखुश न होजायँगे ?

(दे॰सु॰कुँ) महाराज ! मुझे आपके खुशी, नाखुशीका ख्याल रहताहै, आप खुशरहें तो देसभर नाखुश रहै तो मुझे कुछ चिन्ता नहीं।

(दीवानजी) क्या भाई भौजाईके खुशी नाखुशीकीभी तुमको चिंता नहीं है ?

(दे॰सु॰कुँ॰) महाराज ! जिसदिन आपने मेरा हाथ पकड़ा, और मैं आपके चरणोंकी दासी हुई, उसीदिन मैंने नैहरका नेह नाता सब छोड़दिया, मैं नहीं जानती कि, नैहर क्या और भाई भौजाई कौनहैं।

(दीवानजी) तो आखिर रसोई पानीकी उनको तकलीफ तोहै, नात वांत इसीवास्ते होतेहैं कि, समयपर एक दूसरेके काम आवे।

(दे० सु० कुँ०) हां महाराज ! यह आपका फरमाना बहुत-ठीक, परन्तु जब यह काम और तरहसे न हो सकता, तो सबकुछथा, मैं आपकी आज्ञा ले चली जाती, यहांका सबकाम चन्द्र-कला देखलेती ।

(दीवानजी) और तरहसे यह काम कैसे हो सकताहै ।

(दे० सु० कुँ०) उसी मुहल्लेमें उनकी फूआ रहतीहैं, वह बुलावें तो तुरत आसकतीहैं, न वह सही तो रिसाली (भैने) को बुलालें वह तुरत चली आवेगी, वह तो अपने घरका कुछ काम धामभी नहीं करती, और बहुधा उनके घर आया जाया करतीहै, यदि यह लोग न होतीं तो मैं अवश्य उनके शरीक होजाती सो अब भेंट होतो चंदीबाबूसे साफ कहदीजिये कि इन्हीं लोगोंमेंसे किसीको बुलायलें, चन्द्रकलाका जाना उसकी मांको नापसंदहै ।

(दीवानजी) दे० सु० कुँ० के इस व्यवहार और विचारसे अति प्रसन्नहो बाहर चले गये ।

प्यारी लडकियो ! इससमय औरतोंमें यह बडा भारी ऐबहै, कि, नैहरके वास्ते, अपने भाई भौजाईके वास्ते जानदेतीहैं उनके सामने न अपने घरको समझतीहैं न अपने पुरुषको, घररहै कि जाय मर्दको तकलीफ होतोहो, पर भाई भौजाईने बुलाया और चलदिया मर्द मनाकरें, नाखुशहों, कौन सुनताहै, ऐसी औरतें सख्त नालायक और निपट अभागी होतीहैं, इसलिये प्यारी लड-कियो ! जबसे तुम सासुरमें आवो तबसे नैहरकी मुहब्बत बिलकुल भूलजावो हम यह नहीं कहतीं कि, तुम नैहर न जावो; अपने भाई भौजाईको न जानो हमारा तात्पर्य यहहै कि पहिले अपना घर देखो, अपने मालिककी खुशी देखो, तत्पश्चात् सबको देखो।

बोध ३१.

(दे० सु० कुँ०) मनकिया।

(मनकिया) हां सरकार.

(दे० सु० कुँ०) आज बाजारका दिन है तू जा और गेहूँ जौ चना, चावल, उर्द, अरहर, निमक, चीनी, सब चीजोंका भाव बूझ आ, महीना पूरा होगया आज सब चीज मँगाना होगा।

(मनकिया) बहुत अच्छा सरकार यह कहिगई और भाव-बूझि आई।

(मनकिया) सरकार लिखैं तो मैं सब चीजोंका भाव बोल दूँ।

(दे० सु० कुँ०) बेटी चन्द्रकला। यह बोलती है तू लिखतीजा।

(चन्द्रकला लिखने और मनकिया बोलने लगी)

नाम जिन्स	भाव फी रूपया	नाम जिन्स	दर १)
गेहूँदावदी	।ऽ१	निमकसेंधा	ऽ४
गेहूँ ललरिया	।ऽ२	निमककतीला	ऽ५॥
जौ	।ऽ७	चीनी १ नम्बर	ऽ२॥
चना	।ऽ५॥	२ नम्बर	ऽ२॥।
चावल बारीक	ऽ५	,, ३ नम्बर	ऽ३
एजन दोयनम्बर	ऽ६।	अरहर	।ऽ३
,, ३ नम्बर	ऽ७	दालअरहर	।ऽ१
मोटा चावल पुराना	ऽ८	उरिद	।ऽ१
" नया	ऽ८॥	दालउरिद	ऽ९

(दे० सु० कुँ०) बेटी चन्द्रकला ! १५ आदमीका एकजून भीतर रसोई होती है, और ८ आदमीका बाहर सीधा दिया जाताहै. तो एकदिनका ३० आदमीका भीतर और १६ आद-

मीका बाहर हुवा, मीतरका हिसाब फी आदमी ऽ। और बाहरका ऽ।। के हिसाबसे जोडतो दे एक महीनेका कितना जिन्स हुवा. इसमें आधा आटा आधा चावल रखना. और दालभी बाहर ऽ= फी आदमी और भीतर ऽ- का हिसाब रखना ।

(चन्द्रकलाने चट स्लेट पिन्सिल लेकर जोडदिया)

(दे० चं० कुँ०) अम्मा ! ११।।ऽ६ जिन्सहुवा, इसमें ६ऽ आटा, और ५।।ऽ६ चावल देख लीजिये, गेहूँका दाम आजके भावसे ६ऽ का २१।।।-) और चावलका ३६) हुवा, दाल एक महीनेका ।।।ऽ७ हुवा उसका दाम ३।=)२ चार घोडोंका दाना रोजके हिसाबसे ९ऽ हुवा उसका दाम ३०)

(दे० सु० कुँ) बेटी अच्छा एक अलग कागजपर लिखो मैं लिखाती हूँ ।

नाम चीज	तादाद	दर	दाम
गेहूँ	६ऽ मन	।ऽ१	२१।।।-)
चावल १ नम्बर	२ऽ	ऽ६	१६)
चावल २ नम्बर	२ऽ	ऽ६।	१२।।।)९
चावल मोटा	१।।ऽ६	ऽ८	८=)
दाल अरहर	१।।ऽ	।ऽ१	६।=)२
दालउरिद	।।।ऽ	।ऽ	३)
दालचना	।।ऽ८	।ऽ	२।-)।
चना	९ऽ	।ऽ६।।	२३=)७
जौ भीखदेनेको	२।ऽ	-ऽ७	६।)८
निमकसेंधा	ऽ८	ऽ४	२)
चीनी अव्वल	ऽ६	ऽ२।।	२)

चीनी २ नम्बर	८३	८२।।।	४।।≡)८
कत्था सोपारी			१।।)
गरमूमसाला			१)
ठंढामसाला			१)

(दे०सु०कुँ) मनकिया ! यह फिहरिस्त और रुपया ले और लाला विशेशर दयाल (यह पुराने नौकर बडे ईमानदार हाटबाजारके वास्तेथे)को देआ, और कहि दे कि सबचीजसहेजके लेआवैं।

(मनकिया गई और फिहरिस्त और रुपया लालाविशेशरदयालको दे आई।)

(लालाविशेशरदयाल सब चीजोंको खरीदलाये।)

दे० सु० कुँ० ने सबचीजोंको, फिहरिस्तसे मिलान करलिया, गेहूँ पीसनेको देदिया, चावल फटकनेको, अरहर दरनेको मजदूरिनोंके सुपुर्द करदिया, निमक बुकवाय, चीनी साफ कराय, अलग अलग बरतनोंमें रख, कपडोंसे मुँहबांध, भंडारखानामें रखवाय दिया, और सबचीजोंका जमाखर्च लिखडाला।

(दे० चं० कुँ०) अम्मा ! यह सबकाम तो मर्दलोग करतेहैं, औरतोंको तो हमने यह सब काम करते कहींनहीं सुना।

(दे० सु० कुँ०) बेटी जिन घरोंमें औरतें नालायक होतीहैं, वहां क्याहो, मर्दलोग अपनेही इंतजाम करलेतेहैं नहींतो मर्दोंका काम सिवाय इसके कि,कमायके औरतोंको देदें, और कुछ नहींहै उसका खर्च करना और घर गृहस्थी जिन्स पातका इन्तजाम, यह सब औरतोंको करना चाहिये।

बेटी! देखो, मर्दोंको कमानेमें कितनी मेहनत पडतीहै, ६ बजे दरबारमें गये तो ११ बजे आये और १ बजे गये तो ६ बजेशामको

आये, दिनभरके काम करनेसे उनको थका आजाताहै घर आनेपर चाहिये, कि वह आरामकरैं, दिनभरका थका मिटावैं, और जो खर्चका झंझटभी उन्हींके शिररहै तो भला वह कब आराम करैंगे और औरतसे उनको क्या फायदा हुवा, औरतैं क्या इतनेही वास्तेहैं कि दोनोंजून रसोई बनाके खिलादें और सोरहैं नहीं कुलखर्च और कुलखर्चका जमाखर्च लिखना यह सबकामभी उन्हींकाहै ।

औरतोंको परमेश्वरने मरदोंके आरामके वास्ते बनायाहै, मर्द बाहरसे कमायलावैं, भीतर औरतैं खर्चकरैं, हां नालायक औरतोंको हम नहीं कहतीं जिनको न घर संचनेका कुछ लूरहै, न खर्च करनेका कुछ शऊर, वह क्या करैंगी कच्चीपक्की रसोई बनाके खिलादें और भैंस ऐसी पडीरहैं ।

बेटी ! जो औरतै मरदोंके आरामका ख्याल नहीं रखतीं, न यह समझतीहैं कि यह कैसे मेहनतसे कमातेहैं और कितना झंझट इनके शिरहै उनका तो यह हाल होताहै कि दशदिनके लिये हिसाबलगाके जो मरदोंने जिन्स देदिया तो आपने पांचही दिनमें खर्च करडाला जो मरदोंने पूँछा "काहे इतना खर्च होगया" तो नाखुशहो कहती क्याहैं "क्या मैं नैहर भेजवाय दीहलों की बेचिके गहना बनवौलों" अब इसका क्या जवाब दियाजाय. ऐसी नालायक औरतें जहरदेकर मारडालने वा गलेमें बालू भरा घडा बांधकर समुद्रमें डुबोदेने योग्य हैं ।

दोहा—प्रथम भागको इति भयो, बालबोध हित लाग ॥
पढै जो बाल सुख्यालसों, दिनदिन बढै सोहाग ॥

इति प्रथमभाग ।

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

स्त्रीसुबोध ।

भाग २.
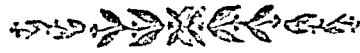
बोध ३२.

(अथ संक्षेप रामायण)

(दे० चं० कुँ०) अम्मा ! आज मैं ब्रजविहारी भैयाके घर गईथी, उनकी चचानी भाषा पढ़ेहैं, जब मैं गई, तो वे चौकीपर बैठके रामायण पढरहीथीं, अब हमसे उनसे जो जो बातें हुई वह सुनिये ।

(मैं) चचानीजी ! यह कौन पुस्तकहै ।

(वे) तू क्या करैगी पूँछके ? इस पुस्तकको तो बडे बडे होशियार आदिमीभी नहीं जानते, तू क्या जानेगी, तुम्हारी मांको सुनतीहैं कि, बहुत पढेहैं, पर वहभी इस पुस्तकको न जानती होंगी।

(अम्मा) इतना सुनके तो मैं मनहीमन जलभुनगई पर क्रोध संभालकर कहने लगी ।

(मैं)अच्छा चचीसाहेव जरा कृपा करके नामतो बतला दीजिये

(वे) इस ग्रंथका नाम (रामायण) है ।

(मैं) इसका विषयभी फरमा दीजिये ।

(वे) विषय क्या ?

अम्मा इतना सुनकर मैं ताडगई कि यह सुबोध नहीं किन्तु अबोधहै पर मैंने कहिदिया ।

(मैं) विषय यह कि, इसमें क्या बात लिखीहुईहै ?

(वै)जरा नाक भौंह सकोडकर-कौन लडकोंके साथ शिर-खपावे ।

जब उनका यह अन्दाज देखा, तो मैं चुपहोगई, जीमें तो आया कि, इन्हैं खूब लथेडों, पर मैंने सोचा कि, आखिर बडी हैं,वे अदबी होगी, पर उनका यह अन्दाज अम्मा ! मुझे बिलकुल नापसंद मालूम हुवा, और उसी समय मैंने अपने मनमें ठान-लिया, कि अवश्यही रामायण पढूं, फिर उनसे बातैं करूं ।

(दे०सु०कुँ०) क्या पढकर उनसे बातैं भी जरूर करैगी ?

(दे०चं०कुँ०) अम्मा ! जरूर, क्यों न करूंगी, वेभी मानुष कोटिमें हैं, और मैंभी । जिस भगवानने उन्हैं उत्पन्न किया, उसी भगवानने मुझेभी, फिर बात करना क्या अनुचितहै ? अच्छा अम्मा वे बडी हैं, मैं उनसे बातचीत न करूंगी, पर आप मुझे रामायण मँगा और पढ़ा दीजिये तब मुझे कल पड़ै ।

(दे०सु०कुँ०)बेटी ! ले अभी लादेती हूँ, यह कहि उठीं, और बम्बईके छापेका बहुत शुद्ध और पुष्ट अक्षरका रामायण लाके सामने रखदिया, और कहा "बेटी ! उन्होंने जो तुझसे ऐसी बात कही, तो तू जानले कि, उनको रामायणजीके अर्थमें कुछ गम्य नहीं है, नहीं तो ऐसी गर्वकी बातैं वे न करतीं, अच्छा ले, मैं रामायणका ऐसा अर्थ तुझे बताऊंगी कि, वे क्या उनके फिरिस्तेभी न जानते होंगे ।

(दे०चं०कुँ०) अम्मा ! आप एकबार उसमेंका सब इतिहास जबानी फरमादीजिये, तब कलहसे पढ़ना प्रारंभ करूंगी ।

(दे०सु०कुँ०) अच्छा बेटी ! मैं उसमेंका सब विषय संक्षेपसे वर्णन करतीहूँ तुमलोग दिल लगाकर सुनो ।

बेटी ! मैं तीन तरहका रामायण तुझको सुनातीहूँ ।

(पहिला रामायण)

पहिला रामायण एक श्लोकसें है ।

श्लोक—आदौ रामतपोवनाभिगमनं हत्वा मृगं कांचनं ।
वैदेहीहरणं जटायुमरणं सुग्रीवसंभाषणम् ॥
वालेर्निग्रहणं समुद्रतरणं लंकापुरीदाहनं ।
पश्चाद्रावणकुंभकर्णहननश्चैतद्धि रामायणम् ॥

(दूसरा रामायण)

दूसरा रामायण एक जुलाहेकाहै:—दशपांच जोलाहे कहीं चले जातेथे, रास्तेमें कहीं रामायणकी कथा होतीथी, दोचारने कहा "भाई जरा ठहरकर सुनलो, कौन कथा होतीहै" एकने कहा "अजी चलो हम थोडेहीमें यह सब कथा सुनायदेंगे" सब आगे चले तब उसने कहा ।

सरयूतीर अयोध्या नगरी, तामें राजा राम भवा ।
पनुही तोडि निकाह पढा इस जोरवा लेके जँगल गवा ॥
गढ कंचन यक बसै रवनवाँ, तेहि अहमकवैं छुठिबोरा ।
राम रावणसें भई लडाई, धैके रसवें शिरतोरा ॥

(तीसरा रामायण)

यह रामायण गोसांईं तुलसीदासजी महाराजका बनायाहै यह महात्मा जातिके ब्राह्मण, परमसाधु और भगवान्के परमभक्त थे, केवल इतनाही नहीं, किंतु वेदशास्त्र पुराण सबके जाननेवाले पूर्ण पंडितथे ।

इस रामायणमें सातकांडहैं ।

(१) बाल (२) अयोध्या (३) अरण्य (४) किष्किंधा (५) सुंदर (६) लंका (७) उत्तर ।

(अथ बालकाण्ड)

इस ग्रंथमें गोसाईंजीने प्रथम गुरु आदिककी वन्दनाकरि श्री-रामनामकी महिमा वर्णन कियाहै ।

(दे०चं०कुँ०) अम्मा ! नामकी महिमा क्या ?

(दे० सु० कुँ०) बेटी ! भगवानके अनंत नामहैं, तिनमें रामनाम अति उत्तम और गति,मुक्ति,सुख, सौभाग्य सबको देनेवाला और बढानेवालाहै ।

फिर शिवजी और पार्वतीजीका विवाह इसप्रकार वर्णन कियाहै कि पहिले शिवजीका व्याह सतीजीसे हुवाथा (यह सतीजी दक्षप्रजापतिकी कन्याथीं)

एकबार शिवजीमहाराज सतीजी समेत वनमें घूमतेरहे, उसीसमय श्रीरामचन्द्रजी महाराजको देखा कि सीताजीके हरजानेसे अतिव्याकुल होरहेहैं, तब शिवजू दूरहीसे दंडप्रणामकरि आगेचले।

(दे० चं० कुँ०) अम्मा ! दूरहीसे दंडप्रणाम क्योंकिया, क्यों सामने जाके मिले नहीं ।

(दे०सु०कुँ०) बेटी इसमें कारण यह था कि भगवान् नर शरीर धारणकरि नरलीला कररहेथे, जो ईश्वरत्वके बिलकुल विरुद्ध था, वह समय ऐसा था, कि जो शिवजी, भगवान्के सन्मुख जाते तौ भगवानको कुछ सकुच होजाती, और नीतिमें लिखाहै कि चार अवसरमें मीतके निकट नहीं जाना चाहिये ।

१ जब अपने ऊपर आपद्काल पडै ।

२ कोई ऐसा अवसर होकि सन्मुख होनेसे मीत लज्जित होजाय

३ कुछ मांगनेके लिये ।

४ किसी हेतुसे ।

सवैया ।

आपदकाल पडै निजऊपर, वा लखि मीतह्वै लज्जित सों ।
माँगनको कछु जावनहीं, उतरो तुम मीतनके चितसों ॥
नीत कहै यह मीतकी रीतहै, जाइये ना कवनो हितसों ।
वेदमें शास्त्र पुराणहुते है, सुबोध ये वात सुसावितसों ॥

(दे०चं०कुँ०) अच्छा अम्मा शिवजी आगे चलेतब क्या हुवा.

(दे०सु०कुँ०) तब सतीजीने पूच्छा "महाराज यह कौनहैं जिन को आपने नमस्कार कियाहै" ?

(शिवजी) यह परब्रह्म भगवानहैं ।

(सतीजी) महाराज ! जो यह परब्रह्म भगवानहैं, तो स्त्रीके विरहमें ऐसे दीन और व्याकुल क्योंहैं ?

(शिवजी) यह नरशरीर धारणकर नरलीला कर रहेहैं ।

सतीजीको शिवके वचन पर विश्वास न आया तब शिवजीने कहा "तुम जाके परीक्षा लेलो" ।

सतीजी गईं और जिसरास्ते भगवान आतेथे उसी रास्तेमें सीताजीका रूप धारण करके बैठगईं ।

श्रीरामजीमहाराजने देखकर सतीजीको नमस्कार किया और कहा "हे सतीजी ! शिवजीका संग छोड़कर अकेले वनमें कहां घूम रहीहो" ।

जब भगवानने ऐसे गूढ और हासके वचन कहे तबतो सतीजी लज्जित होकर शिवजीके निकट चली आईं ।

शिवजीने पूछा "कहो परीक्षा किया" सतीजीने उस बातको छिपाकर कहा "महाराज ! कुछ परीक्षा नहीं लिया । आपकी तरह मैंभी नमस्कार करि चलीआई" ।

तब शिवजीने ध्यान करके सब वृत्तान्त बूझलिया ।

(दे० चं० कुँ) मां शिवजीने देखा नहींथा, ध्यानसे कैसे बूझ लिया ?

(दे० सु० कुँ०) बेटी ! यह हृदय सकल संसारकी चित्रशालाहै सामान्य मनुष्य जो भगवत भजन करके और निंदित कर्मों-

(दे०चं०कुँ०) अम्मा ! नामकी महिमा क्या ?

(दे० सु० कुँ०) बेटी ! भगवानके अनंत नामहैं, तिनमें रामनाम अति उत्तम और गति,मुक्ति,सुख, सौभाग्य सबको देनेवाला और बढानेवालाहै ।

फिर शिवजी और पार्वतीजीका विवाह इसप्रकार वर्णन कियाहै कि पहिले शिवजीका व्याह सतीजीसे हुवाथा (यह सतीजी दक्षप्रजापतिकी कन्याथीं)

एकबार शिवजीमहाराज सतीजी समेत वनमें घूमतेरहे, उसीसमय श्रीरामचन्द्रजी महाराजको देखा कि सीताजीके हरजानेसे अतिव्याकुल होरहेहैं, तब शिवजू दूरहीसे दंडप्रणामकरि आगेचले।

(दे० चं० कुँ०) अम्मा ! दूरहीसे दंडप्रणाम क्योंकिया, क्यों सामने जाके मिले नहीं ।

(दे०सु०कुँ०) बेटी इसमें कारण यह था कि भगवान् नर शरीर धारणकरि नरलीला कररहेथे, जो ईश्वरत्वके बिलकुल विरुद्ध था, वह समय ऐसा था, कि जो शिवजी, भगवान्के सन्मुख जाते तो भगवानको कुछ सकुच होजाती, और नीतिमें लिखाहै कि चार अवसरमें मीतके निकट नहीं जाना चाहिये ।

१ जब अपने ऊपर आपद्काल पडै ।
२ कोई ऐसा अवसर होकि सन्मुख होनेसे मीत लज्जित होजाय
३ कुछ मांगनेके लिये ।
४ किसी हेतुसे ।

सवैया ।

आपदकाल पडै निजऊपर, वा लखि मीतह्वै लज्जित सों ।
माँगनको कछु जावनहीं, उतरो तुम मीतनके चितसों ॥
नीत कहै यह मीतकी रीतहै, जाइये ना कवनो हितसों ।
वेदमें शास्त्र पुराणहुते है, सुबोध ये बात सुसावितसों ॥

(दे०चं०कुँ०) अच्छा अम्मा शिवजी आगे चलेतब क्या हुवा.

(दे०सु०कुँ०) तब सतीजीने पूच्छा "महाराज यह कौनहैं जिन को आपने नमस्कार कियाहै" ?

(शिवजी) यह परब्रह्म भगवानहैं।

(सतीजी) महाराज! जो यह परब्रह्म भगवानहैं, तो स्त्रीके विरहमें ऐसे दीन और व्याकुल क्योंहैं ?

(शिवजी) यह नरशरीर धारणकर नरलीला कर रहेहैं।

सतीजीको शिवके वचन पर विश्वास न आया तब शिवजीने कहा "तुम जाके परीक्षा लेलो"।

सतीजी गईं और जिसरास्ते भगवान आतेथे उसी रास्तेमें सीताजीका रूप धारण करके बैठगईं।

श्रीरामजीमहाराजने देखकर सतीजीको नमस्कार किया और कहा "हे सतीजी! शिवजीका संग छोड़कर अकेले वनमें कहां घूम रहीहो"।

जब भगवानने ऐसे गूढ और हासके वचन कहे तबतो सतीजी लज्जित होकर शिवजीके निकट चली आईं।

शिवजीने पूछा "कहो परीक्षा किया" सतीजीने उस बातको छिपाकर कहा "महाराज! कुछ परीक्षा नहीं लिया। आपकी तरह मैंभी नमस्कार करि चलीआई"।

तब शिवजीने ध्यान करके सब वृत्तान्त बूझलिया।

(दे० चं० कुँ) मां शिवजीने देखा नहींथा, ध्यानसे कैसे बूझ लिया ?

(दे० सु० कुँ०) बेटी! यह हृदय सकल संसारकी चित्रशालाहै सामान्य मनुष्य जो भगवत भजन करके और निंदित कर्मों-

से बचकर चित्त शुद्धकर लेतेहैं, उनको हृदयमें ध्यान धरनेसे सकल संसारका हाल मालूम होजाताहै और शिवजी तो साक्षात् ईश्वरहीथे उनको मालूम होगया तो क्या आश्चर्यहै।

(दे० चं० कुँ०) अच्छा अम्मा! शिवजीने ध्यानधरके सब हाल बूझलिया तब क्या हुवा?

(दे० सु० कुँ०) शिवजी भगवानके परमभक्त और सीताजी को माता समान जानतेथे, इसलिये शिवजीने प्रतिज्ञा किया।
चौपाई–शिव संकल्प कीन मनमाहीं। यह तनु सती भेंट अब नाहीं॥
ऐसा मनमें ठान, कैलासमें आय, अलग समाधि लगाके बैठे, सतीजीभी समझगईं कि, हमसे अपराध हुवा और शिवजी हमसे नाखुशहैं, इसकारण सतीजी बहुत उदास रहाकरती थीं। उसी समय सतीजीके पिताने यज्ञ ठानाथा, सब देवता अपनी अपनी देवियोंसमेत विमानोंपर चढि उनके यज्ञमें जातेरहे। जब शिवजीकी समाधि टूटी तब सतीजीने विनय किया॥

सवैया।

नाथ विनय कछु कीन चहों शिव कोपनिवारिके जो सुनिलीजै॥
होत महाउतसव मम नैहर चाहत यज्ञ पिता मम कीजै॥
जात सदंपति देव सबै चितचूंदर चाहते मेरउ भीजै।
जांउरहूं दिन चारि सुबोध कृपाकरि जो तुम आयसु दीजै॥

शिवजू बोले "कि तुम्हारे पिता हमसे नाखुश रहते, और वैर मानतेहैं, इसीसे बोलाया भी नहीं आयाहै, सो वे बोलाये जाना उचित नहीं है"।

यद्यपि मित्र, प्रभु, पितु और गुरुके घर वेबुलाये जाना चाहिये, तौभी जहां वैर विरोध हो तहां जानेमें निरादरताका क्लेश उठाना पड़ता है।

दोहा-गुरु पितु प्रभु औ मित्र गृह, बिनहि बुलाये जाव ।
पर विरोध होवै जहां, तहाँ न दीजो पांव ॥

शिवजीने बहुत समझाया, पर सतीजीने एक भी न माना, शिवजी समझगये, कि यह हमारा कहा नहीं मानतीहै, तो कुछ अच्छा होनहार नहींहै ।

दोहा-जैसी हो होतव्यता, तैसी उपजत बुद्धि ।
होनहार हृदय बसै, बिसरि जाय सब शुद्धि ॥

निदान शिवजीने सतीजीको कुछ गणोंके साथ बिदा किया, सतीजी अपने पिताके घर आय यज्ञशाला देखने लगीं, उस यज्ञशालामें सबदेवतोंका भाग लगा देखा, पर शिवजीका भाग नहीं देखा, तब तो सतीजीको पति अपमान नहीं सहागया, और क्रोधकरके योग अग्निमें अपना शरीर जलादिया ।

शिवजीके गण जो सतीजीके साथ पहुँचाने आयेथे, सतीजीका जलना देख, अतिक्रोधित हो, यज्ञ विध्वंस करनेलगे ।

जब शिवजीने यह समाचार पाया तब कोपकरि वीरभद्रजीको भेजा, वे आयके सबको यथायोग्य दंडदे, यज्ञविध्वंस करदिया ।

तब सतीजीका जन्म हिमाचलगिरिके घर हुवा वहां पार्वती नाम पडा, और नारदजीके उपदेशसे शिवजीका बडा कठिन तप किया ! तब शिवजी प्रसन्न हो पार्वतीजीको अंगीकार किया, और ब्याह करि उत्साह सहित कैलासमें आय आनंदपूर्वक निवास करनेलगे ।

(दे०चं०कुं०) अम्मा ! जरा शिवजीके ब्याहका कुछ हाल विशेष रीतिसे वर्णन कीजिये कि कैसे वह दूलह बनायेगये, किस तरह बरात सजीगई, कैसे ब्याह हुवा, यह सब हाल सुन्दर और संक्षेपरीतिसे वर्णन कीजिये ।

(दे० सु० कुं०) बेटी ! हां जब यह व्याह करने चले तो जैसे सबके वहां मौर इत्यादिसे दूलह साजाजाताहै वैसे ही गणोंने शिवजीको सँवारा ।

सवैया ।

शीशपै सांपके मौर बने अरु, कानन कुंडलहूँ किये काला ॥
कंठमें कारे सुकंठ बने उर, मोतिन हार सोहै रुंडमाला ॥
कंगन सॉँप सोहैं करमो अरु, सांपहिको है जनेउ विशाला ॥
सांपको करधन सांप कोपीन है, दूलह ऐसे बने शिवबाला ॥ १ ॥
हाथ लिये डमरू डिमिकावत, गावत गड बड राग रसाला ॥
बूढसा बैल बन्यो सुखपाल औ, तापर कूदि चढे शिवबाला ॥
भूत औ प्रेत बराती जुटे, जिनके बहु भेष हैं औ बहुख्याला ॥
या विधि साजि बरात चले शिव, नाचत योगिन भूत बेताला ॥ २ ॥
काहुके मुंड न रुंडके ऊपर, काहुके लाख हजारन सीसा ॥
काहुके आंख न येकौ आखिये, काहुके आंख दिसैं दसबीसा ॥
हाथ वो पांव अनेकहैं काहुके, एक औ काहुके एको न दीसा ॥
तैसी बरात विचित्र बनी अरु, दूलह जैसे बने शिवईसा ॥ ३ ॥
पहुँची जब नग्र निकेत बरात, चले शिशु धायकै देखनको ॥
भडके सब देखि बरात दशा, अडके सब देखि कुभेपनको ॥
धीरधरे नहिं भागि चले शिशु, देखि डरे बहु पेखनको ॥
निज मातुन अंक सशङ्क घुसे नहिं, है सो दशा कछु लेखनको ॥ ४ ॥
पूछत मातु कहो शिशु काह, कहैं शिशु काहकहैं हम माई ॥
है यमको यह धार अपार, किधौं यह कालकला चलिआई ॥
दुल्लहमुल्लह बैलचढा भरि, अंगभुअंग रहे लपटाई ॥
भूत औ प्रेत पिशाच समेत, अहो मम मात बरात है आई ॥ ५ ॥

आई बरात जो द्वारके चारकी, साजि सुआरती मंगल मैना ॥
संगसखी सुकुमार अपार, चली सब गावत कोकिल बैना ॥
देखिके दूलह भेष भयावन, भागि चलीं भयते तिय अयना ॥
देह दशा विसरायके धाय, गिरी गृह जाय अचेत अचयना ॥६॥
पारवती कहँ गोद उठाय, लिये उरलाय भरे जल नयना ॥
काहरचे वरको बौराह जो, तोहि रचे अस सुन्दर सयना ॥
सिंधुमें डूबैं गिरैं गिरिते अरु, जाय जरै वरु पावक मयना ॥
भारि जीयत तो कहँ या वरको, कौन्यो विधि मोकहँ देत बनैना॥७॥
हा विधिना तुम कीन कहा, मम पार्वती कहँ या वर दीना ॥
क्षार मले तनु व्याल गले, पग लै सम दीसत मूढ मलीना ॥
हा फल लाग बबूलहिसो, कल्पद्रुमको चहिये जेहि दीना ॥
नारदको हम काह कियो, गृहमोर उजारिके चिक्कन कीना ॥८॥
बौरेवर हेत करायो जिनो तप, ताप दियो मम पारवतीको ॥
क्या क्या कलेश सहे न सुता तप,कीनो अगम्य जो योगी यतीको॥
शोचत होत सखी उरदाह मैं, काह कहूँ भगवन्त गतीको ॥
ये सुकुमार सुता मम सुन्दरि, ताही बरा सखी ऐसे पतीको ॥

कवित्त ।

ऐसो वौराहवर आयोसखीमेरेघर नगनजटिल गरनरमुण्डमालाहै॥
तन न वसन फलवारे लपटाये सारेधारे करडमरु सवाँरे मृगछालाहै
नयनजाकेतीनयहठाटहनैंवीनसखीगडबडबोलअरुचालमतवालाहै
हायसखीरोऊँमैंकिहसूँयहभेषपेखकहैंलागगौरावरबौराबैलवालाहै ॥

सवैया ।

पारवती समुझावत मातुहि, मातु नहीं यह सोच समैया ॥
जो विधिना लिखि दीन ललाट, कहो अहो मातु है को टरवैया ॥
जो हमरे लिखि बावरो नाह तो, काहुको दोष न दीजियो मैया॥
ऐसो विचारिनिवारिये खेद,मिलैफल जैसो करै जो कमैया॥११॥

आयगये तेहि औसर नारद, देखिकै या विध व्याकुल सैना ॥
पूरबजन्म कथा कहिकै, परतोषे सबै समुझाय सुबैना ॥
पारबती महिमा सुनिकै, हरषीं सब नारि भयो चितचैना ॥
होनलगे तहां मंगल गान औ, व्याह उछाह छयो भरिऐना ॥ १२ ॥

दोहा—पारवती शिवको सुभग, व्याह भयो हरषाय ॥
सुनि सुबोध जनमुदितमन, पाइहि फल सुखदाय ॥

फिर श्रीरामजीका चरित्र इसप्रकार वर्णन कियाहै कि भरतखंड के बीच श्रीअयोध्यानगरी परम पावन, परमपवित्र, वहांके महाराज बडभागी श्रीदशरथजी महाराज, तिनके तीन प्रधान स्त्रियां, श्रीमहारानीकौशल्याजी, श्रीमहारानी कैकेयीजी और श्रीमहा-रानी सुमित्राजी ।

कौशल्याजीके गर्भसे श्रीमहाराज राचन्द्रजी, कैकेयीजीके गर्भसे श्रीमहाराज भरतजी और सुमित्राजीके गर्भसे श्रीमहाराज लक्ष्मणजी और शत्रुघ्नजी प्रकट हुये ।

इन चारों भाइयोंने बालविनोदसे माता, पिता और सारे पुरवासियोंको बडा आनंद दिया ।

फिर षोडशवर्षकी अवस्थामें विश्वामित्रमुनि अपने यज्ञकी रक्षा निमित्त श्रीरामजी और लक्ष्मणजीको अपने साथ ले वनको आये-

वहां दोनों भाइयोंने ताडका आदिक निशाचरोंका वध करि मुनिजीका यज्ञ पूराकिया ।

उसीसमय मिथिलादेशके महाराजा जनकजीने सीताजीके व्याहके वास्ते स्वयम्वर रचाथा, अर्थात् यह प्रण कियाथा कि जो राजा इस शिवजीके धनुषको तोडैगा उसके साथ सीताजीका बिवाह होगा

यह हाल मुनिजीसे सुनि दोनोंभाई उनके साथ जनकपुरीमें धनुषयज्ञ देखने चले ।

रास्तेमें अहल्यानाम गौतमजीकी स्त्रीको जो शापसे शिला होगईथी अपने चरणरजसे तारके जनकपुरीमें पहुँचे वहां धनुष तोडि सीताजीको व्याहि अवधपुरीमें पलटि आये ।

(दे॰चं॰कुँ॰) अम्मा ! इस कांडकी कोई विशेष बात आपने नहीं वर्णन की ।

(दे॰सु॰कुँ॰) बेटी ! सीताजीके स्वयम्बरमें देशदेशके राजा जमाथे, जब सब धनुष उठायके हारगये और किसीसे धनुष न टूटा, अब केवल श्रीरामचन्द्रजी और लक्ष्मणजी बाकी रहगये उस समय सीताजीकी माता जिनका नाम देवी सुनयना था श्रीरामचन्द्रजीके शरीरकी कोमलता और धनुषकी कठोरता स्मरण करि अतिव्याकुल हो सखियोंसे कहने लगीं ।

चौपाई—सखि सब कौतुक देखन हारे । जेउ कहावत हितू हमारे १
कोउ न बुझाय कहै नृप पाहीं । ये बालक अस हठ भल नाहीं २
रावण बाण छुवा नहिं चापा । हारे सकल भूप करि दापा ३
सो धनु राजकुँवर कर देहीं । बालमराल कि मन्दर लेहीं ४
भूपसयानप सकल सिरानी।सखि विधिगत कछु जात न जानी

(दे॰चं॰कुँ॰) अम्मा ! इन चौपाइयोंका तिलक करदीजिये जिससे हमलोग समझ जांय ।

(दे॰सु॰कुँ॰) अच्छा सुनो, देवी सुनयनाजी सखियोंसे कहतीहैं हे सखी ! बडा आश्चर्य है.इस समाजमें यह जितने हमारे हितूभी कहलातेहैं सो सब तमाशबीन बनेहैं ॥ १ ॥

अरे राजाजीसे समझाकर कोई यह नहीं कहता कि कहां यह बालक, और कहां आपका हठ, यह योग्य नहीं है ॥ २ ॥

अरे जिस धनुषको रावण और बाणासुरने अतिकठिन समझके हाथसेभी नहीं छुवा, और सारे पृथ्वीभरके बलवान राजा जिसधनुषपर अपना बल करके हारगये उस धनुषको यह बालक उठावें हाय ! भला हंसका बच्चा शोभादेखनेको है कि पहाड उठानेको४॥

अहो, राजाजीकी सारी बुद्धिमानीका इससमय अन्त होगया, सखी ब्रह्माकी गति कुछ लखि नहीं पड़ती ॥ ५ ॥

अब सखीने जिन बातोंसे देवी सुनयनाजीको बोध कियाहै उन बातोंके सुननेसे तुमलोगोंको इसबातका प्रमाण मिलैगा कि, आगेकी स्त्रियां कैसी चतुर और विद्यावान होतीथीं ।

अथ सखीका वचन ।

चौपाई–बोली चतुरसखी मृदुबानी । तेजवंत लघु गनिय न रानी१
कहँ कुम्भज कहँ सिंधु अपारा।सोखेउ सुयश सकलसंसारा२
रविमंडल देखत लघु लागा।उदय तासु त्रिभुवन तम भागा
दोहा–मंत्र परमलघु जासु वश, विधि हरि हर सुर सर्व ॥
महामत्त गजराजकहँ, वश करु अङ्कुश खर्व ॥ ४ ॥
चौपाई–काम कुसुमधनु सायक लीने।सकल भुवन अपने वश कीने
देवि तजिय संशय जिय जानी। भंजब धनुष राम सुनु रानी

(सखी कहतीहैं)

हे महारानीजी ! आप ऐसी विकल काहेको होतीहैं; तेजवंत पुरुषको छोटा नहीं समझना चाहिये ॥ १ ॥ (दृष्टांत)

कुम्भज मुनिने अपार समुद्रको सोखलिया ॥ २ ॥

सूर्यका मंडल देखनेमें कैसा छोटा मालूम होताहै पर अपने उदयमात्रसे तीनलोकका अंधकार मिटादेताहै ॥ ३ ॥

जिस मंत्रके वश ब्रह्मादिदेव हैं, वह मंत्र कैसा छोटा होताहै । हाथी कितना बडा जानवर होताहै उसको एक छोटासा अङ्कुश वश करलेता है ॥ ४ ॥

हे देवि ! आपने सुनाही होगा कि कामका बाण कुसुमका है, उसी बाणसे वह सारे लोकको वश करलेताहै ॥ ५ ॥

हे महारानी ! आप शोच तजिये विकल न हूजिये यह श्रीरामचन्द्रजी जो आपकी दृष्टिमें छोटे और अतिकोमल शरीरवाले प्रतीत होते हैं, यही धनुषको तोड़ैंगे ॥ ६ ॥

बेटी ! इन्हीं बातोंको मैंने कवितामें करदियाहै सुनो ।

सवैया ।

सखि ये जो कहावत मेरेहितू सो बने सब कौतुक देखन हारो ।
न कहैं नृपते यह कोऊ बुझाय नहीं इनते चहिये हठ धारो ॥
हा विधिकी गति जात न जानि सयानि कहो नृप बुद्धि विचारो ।
ावण बाण छुवा नहिं जाहि औ ताहि उठावैं ये राजकुमारो ॥१॥
ब बोली सयानि सखी मृदुबानि सुनो महरानि न शोचिये ऐसो
जसको गनिये नहिं छोट कहों अस नीतिहै भाषत जैसो ॥
सिंधु कहां कहां कुम्भजको धज सोखे कहो यह बातहै कैसो ।
ीनउ लोकको नाशतहै तम देखतकै रविमंडल ऐसो ॥ २ ॥
ंत्रको अक्षर होतहै एक बडे सों बडो दसवीसलों जानो ।
ा वश विष्णु औ रुद्र अजादि सबै सुर मंत्रके तन्तु पिछानो ॥
खिये येतो बडो गजराज सो ताहुको अंकुशके वश जानो ।
ाम कुसुम्मको बाण लिये तेहि तान करै सबहीको दिवानो ॥३॥
ह देखतके लघु लागतहैं करनी इनकी है बडोते बडो ।
हीं ताड़का आदि निशाचरको सबै मारेउ तानके बान कडो ॥
नियज्ञको राखि अहल्यहिं तारियो थी शिलरूप जो भूमि पडो ।
ु भंजे विना सो रहैंगे नहीं न टरो यह मेरु टरो तो टरो ॥ ४ ॥
हरानि जु मानिये मोर कहा जिन आनिये रंचक खेद हिये ।
ति आनिये यामहँ झूँठ जरा न कहों जलगंगको हाथलिये ॥

अबहीं सुनिये यही राजकुमारहैं नाकपिनाकको तोडदिये ।
सियब्याह उछाहहै नग्रछयो सबहीको भयोहै अनंद हिये ॥ ८ ॥

इसके बाद भगवानने धनुष तोडा, और सीताजीको ब्याहि अपने नगरको आये ।

(अथ अयोध्याकांड)

जब श्रीरामचन्द्रजी महाराज ब्याहकरि अवधपुरीमें आये, तो कुछ काल पीछे महाराज दशरथजीने रामजीको राजगद्दी देनेका सामान किया ।

देवता, जो रावण राक्षसके वश होय बहुत क्लेश सहतेथे, मनमें विचार किया, "कि भगवान यदि राजकाजमें फँसिजांयगे, तो हमलोगोंका बन्ध कैसे छूटैगा" ऐसा विचारि शारदाजीको भेजा कि तुम अवधपुरीमें जाय कोई ऐसा उपाय करो, जिसमें भगवानको राज्य न होनेपावे ।

शारदाजी अवधपुरीमें आय, मन्थरानाम कैकेयीजीकी लौंडीकी मति फेर चलीगई ।

मन्थराने कैकेयीजीसे कहा "तुमको अपने हित अनहितका कुछ चेत नहीं है, तुम्हारी सौत कौशल्याने अपना काम करलिया रामचन्द्रको राज्य होताहै, अब कौशल्याका आदरमान होगा, तुम लौंडीकी समान रहोगी, और तुम्हारे पूत भरतभी याकी गुलामी करैंगे, वा बन्दीखाना सेवैंगे ! ।

यह सुनि, पहिले तो कैकेयीजीने उसे दुरकारा, पर शारदाजीने जब उनकी मतिभी फेरदिया, तब वह मन्थरासे कहने लगीं ।

हे मन्थरा ! मैंतो सूधीसाधी आदिमीहौं, मैं यह सौतका कपट क्या जानूं, अब जो उपाय तू कहे सो मैं करूं ।

मन्थराने कहा, राजाजीसे तुम वरदान माँगिलो, कि भरतको राज्य और रामचन्द्रको वनवास हो।

यह सलाह करि कैकेयीजी कोप भवनमें गई और भूषण वसन उतारि मैले काले कपडे पहिन भूमिपर सोई।

जब महाराज दशरथजीको इसबातकी खबर हुई, तो कोपभवनमें जा प्यारसे कैकेयीको उठा कहने लगे "हे प्रिये! तू काहे उदास है, जो तुझे इच्छा हो सो मांग"।

यह सुनि कैकेयीने त्रियाचा लेकर कहा, "एकवरदान यह दीजिये कि भरतको राज्य हो, दूसरा यह कि रामचन्द्रको चौदह (१४) वर्षका वनवास होय"।

यह सुनि महाराज दशरथजी, अतिशोकवान हो, कैकेयीको बहुत समझाया कि भरतको राज्य होय, पर रामजीको वनवास काहेको देतीहो, पर कैकेयीने न माना।

तब महाराज दशरथजी अतिव्याकुल हो हाय राम! २ कहिके भूतलमें गिरपडे।

श्रीरामजीको जब यह सब हाल मालूम हुवा, तो मातापिताको समझाय, उनकी आज्ञा ले, बडे हर्षसे वनयात्राको तैयार होगये।

सीताजीने जब यह समाचार सुना तो वेभी भगवानके संग चलनेको तैयार होगई।

रामजीने जानकीजीको बहुत समझाया, और अनेकभांतिसे वनका भयानक वृत्तान्त कहिसुनाया, पर सीताजीने ऐसे विनीत वचनोंसे प्रार्थना की कि भगवानने संगचलना मंजूर किया।

बेटी! जो तू कहे तो जो जो बातें परस्पर सीताजीके और भगवानके हुईहैं वह सब तुझको सुनाऊं!

(दे॰ चं॰ कुँ॰) अम्मा! जरूर जरूर सुनाइये।

(दे० सु० कुँ०) अच्छा सुन मैं कहतीहूं ।

दोहा-कहि प्रियवचन विवेकमय, कीन मातु परितोष ॥
लगे प्रबोधन जानकिहि, प्रगट विपिन गुणदोष ॥

चौ०-मातु समीप कहत सकुचाहीं । बोले राम समुझि मनमाहीं ॥
राजकुमारि सिखावन सुनहू । आन भांति जिय जनि कुछ गुनहू ॥
आपन मोर नीक जो चहहू । वचन हमार मानि घर रहहू ॥
आयसु मोर सासु सेवकाई । सबविधि भामिन भवन भलाई ॥
यहिते अधिक धर्म नहिं दूजा । सादर सास ससुर पदपूजा ॥
जब जब मातु करहि सुधि मोरी । होइहि प्रेमविकल मतिभोरी ॥
तबतब तुम कहि कथा पुरानी । सुंदरि समुझायहु मृदुबानी ॥
कहौं स्वभाव शपथ शत मोहीं । सुमुखि मातुहित राखहुँ तोहीं ॥
मैं पुनि करि प्रमाण पितुबानी । बेगि फिरब सुनु सुमुखि सयानी ॥
दिवस जात नहिं लागिहि बारा । सुंदरि सिखवन सुनहु हमारा ॥
जो हठ करहु प्रेमवश बामा । तौ तुम दुख पाउब परिणामा ॥
कानन कठिन भयंकर भारी । घोर घाम हिम बारि बयारी ॥
कुश कंटक मग कंकर नाना । चलब पयादहि बिनु पदत्राना ॥
चरण कमल मृदु मंजु तुम्हारे । मारग अगम भूमिधर भारे ॥
कंदर खोह नदी नद नारे । अगम अगाध न जाहिं निहारे ॥
भालु बाघ वृक केहरि नागा । करहिं नाद सुनि धीरज भागा ॥

दोहा-भूमिशयन बल्कल बसन, अशन कन्द फल मूल ॥
ते कि सदा सबदिन मिलहिं, समय समय अनुकूल ॥

चौपाई-नर अहार रजनीचर करहीं । कपटभेष वन कोटिन फिरहीं ॥
लागै अतिपहारका पानी । विपिन विपति नहिं जाय बखानी ॥
व्याल कराल विहँग वनघोरा । निशिचर निकर नारि नर चोरा ॥
डरपहिं धीर गहनसुधि आये । मृगलोचनि तुम भीरु सुभाये ॥

हंसगमनि तुम नहिं वनयोगू । सुनि अपयश देइहिं मोहिं लोगू ॥
मानस सलिल सुधा प्रतिपाली । जियइ कि लवनपयोधि मराली ॥
नव रसाल वन विहरनशीला । सोह कि कोकिल विपिन करीला ॥
रहहु भवन अस हृदय विचारी । चन्द्रवदनि दुख कानन भारी ॥
दोहा—सहज सुहृद गुरुस्वामिशिष, जो न करै हित मानि ॥
तो पछिताय अघाय उर, अवशि होय हितहानि ॥
चौ०—सुनि मृदुवचन मनोहर पियके।लोचननलिन भरेजल सियके
शीतलसिख दाहक भइ कैसे । चकइहि शरद चांदनी जैसे ॥
उतर न आव विकल वैदेही । तजन चहत मोहिं परमसनेही ॥
बरवश रोकि विलोचनवारी । धरि धीरज उर अवनिकुमारी ॥
लागि सासुपद कह करजोरी । क्षमब मातु बड अविनय मोरी ॥
दीन प्राणपति मोहिं सिख सोई । जेहिविधि मोर परमहित होई ॥
मैं पुनि समुझि देख मनमाहीं । पियवियोग सम दुख जग नाहीं ॥
यहि विधि सिय सासुहि समुझाई । कहति पतिहि वरविनय सुनाई॥
दोहा—प्राणनाथ करुणायतन, सुंदर सुखद सुजान ॥
तुम विनु रघुकुलकुमुद विधु, सुरपुर नरक समान ॥
चौपाई—मातु पिता भगिनी प्रिय भाई।प्रिय परिवार सुहृद समुदाई॥
सास ससुर गुरु सुजन सुहाई ।सुठि सुंदर सुशील सुखदाई॥
जहँलगि नाथ नेह अरु नाते । पियविनु तियहि तरणिते ताते
तन धन धाम धरणि पुरराजू।पतिविहीन सब शोकसमाजू
भोग रोगसम भूषण भारू । यमयातना सरिस संसारू ॥
प्राणनाथ तुमविनु जगमाहीं।मोकहँ सुखद कतहुँ कोउ नाहीं
जिय विनु देह नदी विनु वारी।तैसेहि नाथ पुरुषबिनु नारी॥
नाथ सकल सुख साथ तिहारे।शरद विमल विधुवदन निहारे
दोहा—खग मृग परिजन नगर वन, बलकल वसन दुकूल ॥
नाथ साथ सुरसदन सम, पर्णशाल सुखमूल ॥

चौपाई–वनदेवी वनदेव उदारा । करिहैं सासससुरसम सारा ॥
कुश किशलय साथरी सोहाई । प्रभु सँग मंजु मनोज तुराई ॥
कन्द मूल फल अमिय अहारू । अवध सहस सुख सरिस पहारू॥
क्षण क्षण प्रभुपद कमल विलोकी।रहिहौं मुदित दिवस जिमि कोकी
वन दुख नाथ कहेउ बहुतेरे । भय विषाद परिताप घनेरे ॥
प्रभुवियोग लवलेश समाना । सबमिलि होहिं न कृपानिधाना॥
अस जिय जानि सुजान शिरोमनि।लेइय संग मोहिं छाँडिय जनि॥
विनती बहुत करौं का स्वामी । करुणामय उर अंतरयामी ॥
दोहा–राखिय अवध जो अवधि लगि, रहत जानिये प्रान ॥
दीनबंधु सुंदर सुखद, शील सनेह निधान ॥
चौ०--मोहिं मग चलत न होइहि हारी।क्षण क्षण चरणसरोज निहारी
सबहि भाँति पिय सेवा करिहौं । मारग जनित सकल श्रम हरिहौं॥
पाँव पखारि बैठि तरु छाँहीं । करिहौं वायु मुदित मनमाहीं ॥
श्रम कण सहित श्याम तनु देखे । का दुख समय प्राणपति पेखे ॥
सम महि तृण तरु पल्लव डासी । पाँव पलोटिहि सब निशि दासी॥
बार बार मृदु मूरति जोही । लागिहि ताप बयारि न मोहीं ॥
को प्रभुसँग मोहिं चितवन हारा।सिंहबधुहि जिमि शशक सियारा॥
मैं सुकुमारि नाथ वन योगू । तुमहिं उचित तप मोकहँ भोगू ॥
दोहा--ऐसेहु वचन कठोर सुनि, जो न हृदय बिलगान ॥
तौ प्रभु विषम वियोग दुख, सहिहैं पामर प्रान ॥

लक्ष्मणजीने यह समाचार पाया, व्याकुल हो, रामजीके पास आय सन्मुख हाथजोड खडेहुये ।

रामजीने कहा "हे भाई ! हम वनको जातेहैं, पिताजी हमारे वियोगसे अतिव्याकुल हैं, भरत और शत्रुहनभी इसवक्त यहां नहींहैं फिर ऐसे समय जो तुमभी यहां न रहोगे, तो कौन सबको बोध-देगा; प्रजाकी रक्षा कौन करैगा ।

लक्ष्मणजीने कहा "हे नाथ!मैं सेवकहों आप स्वामीहैं आपका संगछोड मैं नहीं रहिसकता।
तब भगवानने कहा "अच्छा जावो,माताकी आज्ञा ले जल्दी आवो"

लक्ष्मणजी माताके पास जाय सबहाल कहि सुनाया सुमित्राजी यह वृत्तांत सुनि सूखगई पर धीरज धरके कहा हे पुत्र । तुम्हारे पिता सरिस रामजी और माता समान जानकीजीहैं जो वेही वनको जातेहैं तो अवधमें तुम्हारा क्या कामहै तुम अवश्य संग जावो और ऐसा यत्न करना जिसमें भगवानको किसीतरह किसी बातकी तकलीफ न हो ऐसे कहि आशीर्बाद दे बिदाकिया ।

तब अनुज और सीताजी सहित भगवान वनको सिधारे, उस समय जो शोक और खेद अवधपुरीमें हुवा, वह वर्णन करने योग्य नहीं है ।

भगवान प्रिया और अनुजसहित वन वन घूमते मुनियोंको दर्शन और सुखदेते चित्रकूटमें जाके कुछकाल निवास किया ।

इसी स्थानपर पीछेसे भरत और शत्रुहनजी कौशल्या आदि माता और पुरवासियोंके सहित और राजा जनकजीभी रनिवासों सहित आये और परस्पर भेंटामिली करके अपने अपने नगरको पलटिगये ।

(अथ अरण्यकाण्ड)

एकबार जब भगवान पंचवटीमें विराजमानथे तो विधिवश राक्षसोंका राजा जो रावण, तिसकी बहिन शूर्पणखा घूमती घूमती उस अरण्यमें आई और भगवानकी मोहनी मूरत सांवली सूरत देखि मोहित हो कहने लगी तुम हमारे पति होहु ।

रामजीने सीताजीकी तरफ इशारा करके (हासकी राहसे) कहनेलगे, "हमारा विवाह तो होचुकाहै, वह हमारा छोटा भाई कुँवारा है उससे कहो"

तब वह लक्ष्मणजीके सन्मुख जाय अपना अभिलाष प्रगट किया लक्ष्मणजीने कहा "हे सुंदरी ! मैंतो उनका दास हूं, उनकी सेवकाईसे एकक्षण छुट्टी नहीं मिलती, तू हमारे साथ रहकर क्या-सुख भोगैगी, वे महाराज कौशलपुरके राजाहैं। वह जो कुछ करैं सब शोभताहै, तात्पर्य यह कि राजाओंके कई विवाह होसकतेहैं, तब वह खिसिआनी होकर फिर रामजीके निकट आई और महा-भयंकर अपना रूप प्रगट किया ।

तब रामजीके इशारासे लक्ष्मणजीने उसका नाक कान काटलिया ।

नाक कान कटजानेसे वह अतिखिसिआनी और व्याकुल होय खर दूषण अपने भाइयोंको चढालाई ।

खर दूषण चौदह सहस्र १४००० रणधीर और लडाके निशा-चर लेके भगवानसे लडने आये, भगवानने एकक्षणमें सब निशा-चरोंका नाश करदिया ।

तब शूर्पणखा रोती पीटती लंकामें रावणके पास गई और दूरहीसे धिक् धिक् करते कहने लगी ।

चौपाई—बोली वचन क्रोधकरि भारी।देश कोशकी सुरति विसारी॥
करसि पान सोवसि दिनराती।सुध न तोहिं शिरपर आराती
राज नीतिबिन धनबिनु धर्मा।हरिहि समर्पेबिनु सत्कर्मा ॥
विद्या बिनु विवेक उपजाये । श्रमफलपढे किये अरु पाये॥
सँगते यती कुमंत्रते राजा । मानते ज्ञान पानते लाजा ॥
प्रीत प्रणय बिनु मदते गुनी।नाशहि वेगि नीति अस सुनी॥

सोरठा—रिपु रुज पावक पाप, इन्हैं न गनिये छोट करि ॥
अस कहि विविध विलाप, करि लागी रोदन करन ॥

दोहा—सभामांझ व्याकुल परी, बहुप्रकार कह रोय ॥
तोहिं जियत दशकंधर, मोरि कि अस गति होय ॥

यह सब वृत्तांत सुनि रावणने, अपने मनमें विचार किया।

सवैया।

खर दूषण मो सम थे बलवान, विना भगवानको आन हतैया॥
जो प्रगटे प्रभु भार उतारन, तौ तरबेको करौं मैं उपैया॥
तामस देहते भक्ति न होय, न राक्षस मानुष होय मितैया।
बैर करों हठि तासों लडों, औ मरों तेहि हाथ तरों अतुरैया॥

यह बात मनमें ठहराय मारीच निशाचरको अपने संग ले भगवानके आश्रमपर आया।

मारीच सोनेका मृग बना, और भगवानके आश्रमके सामने इधरउधर खेलकूद करनेलगा।

सीताजीकी उसपर दृष्टि परी, भगवानसे कहने लगीं "महाराज इस मृगको मारिये, इसका छाला बडा सुंदर होगा"

भगवान सीताजीको लक्ष्मणजीके सुपुर्द करके आप धनुषबाण ले उस मृगके पीछे चले।

वह कपटमृग कूदता उछलता चौकडीभरता छल करता दूर-चलागया तब भगवानने उसको मारा, मरती समय उसने राम-जीका नाम धीरे, और लाक्ष्मणजीका नाम बडेजोरसे पुकारा।

उसकी पुकार सुनकर सीताजीने लक्ष्मणजीसे कहा "जल्दी जावो, तुम्हारे भाई किसीसङ्कटमें पडेहैं तुम्हें पुकारतेहैं" लक्ष्मणजीने कहा वह परब्रह्म भगवान हैं, उनके निकट संकट नहीं आसकता तुमको मुझे सौंपगयेहैं तुम्हें छोड मैं कैसे चलाजाऊँ" तब सीता-जीने कुछ ऐसी बात कही, कि लक्ष्मणजी वहांसे चले।

(दे० चं० कुँ०) अम्मा! सीताजीने कौनसी बात कही जिसको सुनके लक्ष्मणजी वहांसे चले।

(दे०सु०कुँ०) बेटी यह दस्तूरहै कि संकटमें जब आदमी पडता है, तो आदमीका ख्याल बदलिजाताहै, धैर्य जातारहताहै, धर्मभी छूटिजाताहै, इसीपर कहाहै ।

चौपाई—धीरज धर्म मित्र अरु नारी । आपदकाल परखिये चारी॥

सीताजी संकटमें पडीथीं, घर द्वार देश कोश सब छूटिही गयाथा माता पिता सास ससुर कोईभी संगमें नहींथा, अकेले निरजनवनमें रहना पडताथा ऐसे समयमें जब उन्होंने उस कपटमृगकी पुकार सुनी तो उनको यह निश्चय होगया कि यह हमारे स्वामीकी पुकारहै वह अवश्य किसी संकटमें पडेहैं, ऐसा समुझि पतिप्रेम और पतिबियोगके भयसे व्याकुल होगई, जब लक्ष्मणजीसे जानेको कहा और उन्होंने इन्कार किया इस्से जानकीकी व्याकुलता और बढगई और योग्य अयोग्यका विचार जातारहा तब लक्ष्मणजीसे कहा ।

"ऐसे संकटमें तुम अपनेभाईकेशरीक नहीं होते हो तो मालूम होताहै कि तुम्हारे मनमें बेईमानी बसीहै जब तुम धनुष तोडने नहीं पाये तो यहां तुमने अवसर पाया अब चाहतेहो कि, हमारे भाई न रहैं तो मैं इनको लेकर सुखभोग करों ।

वा तुम भरतसे सलाह करके आये हो कि "वनमें उनको मरवा डालैं तो भरत निष्कंटक राज्य करैं" इत्यादि अनेक प्रकारके ऐसे लागुन वचन कहे कि, लक्ष्मणजीको जानाही पडा ।

(दे०चं०कुँ०) अच्छा अम्मा तब क्या हुवा ।

(दे० सु० कुँ०) जब लक्ष्मणजी वहांसे चलनेलगे तो आश्रमके चारोंदिशा एक रेखा खैंचिदिया, और कहा "इस रेखाके बाहर न आना" ।

इधर रावण ताकमें लगा था जब सीताजीको अकेले देखा, तो यतीका वेष धरकर आया, और "कहा माता भीख दे" जब वह कन्द-मूल लेकर भीख देनेलगीं, तो रावणने कहा "माता हम बंधी भीख नहीं लेते रेखाके बाहर आके देव" ज्यौंहीं सीताजीने रेखाके बाहर पांव रक्खा, त्यौंही रावण भुजा पकडि रथपर चढाय लंकाको चलिदिया, सीताजी परवशपडीं रोदन करती चलीजातीथीं ।

दोहा—तेहि औसर सियकी दशा, शोक विकलता पीर ॥
रंच विरंचि न कहिसके, सुनत रहत नहिं धीर ॥

अब भगवानका हाल सुनो, जब भगवान मृगको मारि आश्रमको फिरे तो देखा लक्ष्मणजी आतेहैं, भगवानने कहा "भाई तुम क्यौं सीताजीको छोड, यहां चले आये, यहां अनेक निशाचर घूमतेहैं मेरे अनुमानसे तो सीताजी आश्रमपर नहींहैं"

यह कहते आश्रमपर पहुँचे वहां सीताजीको न देखकर भगवान अतिशोकवान हुये, फिर लक्ष्मणजीके साथ आगे चले, खग मृग द्रुम लता सबसे सीताजीका खोज पूछते चलेजातेथे ।

दोहा—हे खग मृग हे द्रुम लता, तुम देखी कहिं सीय ॥
हाय जानकी हा प्रिया, सुमुख सुलोचन तीय ॥

(अथ किष्किंधा काण्ड)

आगे ऋष्यमूक नाम पर्वत था जिसपर सुग्रीव नाम वानर अपने भाई वालीके भयते हनुमानजी आदिक मंत्रियों समेत रहतेथे। "भगवानको उस शैलकी ओर आतेदेख सुग्रीवजीनें हनुमानजीसे कहा यह दोनों पुरुष जो इस शैलकी तरफ आतेहैं महा शूरवीर दृष्टि पडतेहैं, तुम जाके इनका समाचार बूझो जो यह वालिके भेजे होयँ, तो सयनसे हमको जनाइये, हम यहांसे भागिजायँ," यह सुनि हनुमानजी विप्रका रूप धर भगवानके निकट गये, और भगवानको पहिचानके लिवायलाये, तब हनुमानजीने भगवान

का सबहाल सुग्रीवसे और सुग्रीका सब वृत्तान्त भगवानसे कहि सुनाया ।

भगवानने सुग्रीवसे मित्रभाव जनाय कहा मैं वालिको मारि तुम्हैं अभय करूंगा ।

सुग्रीवने कहा "महाराज मैं सदा आपकी सेवकाई करूंगा" ।

तब भगवानने वालिको मारि सुग्रीवको पम्पापुरका राज्य दिया ।

सुग्रीवने सीताजीके खोजनिमित्त अनेक वानर और भालू चारों दिशा भेजे, और भगवानने अपने हाथकी अँगूठी हनुमानजीको देके बिदा किया ।

(अथ सुंदर कांड)

हनुमानजी जटायुके उपदेशसे समुद्रलांघि,लंका जाय, सीताजीको भगवानकी अँगूठी दे, संदेशा सुनाया, रावणका वन उजारि, पुर जारि, भगवानके निकट आये और सीताजीका सब हाल कह सुनाया ।

(दे चं० कुं०) अम्मा ! जो संदेशा भगवानने जानकीजीको, और जानकीजीने जो संदेशा भगवानको हनुमानजीसे कहा, वह जिसप्रकार रामायणमें लिखाहो, यदि आपको याद हो तो कहो क्योंकि प्रियाप्रीतमके वियोगदशामें परस्पर संदेशा अवश्य सुननें योग्य होगा ।

(दे० सु०कुं०) बेटी ! मुझको सब याद है सुन मैं कहतीहूं ।

(अथ रामजीका संदेशा)

दोहा—रघुपतिके संदेश अब, सुनु जननी धरि धीर ॥
अस कहि कपि गदगद भये, भरे विलोचन नीर ॥

चौपाई—रामवियोग कहा सुनु सीता। मोकहँ सकल भयो विपरीता[1]
नूतनकिशलय मनहु कृशानू।कालनिशा सम निशि शशि भानू॥
कुवलय[2] विपिन कुंतवन[3] सरिसा। वारिद तप्ततेल जनु वरिसा॥
जेहि तरु रहौं करत सो पीरा! उरगश्वाससम[4] त्रिविध समीरा॥
कहते नहिं दुख घटि कछु होई। काहि कहौं यह जान न कोई॥
तत्त्वप्रेमकर मम अरु तोरा। जानत प्रिया एक मन मोरा॥
सो मन रहत सदा तोहिं पाहीं। जानु प्रीति वश इतने माहीं॥

(दे॰सु॰कुँ॰) बेटी इन्हीं बातोंके मैंने कवित्त करदिये हैं।

कवित्त।

भये विपरीत आज सब सुखके समाज प्यारी तो विरहपीर कैसे सहिजावै री। मनको जलावै शशि भानुके समानहोय हायरे सुबोध जब याद तव आवै री॥फूलनको हार उर डसत भुअंग ऐसो शीतल सुगन्ध त अग्निसो तपावै री। प्यारी जो गमावै रु विरहपीर पावै हिय जीव रहिजावै यो असंभव कहावै री॥ १॥

किशलै कृशानु शशि भानु निशा कालरात्रि कमलकी कोर हाय बरछीसी लागै री। वारिदके बूंद अतिशीतल सोहात नाहिं तप्त-तेल तनुको तमाम जनु दागै री॥पीरते कलेजेके उरगश्वास त्रिविध वायु चंदनसुगन्ध तनु लागैजिमि आगै री।विरह जेहिदागे प्राणप्यारी जेहि मांगे और कहो तो सुबोध कौन ता सम अभागै री॥ २॥

(अथ सीताजीका वचन)

चौपाई—कहेहु तात अस मोर प्रणामा। सबप्रकार प्रभु पूरणकामा॥
दीनदयालु विरदसम्भारी। हरहु नाथ मम संकट भारी॥
तात शक्रसुतकथा सुनायहु। बाणप्रताप प्रभुहि समुझायहु॥
मासदिवसमहँ नाथ न आवहिं।तौ पुनि मोहिं जियत नहिं पावहिं

१ उलटा। २ कमल। ३ बरछी। ४ सर्प।

कहु कपि केहिविधि राखौं प्राना।तुमहू तात कहत अबजाना ॥
तुमहिं देखि शीतल भइ छाती।पुनिमोकहँ सोइ दिन सोइ राती ॥
दोहा—जनकसुतहि समुझाय करि, बहुविधि धीरज दीन ॥
चरणकमल शिर नायकरि, गमन रामपहँ कीन ॥

(दे० सु० कुँ०) बेटी ! सीताजीका संदेशभी मैंने कवित्तोंमें करदियाहै ।

कवित्त ।

मेरोहु प्रणाम तात कहियो चरण छुइ सबही प्रकार प्रभुपूरण अकाम जू । विरदसँभारि नाथ हरिय संकट मम दीनके दयालु दुखहरन तो नाम जू ॥ जिती न मिलोंगी नहिं आये करुणानिधान तीसदिन जाहिदिन होइहैं तमाम जू । आइये सबेर देर लाइये सुबोध नाहिं छनपलकी घडीकी न एकऊ जाम जू ॥ १ ॥

बाणके प्रताप दापचापके टंकोरकाप भूमिसे अकाश औ रसातल पताल हैं ॥ जानतहैं शक्रसुत औरहू मारीच आदि मानि पीर आयो नहिं सिन्धुहू संभाल हैं॥ काहे प्रभुनिठुर भये हो मो गरीबिनपैं कवने कसूर प्रभु भये अस ख्याल हैं ॥ कहियो सुबोध तुम हमेरोहू संदेशो जाय विना जल मीन जैसी जानकी बेहाल हैं ॥ २ ॥

(अथ लंकाकांड)

जब भगवानने सीताजीका पता पाया, तब वानर और भालुवोंकी सेनाने लंकापर चढाई किया, और समुद्रमें सेतुबंधाय लंकामें जाय, दुष्टरावणको कुंभकर्ण और मेघनाद आदिक सकल परिवार और सर्वसेनासमेत वध करि, विभीषणको लंकाका राज्य दे, सीताजीसहित अवधपुरीमें आये ।

(दे०चं०कुँ०) अम्मा ! आपने लंकाकाण्ड तो ऐसा झटपटसे कहदिया कि कुछ समझहीमें नहीं आया इस कांडकी स्त्रीसंबन्धी कोई विशेष वार्त्ता वर्णन कीजिये ।

(दे० सु० कुं०) बेटी रावणके संतान बहुत थे, तिनमें सबसे बडाबेटा (ज्येष्ठ पुत्र) मेघनाद था, वह ऐसा बली था कि इन्द्रको ऐरावत हाथीसमेत इन्द्रपुरीसे लंकामें घसीट लाया।

(दे० चं० कुँ०) अम्मा! बेअदबी माफ मुझे इसजगह यह शंका होतीहै, कि इन्द्र देवतोंके राजाहैं, वज्रादिक अनेकप्रकारके अस्त्र शस्त्र धारण करतेहैं, तो क्या इन्द्र लडे नहीं, धोखेसे वह घसीट लाया।

(दे० सु० कु०) बेटी धोखेसे नहीं किंतु रणभूमिसे लडतेहुये इन्द्रको ऐरावत हाथीकी सूंड पकडकर खैंचलाया, इन्द्र बिजुली बाण और चक्र आदिक अनेक हथियार प्रहार करते रहगये, पर उस महाबली राक्षसके शरीरमें वे बिजुली बाण आदिक ऐसे मालूम होतेथे जैसे हाथीको मंदारके फलसे कोई मारै।

(दे० चं० कुँ०) अच्छा अम्मा वह ऐसा बली था, तब?

(दे० सु० कुँ०) बेटी अभी तब न पूछ, अभी उसके बलका और हाल सुन।

इन्द्रके जीतनेके कुछकाल पीछे एकबार वह पाताललोकको चलागया, जहां वासुकीनागका राज्यहै वह नाग अपनी सेनाले चौदह दिनतक मेघनादसे लडतारहा, अंतमें सब सेना उसकी भागिगई, तब उसने वासुकीनागको पकडि, लंकामें लाय, रावणको दिखलाय, अपने पलंगके शिरहाने बांधदिया।

तब वासुकीनागने तंग होकर मेघनादसे कहा "भाई हमसे कुछ दंडलो, और हमको छोड दो" मेघनादने कहा "अपनी कन्याका दंड दे" उसने अंगीकार किया, और अपने साथ पातालमें लिवालेगया और सुलोचना नाम कन्यासे उसका विवाह करदिया।

यह सुलोचना कन्या अतिसुन्दरी, रतिको लजावनेहारी थी तिसपर यह विशेषशोभा कि पतिदेवता स्त्री थी ।

(दे० चं०कुँ०) अम्मा ! पतिदेवता स्त्री किसको कहतेहैं ।

(दे०सु०कुँ०) जिस स्त्रीका परमप्यारा, और परमपूज्य केवल एक पतिही हो, उसको "पतिदेवता" कहतेहैं और इसीको पतिव्रता भी कहतेहैं ।

जब मेघनादको लक्ष्मणजीने मारा तो उनके बाणके साथ उसकी भुजा सुलोचनाके आंगनमें जा गिरी,पतिकी भुजा पहिचानि अतिव्याकुलहो आश्चर्यमय वचन कहने लगी ।

कवित्त ।

ऐंऐं यह काह काह आह दयी आह आह अरी सखी दौड दौड देख यह बांहको । ऐंऐं यह कौन ऐसो जन्म्यों जगमारचो जिन, ये तो भुजा दीसतहै जैसे मम नाहको ॥ नींद नारि भोजनको चौदा वर्ष त्यागो किन हाय रे ये दागे कित मेरे उरदाहको।हाय हाय विधिकी ये वामता विलोकु सखी नहीं मम भाग ऐसे दोष सखी काहको ॥

ऐसे अनेक प्रकारके वचन कहि रोदन करने लगी इतनेमें उस कटीहुई भुजाकी मूठी जो बन्द थी, वह फैलगई, तब सुलोचनाके इशारासे लौंडीने खरी उस हाथमें थमाय दिया,उस कटेहुये हाथने भुँइपर खरीसे सब वृत्तांत लिखदिया ।

सवैया ।

जिनके गुण गावत वेद पुराण प्रताप प्रचंड अखंड सरूपा ।
जिनकी महिमा न महेश सकैं कहि तेजअपारहै रूप अनूपा॥
भूमिके भार उतारनहेतु सोई प्रभु आप धरे नररूपा ।
तोरे प्रतीतिको भेजो भुजा गयो शीश वहांहै जहां सुरभूपा ॥

यह पतिभुजालिखित वृत्तांत पढि सुलोचना अतिव्याकुल

होय विलाप करने लगी और अपने मनको सर्वपदार्थोंकी प्रीतसे हटाकर पतिप्रेममें मग्न होगई ।

फिर डोलीपर भुजासहित सवार हो रावणके पास आई, और विलाप करि कहने लगी ।

हे महाराज ! आपके देखते मेरा यह हाल होगया, अब मैं आपसे बिनय करतीहूँ कि मेरे स्वामीका शीश मुझको मँगादीजिये ।

रावणने बहुत समझाया, और कहा पुत्री ! तू दो घडी धीर धर मैं राम लक्ष्मण और सर्वसेनापतियोंका शिर काटके तेरे आगे रखदेताहूं ।

सुलोचना अपने मनमें यह कहतीहुई "कि यह कालके वश भये हैं, अभीतक इनका गर्व वैसाहीहै अब जो सचमुच यह सबको मारहीडालैं, तो हमको क्या ? हमको तो पति बिना राजविभव सब शोकका समाज है" अपनी सास मंदोदरीके पास गई, और भुजालिखित वृत्तान्त सुनाया, पाँव पकडि रोदन करने लगी ।

मंदोदरी उसे छातीसे लगाय अतिविलाप करि कहने लगी हे पुत्री ! तू भगवानके पास चलीजा, और अपने पतिका शीश लाके उसके संग सती होजा ।

(दे० चं० कुँ०) अम्मा ! सती होजाना किसको कहतेहैं ।

(दे० सु० कुँ०) बेटी ! सती होजाना कहतेहैं चिता बनाकर पतिके साथ जीतेजी जलजाना ।

जो स्त्रियां अपनी उमरभर केवल पतिहीके प्रेम, सेवा और सत्कारमें लगीरहती हैं, पराये पुरुषका प्रेम वा ध्यान स्वप्नमें भी नहीं करतीं, वे स्त्रियां जब पतिका परलोक होजाता है, तो पतिव्रतका सत्त्व उनके शीशपर चढिजाताहै, जिस्से वे जीतेजी पतिके

साथ अग्निमें जलजाती हैं और पतिसहित सत्यलोकमें चिर[1]काल-तक सुखभोग करती हैं ।

(दे० चं० कुँ०) अम्मा जब आगकी लपट उनके वदनपर लगती होगी तो वे भागनेकी फिकर करती होंगी, तो क्या वे चितापर रस्सोंसे बांध दीजातीहैं, जिस्से वे जलजातीहैं ।

(दे० सु० कुँ०) बेटी नहीं, वे रस्सोंसे बांधी नहीं जातीं, वे खुशीसे बैठी २ जलजातीहैं उनके सत्त्वके तेजके आगे अग्निका तेज मंद पड़जाताहै, और फिर उनका मनतो पतिप्रेममें लीन होजाताहै इसकारण जलनेका दुःख उनको प्रतीत नहीं होता ।

हां कहीं कहीं ऐसाभी हुवाहै कि सत्त्व तो है नहीं नामके वास्ते चितापर बैठगईं और जब वदनमें आगकी लपट लगी तो कूदके भागि निकलीं ।

यही हाल देखकर तो हमारी न्यायकारी और नीतिधारी सरकारने इसके बन्दकरनेको कानून जारी करदिया और सरकारने बहुत अच्छा किया, नहीं तो झूँठी हरामजादियां, जन्मभर तो पराये पुरुषोंसे आंख लडाती फिरती । अब पतिके मरनेपर मुहब्बत जनानेको ऐसा ढकोसला फैलाय २ इस अतिपवित्र और उत्तम रस्मका नाम बदनाम करतीं ।

बेटी जिसके सत्त्व होताहै वह बेआगिहीके केवल सत्त्वकी आगसे जलजातीहैं ।

अहो—बुद्धिमान स्त्रियोंको पतिव्रतधर्म अवश्य धारण करना चाहिये, जिस्से लोक और परलोक दोनोंमें सुख और सुयश प्राप्त होताहै ।

---

१ बहुत ।

(दे० चं० कुँ०) हां अम्मा ! तब सुलोचना भगवानके पास शीश लानेको गई ? ।

(दे० सु० कुँ०) बेटी ! हां सुलोचना भगवानके पास गई, और पतिका शीश मांगि चंदनकी चिता बनाकर सती होगई ।

अहो धन्य थी सुलोचना जिसने ऐसा पतिप्रेम निबाहा ।

(अथ उत्तरकाण्ड)

जब भगवान अवधपुरीमें आये तो भगवानके आनेसे अवधपुरीमें बडा आनन्द बधावा बजा ।

सबलोग जो भगवानके विरहसे अतिव्याकुल और दुःखी होरहेथे सुखी भये ।

तब भगवान बहुत कालतक राजकाज करि, प्रजाको सुख दे अंतसमय सारे अवधवासियों समेत निजधामको सिधारे ।

इति संक्षिप्त रामायणस माप्तम् ।

इतनी कथा सुनि, दे० चं० कुँ० बोली ।

(दे० चं० कुँ०) अम्मा ! यह तो बडासुंदर इतिहास आपने वर्णन किया, अब इतनी कृपा और कीजिये, कि इस रामायण भरमें जहां जहां स्त्रियोंकी शिक्षायोग्य कोई वार्त्ता हो, उसको भी आप अपने मुखारविंदसे वर्णन कीजिये ।

(दे० सु० कुँ०) बेटी ! रामायणजीमें तो सारी बातही शिक्षाकी हैं पर दो चार बातैं मैं कहेदेतीहूँ ।

शिक्षा १.

सतीजी शिवजीसे कपट करि, झूंठ बोलीं, और उनकी आज्ञा न मानकर अपने नैहर गईं, तिसका उनको अति दुःखदायक फल मिला इस्से यह शिक्षा लेना चाहिये ।

१ स्त्रियोंको पतिसे कपट न करना चाहिये ।
२ स्त्रियोंको पतिसे झूंठ न बोलना चाहिये ।
३ स्त्रियोंको पतिकी आज्ञा न टालना चाहिये ।

शिक्षा २.

जब श्रीरामजी वनको चले, तो सीताजीभी संग चलनेको तैयार होगईं, और सब लोगोंके क्या खुद भगवानके समझानेसे न रहिसकीं इस व्यवहारसे यह शिक्षा लेना चाहिये ।

स्त्रियोंको पतिका संग कभी छोडना न चाहिये, दुःखमें सुखमें, रणमें, वनमें, अर्थात् सर्व अवस्था और सर्वस्थानमें पतिका संग देना चाहिये ।

दोहा—परमधर्म यह तियनको, पतिपद परमसनेह ।
संग कबहुँ मति छोडिये, क्या दुख सुख वन गेह ॥
जेते हितके नात जग, पतिनाते सब नात ।
बिनु पति सब नाते वृथा, काह तात क्या मात ॥

बहुत ऐसा होताहै कि जबतक पति घरमें रहताहै तबतक स्त्रियां बहुत स्नेह जनातीहैं और जब दैवसंयोगसे पति घर द्वार त्यागि साधू हो वनको चलने लगतेहैं तो उनकी स्त्रियां संग छोड घरमें रहिजातीहैं ऐसी स्त्रियोंको धिक्कार है कि, सुखमें साथी रहें और दुःखमें अलग हो बैठें ।

शिक्षा ३.

जब श्रीरामचन्द्रजीको मालूम हुवा कि, पिताजीने हमको वनवास दियाहै, तो श्रीमहारानी कौशल्याजीके पास विदाहोनेको गये, कौशल्याजी यह समाचार पाय अति शोकवती हुई, पर धीरज धर कर कहा "हे पुत्र ! जो पिताने तुम्हें वनजानेको आज्ञा दियाहै, तो तुम हर्षसे जावो हम जो स्नेहवश रोकिराखें तो अधर्म होगा" ।

इस व्यवहारसे यह सूचित कियाहै कि, कैसाही संकट पडै पर धीरज और धर्मको न छोडना चाहिये ।

अबकी तरह नालायक औरत होती तो कहती " बेटा तुम घर बैठो उनके कहनेसे क्या होताहै और उसके साथही अपने पतिकाभी भलीप्रकार शिष्टाचार करती ।

शिक्षा ४.

कैकेयीने ऐसी कुचाल किया जिससे राजसमय भगवानको न जानपडा पर कौशल्याजीने कभी उनसे इसबातका उला-हना न दिया कि तुमने मेरेबेटेको क्यों वनवास दिलाया यह बात अपने मनमें समझकर रहिगईं कि, भाग्यमें जेतना दुःख सुख लिखा रहताहै उतना होताहै।

इससे यह शिक्षा लेना चाहिये कि, किसीद्वारा जो कुछ अपना अनभल होजाय तो उसको अपना प्रारब्ध समझ कर धीरज धरै किसीको दोष न दे अबकी ऐसी कमसमझ औरत होतीं तो कैके-यीका शिर फोडडालतीं ।

शिक्षा ५.

जब रावणने सीताजीको हर लेजाकर अशोकवाटिकामें रक्खा तो अनेक राक्षसियोंको उनके पास करदिया, कि वे अनेक प्रकार-की आश त्रास भय प्रीति सीताजीको दिखलावैं और जैसे होसके उनको इसबातपर राजी करैं कि रावणके पास रहना अंगीकार करैं, और रावण आपभी कभी कभी आकर अनेकभांति आश त्रास दिखलाता, भय प्रीति जनाता, पर सीताजीका मन जराभी न डिगा, और अपने प्राणोंका लोभ न करके रावणको बराबर मुँह तोड जवाब देती रहीं ।

इस्से यह शिक्षा लेना चाहिये कि कैसाही संकट पडै कितनाही कोई आश त्रास भय प्रीति दिखलावे पर स्त्रीको अपने धर्मसे टलना न चाहिये, न पराये पुरुषकी ओर मन डिगाना चाहिये ।

बोध ३३.

(भारतवर्षका संक्षिप्त इतिहास)

(दे० चं० कुँ०) अम्मा ! कुछ देशकालका हालभी वर्णन कीजिये, अर्थात् जिस देशमें हम बसतेहैं, उस देशका क्या नाम है? प्राचीनसमयमें यहां किसका राज्यथा? और अंग्रेजोंका राज्य कबसेहै

(दे० सु० कुँ०) जिसदेशमें हमलोग रहतेहैं, उसका नाम भारत वर्ष अथवा हिन्दुस्तान है इसमें सबसे अधिक हिन्दूलोग रहतेहैं, जिनके चार वर्णहैं ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र. इनचारोंके काम पहिले जुदेजुदे थे ।

ब्राह्मणका काम यह था, कि धर्मविषयक पुस्तकोंको अर्थात् वेदशास्त्रको भलीभांति पढैं, और उनके अनुसार सबको उपदेश और शिक्षा दें ।

क्षत्रियोंका धर्म यह था कि शस्त्र (हथियार) धारण करके प्रजाका पालन, रक्षा और राजकाज करैं ।

वैश्यलोग वणिज और व्यापार करके धन पैदा करतेथे,

शूद्रका धर्म तीनों वर्णोंकी सेवा टहल करना था यद्यपि समयके फेरफारसे आजकल्ह चारोंवर्णके लोग अपना २ ठीक २ काम नहीं करते परन्तु अगिले दिनोंमें जब हिन्दुस्तानमें क्षत्रियोंका राज्य था उससमय सबकोई अपना२ काम करते और उसीमें मग्न रहतेथे।

डेढसौ १५० वर्षके लगभग हुवा कि इसदेशमें अंग्रेजोंका राज्य हुवा इनके पहिले छःसौ६०० वर्षतक यहां मुसलमानलोग राज्य करतेथे, और मुसलमानोंकेपहिले हिन्दुवों अर्थात् क्षत्रियोंका राज्यरहा।

प्राचीनकालमें इस भारतवर्षका राज्य सूर्यवंशी और चन्द्रवंशी दो घरानोंमें था, सूर्यवंशमें पहिला राजा इक्ष्वाकु हुवा, जिसकी राजधानी अयोध्या थी इक्ष्वाकुके पचपनवीं पीढीमें महाराज रामचन्द्रजीने राजा दशरथजीके पुत्र होकर अवतार लिया, जिसका वृत्तांत मैं सुनाचुकीहूँ इतनी बात कहनेकी बाकी रहगईथी कि जब भगवान लंका जीति सीताजीसहित अयोध्यापुरीमें आये तो कुछ काल बीतनेपर प्रजालोगोंके मनमें सीताजीके पतिव्रतके विषयमें संदेह होनेलगा इस कारण श्रीरामचन्द्रजीने सीताजीको लक्ष्मण जीके साथ जंगलमें वाल्मीकिजीके स्थानपर भेजि दिया उससमय सीताजी गर्भसे थीं वहां सीताजीसे लव और कुश दो पुत्र उत्पन्न हुये जो बडे बली और तेजस्वी हुये।

कहतेहैं कि जोधपुर और जयपुरके राजपूत इन्हीं लव और कुशके वंशमें थे।

(चंद्रवंशीका हाल)

चन्द्रवंशियोंमें पहिला राजा पुरूरवा हुवा, जिसकी राजधानी झूसीथी. पुरूरवासे पैंतालीसवीं पीढीमें महाराज युधिष्ठिर आदि पांच भाई अर्थात् युधिष्ठिर, भीम, अर्जुन, नकुल और सहदेव, राजा पांडुके घरमें उत्पन्न हुये, इसीसे पांडव कहलाये पांडुके छोटे-भाई कुरु जिनको धृतराष्ट्रभी कहतेहैं उनसे सौ १०० पुत्र उत्पन्न हुये, ये सब कुरुके वंशमें हुये इसकारण कौरव कहलाये, जिनमेंसे सबसे बडे भाईका नाम दुर्योधन था।

उसी समयमें महाराज कृष्णचन्द्रजीने यदुकुलमें वसुदेव और देवकीके घरमें पृथ्वीका भार उतारनेको अवतार लियाथा, वसुदेवजीकी बहिन कुंती राजापांडुसे व्याहीहुईथी, इस नाते पांचों पांडव श्रीकृष्णजीके फुफेरेभाई थे।

राजा पांडुके मरनेपर धृतराष्ट्र राजाहुवा, पीछे पांडव और कौरवोंमें बडाभारी युद्ध हुवा, उस युद्धमें श्रीकृष्णजीकी सहायतासे पांडवोंकी जीत हुई, और कौरव हारगये ।

इसलडाईका कारण यह था कि धृतराष्ट्रने अपने बडे बेटे दुर्योधनको अपना युवराज बनाया उचित तो यह था कि राजा पांडुके बडे बेटे युधिष्ठिरजी युवराज बनायेजाते, उसके पीछे युधिष्ठिर आदि पांचों भाई राज्यसे निकाल दियेगये, उस समय पांचों पांडव ब्राह्मणोंका वेषधारण कर कन्नौजके राजाके पास सहायता लेनेको आये ।

उसीसमय कन्नौजमें राजकुमारी द्रौपदीका स्वयंवर रचागयाथा, और उसमें बडे बडे दूरके राजकुमारलोग इकट्ठे हुयेथे ।

वहां एक कूयेपर बडा ऊंचा झंडा गडाथा जिसके शिरेपर एक सोनेकी मछली बनीथी जो घूमा करतीथी और प्रण यह कियागया था कि जो कोई कूयेके पानीमें देखकर एकतीर ठीक उस मछली की आंखमें मारै उसके संग द्रौपदीका व्याह हो ।

उस सभामें बहुत राजकुमारोंने तीर चलाये पर निष्फल होतेगये तब अर्जुनजीने कमानको झुकाकर उस चक्रकी राहसे ऐसा तीर मारा जो मछलीकी आंखमें जा लगा ।

फिर तो अर्जुनजीने ब्राह्मणका वेष उतार अपना निजभेष राजकुमारका प्रकट किया और सभाके लोगोंको अपना और अपने बाप दादोंका नाम बतलाया, और तब बडे धूमधामसे द्रौपदीजीके संग अर्जुनजीका व्याह हुवा ।

पांचों पांडवोंने माताके पास आकर कहा "माता हमलोग एक फल लायेहैं" कुंतीने इसका तात्पर्य न समझकर यह आज्ञा दिया "कि तुम पांचों भाई उस फलको बाँटलो" तबसे द्रौपदी पांचों भाइयोंकी स्त्री बनी ।

पीछेसे धृतराष्ट्रने यमुनाजीके किनारेके सारे जंगलोंको पांडवों-को देदिया, पांडवोंने वहांके बसनेवालोंको अर्थात् नागालोगोंको निकालकर, और सब जंगल जलाके इन्द्रप्रस्थके नामसे एक गढी बनाई और वहीं रहनेलगे।

कौरवोंका सदा उनके साथ वैरभाव था, इसकारण कौरवोंने अपने मामा शकुनीसे ऐंकाकरके[1] पांडवोंको जूआ खेलने परखडा-किया शकुनी छलकरके इसप्रकार पांसा फेंकताथा कि कौरवोंकी बराबर जीत हुवा करतीथी,यहांतक कि पांडव लोग अपना सारा राज्य हारकर दुर्योधनके दासबने और अंतमें द्रौपदीकोभी हारगये।

(दे० चं० कुँ०) अम्मा! यह लोग बडे बेवकूफसे मालूम होतेहैं भला स्त्रीको क्यों दाँवपर धरनेगये।

(दे० सु० कुँ०) बेटी इसीकारण जुआ आदिका खेलना मना है जब इसकी चाट पडजातीहै तब उचित अनुचित कुछ नहीं सूझपडता।

(दे०चं० कुँ०) अच्छा तब फिर क्या हुवा?

(दे० सु० कुँ०) तिसपीछे दुर्योधनका भाई दुश्शासन द्रौप-दीको घसीटकर सभाके मध्य जहां पांडवलोग भी बैठथे वहां ले आया, और दुर्योधनने उसको अपनी जांघपर बैठनेको कहा,परंतु कौरवोंके अंधे पिता धृतराष्ट्रने मनाकिया,और कहा "पांडवलोगोंको अपना दास मतबनावो, किंतु उनको १३ वर्षतक वनवास देदो"।

निदान पांडवलोग १३ वर्षतक वनही वन वास करते रहे, और जब फिर लौटकर आये तो कुरुक्षेत्रके मैदानमें अट्ठारह १८ दिनतक बडाभारी युद्ध हुवा जिसको महाभारत कहतेहैं इस महा-भारतमें सब कौरव मारेगये, और फिर इन्द्रप्रस्थकी गढी और सारा राज्य पांडवोंके हाथ आया।

---

१ सलाह।

कुछकाल उपरांत युधिष्ठिरजी इन्द्रप्रस्थ अथवा दिल्लीका राज्य अपने भाई अर्जुनके पोते महाराज परीक्षितजीको सौंप, पांचों भाई द्रौपदी समेत हिमालय पर्वतपर तप करने चलेगये ।

परीक्षितसे लेकर २६ पीढीतक चन्द्रवंशी घरानेमें दिल्लीका राज्य रहा उसके पीछे कई घरानोंमें यह राज्य गया, और फिर महाराज विक्रमादित्यका राज्य हुवा जिनकी राजधानी उज्जैन नगरीथी महाराज विक्रमादित्य बडे प्रतापी और साहसी राजाहुये तिसपरभी उनमें इतनी बडी दीनताथी कि, चटाईपर सोते, और क्षिप्रा[1] नदीसे जलका तुम्बा अपने हाथ जाकर भरिलाते ।

इस राजाके दरबारमें बडेबडे बुद्धिमान और कविलोग इकट्ठेथे, जो उसके दरबारके नौरत्न कहलातेथे, यह सम्वत् महाराज विक्रमादित्यहीका चलाया हुवाहै ।

मगधदेशमें भी कई घरानेके राजाओंने राज्य किया और अंतमें नागवंशका राजा महानंद बडा प्रतापी हुवा । जिस्से सिकंदर लोदीभी डरकर सतलजके उसपार न बढसका ।

कहतेहैं कि,इसके फौजमें छः लाख ६००००० प्यादे,तीस हजार ३०००० सवार, और नौहजार ९००० हाथी थे ।

महानंदके पीछे उसके आठ बेटोंने राज्य किया और सबके पीछे उसका नवां बेटा चन्द्रगुप्त(जो कि नाइनके पेटसे)था बडा तेजवाला हुवा ।

उसीसमय यूनानदेशका एक राजदूत मघासेज नामक यहां आया था और वह अपनी पुस्तकमें लिखताहै कि भारतवर्षमें पहिले गुलामीका नामभी न था, यहांके लोग बडे परिश्रमी[2]थे, और खेती बारी और कारीगरी करके अपना जीवन व्यतीत करते थे ।

---

१ नदीका नाम । २ महनती ।

यहांके मरदोंके बराबर दुनियामें कोई बहादुर न था, उस समयकी स्त्रियां बडी पतिव्रताथीं, और यहांके लोग ऐसे ईमान्दारथे कि उनके घरोंके दरवाजोंमें ताली लगानेकी कुछभी आवश्यकता न थी।

सच बोलनेमें भारतवार्षियोंका पटतर दियाजाताथा।

सबकोई अपने सरदार अथवा चौधरीके मातहत भलीभांति रहतेथे।

यहां पंचाइतका नियम बहुत अच्छाथा, और कचहरीमें बहुत कम नालिश होतीथी।

यदि कभी अकाल पडनेवाला होता; तो ब्राह्मणलोग पहिलेसे भविष्यत् वाणी कहतेथे और उनका आगेसे बन्दोबस्त किया जाताथा।

शास्त्रमें ऐसा लिखाहै, "कि ब्राह्मणोंने सारे भारतवर्षको नास्तिक जानकर अर्बुदगिरि पहाडपर एक अग्निकुंड रचा, और देवतावोंने आप वहां आकर उस कुंडमें चार मूर्तें डालदीं, उन मूर्तोंसे अग्निकुलके चार क्षत्री प्रमर, चौहान, सोलंखी, और परिहार उत्पन्न हुये इनमेंसे प्रमर वंशवाले एक समयमें बहुत बढे, और राजा विक्रमादित्य जो बडाप्रतापी राजाथा इसी प्रमरवंशमें हुवाहै।

मगधदेशमेंभी चन्द्रगुप्तके पीछे कई घरानेके राजाओंने राज्य किया, और आखिरी राजा प्रतापचंद्रके मरने उपरांत यहांके राज्यमें बडा गडबड हुआ।

उस समय कोई क्षत्री राजा नहीं रहगया और ब्राह्मणसे लेकर शूद्र, अहीर, पहाडी, और जंगलीलोग, मगध, इलाहाबाद, मथुरा, काशी और कन्नौज आदि स्थानोंमें राजा बनिबैठे मानो नाऊकी बारातमें[1] जने जने ठाकुर होगये।

---

१ आगमनकी वात।

दिल्लीका राज्यभी महाराजाविक्रमादित्यके पीछे पांचसौ ५०० वर्षसे ऊपरतक बिना राजाके पडारहा, और अन्तमें तोमरवंशके लोग यहांके राजा हुये ।

इस तोमरवंशके इक्कीस २१ राजाओंने दिल्लीमें राज्य किया और आखिरी राजा अनंगपालने (कोई लडका न होनेके कारण) अपने नाती अजमेरके राजा पृथ्वीराजको जो चौहानवंशका था अपनी गोदलिया ।

इसी प्रकार कन्नौजमें राठौरवालोंका राज्य था । मेवाड देशमें गहलोत राजाथे और गुजरात देशमें सोलंखी क्षत्री राज्य करते थे और उनके सिवाय और भी छोटे २ राजा अपनी २ डेढ चांवलकी खिचडी अलग पकारहेथे ।

इस आपुसकी फूटसे यहां मुसलमानोंका आना सहज होगया और देखते देखते सारे हिंदुस्तानके मालिक बन बैठे ।

(दे० चं० कुँ०) अम्मा मुसलमान यहां कैसे आये और कौन लाया ।

(दे० सु० कुँ०) दिल्लीके राजा अनंगपालने जो अजमेरके राजा पृथ्वीराजको गोदलियाथा, उससमय कन्नौजके राठौर राजा जयचन्दको पृथ्वीराजके पास दो राज्यका होना बहुत बुरा मालूम हुवा और तबसे पृथ्वीराज और जयचन्दमें वैरत्व चला आताथा ।

पृथ्वीराजने अश्वमेध यज्ञका अनुष्ठान किया, उसे देखकर जयचन्दनेभी "इसविचारसे कि पृथ्वीराजसे बढिजांय" राजसूय यज्ञ ठाना, जिसमें पृथ्वीराजको छोडि सब राजालोग आये थे, तब जयचन्दने हिनाईकी राहसे पृथ्वीराजकी मूर्त्ति बनाकर यज्ञशालाके फाटकपर देवढीदारकी जगह खडी करवा दी ।

यज्ञ समाप्त होनेपर जयचन्दने अपनी कन्या "संयोगिता" के स्वयम्बरकी रचना की, पहिलेसे संयोगिता पृथ्वीराजकी बहादुरी और बडी बडी लडाई जीतनेका हाल सुनकर अपने मनमें ठान-लिया था कि मैं उस बहादुर राजाको छोड दूसरेको अपना पति न बनाऊंगी, सो जब सहेलियां उसको महलमेंसे स्वयम्वरमें लाईं कि वह अपनी इच्छानुसार किसी राजकुमारको अपना पति बनावे, उस समय उसने अपने बापका खयाल, और अपने जानका डर छोडकर जयमाल पृथ्वीराजकी मूर्तिके गलेमें डालदिया, यह समाचार सुनकर पृथ्वीराज बलवान सिपाहि-योंको लेकर कन्नौजपर चढिआया, पांचदिनतक बडा युद्ध-हुवा, और पृथ्वीराजके बहुतसे बहादुर सिपाही मारेगये, तिसप-रभी पृथ्वीराज साधारण रीतिसे रानी संयोगिताको दिल्ली लेगया तबसे पृथ्वीराज और जयचन्दमें पूरा बैर विरोध उत्पन्न हुवा और इसी बैरसे जयचन्द शहाबुद्दीनको संदेशा भेजकर दिल्लीपर चढ़ालाया।

पृथ्वीराज जबसे रानी संयोगिता कुँवरिको व्याहलाया तबसे राज काजसे निपट बेसुध होगयाथा और सिवाय अपनी रानीके पास रहनेके सब कारबार छोडदिया।

इसीप्रकार जब एकवर्ष बीतगया तो समाचार पहुँचा कि शहाबुद्दीन गोरीने चढ़ाई की।

उससमय यह बहादुर स्त्री अपने पतिको यह नसीहत करनेलगी।

"प्यारे बस अब जागिये, यह भोगविलासका समय नहींहै, अपनी तलवार सम्हालिये लडाईकी तैयारी कीजिये"

जो कोई अपने कुल और इज्जतके बचावके लिये बहादुरीसे लडकर जानदेताहै उसीका जीवन सफलहै, अपने पति और

दिल्लीका राज्यभी महाराजाविक्रमादित्यके पीछे पांचसौ ५०० वर्षसे ऊपरतक बिना राजाके पडारहा, और अन्तमें तोमरवंशके लोग यहांके राजा हुये ।

इस तोमरवंशके इक्कीस २१ राजाओंने दिल्लीमें राज्य किया और आखिरी राजा अनंगपालने (कोई लडका न होनेके कारण) अपने नाती अजमेरके राजा पृथ्वीराजको जो चौहानवंशका था अपनी गोदलिया ।

इसी प्रकार कन्नौजमें राठौरवालोंका राज्य था । मेवाड देशमें गहलोत राजाथे और गुजरात देशमें सोलंखी क्षत्री राज्य करते थे और उनके सिवाय और भी छोटे २ राजा अपनी २ डेढ चांवलकी खिचडी अलग पकारहेथे ।

इस आपुसकी फूटसे यहां मुसलमानोंका आना सहज होगया और देखते देखते सारे हिंदुस्तानके मालिक बन बैठे ।

(दे० चं० कुँ०) अम्मा मुसलमान यहां कैसे आये और कौन लाया ।

(दे० सु० कुँ०) दिल्लीके राजा अनंगपालने जो अजमेरके राजा पृथ्वीराजको गोदलियाथा, उससमय कन्नौजके राठौर राजा जयचन्दको पृथ्वीराजके पास दो राज्यका होना वहुत बुरा मालूम हुवा और तबसे पृथ्वीराज और जयचन्दमें वैरत्व चला आताथा ।

पृथ्वीराजने अश्वमेध यज्ञका अनुष्ठान किया, उसे देखकर जयचन्दनेभी "इसविचारसे कि पृथ्वीराजसे वढिजांय" राजसूय यज्ञ ठाना, जिसमें पृथ्वीराजको छोडि सव राजालोग आये थे, तब जयचन्दने हिनाईकी राहसे पृथ्वीराजकी मूर्त्ति वनाकर यज्ञशालाके फाटकपर देवढीदारकी जगह खडी करवा दी ।

यज्ञ समाप्त होनेपर जयचन्दने अपनी कन्या "संयोगिता" के स्वयम्बरकी रचना की, पहिलेसे संयोगिता पृथ्वीराजकी बहादुरी और बडी बडी लडाई जीतनेका हाल सुनकर अपने मनमें ठान-लिया था कि मैं उस बहादुर राजाको छोड दूसरेको अपना पति न बनाऊंगी, सो जब सहेलियां उसको महलमेंसे स्वयम्वरमें लाईं कि वह अपनी इच्छानुसार किसी राजकुमारको अपना पति बनावे, उस समय उसने अपने बापका खयाल, और अपने जानका डर छोडकर जयमाल पृथ्वीराजकी मूर्तिके गलेमें डालदिया, यह समाचार सुनकर पृथ्वीराज बलवान सिपाहि-योंको लेकर कन्नौजपर चढिआया, पांचदिनतक बडा युद्ध-हुवा, और पृथ्वीराजके बहुतसे बहादुर सिपाही मारेगये, तिसप-रभी पृथ्वीराज साधारण रीतिसे रानी संयोगिताको दिल्ली लेगया तबसे पृथ्वीराज और जयचन्दमें पूरा बैर विरोध उत्पन्न हुवा और इसी बैरसे जयचन्द शहाबुद्दीनको संदेशा भेजकर दिल्लीपर चढ़ालाया।

पृथ्वीराज जबसे रानी संयोगिता कुँवरिको व्याहलाया तबसे राज काजसे निपट बेसुध होगयाथा और सिवाय अपनी रानीके पास रहनेके सब कारबार छोडदिया।

इसीप्रकार जब एकवर्ष बीतगया तो समाचार पहुँचा कि शहाबुद्दीन गोरीने चढ़ाई की।

उससमय यह बहादुर स्त्री अपने पतिको यह नसीहत करनेलगी।

"प्यारे बस अब जागिये, यह भोगविलासका समय नहींहै, अपनी तलवार सम्हालिये लडाईकी तैयारी कीजिये"

जो कोई अपने कुल और इज्जतके बचावके लिये बहादुरीसे लडकर जानदेताहै उसीका जीवन सफलहै, अपने पति और

परलोकको चेत करना सबको अवश्यहै बस अब उठिये और शत्रुको मारिये यदि आप युद्धमें कामभी आजायँगे तौ मैं भी आपके साथ स्वर्गको चलोंगी ।

यह सुनिपृथ्वीराज अपने होशमें आकरयुद्धकी तैयारी करनेलगा अंतमें क्षत्रियोंके नियमानुसार जब महलकी स्त्रियोंसे विदाहोने को आया तब उसकी मा और बहिन आदिकोंने यह नसीहत की

देखना खबरदार लडाईके मैदानसे पाँव मत हटाना नहींतो नाते और गोतेके लोग बोली मारैंगे और संसारमें हमारी और तुम्हारी नांवधराई होगी, ऐसी बदनामीसे हजार दरजे यही भलाहै कि युद्धके समय हाथमें तलवार लेकर मररह ।

जब पृथ्वीराज अपनी प्यारी रानीके पास विदा होनेको आया तौ अत्यंत प्रेमके कारण दोनोंमें बोलनेकी सामर्थ्य न रही और पृथ्वीराजके चेहरेपर रानीकी टकटकी बँधगई ।

अन्तमें बाजेका शब्द सुनकर पृथ्वीराज जलदीसे पानीपीने का पात्र जो अपने हाथमें लियेथा रानीके हाथमें देकर बाहर चलदिया ।

रानी संयोगिताकुँवरि बडीपतिव्रता और सत्यवादिनीथी, उसको इस बातका खटका होगया कि अब संसारमें इसप्यारे पतिका दर्शन मुझको न मिलैगा निदान जिसबातका उसको खटकाथा, वैसाही हुवा मुसलमानोंकी जीतहुई और पृथ्वीराज घेरलियागया और अंतमें उसके गलेपर छुरा चलायागया ।

यह समाचार सुनकर रानी संयोगिता कुँवरि सती होनेबैठगई। इस रानीकी धीरताई, कमसिनी, सुंदरता और पतिस्नेहको देखकर शहाबुदीनको वडा पछतावा आया, और वहुत समझाया कि वह सती न हो, पर वह कव माननेवालीथी अंतमें उसने पृथ्वी-

राजका शिर उसको सौंपदिया, और वह सबके देखते देखते जलकर राख होगई।

कहतेहैं कि जिससमयसे रानी संयोगिता कुँवरि राजा पृथ्वीराजसे जुदीहुई, तबसे सतीहोनेकी दमतक उसने कुछ भोजन नहीं कियाथा, केवल उस पिआलेका पानी जो पृथ्वीराज विदा होनेके समय उसको देगयाथा, पीपीकर काल व्यतीत किया।

यह आपुसके वैरविरोधका कारण हुवा कि जैचंदने गजनीदेशसे शहाबुद्दीनके पास संदेशा भेजकर उसको लडाईके लिये बुलवाया परंतु जो दूसरेके लिये गड्हा खोदताहै, वह आपभी उसीमें गिरताहै दूसरे साल सन् १२९४ ईसवीमें शहाबुद्दीनने जयचन्दपरभी चढाई की और रणभूमिमें जीतकर उसको मारडाला।

निदान इस कलंकका टीका पृथ्वीराज और जैचंदके माथे लगा; कि उनमें फूटपडनेके कारण भारतवर्षका राज्य हिन्दुओंके हाथसे कुछ ऐसी साइतमें गया कि फिर तबसे हाथ आना कठिन होगया।

सचहै "बैर और फूटका ऐसाही फलहै"।

(मुसल्मानोंका राज्य)

शहाबुद्दीनने आप राजकाज नहीं किया परंतु अपने गुलाम कुतबुद्दीन अयबकको यहांका राज्य सौंपकर आप अपने देशको चलागया और तबहीसे मुसलमानोंका राज्य यहां कायम हुवा।

हिन्दुस्तानमें कई घरानेके मुसलमान बादशाहोंने राज्य किया।

गुलाम खानदानके कुतबुद्दीन आदिक दश बादशाहोंने ८४ वर्षतक राज्य किया।

उसके पीछे खिलजी घरानेके जलालुद्दीन आदिकने ३१ वर्ष तक, फिर तुगलक घरानेके गयासुद्दीन आदिक आठ ८ बादशाहोंने ९१ वर्षतक राज्यकिया।

इसके पीछे सैयद खानदानके सैयद खिजिरखां आदिक चार बादशाहोंने ३६ वर्षतक राज्यकिया । फिर लोदी खानदानके बहलोललोदी आदिक तीन बादशाहोंने ७६ वर्षतक राज्यकिया।

इसके पीछे मोग़ल घरानेके बाबर और हुमायूं दो बादशाहोंने १४ वर्षतक राज्यकिया. तब सोरघरानेके शेरशाह आदिक पांच बादशाहोंने १६ वर्षतक राजकिया फिर मुगल घरानेके हुमायूं और अकबर आदिक चौदह बादशाहोंने तीनसौ ३०० वर्षके लगभग यहांका राज्य किया, तब अंग्रेजोंका राज्य हुवा ।

इन मुसलमान बादशाहोंमेंसे जो प्रसिद्ध हुयेहैं उनका कुछ संक्षिप्त वृत्तांत मैं सुनातीहूँ ।

गुलाम खानदानमें एक औरत रजिया बेगमनाम तख्तपर बैठीथी इसने सन् १२३६ई०से सन् १२३९ तक अर्थात् ३ वर्षतक राज्यकिया, यह बेगम बड़ी बुद्धिमान और राजकाजका बन्दोबस्त करना भलीभांति जानतीथी, बादशाहोंकी नाईं तख्तपर बैठकर दरबार करती, और न्यायसे प्रजाको प्रसन्नरखती, परंतु एक अनुचित व्यवहार उस्से ऐसा हुवाकि दरबारके सब लोग उस्से फिरगये अर्थात् अस्तबलका दारोगा उसके बगलमें हाथ डालकर उसको घोड़ेपर सवार कराताथा और इसकारण वह बेगम उस दारोगे पर ऐसी मेहरबान हुई कि उसे बडीभारी पदवी देदी इस कारण सबने एका (सम्मति) करके उसको मारडाला ।

खिलजी घरानेमें अलाउद्दीन खिलजीने सन् १२९६ ई० से सन १३१५ तक अर्थात् २० वर्षतक राज्य किया, यह निर्दयी बादशाह था, इसी बादशाहने सन् १३०३में जाकर चित्तौर गढको घेरलिया, और वहांके राजा रतनसेनकी रानी पद्मावतीपर जो अतिसुंदरी थी ऐसा मोहित होगया, कि उसके मिलनेके वास्ते

राजाको धोखेसे अपने डेरेमें बुलाकर कैद करलिया और यह हुकुम देदिया कि जबलों रानी पद्मावती हमारे पास न आवैगी तबलों राजा बन्दीगृहसे न छूटैगा ।

रानी पद्मावती बडी बुद्धिमान, चतुर और पतिव्रताथी उसनेभी छलकरके बादशाहसे कहला भेजा कि "मेरा मन आप चाहताहै कि अपनी सारी सहेलियोंके डोलोंके संग सवार होकर आपके पास आवों" ।

यह सुनकर बादशाह प्रफुल्लित होगया और अपने लोगोंको हुकुम दिया कि रानी पद्मावती आतीहै, खबरदार कोई बेअदबी न करै ।

इधर रानी पद्मावतीने सहेलियोंके बदले सातसौ ७०० चुनेहुये सिपाहियोंको डोलियोंमें बैठाकर अपनी गढीसे बाहर निकल बादशाही खीमेंकी तरफ रवाने हुई ।

जब वह डोलियां बादशाही डेरेके पास पहुँचीं तो सब सिपाही डोलोंमेंसे कूदपडे, और निडर होकर, डेरेमें घुसगये और मारकाट करते हुये राजा रतनसेनके पास जा पहुँचे ।

रानीने अतिफुरती और बहादुरीसे राजाको घोडेपर सवार कराके अपनी गढीका रास्तालिया, बादशाहसे कुछ न बनपडा अपनासा मुँहलेकर रहिगया ।

इस लज्जासे कुछ दिनोंके पीछे बादशाह अपनी फौजको अच्छीप्रकार ठीकठाक करके चित्तौरगढपर फिर चढाई किया. राजा रतनसेनने जब कोई सुरत बचावकी न देखी तो गढीका फाटक खोलदिया और अपने बहादुरसिपाहियोंको संग लेकर बादशाही फौजसे खूबलडा, और बडी बहादुरीसे मारागया ।

बादशाह जब किलेमें गया, और चाहा कि रानी पद्मावतीसे मिलैं, तो देखा किरानी पद्मावती अपनी सहेलियों समेत आगमें जलरहीहै, यह दशा देख बादशाह निराश हो फिरगया ।

सच है जो पतिव्रता और चतुर स्त्रियां होतीहैं, वे अपने पतिको इसी प्रकार बडेबडे कठिन जोखिमोंसे बचातीहैं ।

जिस जगह रानी पद्मावती सती हुईथी, उसको अब पवित्र स्थान कहतेहैं, और राजपूत लोग उस स्थानकी बडी मानता करतेहैं ।

मोगल घरानेमें अकबर बहुत मशहूर बादशाह हुवा. इसने पचास वर्षके लगभग राज्य किया ।

इसके राज्यमें रैयत प्रजा सब सुखीथे, और हिंदू मुसलमान दोनोंको यह बादशाह बराबर मानता और जानताथा ।

इसने बहुतसी लडाइयांभी जीतीं-एकबार इसकी फौज अहमद नगरपर चढी, बहादुर निजामशाह अहमद नगरका राजा उस समय बिलकुल बालक था, परंतु उसकी चची चांदबेगम बडी साहसी और हौसिलेवाली औरत थी,जिससमय अकबरकी फौज सुरंग उडाकर किलेपर चढने लगी, उससमय चांदबेगम अपने मुँहपर नकाब (परदा) डालकर, और हाथमें नंगी तलवार लेकर सुरंगके मुँहपर आप आकर खडी होगई, और बडे जोरसे अपने सिपाहियोंको ललकारा और कहा" ऐ मर्दो ऐसे समयमें बहादुरी करो, औरतोंका कपडा मत पैन्हो" उसकी ललकार सुन सिपाही प्रजा सब उसकी मददको पहुँचे, और अतिघोर युद्ध हुवा,यहांतक कि अकबरकी फौज गढीपर चढनेसे हार मानगई, और पीछे सुलह होगई ।

मोगल घरानेमें औरभी बहुतसे बादशाह हुयेहैं, पर अकबर सबसे अच्छाथा, हिंदुस्तानका राज्य अंग्रेजोंके आनेतक मोगल घरानेमें रहा ।

(अंग्रेजोंका राज्य)

इस समय हिन्दुस्तानमें महारानी विक्टोरियाका राज्यहै, जिनके समयमें प्रजाको सर्वप्रकारका सुख और चैनहै ।

मुसल्मान बादशाहोंके समयमें जो जो अन्याय थे वे अब बाकी नहींहैं, अब शिवाला और मंदिर कोई नहीं ढहाता, न मसजिद गिराई जातीहैं न घर लूटे जातेहैं, बात बातके वास्ते कानून और कायदा जारीहै मजाल नहीं कि कोई कानूनके खिलाफ चलै, और उसको दंड न हो ।

कोई दुष्ट मनुष्य किसीको दुःख नहीं देसकता न कोई बली निर्बलको सताय सकताहै ।

जिन जगहोंमें आगे डांके पडतेथे, अब वहां पक्की सडकें बनीहैं, पुलीसका पहरा मौजूदहै, अब थालमें सोना उछालते जाइये तो कोई पूछनेवाला नहींहै ।

डाकके वसीलेसे चिट्ठीपत्री बहुत सुगमतासे आती जातीहै ।

रेलपर चढके दमकी दममें कहांसे कहांको आदिमी पहुँचि जातेहैं ।

तारसे हजारों कोसकी खबर पल मारतेमें पहुँच जातीहैं ।

आदमीकी तनदुरुस्ती (शरीरकी आरोग्यता) के वास्ते जगह जगह असपताल कायमहैं ।

गर्ज़ कि इन महारानी विक्टोरियाके राज्यमें जितनी बातें प्रजाके सुख और लाभार्थहैं वे गिनतीके योग्य नहीं हैं ।

अब मैं महारानी विक्टोरियाका संक्षित वृत्तान्त सुनातीहूँ ।

महारानी विक्टोरियाके पिताका नाम डियुकआफकेन्ट था जो तीसरे चार्लसके बेटेथे, यह अपने मां बापकी अकलौती बेटीथीं।

महारानी विक्टोरिया लंदन शहरमें २४ मई सन् १८१९ ई०में पैदाहुईं, अपने बापके मरनेके वक्त इनकी उमर कुल एकसालकीथी,

उस घरानेमें कोई पुत्र न था इसकारण इंग्लिस्तानके राज्यकी यही वारिस ठहराईगईं, और राजगद्दी पानेतक महारानी विक्टोरियाके चचा चौथे विलियमने राजका काज अंजाम दिया।

महारानी विक्टोरिया बचपनमें अतिनाजुक थीं, परंतु तौभी बहुत फुरत, और तेज और खेलतमाशेका उनको बडा चावथा ।

इनकी तन्दुरुस्तीकी पूरी खबरदारी कीगई,और इनके पढाने लिखानेको बडे बडे लायक ओस्ताद नियत कियेगये ।

इन्होंने अपने किशोर अवस्थामें जर्मन, फेंच, और लैटिन भाषाओंको भलीप्रकार सीखा, और अपने मुल्कके इतिहास और राजकाजके कायदे कानून भी अच्छीतरह जानलिये ।

१८ जून सन् १८३८ को जबकि महारानी विक्टोरियाका पन्दरहवां साल शुरू हुवाथा, वह राजसिंहासनपर बैठीं, उस समय जैसी तैयारी और जैसा सामान हुवाथा वह वर्णनके योग्य नहींहै, बडे बडे अमीर, देश देशके राजा उनकी राजगद्दीके समय मौजूद थे और मंगलबाजे बज रहे थे, परन्तु उस समय महारानी विक्टोरियाका कुछ अजब हाल था, अर्थात् वह अपनी मांके गलेमें बाँहडाले हुये रोरहीथीं लोगोंने इसका कारण पूछा, तो कहा कि "इतने बडे मुल्कका राज्य और उसका इंतजाम मेरे सुपुर्द किया जाताहै सो बडी जवाबदिही मेरे ऊपर होतीहै, यदि इसमें किसी तरहका खल पडिजाय तो मैं परमेश्वरको क्या जवाब दोंगी ? इस

पर राजमंत्रियोंने बहुत कुछ तसल्लीदी, और उनके सामने आज्ञा-पालन और निमकहलालीका कसम (शपथ) खाया।

१० फर्वरी सन् १८४० ई० को जब महारानी विक्टोरिया सोलह वर्षकी हुई, तब उन्होंने अपना व्याह सेक्सकुवर्गके राजकुमार अलवर्टके साथ किया, यह दोनों आपसमें बडे सचाई और प्रेमसे रहते थे।

श्रीमहारानी विक्टोरियाके चार पुत्र और पांच कन्या उत्पन्न हुई इसके उपरांत उनके पतिका देहांत होगया इस्से महारानीको बडा शोक हुवा और उसी समयसे ताज और बादशाही पोशाक उतारकर रखदिया, और तबसे किसी हर्षके जल्सेमें शरीक न हुई।

इन महारानी विक्टोरियाके राज्यमें प्रजाको जो सुख है वह वर्णन करने योग्य नहीं है।

परमेश्वर ऐसी न्यायकारी और प्रजापालक महारानी विक्टोरियाको जबलों सूर्य और चन्द्रमा रहें तबलौं स्थित रक्खें।

बोध ३४.

स्त्रियोंका धर्म अधर्म।

(दे०चं०कुं०) अम्मा! आप स्त्रियोंका कुछ धर्म,अधर्म वर्णन कीजिये, जिसमें हमलोग अधर्मको त्यागि सदा धर्मका पालन करैं क्या अम्मा स्त्रियोंको धर्म अधर्म जाननेका अधिकार नहींहै

(दे० सु०कुं) बेटी! क्यों नहीं अवश्य है, इन्हीं सब बातोंके जाने विना तो स्त्रियां आपसमें लडती, झगडती अपने कुभावसे पतिको दुःखी रखतीं और आप जीतेभर बदनाम रहकर अंतकाल नरकमें पडती हैं।

बेटी ! स्त्रियोंके जीवनके दोभागहैं, जितने दिन मां बापके घर व्यतीत होता है वह पहिला भागहै, और दूसरा भाग वह है जो व्याहहुये पीछे पति और दूसरे संबंधियोंके साथ ससुरालमें गुजरता है, मैं दोनों भागका धर्म पृथक् २ (अलग २) वर्णन करती हूँ तुमलोग मेरी बातोंको सुनके हृदयके अंचलमें गाँठ दे देना।

भाग १.

पांचवर्षकी अवस्थातक तो पुत्र हो वा कन्या किसीको शिक्षाकी योग्यता वा किसी धर्मका अधिकार नहीं है तदुपरांत लडकियोंका धर्म यह है कि, कुछ हिन्दी देवनागरी अक्षर लिखना भाषा पढना सीख स्त्री शिक्षाके विषयमें अच्छे ग्रंथ देख लेना, फिर सीना पुरना, कशीदा काढना आदिक सीख लेना चाहिये, पाकविधि (रसोईमें) अतिकुशल होना चाहिये, अपना बोल चाल शील स्वभाव रईसकी लडकियोंकी तरह बनाना चाहिये जिसमें सब कोई प्रसन्न रहैं, सब कोई प्रशंसा करैं जहां अच्छी लडकियोंका जिकिर हो वहां तुम्हारा नाम अव्वल नम्बरमें गिना जाय माता पिता भाई बहिन चचा चची सबका कहना मानना, सबकी सेवा यथायोग्य करना, सबके साथ ऐसे स्वभावसे रहना कि सबकोई अपनी लडकीके वा अपने प्राणके समान प्यार करे।

भाग २.

जब स्त्रियां पतिके साथ ससुरालमें जांय तो वहां सर्वोपरि धर्म तो यह है कि, जैसे होसकै अपने पतिको सदा प्रसन्न रक्खें, पतिका मन तुम्हारे सबबसे कभी जराभी दुःखी न हो और पतिकी प्रसन्नता तब होगी जब तन मन वचनसे उनकी सेवा करती रहोगी परमेश्वर समान उनको जानके सच्ची प्रीति उनपर रक्खोगी।

दोहा–पुत्री पतिगृह जायके, नैहर नेह विसार ॥
पतिसन प्रीत बढाव लखि, परम सनेही यार ॥
तनसे मनसे वचनसे, पति सेवा करु वाम ॥
जासे वे परसंन्न रह, तू पावै सुखधाम ॥

(दे० चं० कुँ०) अम्मा तन मन वचनसे सेवाका प्रकार भलीभांति समझाय कर कहिये ।

(दे०सु०कुँ०) तनकी सेवा तो सबकोई जानता है जैसे लौंडियां सेवा करनेको रहती हैं वैसेही अपनेको पतिकी लौंडी समझके समयानुसार सब काम करना, उनका शिर पैर दाब देना, सोने आते हों तो बैठी ताकती न रहो कि, आवैगा उनका नौकर तो बिछाय देगा, नहीं चट उठके बिछावन अपने हाथसे बिछाय दो, दीपक घरमें न हो तो तुरंत जला दो, सोतेसमय जो पानी पीनेकी आदत हो तो पानी दे दो, पान इलायची दे दो, गर्मीका दिन है तो बैठी पंखा झलो, जिससमय जो काम पतिका आपडै नौकरभी हो लौंडीभी हो, तो भी तुम अपने पतिका काम अपने हाथसे करलो, चाहे अपना काम तुम अपनी लौंडीसे करावो ।
तुम्हारे वह प्राण अधार, तुम्हारे सकल सुखके देनेहार, वह तुम्हारे मांगके सेंदुर, तुम्हारे शीशके सोहागहैं, तुम उनका काम न करोगी, सेवासे उनके वदनको आराम न दोगी, तो तुम्हीं इनसाफसे कहो दूसरा कौन करैगा, और कौन देगा ।

दोहा--जेहि बिन जग अँधियारहै, जेहि बिनु कोउ हित नाहिं॥
तेहि पतिको तुम देव दुख, समझो निज मन माहिं ॥
सेंदुर जो तव शीशके, तव जीवन सुखहेत ॥
क्यों पापिन तेहि नाह दुख, निज स्वभावसों देत ॥

ज्यौं शरीर बिनु प्राणके, ज्यौं सरवर बिनु नीर ॥
तैसे पति बिनु नारिहै, पावत अतिशय पीर ॥

प्यारी लडकियो ! जो तुम सदा सुखी और बड़भागिनी हुवा चाहो तौ तुम पतिकी आज्ञा कभी न टालो, जो मुखसे निकलै तुरंत उस कामको करो, उसके करनेमें तनिक बिलम्ब न लावो, जो उस कामके करनेमें हानिभी होतीहो तो उसको लाभही समझो हानि तो एक यहीहै कि पतिकी आज्ञा टलजाय, दूसरी हानि स्त्रियोंको कुछ नहीं है ।

ऐसा न करो कि वह कहतेहैं "तनिक पानी देदे" आप कहती हैं "कौन जाय सरदीमें हाथ पैर भिगोने, जाव ले लेव नहीं नौकर बुलाय लेव वह देदे" दुर लुच्ची धिक्है तेरे जांगर तेरी जवानीको और थू है तेरी बुद्धिको, तुझे ऐसा कहते लज्जा नहीं आई, ऐसा वचन बोलते तेरी जीभ न गिरगई ? अरे जो पति कहै अपना शीश काटिकर आगे धरदे तो ऐसा करते भी बिलम्ब न लगावे ।

दोहा– अग्नि जलन जलमें धसन, कहै जो पति तोहिं वास ॥
तो मति टारहु करहु सोइ, ह्वै जगमें अतिनाम ॥
पतिकहनो मति टालियो, कीजो शिरधारि सोय ॥
ताते पतिपरसन्नता, तुमकहँ अतिहित होय ॥

(मनसे सेवा)

मनसे सेवा यह है कि कपट त्याग सच्ची प्रीति पतिसे राखैं, पतिको परमेश्वर समान जानके उसीके ध्यानमें अपना मन सदा लगाये रहैं, उसीके अनुसार अपना मनभी बनावे ।

दोहा–तू पतिकी पतिलाडिली, पति तेरो पति तोर ॥
दुहुँ ऐसे हिलमिल रहो, होहु न अलग बहोरि ॥
पति दिवसहि जो निशिकहै, तुमहु कहो तेहि रात॥
जब अस दुहुँ यकमन रहो, तब बनिहैं सब बात॥

पति प्रीतमसों लाडिली, सांचा करहु सनेह ॥
ताहीसन मन रमि रहै, भूलि देहसुधि गेह ॥
अशन बसन भूषन विविध, सकल अंग सुखदेत ॥
तासन हेत न करतहै, क्योंरी नारि अचेत ॥

सदा मनमें यही अभिलाषा रक्खै कि हमारे स्वामी हमसे प्रसन्न रहैं पराये पुरुषका ध्यान स्वप्नमेंभी न आवै ।

दोहा—जा दिन पुत्री जानहू, पतिकहँ प्राणसमान ॥
ताही दिन तुम जानिहो, भयो सकल कल्यान ॥
अग्नि जलो जलमें धँसो, खाय जहर मरिजाव ॥
पर पूरुषसों लाडिली, कबहुँ न नेह लगाव ॥
स्वप्नेहु परपति प्रीतिते, होत नरकमें वास ॥
ताते नित चित पिय धरो, जो तुमको सुखरास ॥

प्यारी लडकियो ! जो तुम्हारे हाथके पकडने वाले, जो तुम्हारे इच्छानुसार तुम्हें भूषण वस्त्रादिक देनेवाले, जो सर्वप्रकार तुम्हारी रक्षा करने वाले, जो तुम्हारे हृदयकी तपन बुझानेवाले,जो तुम्हारे कलेजेको ठंढा करनेवालेहैं भला ऐसे पतिसे जो कपट करोगी तो तुम्हीं कहो तुम्हें कौन फल मिलैगा ? जो ऐसे पतिसे प्रीत न करोगी, उसका ध्यान न धरोगी तो भला तुम जगमें जन्मिके क्या लाभ लहोगी ?

हाय ! ऐसे पतिको अपने पलकोंमें राखिये, अपने कलेजेमें छिपाइये; तन मन वारिये, प्राण परिवारिये ।

वह औरत नहीं डाइनहै, वह स्त्री कुलकी कलंकहै जो निर्भर प्रेम अपने पतिसे न रक्खै ।

दोहा—को सुखप्रद तोहिं पीवसम, पुत्री करहु विचार ॥
तात मात सबते अधिक, तुमहिं दुलारनहार ॥

मात पिता सुखदेत मित, पतिसुख अमित अपार ॥
ऐसे पतिहि न जो भजै, तेहि तियको धिक्कार ॥

जिसका मन पतिके वियोगमें अतिउदास और संयोगमें अति हर्षको न प्राप्त हो,जिसका हृदय पतिके दर्शनसे कमलकी नाईं न खिलिजाय, जिसका नयन चकोरकी नाईं पतिके मुखचन्द्रमें अटक न रहै,जो अपने पतिसे रूखी सूखी और पराये पतिसे मीठीर बातैं करै, उस स्त्रीके माताके गर्भको धिक्कारहै, वह बांझही क्यों न रही, ऐसी नालायक कन्या जन्मायके जगमें क्या यश लिया।

देवी सुबोध कुँवारि यह कहती जातीथी और पतिप्रेममें ऐसी मग्न होती जातीथी कि तनकी दशा उसको भूली जातीथी; आंखोंसे आंसू बहता जाताथा रोयें प्रफुल्लित होते जातेथे।

(वचनसे सेवा)

वचनसे सेवा यहहै कि सदा अपने स्वामीसे तुम मीठी २ बातैं करो; प्रेम विनयभरी बातोंसे उनका मन प्रसन्न रक्खो, जब पुकारना हो तो "हेस्वामी ! हेप्राणनाथ ! हेप्राणपति" इत्यादिक मर्यादासहित वचनोंसे सम्बोधन करो अपनी सखियों साथिनियोंसे अपने पतिके शील स्वभाव कोमलतादिक गुणोंको बडे प्रेमसे वर्णन करो, किसी प्रकार निंदा, शिकायतकी बात न अपने मुखसे कहो, न अपने कानसे सुनो।

नालायक और जाहिल स्त्रियां तो इसको शर्म मानतीहैं कि, स्वामीजी कहैं, महाराज कहैं और वह कहती क्याहैं "हेहो, हेसु नीत" अरे नालायक यह बोली तो नान्होंकीहै, कहीं भले आदमीकी लडकियांभी हेहो करतीहैं ? यह माना कि जहां उनसे बोलनेका अवसर न हो न बोलो, पर हेहो छोडदो अच्छे २ शब्दोंसे पुकारा करो।

अरे बेटी! वे तुम्हारे भगवान्‌हैं, वे तुम्हारे सइयां नहीं गोसइयां हैं, तुम उनकी पइआं लागो उनके चरणोंकी धूरि शीशपर चढावो, इसीसे तुम्हारा कल्याण है, यही व्यवहार तुम्हारे सुखकी खानहै।

तुम उनको महाराज न कहोगी, तुम उनको स्वामी न कहोगी तो तुम्हारे मुखमें यह जीभ भगवान्‌ने काहेको दिया है? यह जीभ ओढनेकोहै कि बिछानेको, यह जीभ नहीं निरा चाम है।

दोहा—हे स्वामी हे प्राणपति, हे जीवन आधार॥
हे मम प्रीतम नाथ मम, यों कहि पियहि पुकार॥

इस बातका बहुत चेत रक्खो कि अपने किसी बोलचाल वा स्वभावसे पतिका मन दुःखी न हो, जो औरोंसे दुःखी होय घरमें आवैं तो तुम ऐसे प्रेमसे ऐसे भावसे मिलो, बोलो, बतियावो, कि उनका खेद मिटिजाय चित्त प्रसन्न होजाय।

दोहा—पतिकहँ शीलस्वभावसे, राजी रखो हमेश॥
पुत्री पति परसन्नता, मेटत सकल कलेश॥
पुत्री पतिसन प्रीत करु, सांचे शील सुभाय॥
तोहिंसुख पियसुख जिवत भरि, अंतहु सुख ह्वै जाय॥

जब पति क्रोधितहों तो तुम खडी खिसखिस हँसो मति, इस व्यवहारसे और गुस्सा बढि जायगा, और तुम्हारे पतिको बडा क्लेश होगा, ऐसे समयमें तुम बहुत डर जावो और सकुच सनेहसे ऐसी बात बोलो कि तुरत उनकी रिस उतरि जाय।

जिस बातपर अपने पतिकी रुचि देखो, वही काम करो, खाने पीनेमें जिस वस्तुपर उनकी रुचि अधिक देखो, अथवा जिस वस्तुके बनानेकी तुम्हें आज्ञादें वह चीज जरूर बनावो।

जिस प्रकारकी बोल, जिस तरहकी चाल, उनको पसंद हो वैसेही बोल, चाल अख्तियार करो।

जब पति कहैं, " तुमने यह कसूर कियाहै" तो न भी कसूर हो तो भी तुम यही कहो " महाराज कसूरतो हमारे रोमरोमसे हरसाइत हरघडी हुवा करताहै, आप हमारे अपराधपर दृष्टि करेंगे तो हमारा एकदिन निबाह न होगा, मैं तो जातकी स्त्री महागंवारिन चरणोंकी दासीहूँ, मेरा अपराध तो सदा आपको क्षमाकरना होगा"।

कोई २ खराब और नालायक औरतैं ऐसी ढीठ होतीहैं कि, पति क्रोधितहो बारबार कहि रहेहैं "तुमने क्यों ऐसा कसूर किया" तो वह यह कहेजातीहैं "कसूरतो हम कवनो नाहीं कइली रौरे, बूझेमें फरकहै" बुद्धिमान् लडकियो! तुमहीं कहो यह बात स्त्रियोंको पतिके सामने कहने योग्यहै ? नहीं कभी नहीं।

खराब और नालायक स्त्रियोंकी एक यह भी पहिचान है कि जब पति घरमें गये तो वह मुँह बनाये सबकी शिकायत करनेलगीं "एउरे भाईतो हमके ऐसन बात कहले हैं, एउरे भउजाई तो हमके गारी दिहलिन हैं, हम तो ऐसन संगतमें नाहीं रहब" इत्यादिक ऐसी अनेक बातें करती हैं कि, जिस्से पतिका चित्त घरभरसे रंज होजाय, जो तो पति बुद्धिमान् हुवा तो समझगया कि यह नालायक औरतहै इसकी नियत खराब है और ऐसा समझके कुछ उसकी बातका ख्याल नहीं किया, जो पति कमबूझ हुआ और उसकी बातोंपर ध्यान देने लगा तो चलो सबसे बिगाड तिगाड करके अलग होगये, अयश और बदनामीकी मोटरी शिरपर रखके जन्मभरके लिये शोकका सामान करलिया।

बुद्धिमान् लडकियो! पहिले तो तुम सबके साथ इस तरह सलूक व्यवहार रक्खो कि, इसकी नौबतै न आवै कि कोई तुम्हें कुछ कहे जो कदाचित् कोई घरमें ऐसी खराब स्वभाववाली

होभी कि तुम्हैं कटुवचन कहै, तो खबरदार पतिसे तुम कदापि ऐसी बातोंका जिकिर मत करो, जो वह पूछैं भी कि, तुमको किसीने कुछ कहाहै तो भी ऐसी बातोंको छिपाओ।

स्त्रियां पुरुषोंके सुखकी साधन बनाई गईहैं, और पुरुषोंको स्त्रियोंसे सुख तब मिलगा जब वह आज्ञाकारिणी रहैंगी, उनकी आज्ञाका भंग किसी प्रकार न करैंगी।

देखो इसपर मैं एक पुराना इतिहास कहती हूं।

(इतिहास)

एक आदमी कबीर साहबके पास गया, यह बात पूछने कि, घर गृहस्थीमें स्त्रीपुत्रके साथ रहनेमें सुख है, वा इनको त्याग अकेले रहनेमें? जब यह गया तो कबीरसाहब ताना तानके सूत मांज रहेथे, उनकी स्त्री लडके सब उन्हींके साथ उसी काममें लगेथे।

१ कबीरसाहब अपनी स्त्रीसे कह उठे कि "दिन डूब गया अँधियारा होगया दीपक जला लावो" उनकी स्त्री देखतीहै कि दोपहरका जूनहै पर चट जाके दीवा जलाय लाई।

२ फिर कूंची अपने पीठपर रखकर कहने लगे "ऐ मेरी कूंची क्या होगई ऐ कौन लेगया" स्त्री लडके सब देखतेहैं कि कूंची पीठपर रहै पर सब मिलके इधर उधर खोजने लगे. फिर कबीर साहब अपने पीठपरसे उतारकर कहा "है कूंची मिलगई" सबने कहा हां महाराज मिलगई अच्छा हुवा।

३ फिर अपनी स्त्रीसे कहा "थोडा पिसान लावो इसी जगह रोटी बनावो" जब वह पिसान लाकर साननेलगी तो क॰साहबने कहा "आधा बालू इसमें मिलाय लेओ" उन्होंने तुरंत आधा बालू मिलाय दिया, फिर कहा "अच्छा फेंक देव" उन्होंने तुरंत फेंक दिया "वह पुरुष यह सब व्यवहार देखतारहा"।

जब कबीरसाहब ताना भरनेसे निवृत्त हुये तब उस आदिमीके निकट जाय पूछने लगे "कहो तुम किस हेतुसे आयेहो" उस पुरुषने अपना प्रश्न प्रकट किया कबीरसाहबने कहा हमने इसका उत्तर तुम्हें देदिया ।

जिस घरमें ऐसे आज्ञाकारी स्त्रीपुत्र रहैं वहां उनके साथ रहनेमें सुखहै, और जहां ऐसे स्त्री पत्र नहीं तहां उनको त्यागकर अकेले रहनेमें सुख है ।

वह पुरुष उचित उत्तर पाय अपने घर चलागया ।

बुद्धिमान लडकियो ! जब किसी कार्यके करने वा न करनेके विषयमें पति तुमसे सलाह पूछैं, तो बहुत सोचसमझके उचित सलाह देओ, पर जब वह आज्ञादें कि यह बात ऐसे हो, वा ऐसे न हो तो आज्ञामें तुम दखल न देओ,जैसी आज्ञादें वैसेही होने देव।

स्त्रियोंकी गति सिवाय पतिव्रतधर्मके दूसरे किसी प्रकारसे नहीं होती. इसपर मैं एक पुरातन इतिहास कहती हूँ परम विश्वास करके इसको सुनना चाहिये ।

(इतिहास)

एक राजकन्याने पार्वतीजीकी बडी पूजा किया, तब पार्वतीजीने प्रसन्न होकर उसको दर्शन दिया और कहा पुत्री ! तू क्या चाहती है ? वर मांग ।

(राजकन्या हाथ जोडकर) भगवतीजी ! जो आप मुझपर प्रसन्न हैं तो यही वर दीजिये कि, मेरा मन सदा स्वामीकी सेवा टहल विनय प्रीतिमें लगारहै ।

(श्रीपार्वतीजी) एवमस्तु, अर्थात् तुम्हारा अभिलाप पूर्ण हो ।

(फिर राजकान्याने विनय किया) हे महारानी ! अच्छी और बुरी स्त्रियोंका आप लक्षण और उनकी गति वर्णन करें ।

(पार्वतीजी) हे पुत्री!अच्छी स्त्रियोंका लक्षण यह है कि,वह अपने

पतिकी आज्ञा कभी नहीं टालतीं, अपने सेवा टहल शीलस्वभावसे सदा पतिको प्रसन्न रखतीं हैं, सर्वकार्य पतिके रुचि अनुसार करती हैं, दुःख सुख सर्व अवस्थामें संगी रहती हैं, पराये पुरुषका ध्यान स्वप्नमेंभी नहीं करतीं ।

और खराब स्त्रियां वे हैं जो अपने पतिके विरुद्ध रहती हैं, उनकी आज्ञा नहीं मानतीं, अपने कुभावसे सदा पतिको दुःखी रखती हैं ।

हे राजकुमारि ! स्त्रियोंकी गति किसी देवताके पूजा और ध्यानसे नहीं होती, उनकी गति केवल पतिपूजासे होती है ।

जो स्त्रियां अपने शीलस्वभावसे सदा पतिको प्रसन्न रखती हैं वे संसारमें पुत्रवती भाग्यवती होकर सदा यश और सुख पाती हैं, और मरनेपर सत्यलोकके देवता उसको अनेक वस्त्रभूषण पहिनाय दिव्य विमानपर बैठाय सत्यलोकमें लेजाते हैं,वहां अमृतसमान भोजन, दूधके फेन ऐसा गुलगुल सेज, अनेक अप्सरा टहल करनेको मिलती हैं और बहुत कालतक वैकुंठका सुख भोग करके फिर अच्छे कुलमें सुन्दर शरीर धरकर जन्म पाती हैं ।

और जो स्त्रियां अपने पतिको जवाब दे बैठती हैं, अपने पतिसे बैर बिरोध करती हैं, उनकी सेवा टहल विनय प्रीति नहीं करतीं पराये पुरुषसे हँसती बोलती हैं, वे संसारमें अभागिनी, दरिद्रिनी बदनाम रहकर मरनेपर यमराजके दूत लोहेके डंडोंसे उसे मारते हुये उसको यमपुरीमें ले जातेहैं, तब यमराज हुकुम देते हैं कि जिस मुँहसे इसने पतिको जवाब दिया है, बडोंको तैं तुकार किया है, उस मुँहमें नरकके बडे बडे कीडे पडकर उसकी जीभ काट डालें, जिस शरीरका इसने अभिमानकर पतिकी सेवा नहीं किया है, उस शरीरको पीबके कुंडमें बोरो, और बडे बडे कीडोंको

कहदो उसके शरीर भरको काट खायँ, फिर उसमें से निकालकर विष्ठाके कुंडमें डालतेहैं जहाँ उस जीवको बडा क्लेश होताहै, फिर उसमेंसे निकालकर अग्निकुंडमें डालतेहैं जहां अग्निके तेजसे सारा बदन जला करताहै और प्राण नहीं निकलता. ऐसे बहुत कालतक उसकी शासत करके फिर उसका जन्म शूकरी, छछुन्दरी, चमगादुरी, वा नाबदानके कीड़ेका होताहै, और जो मनुष्यका जन्म भी पाया तो महाकुरूपा महादरिद्रा होकर रहतीहैं, और जो सुन्दर शरीर भी पाया तो युवावस्था चढतेही विधवा होजातीहैं और निरादरताको प्राप्त हो, हाय हाय कर जन्म गँवाती हैं, इतना कह श्रीपार्वतीजी अंतर्हित होगईं ।

और हेबेटी ! जब सीताजी श्रीरामजीके साथ अत्रिमुनिके स्थानपर पहुँचीं तो मुनिपत्नी अनसूयाजीने सीताजीसे जो नारिधर्म वर्णन कियाहै उसको मैं तुमसे कहतीहूँ इस वार्त्ताको भलीप्रकार चेत रखना चाहिये ।

(श्री अनसूयाजीकथित नारिधर्म)

चौ०–वृद्ध रोगवश जडधन हीना । अन्ध बधिर क्रोधी अतिदीना॥
ऐसेहु पतिकर किये अपमाना । नारि पाव यमपुर दुख नाना।

अर्थ-यहहै कि, यदि पति वृद्ध अर्थात् बूढा हो, रोगी अथवा महामूर्ख, वा धनहीन अर्थात् निर्धन हो, अंधा, वहिरा, अतिक्रोधी, वा विषयासक्त अर्थात् संसारीसुखमें लंपट हो ऐसे पतिका भी जो स्त्री निरादर करके उसकी सेवा, प्रीति न करेगी तो यमपुरीमें उसकी वडी शासत होगी ।

चौ०–एकहि धर्म एक व्रत नेमा । काय वचन मन पतिपद प्रेमा ॥

अर्थ—स्त्रियोंका यही एक धर्म और उनका नियम व्रत एक यही है कि, तन मन वचनसे पतिके चरणोंकी प्रीति रक्खैं।

चौपाई-उत्तमके अस बस मनमाहीं। स्वप्नेहु आन पुरुष जग नाहीं॥

अर्थ—उत्तम स्त्री वही है जो सिवाय अपने पतिके दूसरे पुरुषको स्वप्नमें भी न जाने।

चौ०—बिनुश्रम नारि परमगति लहई। पतिव्रत धर्म छांडिछलगहई॥

अर्थ—जो स्त्री छल छोंड पतिव्रतधर्मको धारण करै वह सहज ही परमगति अर्थात् वैकुण्ठमें परमसुख पाती है।

चौपाई—पति प्रतिकूल जन्मि जहँ जाई। विधवा होय पाय तरुणाई॥

अर्थ—जो स्त्री इस जन्ममें अपने पतिको सेवा प्रीतिसे राजी न रक्खैगी, उसकी मरजीके विरुद्ध काम करैगी, वह दूसरे जन्ममें जब युवावस्थाको प्राप्त होगी तो विधवा होकर जन्मभर दुःख भोग करैगी।

दे० सु० कुं०) बेटी! मैं तुझसे एक और इतिहास कहती हूं जिस्से मालूम होजाय कि अच्छी सती स्त्रियां इस प्रकार पतिकी सेवा करतीहैं और ऐसा फल उनको मिलता है।

(इतिहास.)

एक राज्यकन्या थी, उसके पिताने किसी बातपर उससे नाखुश होकर उसका विवाह एक कोढीसे करदिया, राजकन्या न मनमें उदास हुई, न कुछ खेद माना, उसी कोढी पतिको परमेश्वर समान जानके उसकी सेवा टहल करने लगी। दिनरातमें कईबार उसका वदन धोती, उसके वदनसे कीडे निकालती, मक्खियां हांकती, जो जुरता मिलता पकाकर अपने हाथसे भोजन खिलाती। जो लोग उस राज्यकन्याको देखते मोहित होजाते, और अनेक उपाय करते कि, वह कोढीका संग त्याग हमारे साथ चलै

कहदो उसके शरीर भरको काट खायँ, फिर उसमें से निकालकर विष्ठाके कुंडमें डालतेहैं जहाँ उस जीवको बडा क्लेश होताहै, फिर उसमेंसे निकालकर अग्निकुंडमें डालतेहैं जहां अग्निके तेजसे सारा बदन जला करताहै और प्राण नहीं निकलता. ऐसे बहुत कालतक उसकी शासत करके फिर उसका जन्म शूकरी, छछुन्दरी, चमगादुरी, वा नाबदानके कीड़ेका होताहै, और जो मनुष्यका जन्म भी पाया तो महाकुरूपा महादरिद्रा होकर रहतीहैं, और जो सुन्दर शरीर भी पाया तो युवावस्था चढतेही विधवा होजातीहैं और निरादरताको प्राप्त हो, हाय हाय कर जन्म गँवाती हैं, इतना कह श्रीपार्वतीजी अंतर्हित होगईं ।

और हेबेटी ! जब सीताजी श्रीरामजीके साथ अत्रिमुनिके स्थानपर पहुँचीं तो मुनिपत्नी अनसूयाजीने सीताजीसे जो नारिधर्म वर्णन कियाहै उसको मैं तुमसे कहतीहूं इस वार्त्ताको भलीप्रकार चेत रखना चाहिये ।

(श्री अनसूयाजीकथित नारिधर्म)

चौ०–वृद्ध रोगवश जडधन हीना । अन्ध बधिर क्रोधी अतिदीना॥

ऐसेहु पतिकर किये अपमाना । नारि पाव यमपुर दुख नाना।

अर्थ-यहहै कि, यदि पति वृद्ध अर्थात् बूढा हो, रोगी अथवा महामूर्ख, वा धनहीन अर्थात् निर्धन हो, अंधा, बहिरा, अतिक्रोधी, वा विषयासक्त अर्थात् संसारीसुखमें लंपट हो ऐसे पतिका भी जो स्त्री निरादर करके उसकी सेवा, प्रीति न करेगी तो यमपुरीमें उसकी बडी शासत होगी ।

चौ०–एकहि धर्म एक व्रत नेमा । काय वचन मन पतिपद प्रेमा॥

अर्थ—स्त्रियोंका यही एक धर्म और उनका नियम व्रत एक यही है कि, तन मन वचनसे पतिके चरणोंकी प्रीति रक्खैं।

चौपाई-उत्तमके अस बस मनमाहीं। स्वप्नेहु आन पुरुष जग नाहीं॥

अर्थ—उत्तम स्त्री वही है जो सिवाय अपने पतिके दूसरे पुरुषको स्वप्नमें भी न जानै।

चौ॰—बिनुश्रम नारि परमगति लहई। पतिव्रत धर्म छांडिछलगहई॥

अर्थ—जो स्त्री छल छोंड पतिव्रतधर्मको धारण करै वह सहज ही परमगति अर्थात् वैकुण्ठमें परमसुख पाती है।

चौपाई—पति प्रतिकूल जन्मि जहँ जाई। विधवा होय पाय तरुणाई॥

अर्थ—जो स्त्री इस जन्ममें अपने पतिको सेवा प्रीतिसे राजी न रक्खैगी, उसकी मरजीके विरुद्ध काम करैगी, वह दूसरे जन्ममें जब युवावस्थाको प्राप्त होगी तो विधवा होकर जन्मभर दुःख भोग करैगी।

दे॰ सु॰ कुं॰) बेटी! मैं तुझसे एक और इतिहास कहती हूं जिस्से मालूम होजाय कि अच्छी सती स्त्रियां इस प्रकार पतिकी सेवा करतीहैं और ऐसा फल उनको मिलता है।

(इतिहास.)

एक राज्यकन्या थी, उसके पिताने किसी वातपर उससे नाखुश होकर उसका विवाह एक कोढीसे करदिया, राजकन्या न [illegible] खेद माना, उसी कोढी पतिको परमेश्वर [illegible] [illegible]वा टहल करने लगी। दिनरातमें कईबार उ[illegible] [illegible]सके वदनसे कीडे निकालती, मक्खियां हांकती, [illegible] [illegible]मिलता पकाकर अपने हाथसे भोजन खिलाती जो लोग उस राज्यकन्याको देखते मोहित होजाते, अनेक उपाय करते कि, वह कोढीका संग त्याग हमारे साथ

पर वह सती थी कब किसीका कहा सुन सकती थी, उसकी सेवा और सतीत्वके प्रतापसे थोडे दिनमें उसका कोढ अच्छा होचला ।

एकदिन उसने राजकन्यासे कहा "प्यारी ! आज हमारा चित्त चाहताहै कि नाच देखैं, सो सुना है कि, दुर्गादास महाजनके यहाँ बडे धूमधामका जलसा है, कई डेरा नाचके आये हैं, सो हमको किसीतरह उनके यहां पहुँचाओ कि हम नाच देखैं" राजकन्याने कहा "महाराज बहुत अच्छा" जब संध्यासमय हुआ तो राजकन्या उस कोढी पतिको कंधेपर चढाके लेगई और दुर्गादास महाजनके मकानपर पहुँचकर बोलतीतले खडी हो अपने पतिको बोसारेपर उतारदिया. कोढीने राजकन्यासे कहा "तुम बोलतीतले खडी रहो जबतक हम नाच देखकर न आवैं इहांसे कहीं मत टलियो" यह कहि आप किसीतरह घुसुकते फुसुकते भीतर गये जहाँ नाच होता था, और राजकन्या बोलतीतले खडी रही, असाढका महीना था, बादल घेर आया और बडे जोरसे पानी बरसने लगा, राजकन्या खडी भीजती रही और पतिकी आज्ञा मान वहाँसे कहीं टलती न थी. जब बहुत वृष्टि हुई और भीगते भीगते उसका तमाम बदन काँपने लगा, प्राण निकलनेकी नौबत पहुँचगई, तब इन्द्रासन डगमगाने लगा, और इन्द्रने दूतोंसे कहा "जल्दी विमान लेकर जाओ और उस स्त्रीको इन्द्रासनमें ले आओ" दूत विमान ले राजकन्याके निकट आये, और कहा "इन्द्रासनमें चलो इन्द्रने बुलाया है" राजकन्याने कहा "विना स्वामीके इन्द्रासन मेरे किस काम का ? वह भी चलैं तो मैं चलों" दूत यह बात सुन जाके चौ०ने कहा, इन्द्रने कहा " उसको पतिसमेत ले आओ" फिर दूत और उस कोढीसे कहा "तुम्हारी स्त्रीके तपसे देवराज इन्द्र

प्रसन्न होकर तुमको मयस्त्रीके इन्द्रासनमें बुलायाहै चलो" उसने कहा "विना इस नाचनेवाली औरतके मैं इन्द्रासनमें नहीं चल सकता, यह सब समाज चलै तो मैं भी चलों" फिर दूत लौटगये और इन्द्रसे सब वृत्तान्त कहा, तब इन्द्रने दूतोंको आज्ञा दिया "जाओ सब समाज समेत ले आओ" यह सुन दूत आये और सबको विमानपर चढाय इन्द्रासनमें पहुँचादिया।

यह इतिहास सुनाय देवी सुबोधकुँवारि बोली बेटी! देख, कहां वह राजकन्या अतिसुन्दरी और कहां उसका पति कोढी परन्तु उसीको उसने परमेश्वर समान जानके उसकी सेवा टहल किया और प्राण गँवाना अंगीकार किया परन्तु पतिकी आज्ञा न टाला सो उसका फल देखो कि वह आप तो आप और लोगोंको भी इन्द्रासनमें पहुँचादिया, बेटी धन्य हैं वे स्त्रियां जिनका मन पतिव्रतमें रत है।

कवित्त।

धनि वह देश जहां सती साधु सुसरि हैं धन्य वह काल हरिभक्त जग जायो है॥ गृही वह धन्य दान दीननको देतरहै त्यागी वह धन्य जो विराग उर छायोहै॥ पुत्र वह धन्य पितु आयसुको पाल करै मित्र वह धन्य मित्रकाममें जु आयो है॥ नर वह धन्य लह्यो गुरुमुख आत्मज्ञान नारिवह धन्य पतिव्रत रतिलायोहै॥ १॥

देखो मैं एक और इतिहास कहतीहूँ जिससे मालूम होजायगा कि पतिव्रता स्त्रीका क्या प्रभाव है।

(इतिहास)

जलंधर नामक एक राक्षस था उसका शिवजीसे बहुत काल-तक युद्ध होता रहा, पर शिवजी जीत नहीं सकते थे कारण यह था कि, उसकी स्त्री पतिव्रता थी, उसीके प्रभाव और तेजसे

उसके पतिको कोई जीत नहीं सकता था, जब विष्णु भगवान्ने छल करके उसका धर्म छोडाया, तब वह राक्षस मारागया ।

(दे० चं० कुँ०) अम्मा ! क्या विष्णुभगवान् ऐसेही हैं कि वह छल करके धर्म छोडाते फिरैं ?

(दे० सु० कुँ०) नहीं बेटी विष्णुभगवान् तो धर्मकी रक्षाके वास्ते हैं, धर्म छोडाने वास्ते नहीं हैं, उसका जो धर्म छोडाया तो उसमें कारण यह था कि, वह राक्षस बडा पापी था, देवता और मनुष्योंको बडा क्लेश देता था, तब भगवान्ने जगत्की रक्षाके वास्ते ऐसा किया ।

इसीपर कहा है ।

दोहा–पतिव्रता जाकी तिया, ताहि न जीतै कोय ॥
जालन्धर हरिकी कथा, जानि मानिये सोय ॥

बेटी ! शास्त्रमें पतिके साथ स्त्रियोंके चार भाव लिखे हैं ॥

१–भोजनादिक व्यवहारमें माताका भाव, अर्थात् जैसे प्रीति सहित माता अपने पुत्रको भोजन कराती है वैसाही भाव स्त्रीको पतिके भोजनादिक व्यवहारमें रखना चाहिये ।

२-सेवादिक व्यवहारमें लौंडीका भाव ।

३-सेजसमय वेश्याका भाव।

४-आज्ञापालन करनेमें शिष्यका भाव, अर्थात् जैसे शिष्य गुरुका वचन मानता है वैसे ही स्त्रियोंको पतिकी आज्ञा पालन करनी चाहिये ।

बेटी ! बहुत क्या कहैं इतना ही जान लेना चाहिये कि, किसी प्रकारसे पतिका चित्त दुःखित करना न चाहिये जिस तरह होसकै सदा उन्हें प्रसन्न रखना चाहिये ।

पतिके सिवाय ससुरालमें सास, ससुर, देवर, भसुर देवरान जेठान आदिक और भी बहुतसे संबन्धी मिलते हैं, जिनके साथ बडे विचार और सुंदर व्यवहारसे निबाहना चाहिये ।

सास ससुरको अपने मां बापके समान जानके उनकी सेवा टहल करना चाहिये, समयानुसार जो ससुरका शिर दाबदो उनको अपने हाथसे पानी देदो तो कुछ लज्जा नहीं है, लज्जा तो अनुचित व्यवहार करनेमें चाहिये, उचित व्यवहारमें लज्जा निर्लज्ज-ताके बराबर है ।

तुम्हारी सास बूढी हैं तो तुम उनकी ऐसी सेवा करो कि वह तुमसे प्रसन्नहोके तुमको आशीर्वाद दें, उनके आशीर्वादसे सर्वप्रकार तुम्हारा कल्याण होगा ।

दोहा—सास ससुर सेवा करो, निज पितु मातु समान ॥
घर बाहर छोटो बडो, सबकर राखो मान ॥

देवरको अपने छोटे भाई वा पुत्र समान प्यार करना चाहिये जेठको अपने बडे भाई वा पिताके समान जानके उनका बडा अदब रखना चाहिये ।

देवरानको अपनी छोटी बहिन वा पुत्री समान और जेठानको अपनी बडी बहिन वा माता समान जानके उनके साथ विनयभाव सेवा, प्यार, यथायोग्य करना चाहिये ।

आये गयेका यथायोग्य मान मर्याद रखना चाहिये, ऐसे ढंगसे सासुरमें निबाहना चाहिये कि सब कोई प्रशंसा करें ।

प्यारी लडकियो ! तुम विचार करो कि, जब तुम ससुरालमें जातीहो तो वहां कौन तुम्हारा सगा रहता है, किससे तुमसे जान पहिचान रहती है बिलकुल बिराना देश, पराया गाँव, वे जाने चीन्हें लोगोंमें अकस्मात् जायके रहना होता है, और सो भी यह नहीं कि दो दिन चार दिन नहीं जन्मभर वहीं तुमको रहना है,

फिर ऐसी जगह जायके जो तुम सास ससुरको माता पिता समान, देवरान जेठानको अपनी छोटी और बडी बहिन समान जानिके परस्पर मेल मुहब्बतसे न रहोगी तो तुमको किसप्रकार और किस व्यवहारसे सुख प्राप्त होगा ।

तुम चार औरतैं एक घरमें हो, तुमको चाहिये कि छोटियां बडियोंका अदब करैं, उनकी सेवा टहल करैं, उनका जवाब न दें, जो बडी है वह छोटियोंको छोटी बहिन वा पुत्रीसमान जानके उनका हृदयसे प्रेम करैं ।

घरका जो कामहो वह सबकोई बांटके करो, कामसे छुट्टी मिलै तो एक जगह बैठके मिलजुलके आपुसमें हँसो, बोलो, दोहे कहो, चौपाई कहो, अच्छी अच्छी कहानियाँ कहो, पोथियां बाँचो, अर्थ कहो, फागुनका दिनहै तौ धमार गाओ, सावन है तो बारह-मासी और कजलियां उडाओ, समय समय अनुसार सब कोई मिलजुलके खुशियां मनाओ, घरमें आनंद मचाये रहो, कोई किसीसे कपट न रक्खो, एक दूसरेको प्राण समान जानो तो देखो जो सुख उस घरमें होगा वह इन्द्रासनमें भी न होगा ।

चौ०-जहांसुमति तहँसम्पति नाना । जहांकुमति तहँविपतिनिदाना ॥

बुद्धिमान लडकियो ! तुम विचार करो कि, जो सुख सुम-तिमें है, जो बहार आपुसके मेलजोल संगत सोहवतमें है, वह इसमें कहां है कि थोडी थोडी बातपर रोज घरमें लडाई ठनी है, जब सुनो तब कच्चाइन मची है, एक दूसरीको शत्रुसमान जान-रही है, यह उनसे मुँह फुलाये, वह उनसे मिजाज बनाये, वह अपने घरमें अकेली बैठी, यह अपने कोठरीमें पडी हुई, सब अपने भागोंको रोरही हैं ।

भला इन नालायकोंसे पूछो तो कि क्यों ऐसा व्यवहार करि अपना जीवन जौहर व्यर्थ खो रहीहो ? क्यों अपने सुन्दर

समयको अकारथ कारे रहीहो, घरभरसे दुरदुर, देश भरसे बदनाम होरही हो ?।

मेरा कहना मानो, आपुसमें मेल मोहब्बत रीतिप्रीति रक्खो, एक दूसरेको प्राण समान जानो, तुम्हारे गाढे वह काम आव उनके जूनपर तुम हाजिर रहो, अपने दुःखको थोडा और दूसरेके दुःखको अधिक जानो, उनके सुखसे तुम अपनेको सुखी मानो, एकका पति जो नौकर हुवा तो तुम सब कोई ऐसा हर्ष मनावो कि मानो सबका पति नौकर हुवा, जो एकको पुत्र हुवा तो तुम सब मिलके ऐसी खुशी मनावो जैसी खुशी उसकी माताको हुई है, एककी कोई हानि होजाय तो सबकोई अपनी हानि समुझो, जै प्राणी रहो एक दिल एकराय रहो, जो एक दिनको रात कहिदे तो तुम सब रातही कहने लगो।

प्यारी लडकियो ! रईसोंके घरकी औरतें ऐसेही सुमतिसे रहती हैं और ऐसेही औरतें सती और सरदार कहलाती हैं, ऐसीही औरतोंकी धाक मर्यादभी बढती है।

जिस घरमें तुम चार जनी ऐसे सलूक ऐसी सुमतिसे रहोगी वह घर बे चिरागे उजिआला रहैगा, उस घरमें सदा लक्ष्मी वास करैगी, उस घरके पुरुषोंकोभी बडा सुख मिलता रहैगा।

उस औरतको धिक्कारहै जो सुमति छोड अपने घरमें किसीसे लडाई झगडा बैर विरोध ठानै, अपनी जिंदगीभी नष्ट करै और देशमे बदनाम होकर मर्दोंकी पगडी भी हेठ करै।

प्यारी लडकियो ! तुम मर्दोंकी इज्जतहो उनकी इज्जत बढावो तो वह तुमसे खुशरहैं और इज्जत तब बढैगी जब घरमें जे प्राणी हैं सब एकमन एक सलाह हैं किसीसे किसीके मनमें पाप नहीं है, आपुसमें मेल जोल करके रहती हैं जो मालिकिन है वह

सबसे छोटा जानती है, सबके सुखदेने पीछे अपना सुख चाहती है, जो छोटी है वह अपनेको बडीकी लौंडी मानके उनका अदब रखतीहै उनका कहना नहीं टालती अपने आछत मालिकको काम करने नहीं देती ऐसे घरोंके सुखकी क्या बात ऐसे घरोंमें सदा होली सदा दिवाली है ।

बेटी बहुतसी नालायक स्त्रियां अपनी सासको दुर्वचन कहि देती हैं इतना कह देवी सुबोध कुँआरि बडे जोरसे हँसी ।

(चन्द्रकला आदिक सब चकित होकर) अम्मा ! इस समय तो कोई हँसीकी बात नहीं थी, कारण आपके हँसनेका क्या है ?

(देवी० सु० कुँ०) बेटी एक नालायक और कमसमझ औरतकी बात मुझको याद आगई है ।

एक बार मैं अपने मांके साथ अपने ननिहाल गई थी, एक दिन मुन्शी सुखनिधानसिंहके घर गई वेभी मेरे मामू होतेथे पर सगे मामूसे अलग रहतेथे मैं बैठी अपनी नानीसे कुछ बात चीत कर रही थी वह बडी लायक और सरदार औरत थीं इतनेमें बड़े मामूकी पतोह घरमेंसे निकली और अपनी साससे कहा ।

वो "बुड्ढी जरा गिलासमें पानी तो ला देना" उनकी सास विचारी बडी गऊ आदमी थीं गिलासमें पानी भरकर देदिया मुझसे यह व्यवहार देख रहा न गया मैंने नानीसे पूछा नानी यह किसकी दुलहिन हैं ? यह कहांकी बेटी हैं ? कौने स्थानकी लडकी हैं ? क्या फारसी बहुत पढे हैं ? जो इस तरह अपनी साससे उर्दू झाड रही हैं, और फिर उनके पास जाकर कहने लगी क्यों साहब ! यह आपकी सास हैं कि डोलीके साथ कोई लौंडी आई है ? क्या ऐंसेही आप अपनी मातासे भी बोलती और टहल करातीं रहीहैं कि यहीं आपको सीधी सूधी सास पायके उर्दू झाडनेका मन चला है ? क्या हमी लोगोंकी तरह आपभी अपनी मांके पेटसे पैदा

गई हैं कि आदि ज्योतिही आकाशसे टपक पडी हैं ? क्या ऐसी लियाकत आपहीको है कि, और भी कोई संसारमें आपके समान है ? क्या फारसीविद्या इसी वास्ते पढी जाती है कि साससे सेवा करानेको बोला जाय ।

अच्छा आप फरमाइये तो किस बातमें आप बडी ओस्ताद हैं ? कौन विद्या, कौन गुण, कौन हुनर, आपको भले प्रकार आता है जिसका आपको इतना घमंड है अथवा कुछ आपको खत्त है, वा आप अपने होशमें नहीं हैं, यह क्या बात आपने सासको कहा है, क्या इसीसे बुझायेगा कि आप बडी शान्दार हैं ? क्या इसीसे जनायगा कि तुम खूब उर्दू बोलने जानती हो, मेरे जानमें तो रईस घरोंकी लडकियां ऐसा बोल अख्तियार नहीं करतीं ?

इतने मेरे कहनेमें बस उनका रूह तो कब्ज होगया, शिर नीचे किये बैठी कांपने लगीं कुछ बोल न सकीं, उर्दू फारसी बोलना सब भूल गयीं, लज्जामें गडगई ।

मैंने देखा कि, इनका मन दुःखी होता है तब मैंने फिर कहा " भौजाई तुम मुझसे छोटी न हो, मेरे कहनेका कुछ अमर्ष न करना, मैं तुम्हारे भलेके वास्ते कहती हूं, आप ऐसे रईसकी बेटी और आपका बोल चाल ऐसा रहे बडे शरमकी बात है, भला यह बात मर्दलोग सुनैंगे, तो तुमको क्या कहैंगे यही न कहैंगे कि बडी नालायक औरत है तो भला इसमें क्या बडाई होगी, इस लिये मैं आपकी नसीहत करती हूँ, यह उर्दका व्यवहार छोड दीजिये, अपना बोलचाल भले आदमीकी लडकियोंकी तरह रखिये, सासके पांयन पडिये, उनकी सेवा टहल कीजिये, जैदिन यह जीती हैं इनके सायेमें सुख कर लीजिये यह तुम्हारी देवता हैं, यह खुश रहैंगी तो जानो भगवान् खुश रहैंगे ।

जब मैं यहांतक कहिचुकी तो वह मेरी भौजाई मेरी बातोंके बोछारसे घबराके रोने लगी और मेरे पैरोंपर गिरके कहने लगी "दीदीजी अब माफ करो बहुत मति लजवाइ, अबकी अपराध क्षमा करो, फिर जो हमार ऐसन बोल व्यवहार देखब तो जौन चाहब तौन करब उसी जगह उनकी सास भी आगई वह उठके सासके पांवपर गिरपडीं और कहा, " अम्माजी ! हम आपकी कन्या हैं हमारा अपराध क्षमा करो, सासने उठायलिया और कहा, "मैं क्या कुछ तुमसे नाराजहौं, अरे मैं तो अपनेही चाहतीहूं कि जबलौं मेरा जांगर बूता चलै तबलौं तुम्हैं तृण न उठाने देऊं, मेरी भाग्य कहां जो मैं लडके पतोहको सेवा करों" उनकी सासकी ऐसी सीधी सूधी बात मुझको बहुत प्यारी लगी, मैंने कहा "मामीं आपतो सतयुगीमनई हैं, देवता हैं, आप ऐसा कैसे न कहैं पर मैं आपसे बूझतीहूं कि आप जो हम लोगोंसे सेवा न लेंगी तो किसकी सेवासे हम फलित होंगी" इस तरह मैं दोनों आदमियोंका तोषकारि, समुझाय बुझाय घर आई।

बेटी ! मैं उसदफे एक महीना अपने ननिहाल रही, और दूसरे तीसरे दिन बराबर मुझसे उससे भेंट होतीरही, और जब भेंट होती तब मैं उनसे सिखावनकी बातकहती जिस्से उनका बोलचाल शील स्वभाव सब ठीक होजाय, आखिर वह ऐसी सुशील और तमीजदार औरत हुई कि उनकी बडी प्रशंसा होने लगी।

बेटी यों तो लडाकी और खराब औरतैं बात बातपर लडा करती हैं पर मुख्य मुख्य बातैं जिनसे देवरानियों जेठानियों में बहुधा लडाई झगड़ा हुवा करता है मैं वर्णन करतीहूँ।

१ घरमें चार औरतें हैं, और उनमें एक मालिक बनीहै. उसको कुछ मालिकपनेका घमंड होगया, औरोंको छोटाईकी आँखसे

देखतीहै, जो काम करतीहै दूसरोंकी सलाह नहीं लेती, जो चाहतीहै अपनी तबिअतसे कर डालती है ।

कहींसे बैना विहारी आया, चट उठाय अपने घरमें रख दिया न किसीको दिखलाया, न दिया, इन सब बातोंसे दूसरोंको रंज हुवा, और थोडी थोडी बातोंपर वे लडने लगीं ।

यह नहीं विचारती कि जो मालिक होताहै, उसको बहुत विचार और नम्रतासे रहना चाहिये, जो काम करै सबकी सलाहसे करै, कहीं कोई चीज भेजना हो तो सबकी सलाहसे सबको देखलायके भेजै, बाहरसे जो चीज आवै उसको सबके सामने देख सुन पहिले दूसरोंके सुपुर्द करै, जो सब तुम्हींको रखनेको कहैं तो तुमहीं रक्खो, सबचीजमें सब छोटेबडेका यथायोग्य हिस्सा (भाग) लगावै, सबको बराबर जानै, मालिकपनेका तनिकभर घमंड न जनावै, सबसे हिल मिलके रहै, सबके आरामका बन्दोबस्त करके तब अपने आरामकी फिकिर करै ।

२–घरमें चार औरतेंहैं, एक उनमें हुई बदनकी गोरी, औरोंसे कुछ गहनाभी रहा अधिक, बस उनको इन बातोंका घमंड होगया और मारे घमंडके वह किसीसे सुतोरे नहीं बोलती, दूसरी स्त्रियां उसे देखके खार खाने लगीं और द्वेषवश बराबर झगडा तकरार होने लगी ।

यह नहीं जानतीं कि चमडेकी चमक चारदिनकी चांदनी और फिर अँधियारा पाखहै, यही शरीर बुढापेमें कैसा बद शक्ल होजाताहै, मुँह चिबुक गाल बैठ, दांत टूट, आंखें खोहराय जाती हैं, देखते नहीं बनताहै फिर ऐसे शरीरका क्या अभिमान करना ।

और गहनेका अभिमानभी वृथाहै चाँदीहो वा सोना सब मिट्टी से पैदा होतेहैं इसकारण सब मिट्टीहैं सब गहने बदनके भारहैं ।

स्त्रियोंकी शोभा वो मर्याद तो गुण ढंग शील स्वभाव बात व्यवहारसे होतीहै, जो यह सब अच्छा न हुवा तो सुन्दर और गोरा वदन किस कामका? जैसे माहुरका फल कि देखनेमें तो लाल लाल और खायतो मरजाय ।

३–इस कारणभी बहुधा आपसमें लड़ाई झगडा हुवा करताहै कि एकका पति कमाताहै और दूसरोंका नहीं तो जिसका पति कमाताहै वह घरभरको मानो मोल लिये रहतीहै, जो जिसको चाहती है कहि बैठतीहै, न बडेका अदब, न छोटेका विचार, कहीं उन्हें घुडुकतीहै, कहीं उन्हें दश बात कहती है, कोई कुछ बोली तो चट आपने कहि दिया–

"केहू केतनो सेखी मारै वाकी हमरै मरदा सबके मुँहमें लुआठ डारतबाय, सबकै तोपन हमरै मरदाके कमाईसे पडत बाय" दया दकी बात बुरी होतीहै देवरानहो वा जेठान कोई किसीसे छोटा काहेको, ऐसी बातोंसे अमर्ष होगया,यातो घरमें बैठके रोने लगी वा मुँहजोर हुई तो उन्हैंभी भरमुँह दिया, बस बिना नाचकी नाच घरमें होने लगी ।

नालायक यह नहीं समझतीं एक हमारा मर्द कमाय चाहै उनका सब कोई एकहैं, एक घरके हम सब प्राणीहैं, हमारा मर्द कमाताहै सबको खिलाताहै तो यह भगवान्‌की कृपाहै हम सबसे नैके रहैं, किसीसे घमंड न जनावैं, जो ऐसा बूझके रहै तो भगवान् औरभी उनकी बढती करै और घमंड तो भगवान् किसीका नहीं रखते जल्द तोड देतेहैं, इसवास्ते तुम किसीसे घमंड मति करो, पुरुषमद, पुत्रमद, रूपमद, धनमद कोई मद मत करो "मद मदिरा रूप त्यागने योग्यहै" ।

४–लडाई झगडेका एक यहभी कारणहै कि, किसीके चार लडके, किसीके एक, किसीके एको नहीं, अब एक दूसरेकी

अधिकता देख नहीं सकती, चार लडकेवालीको एक लडके-वाली, और जिसको एको नहींहै, वह उन दोनोंको देखकर जला करतीहै ।

चार लडकेवालीने जो एकके लडकेको कहीं मार दिया, तो वह कहि उठी "काहेको कोई हमरे लडकेको मारै का हमरेहु दुइ चारि हैं" उधरसे वह बोलीं "दुइ चारिहैं तो का किसीके उबटनेको हैं, तूहू नाहीं दुइ चार करलेती कोई मना कियेहै" बस चलिये लडाई ठनिगई ।

नालायक यह नहीं समझतीं कि किसका लड़का किसका बाला, जितना जिसके भाग्यमें होताहै उतना होताहै दूसरेका देखके हम काहेको बुरा मानैं ।

५–इसकारणसेभी लडाई भिडाई होजातीहै कि एकदुई नैहरकी गरीब और नैहर नेरे हुवा, कुछ चोरा छिपाके नैहर भेजने लगी मालूम होनेपर दूसरोंको बुरामालूम हुवा, कुछ कहि दिया, बस सहा तो गया नहीं लडने लग गई ।

प्यारी लडकियो ! चाहै कोई बात कैसेहू हो तुम सहिलो, पर झगडा लडाईके नेरे कभी न जावो, तुम छोटीहो तो बडोंकी दश बात सहिलो, जो बडी हो तो छोटीकी ऐसी खातिर रक्खो कि न किसीका दिल दुखै, न कोई तुम्हैं कुछ कहिसकै ।

बिरादरीकी स्त्रियोंसे इस तरह मिलो बोलो बतिआवो कि जाते समय तुमको सराहती जाँय, ऐसा न करो कि वह तो आवैं मिलने और तुम मारे ठेसराके उनके पास न बैठो, वा बैठोभी तो घमण्डकी बातैं करो, वा उसको अपना गहना कपडा देखलाने लगो, नहीं

बेटी चाहे कैसेहू गरीब भाईके घरकी स्त्री हो, जो तुमसे मिलने आवै उस्से बडे हर्षसे मिलो, नम्रतासे बोलो बतिआवो, उसको पान इलायची दे हँस बोलके बिदा करो ।

बोध ३९.

(घर गृहस्थीके संयमके विषयमें)

प्यारी लडकियो ! घर गृहस्थीका काम बहुत संयमसे करना चाहिये, घरका अन्न वा रुपया पैसा फजूल खर्च न हो सब चीजोंको संचय कर रक्खो, समयपर किफायतसे खर्च करो और किफायतसे यह मतलब नहीं कि, इज्जत गँवायदे और खर्च न करे, नहीं किफायत इसको कहतेहैं कि प्रयोजनसे अधिक खर्च न हो. सेरभर जिन्सका जो तुम्हारे भीतर-चौकेमें खर्च हो तो डेढ़सेर न पकावो न तीन पाव, जिसकी मजदूरी ॥) हो उसको न ।) देव न ≡) आना ।

खुशामदी और खवैयेआदमीको मुँह न लगावो, जिस औरतका चालचलन खराब हो उसको घरमें न आने देव, जो अनचीन्ह औरत कोई आजाय उसको घरका पता न देव, न कोई भेद उस्से जनावो, ऐसी औरतोंके बदौलत बहुत जगह धोखा होजाताहै ।

(दे० चं० कुँ०) अम्मा धोखा क्या होजाताहै ?

(दे०सु०कुँ०)बेटी ! धोखा यह होजाताहै कि वे घरका भेद पाकर चोरोंसे मिलतीहैं और चोरी करा देती हैं, इस वास्ते वाचली औरतोंसे कभी घरका भेद नहीं बताना चाहिये ।

नेक और गरीब औरतोंकी सोहबत करो, उनका जूनपर कुछ देव लेव तो हर्ज नहीं ।

नौकर, चाकर, लौंडी, नफर, सबके कामका सबकी ईमानदारी बेईमानीका ख्याल रक्खो, जो दिल लगाके खैरख्वाहीसे काम करै उसकी कदर करो, जो बेईमानहो, काम करनेमें जी चुरावै उसको निकाल देओ।

सब कामके करनेका समय चेत रक्खो ऐसा नहीं कि, घडी रात गई और दीपक न जला।

मर्दोंके भोजनका समय ९ बजे है तो तुम ९ बजे चूल्हेमें आग जलाने चलो, नहीं सबका काम समयपर हो।

आये गयेका यथायोग्य आवभगत करो, जो जिस लायक हो उसी मुताबिक उसका मान मर्याद रक्खो, बातचीत भी इस प्रकार करो कि सुननेवालेका चित्त प्रसन्न होजाय।

गृहस्थीमें यह बातभी जरूरीहै कि घरमें हरतरहकी चीज थोड़ी थोडी मौजूद रहै जिसमें समयपर तरद्दुद न हो।

मैं एक आदमीके घर गई थी, संध्यासमय था, मर्दोंने दो चिराग मांग भेजा, रहा तो हई नहीं औरतने भीतरसे कहला दिया नहीं है.

एकके घर पाहुन आया, उसके पानी पीनेको घरमें खोजागया तो न गुड, न चीनी, न मिठाई, न मेवा, कुछ नहीं मिला, पाहुन अगोरतै रहगया।

एक जगहका यह हाल देखा कि, दो तीन आदमी बाहरसे आगये उनके रसोइयां बनानेको हंडियाँ पतुकी खोजी गई न मिली, कुम्हार भी उस गाँवमें नहीं रहता था, आखिर बडे मुश्किलसे उनके खानेका बँदोबस्त हुआ।

मैंने दो तीन जगहका यह हाल देखकर मनमें शिक्षा लिया कि, जहां शहर वा भारी कसबा वा बाजारहै भला वहां तो जूनपर प्रयोजनकी चीज मिल भी सकतीहै, पर जहां निरा देहात है वहां

गृहस्थको गुड, चीनी, मिठाई आदिक खानेपीनेकी चीजैं हँडिया पतुकी आदिक बरतनके किस्मसे और भी मसरफकी चीजैं थोडी बहुत मौजूद रखना चाहिये ।

बेटी यह बातैं तो छोटी हैं पर मूलपर यह बडे काम करतीहैं इस हेतु इनको छोटा नहीं समझना चाहिये ।

१ अच्छा और भी सुनो, नैहर हो वा सासुर दोनों जगहके लिये यह बात उचित है कि रातको जब भोजन करचुको तो अपने मां वा सास आदिकोंके जो अपनेसे बडी हैं उनका बिछावन दुरुस्त करके बिछादो ।

२ उन्हैं पान सुर्ती देदो ।

३ जिसकी जिसकी चारपाइयोंके पास पानी रखनेका मामूल हो लोटा गिलास साफ करके पानी छानके रखदो, परन्तु यह बात चेत करलेव कि रातको पानी न खुला रखना चाहिये, न जमीनमें, दो तीन जगहका हाल मैं वर्णन करती हूं जिस्से मेरा वचन मानने योग्य सिद्ध होगा ।

एक जगहका यह हाल हुआ कि, पानी जमीनमें खुला हुआ रक्खा था, आधीरातको एक स्त्रीने उसे पीलिया, थोडी देर पीछे उसे गर्मी मालूम होनेलगी, लोगोंको जगाया और हाल कहा, कहतेही कहते वह अचेत होगई, लोग व्याकुल हो इधर उधर दौडे पर किसीकी अक्ल कुछ काम नहीं करती थी एक बुद्धिमान्ने यह हाल सुन कहा कि सर्पके विष झाडनेवालोंको बुलावो जब दोचार सँपझरवे आये और मंत्रसे झाडने लगे तो लहर आने लगीं ७८ लहर आये फिर पानीमें एक मंत्रपढकर एक पुरुषने पिलाया तो उसने पीतेही वमन किया, चिराग मँगाके जो देखागया तो हरा-हरा सर्पका विष ऊपर चमकताथा, फिर स्त्रीको होश आगया ।

लोगोंने यही सूचित किया कि, पानी खुला हुवा रक्खाथा सर्प आके फुफकार द्वारा जहर उगिल गयाथा ।

फिर एक जगहका यह हाल देखा कि, एक स्त्रीने रातको पानी पीलिया, वह पानीभी उसीतरह जमीनमें खुला रक्खाथा, थोडी देर बाद वह स्त्री चिल्लाने लगी, लोग जागे, दौडे, पूछा क्या हाल है उसने कहा थोडीदेर हुये मैंने पानी पीलियाहै अब यह मालूम होताहै कि छोटे २ कीडे कलेजेको काटरहेहैं, एक डाक्टर उस गाँवमें रहतेथे वह आये और वमन होनेकी दवा पिलाई, उसको वमन होने लगा, और वमन होने बाद वह चंगी होगई डाक्टरने चिराग मँगाके देखा तो पानीके साथ च्यूंटियां कुछ मरी कुछ जीती देखाई दीं ।

वहांभी लोगोंने यही सूचित किया कि पानी खुलाथा च्यूंटियां उसमें आगईथीं पानीके साथ पेटमें जाकर कलेजा काटने लगीं ।

इन दो समाचारोंसे मैंने यह शिक्षा लिया कि पानी जमीनमें और खुला हुवा कभी नहीं रखना चाहिये न बिना छाने पानी पीना चाहिये ?

(दे० चं० कुँ०)अम्मा! क्या दिनकोभी बिना छाने पानी पीना न चाहिये ।

(दे० सु० कुँ०) नहीं बेटी ! दिनहो वा रात कभी नहीं, कारण इसमें यहहै कि पानीमें बहुत छोटे २ कीडे होतेहैं जो हमारी दृष्टिमें नहीं आसकते, वह पानीके साथ पेटमें पहुँचकर मल उत्पन्न करतेहैं और मलसे रक्त बिगडताहै, और उस्से बलवी-र्यकी हानि होतीहै, इसलिये बहुत बारीक और मिलेहुये सूतके कपडेसे पानी छानके पीना चाहिये, और मसलभी तो कहा है "पानी पीवै छानके गुरू करै जानके" ।

(दे० चं० कुँ०) अम्मा ! जिससे यह न पार लगै ।

(दे० सु० कुँ०) बेटी ! वह भाडमें जाय, भला न पार लगनेकी इसमें कौन बातहै क्या कुछ दाम लगताहै कि लश्कर जुटानी पडतीहै ।

अरे बेटी ! मैं उन नालायक औरतोंकी नहीं चलाती जो बडे २ हितके और सुखहीमें होनेवाले कामको भी मारे आसकतके नहीं करसकतीं । बेटी जरासा ख्याल करनेकी तो बातहै दो चार दिन जब छानके पियोगी तो आदत हो जायगी और जब आदत होगई तब इसमें कुछ कठिनता प्रतीत न होगी ।

बेटी ! यह क्या बातहै "कि न सपडै" जो अच्छी बातहो उसको अवश्य करना चाहिये, भूलना, वा असकत करना न चाहिये ।

दोहा–हितकारज करु चेतसों, तजि असकत औ भूल ॥
चेत हेतको करतहै, भूल देतहै शूल ॥

(दे० चं० कुँ०) अम्मा ! यह सब बातैं "कि सबका बिछावन बिछाना सबको पानी रखना" यह तो गरीबही स्त्रियोंकी खातिर न है कि जिनके घर लौंडी नफतर नहींहैं बाकी अमीरोंकी स्त्रियां काहेको यह सब बातकरैं उनके यहां तो लौंडियां बराबर काम करतीहैं ।

(दे० सु० कुँ०) बेटी ! तेरा कहना ठीकहै जिसके घर लौंडी नफर बहुतहैं उनके घर मुबारक रहैं, उन घरोंकी स्त्रियां उन्हींसे अपना काम करावैं, पर बेटी जो मुझसे पूछतीहै तो मैं तो यही कहूँगी कि भगवान्‌ने आंख दियाहै देखनेको, कान दियाहै सुननेको, नाक दियाहै गन्ध लेनेको, चमडा दियाहै स्पर्शको, जीभ दियाहै रस लेनेको, इसी तरह मुँह दियाहै बोलनेको, हाथ दिया है उद्यम करनेको, पांव दियाहै चलने फिरनेको, इसीतरह

और अंगभी एक एक कामके वास्तेहैं । सो बेटी ! राजा रंक सबके यह सब बराबरहैं, मैं कहतीहूँ कि भला भगवान्‌ने दूसरेकी सेवकाईसे जो बचाय दियाहै तो हम अपने कामको, अपनी बडियोंके कामको, जिसके करनेमें हमें इसलोकमें यश और परलोकमें भलाई मिलनेवालीहै, क्यों न अपने हाथसे करलें, बेटी! इसमें कुछ छोटाई नहीं है, बडी, बूढियोंकी सेवा टहल करदेना बहुत अच्छी बातहै, फारसीमें लिखाहै.

"खिदमतसे अजमत"

हिन्दी मसलहै "सेवकाईसे भलाई"
गँवरऊ मसलहै "करसेवा खा मेवा"
बेटी ! कवियोंनेभी बडोंकी सेवकाईकी बडी उपमा कियाहै.

कवित्त ।

सेवाते प्रसन्न योगी भोगी यती सती सबै सेवाते प्रसन्न सिद्ध साधक सुजानहैं। सेवाते प्रसन्न सुखी होत नर नारि सबै, सेवाते प्रसन्न देवी और देवतानहैं॥ कहत सुबोध बात औरकी चलावै कौन, सेवाते प्रसन्न है जात भगवानहैं॥ सेवा करु सेवा जाते मिलै सुख सेवा सखी, सेवा सुभाव सतपुरुष पहिचानहैं॥ १ ॥

सेवाको मेवा किते बुधजन बखानैं अलि, सुखको कलेवा किते साधुजन जानेहैं। मानेहैं सुखको सुधाकर सयाने किते, सुखको सुधा सर किते माने बुधिमानहैं॥ साधन भलाईको सकल बडाई हेतु, फल चतुराई सेवकाईहीको मानेहैं। गुरु अरु पितु मातु साधु सेवा न कीने जिन, ते जन सुबोध नहीं निपट नदानेहैं॥ २ ॥

बेटी मेरे घरमी तीन चार लौंडियांथीं पर लडकपनसे दादीका, चाचीका पैर रोज मेरी मां मुझसे दबातीथीं, सबके चारपाइयोंके

पास पानी मुझसे रखवातीथीं, इसकारण मैं जानतीहूँ कि, लड-कियोंको यह व्यवहार सुखदाईहै ।

घरके सब बरतन वा कपडा आदिक जो बाहर पडेहों उनको भी भोजनके पीछे और सोनेके पहिले रक्षित स्थानमें रख देना चाहिये ।

फिर दीपक लेकर डेवढी, दालान, खिडकी, और ऐसे घर जिसमें रातको कोई न सोता हो उन सबको देख, सबकी केवाडियां बन्दकरि तालादे तब सोना चाहिये ।

बहुधा ऐसा होताहै कि चोर सांझहीको घरमें आय सूने घरके कोने अँतरे कहीं दबकि जातेहैं, लोग अँधियालेमें गये, केंवाड भीतरसे बन्द करि सो रहे । चोरने अपना काम कर केंवाडा खोल चलदिया, इसीवास्ते चतुरस्त्रियां सोते वक्त दीपक ले, सबघरोंको देख, केंवाडबन्दकरि तब सोती हैं ।

लौंडी नफरके भरोसे यह सब काम नहीं छोडना चाहिये क्योंकि घर तुम्हारा, चीज तुम्हारी, रहैगा तो तुम्हारा, जायगा तो तुम्हारा, इसवास्ते यह सब काम खुद करना चाहिये ।

बोध ३६.

(गर्भवतीस्त्रियोंके विषयमें)

८ बजके १० मिन्ट बीताहै (दे० सु० कुँ०) लडकियोंको पढा रहीहै इतनेमें मनकिया आई और कहा ।

(मनकिया) सरकार मिश्रानजी मय अपने पतोहूके आती हैं।

(दे० सु० कुँ०) अच्छा आनेदे, एक चटाई और यहां बिछाकर उसपर कम्मल डालदे ।

मनकियाने ऐसेही किया और मिश्राइनजीभी आगई देवी सु० कुँ० सब लडकियों समेत मिश्राइन और उनकी पतोहूके .ँव लागीं उन लोगोंने यथायोग्य आशीर्वाद दिया ।

(दे० सु० कुँ०) कहिये मिश्राइनजी सब कुशल है ?

(मिश्राइन) हां भगवान्की कृपासे सब आनन्द है ।

(दे० सु० कुँ०) बहुत दिनोंपर आपने सुधिली, और दर्शन दिया ।

(मिश्राइन) हां सत्य है, क्या कहूँ देवीजी घरके काम धंधेसे छुट्टी नहीं मिलती ।

(दे० सु० कुँ०) यह तो बहुवा चन्द्रशेखर मिश्रकी दुलहिन न हैं?

(मिश्राइन) हां देवीजी हैं न ।

(दे० सु० कुँ०) इनका तो पाँव भारी मालूम होता है क्याहाल है ?

(मिश्राइन) हां सत्य है आठवां महीना है ।

(दे० सु० कुँ) तो इनसे कोई अधिक कष्टका कामतो आप नहीं लेतीं ?

(मिश्राइन) कष्टका तो कोई काम नहीं लेती, इतना यह करती हैं कि चैतसे दोनों जून रसोई पानी यही बनाती हैं अब जेठका महीना है, गर्मी अधिक पडती है इसीसे जो कुछ कष्ट इनको होता हो ।

(दे० सु० कुँ०) मनमें मुसकुराकर । यह कोई कष्टही नहीं है । प्रगट-मिश्राइनजी आपभी सतयुगी मनई हैं भला इनका आठवां महीना, यह जेठकी गर्मी और तिसपर अग्निके निकट दोनों जून रसोई बनाना और आप कहती हैं कि कष्टकातो कोई काम नहीं करतीं, नारायण नारायण भला बाबू विश्वंभरदत्त और शीतलप्रसादकी दुलहिन क्यों नहीं बना लेतीं ।

(मिश्राइन) क्या कहूं देवीजी इन सबोंको तो रसोइयां बनानी आतीही नहीं ।

(दे० सु० कुँ०) और आपकी लडकियां क्या करती हैं ।

(मिश्राइन) वे सब तो मेरे कहनेहीमें नहीं रहतीं जहां जी चाहता है तहां घूमा करती हैं एक यही है कि मेरा कहा मानतीहैं।

(दे० सु० कुँ०) मनमें-कहना माननेका अच्छा फल पाती हैं प्रगट-यह कुछ पढेभी हैं।

(मिश्राइन) हां यह भाषाविद्या पढे हैं, इनके भाई मदरसेके पढे हुये हैं उन्हींने इनको पढाया है ।

(दे०सु० कुँ०) तबहीं यह ऐसी हैं जो आपका कहा मानती हैं अच्छा इनके खाने पीनेका क्या बँदोबस्त है ? और जिस घरमें यह रहती हैं उस घरमें सफाई तो भली प्रकार है ?

(मिश्राइन) देवीजी खाने पीनेका कौन खोज करता है, जो जुरता मिलता है वह खालेती हैं, हां दो एक महीनेसे सोंधा ठिकडा, कभी कची इम्ली, कभी हरा मिरचा आदिक खालेती हैं।

और घर हम लोगोंका कौन, सालभर होगया न लीपा गया न पोता न कभी झाडू बहाडू हुवा, अकट वकट इतना उस घरमें है कि पाँव धरनेकी जगह नहीं, केवल एक चटाई बिछानेकी जगह है, उसीपर बेचारी सोरहती हैं, मसे मच्छड रातको इतना दिक करते हैं कि इन्हें नींद नहीं लगती, बेचारी रातभर हाथ पाँव पटका करती हैं, तिसपर चूहे आदिक और रातभर खडबड लगाये रहतेहैं।

(दे० चं० कुँ०) राम राम मिश्राइनजी आपने तो इनके प्राण-लेनेमें कोई बात उठाय नहीं रक्खा है, पर न जानै किसके भाग्य से यह जीती हैं ।

(मिश्राइन) तो क्या करें ? देवीजी ! हमतो गँवारिन हैं कुछ जानतीही नहीं आप जैसा कहिये वैसा करें ।

(दे०सु०कुँ०)सन् १८६९ईसवीमें डाक्टर इल्साहेबने कलकत्तेमें गर्भवती स्त्रियोंके लिये एक व्याख्यान दियाथा; उसको मैं आपसे

वर्णन करतीहूँ, आप सुनैं और जहांतक होसकै उसके अनुसार इनका बँदोबस्त करैं।

१ स्त्रियोंका गर्भाधानसमय बडा कठिन समय है, अर्थात् जो कुशलक्षेमसे बीत गया, तो प्राणाधार जो पुत्र है तिसकी प्राप्ती की आशा, और जो कहीं गडबडाया तो प्राण निवृत्तीकी त्रास रहती है. इस हेतुसे गर्भधारी स्त्रियोंको परमेश्वरका बहुत २ स्मरण करते रहना चाहिये, जो सर्वविघ्नोंका नाशक, और सर्वकल्याणों का करता है।

२ गर्भधारी स्त्रीका जैसा स्वभाव होगा वैसाही स्वभाव गर्भवासी जीवकाभी होगा, इस हेतुसे गर्भधारी स्त्रियोंको अपना स्वभाव बहुत कोमल रखना चाहिये, अत्यन्त क्रोध वा अधिक बोलना, वा किसी बातपर अधिक शोक करना न चाहिये, कि इस्से गर्भ-वासी जीवको बडा कष्ट होता है।

३ योंतो सर्वदा वर्जित है, पर गर्भधारी स्त्रियोंको अवश्य करके अपने गर्भधारणका जराभी गर्व न करना चाहिये, न किसीका मन अपने बोल चाल वा किसी व्यवहारसे दुःखी करना चाहिये क्योंकि जो परायेका दिल दुखता है, तो उसका दिलभी अवश्य दुखता है, इसलिये उनको चाहिये कि सबसे विनती सहित वचन बोलैं, सब छोटे बडेका यथायोग्य आदर सन्मान करैं, जिसमें सबकोई प्रसन्न रहैं और जो परायेका चित्त प्रसन्न करैगा, उसका फल यही है कि उसकाभी दिल खुश होगा।

४ गर्भवासी जीवकी रक्षा, और अपने संकट निवृत्ती अर्थ जहां-तक अपनी सामर्थ्यहो, भगवान्के नामपर भूंखे दूखेको भोजन, और नंगेतंगेको वस्त्रभी देते रहना चाहिये, जिस्से वे संतुष्ट

होकर आशीर्वाद दें और पंचका आशीर्वाद परमेश्वरकी प्रसन्नताका हेतु है ।

गर्भधारी स्त्रियोंके विषयमें एक बडे डाक्टरकी यह राय है।

१ गर्भधारी स्त्रियां जिस स्वरूपका बालक अपने ध्यानमें रक्खें उसी प्रकारका बालक उनको उत्पन्न होगा, इस हेतुसे गर्भधारी स्त्रियोंको अतिसुंदर स्वरूपवाले बालकका बारम्बार स्मरण और ध्यान रखना चाहिये ।

जो अपने निकट किसीका सुन्दर स्वरूपवाला बालक हो तो उसीके स्वरूपानुसार अपने गर्भवासी बालकका स्मरण करना चाहिये ।

जो ऐसा कोई बालक प्रत्यक्ष न हो तो एक सुंदर स्वरूप मनमें कल्पि लेना चाहिये

"गुलाबसा उसका बदन बडे २ और कजरारे नेत्र, गोरे २ और गोल २ दोनों गाल, अतिकारे और घूँघुरवाले बाल, भौंहैं कमानकी तरह, ललाट ऊंचा चमकता हुवा, होंठ पतले २ और लाललाल, नासा सुगाठोरकी तरह, गला अतिरमणीक और चिकना शंखकी नाईं, दोनों बांह लम्बे २ और सुडौल, सीना ऊंचा वीरोंकी तरह, पेटमें त्रिवली रेखा, स्याह बालोंसे शोभित, नाभी अतिसुन्दर, कमर पतली, जंघा मोटी और चिकनी उंगलियां छोटी छोटी आगे पतली और पीछे मोटी, नख लाललाल मानो लालहीके टुकडे हैं" ।

इस प्रकारसे अपने गर्भवासी बालकके स्वरूपका ध्यान रक्खें, और ध्यानके साथ भगवान्से विनय किया करे तो इसमें कुछ सन्देह नहीं कि उसी प्रकारका बालक उत्पन्न हो ।

जो इसप्रकार सर्वांगका ध्यान न होसके तो उनके सुन्दर मुख [illegible] ध्यान करें ।

जो यहभी न होसके तौ गुलाब वा और कोई सुंदर फूल अपने पास रक्खै और उसीके रंगके अनुसार गर्भवासी बालकके रूपका स्मरण किया करै ।

२ जिस घरमें गर्भवती स्त्री रहै, वह घर साफ रहना चाहिये, बिल आदिक मूंद डालना चाहिये. झाला मकडा साफ करदेना चाहिये ।

३ गर्भवती स्त्रीका बिछावन जमीनपर न होना चाहिये किंतु चारपाईपर होना चाहिये, और अधिक नहीं तो चारपाईभर तो अवश्य ऊपर कपडेका छत रखना चाहिये, बे छतके कहीं बिस्तुइया आदिक कीडे कहीं मट्टीही गिरनेका भय रहताहै ।

उस घरमें दीपक रातभर जलना चाहिये अग्निभी उस घरमें रहना चाहिये, तलवार आदिक लोहस्वरभी रहना चाहिये ।

४ गर्भवती स्त्रियां भयंकर स्वप्न आदिकभी देखतीहैं इसलिये उनको अकेले घरमें न सोना चाहिये, कोई एक दूसराभी रहना चाहिये जिससें भय और घबराहट न हो ।

५ गर्भधारी स्त्रियोंको अगड बगड कभी खाना न चाहिये यह जाहिल और बेहूदी औरतोंका कामहै कि, ऐसे समयमें सोंधा ठिकड़ा आदिक खाया करतीहैं, इससे बडा नुकसान होताहै, खून बिगड जाताहै, और खून बिगडनेसे दूध बिगड़ जाताहै. और उस बिगड़े हुये दूधके पीनेसे बालक रोगी होजाताहै ।

इसलिये कोमल और मधुर चीज खाना चाहिये, घी, दूध, खोवा, मलाई, मिश्री, भली प्रकार मर्दन किये हुये पिसानकी रोटी पुराना और बारीक चावल, चने और धोई आदिकके दाल, इत्यादि. और इसप्रकारका भोजन तबतक चाहिये जबतक बालक माताका दूध न छोडे ।

६ गर्भधारी स्त्रियोंको बहुत जलदी २ चलना वा खाले ऊंचे पैर डालना, वा कष्टका काम करना न चाहिये ।

७ जब बालक उत्पन्न होजाय तो यहभी न चाहिये, कि पुत्र हो तो हँसै और कन्याहो तो रोवै, इस्से भगवान् नाखुश होतेहैं जो परमेश्वर देदें उसीको शीश चढावे ।

८ बालक उत्पन्न होनेपर जो अधिक नहीं तो दश दिनतक तो अवश्यही मीठी वा चिकनी चीज न खिलावै किंतु दशमूल आदिका काढा देना चाहिये जो प्रसूति ज्वरका नाश करै तत्पश्चात् उसको भले सोठौरा खिलावो, हर मौसमके मुताबिक मसालेमें कमी बेशी रक्खो, किसी वैद्यके राय मुताबिक यह सबचीजें मँगवावो ।

हिंदुओंके यहां तो अकसर देखाहै कि मर्द इनबातोंका ख्यालही नहीं करते, औरतैं जो चाहतीहैं सो मँगाती और खिलाती हैं, उन्हें क्या विचार क्या कम चाहिये क्या सिवाय, कैसा मौसम है कैसा मिजाजहै ? बस भले गुड़ और घी खिलाय दिया जिस्से प्रसूतिका ज्वर होकर उसके प्राणका घातक होगया ।

बहुत मैली कुचैली स्त्रीका, वा नान्हजाति, वा बुरे स्वभाव वाली स्त्रीका दूध बालकको पिलाना न चाहिये ।

इति स्त्रीसुबोध—द्वितीयभाग समाप्त ।

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

अथ स्त्रीसुबोध ।

भाग ३.
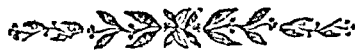
बोध ३७.

(बालकोंका विवाह छोटी उमरमें नहीं करना चाहिये)

तीन पहर दिन बीत चुकाहै, देवी सुबोधकुँवरि बैठी लडकियों को कसीदा सिखला रहीहै, इतनेमें मनकिआ द्वारसे आई और कहा "सरकार बबुआके वर देखहरू आयेहैं" इतनेमें दीवानजीभी घरमें आये, देवी सुबोध कुँ० भी उनके साथ घरमें चलीगईं।

(दीवानजी) बचऊके वर देखहरू आयेहैं मुन्शी सुंदरलाल जो महाराज दरभंगाकी रियासतमें नायबहैं, उन्हींकी कन्याहै इसवक्त दोसौ गाँव मुसल्लमें उनकेहैं, बडा राजसी कारखाना है, तहसीलदार साहेब डिप्टी साहब सदरुस्सदूर साहब सबकी सिफारशी चिट्ठी लायेहैं, सबने लिखाहै कि यह विवाह बडा उत्तम है अवश्य कबूल करलीजिये और इसी सालमें कीजिये सो, तुम्हारी क्या रायहै ? बाहरतो भाई बिरादरी पुरोहित आदिक सब कहि रहेहैं कि "हां महाराज मान लीजिये करडालिये" बाकी मैं बिना तुम्हारी राय मिलाये कोई काम नहीं करता तुम्हारी राय अच्छी होतीहै।

(दे० सु० कुँ०) महाराज ! आप जो मुझसे राय पूछतेहैं तो यह मुझको बडाई देतेहैं, नहीं तो मैं क्या और मेरी राय क्या ? सूरजके आगे दीपकका कौन प्रकाश ।

महाराज। आपको तो सब कुछ सामर्थ्यहै जो इच्छा करें वही हो कोई दममारनेवाला नहीं है, परंतु इस जगहकी कायस्थसभाके आप सभापतिहैं, हर सभामें आप जाते हैं, और वहांसे आकर

इस लौंडीसे सब समाचार वर्णन करतेहैं आपहीके मुखारविंदसे मैंने सुनाहै कि जहां और सब तजवीज सभामें पास हुईहैं तहां यहभी एक तजबीज पास हुईहै कि १८ वर्षसे कम उमरके लड-केका और १६ वर्षसे कम उमरकी लडकीका विवाह न किया जाय।

बचऊकी उमर आपको मालूमहै कि अभी सावनसे तेरहवां लगाहै, फिर मैं कैसे कहिसकतीहूँ कि जो बात दश भाई; दशपंच मिलके मंजूर करैं, उसके विरुद्ध मैं काम करों, हां जो मैं कर-लेऊं तो सभामें फौज नहीं, तोप नहीं, परंतु बिरादरीका हुकुम फौज और तोपसे बढकर मैं समझती हूँ।

फिर सभाको अलग रखिये, अपने मनमें विचार कीजिये, कि व्याह होनेसे लडकेके पढ़ने लिखनेमें कुचिताई न होगी? आखिर व्याहहीमें रुखसतीभी होगी तो क्या आपका लडका अभी इस लायकहै कि उसके वास्ते दुलहिन आवै? क्या उसके शरीरको उसकी आरोग्यताको नुकसान न पहुँचैगा? क्या उसका हृदय, उसका दिमाग कमजोर न हो जायगा? दुलहिनका मुँह देख-कर क्या फिर वह इलाहाबाद कालिजमें बी. ए. और एम. ए. पास करने लायक रहैगा? महाराज आपको अख्तियारहै जैसा मुनासिब जानैं वैसा करैं बाकी मैं तो किसी तरह राय नहीं देसकती।

(दीवानजी) मनमें उसकी बुद्धिकी सराहना करके। प्रगट-यह सब बात तो तुम ठीक कहतीहो। बाकी ऐसा धनी और ऐसा घर फिर न मिलैगा यह समझो कि वह इसवक्त वे तिलक राजाहैं।

(दे०सु०कुं०) महाराज! सब जानतेहैं हमसे नाहक कहलाते हैं वह धनी नहीं बादशाह सही बाकी भाग्यसे अधिक तो कोई किसीको दे नहीं सकता और हमारे जानमें तो संतानकी कुशलता और आरोग्यता यहीबादशाहतहै, जोराज्य मिलगया औरसंतानकी

किसी प्रकार नुकसान पहुँचा तो मैं ऐसे राज्यको धिक्कार करतीहूं भगवान्‌को मैं क्या जवाब दूंगी जो धनके हेतु अपने प्यारे औलादको दुःख दूंगी सो महाराज ! उनका राज्य उनको मुबारक रहै, हमारा लड़का जब पढ लिखलेगा १८ वर्षकी अवस्थाको पहुँचेगा तो धनी न सही ताल्लुकेदार न सही, एक गरीब भाईकी लड़कीसे जिसके गुण ढंगका हमको इतमीनान होगा व्याह करलेंगे भगवान्‌की दयासे हमको किसीसे कुछ मुहताजी है नहीं, केवल गुण ढंगवाली लड़की हमैं चाहतीहैं ।

(दीवानजी) तो आखिर वरदेखहरुवोंसे क्या कहा जाय ?

(दे०सु०कुं) महाराज ! यह मैं नहीं जानती कि क्या कहाजाय आपने मुझसे राय पूछा सो जो मेरी बुद्धिमें आया आपसे विनय किया आगे आपको अख्तियारहै ।

दीवानजी ऐसी बुद्धि देवी सुबोध कुँवरिकी देख मनमें अति प्रसन्नहो बाहर चले गये और लोगोंको जवाब दे दिया सुबोधकुँ० बाहर आकर लडकियोंमें बैठगई ।

(दे० चं०कुँ०) अम्मा ! भइआका विवाह ठीक होगया ।

(दे०सु०कुं) नहीं बेटी ।

(दे०चं०कुं०) अम्मा काहे नहीं ?

(दे०सु०कुं०) अभी तेरा भइया पढता लिखताहै उसके पढने लिखनेमें हर्ज न होगा ?

(दे०चं०कुँ०) अम्मा ! हर्ज क्या होगा ? क्या विवाह मना कर देगा कि तुम मत पढो लिखो, देखिये किशोरीलालके लड़केका विवाह तो अभी पारहीसाल न हुआहै बारहवें वर्षमें तो हुआहै ।

(दे० सु० कुँ०) बेटी ! हो हम दुनियांभरकी बात थोडे चलातीहैं हां हमको जहां जिस बातमें अख्तियार होगा वहां हम अपने राय मुताबिक काम करैंगी ।

(दे० चं० कुँ०) तो अम्मा ! साफ कहिये न कौन हर्जहै ।

(दे० सु० कुँ०) बेटी तू पढ, तुझको इन सब बातोंसे क्या मतलबहै ? और जो तू यह सब बातैं जानना चाहतीहै तो जा देवनागरीका अखबार मेजपर रक्खाहै उसको उठायला तीसरे पन्नेमें देख क्या लिखाहै ।

(दे० चं० कुँ०) उठाय लयाई और पढने लगी ।

पन्ना ३.

"जो मां बाप अपने बालकोंका विवाह अलप आयु (थोडी उमरमें) कर देतेहैं वे अपने बालकोंके पूरे वैरी और परम शत्रु हैं ।

वे लडकेका विवाह नहीं करते किंतु लडकेको सदाका रोगी और निकम्मा बनातेहैं. ऐसे लडके न कभी सुखचैनसे रहतेहैं, न कुछ पढ लिख सकतेहैं. शास्त्रमें लिखाहै कि "जब वर कन्या दोनों सयाने होजाँय, पढ लिखके छुट्टी पा जाँय तब उनका विवाह करना चाहिये ।"

जिन लडकोंका विवाह अलपआयुमें होताहै उनके संतान उत्पन्न नहीं होते, होते भी हैं तो जीते नहीं, जो जीयेभी तो किसी कामलायक नहीं होते सतवांसे लडकोंकी तरह सदा रोगी रहतेहैं. मन मुरझाया, चेहरा जर्द रहताहै, निदान छोटी उमरमें लडकोंका विवाह करना क्याहै कि उनके शिरपर मुसीबत की मोटरी रखना, गलेमें झंझटकी फांसी डालना, कमरमें रोगकी रस्सी बांधना, और पाँवमें दुःखकी बेडी डालनाहै" ।

(दे० चं० कुँ०) हां अम्मा! सच लिखाहै, बेशक छोटी उमरमें लडकोंका विवाह नहीं करना चाहिये, और हां आप सभाका कैसा जिक्रिर करती रही. सभा कैसी और उसमें क्या होताहै।

(दे० सु० कुँ०) जहां किसी नियत दिनपर दश पाँच बिरादरीके शिक्षित पुरुष जमा होकर जाति उन्नति देश उन्नतिके विषयमें चर्चा करें उसको सभा कहतेहैं, सो हमारी बिरादरीमें बहुत दिनोंसे सभाका जिक्रिर चला आताहै, पर अब अच्छी तरहसे जारी होगयाहै. हर शहर, हर कसबा, हर गांवमें जहां २ दश बीस घर बिरादरीके हैं तहां २ सभा कायम होगई है महीने वा पन्द्रहवें दिन सब बिरादरीके लोग उसमें जमा होकर अच्छी २ बातोंका जिक्रिर करतेहैं, जो तजवीज सब बिरादरीके लोग मंजूर करते हैं वह पास होती है।

(दे०चं०कुँ०) मां दो चार बातें वर्णन कीजिये कि कौन २ तजवीज सभामें पास हुई है।

(दे० सु० कुँ०) एक तो यही पास हुवाहै कि "छोटी उमरमें बालकोंका विवाह न किया जाय" "ब्याहमें दान दहेजका करार न कियाजाय"।

(दे०चं०कुँ०) अम्मा यह काहे? भला विना दान दहेजके भी कहीं व्याह होताहै?

(दे०सु०कुँ) बेटी! यह तो सबसे अधिक निंदित बातहै, दान दहेज ठहराना तो मानौ पाप कमाना है।

(दे०चं०कुँ०) अम्मा पाप कैसा? यहतो बराबर होता आताहै।

(दे०सु०कुँ०) हां बेटी होता तो आताहै पर थोडे दिनसे, आगे यह बात नहीं थी हिन्दू राजाओंके समयमें वरकन्याके गुण ढंग

बल पौरुषकी परीक्षा होके व्याह होताथा. हां, जबसे हिन्दुओंका राज्य गया तबसे यह रसम जारी होगयाहै, सो यह रसम दान दहेज ठहरानेका ऐसा खराबहै कि, इसके बदौलत कितने तो भले आदमी गरीबकी लडकियां सयानी हो विना व्याही घरमें पडी रहिजातीहैं कितने घर इस रसमकी बदौलत बिगड़ि गये, जगह जिमींदारी बिकगई, खानेको मुहताज होगये।

इस हेतुसे अब हमारे जातिके अच्छे लोग यह चाहतेहैं कि, यह निंदित रसम हमारे बिरादरीसे निकलि जावे।

और जो कहो, पाप कैसा? सो पाप तो इस प्रकारहै कि शास्त्रमें लिखाहै लडकेका जब दानदहेज ठहरायागया तो लड़का बिकगया, और जब लडका बिकगया, तो उसका दिया पिंड पानी मां बापको नहीं पहुँचता।

(दे०चं०कुँ०) अम्मा! सच।

(दे०सु०कुँ०) बेटी सच न और क्या मैं झूठ कहती हूं।

(दे०चं०कुँ०) अम्मा! जो ऐसाहै तो कभी दानदहेज न ठहराया जाय।

(दे०सु०कुँ०) हां बेटी! कभी नहीं, यह बहुत खराब बातहै और लज्जा कितनी बडीहै कि गाय भैंसके तरह लडकोंका मोल जोल किया जाय।

(दे०चं०कुँ०) अम्मा और क्या बात तजवीज हुई है।

(दे०सु०कुँ०) बेटी! हमारी जातिमें व्याह शादीके समय बडी फजूल खर्ची होतीहै सैकडों रुपया नाच तमासेमें, हजारों रुपया फूल फुलवाडीमें फूंक दिया जाताहै, और भला जिसके घर रुपया अधिक हो, कर्ज काढना न पडै, वह जो खर्चकरै तो एकबातभीहै यहां तो जिसके पास टका भी नहीं है, वह भी अपने नामके वास्ते

जगह जिमींदारी बेंचकर खर्च करताहै, दो दिन तो बादशाह बने रहे, जब शादी ब्याह होगया, तो अब खानेको मुहताज हैं, सीर पसारका खेत तो रेहन करदिया, बाहरसे आमदनी नहीं अब खायँ तो कहांसे खाँय।

इसी हेतुसे सभाने यह तजवीज कियाहै कि, फूल फुलवाडी नाच तमाशा, बहुत बरात लेजाना, बहुत डाल गहना, यह सब बन्द कियाजाय।

(दे० चं० कुँ०) अम्मा! डाल गहना भी नहीं।

(दे० सु० कुँ०) बेटी! इससे यह तात्पर्य नहीं कि लडकियां गहना कपडा पहिननेको न पावें, नहीं औकातसे बाहर जो लोग यह काम करतेहैं वह मनाहै, और यह बात ठहराई गईहै, कि डालमें एक जोडा अच्छा, और दोतीन जोडे मामूली, और गहनेके नामपर सिर्फ एक टीका रहै, बाकी और जिसको जो देना हो वह दूसरे बहानेसे दे।

लड़कियोंके मां बाप जो चार पांचसौ दान दहेज देते उसमेंसे आधेका गहना अपनी लडकियोंको बनवादें, और आधा अपने पास रखलें, चाहैं नकद लडकीको देदें जो गाढे जूनमें उसके काम आवै।

इसी तरह लड़कोंके मां वाप जहां तीन चार सौ नाच तमाशा फूल फुलवाडी, हू हड़कमें खर्च करते, उसमेंसे आधेका अपने पतोहूको गहना वनवादें और आधा अपने वालकके शिक्षा निमित्त रक्खें, तात्पर्य, इस तरहपर व्याह शादी कियाजाय, जिसमें लड़की वा लड़कावाला कोई जेरवार न हो।

(दे० चं० कुँ०) अम्मा! हां यहतो वहुत मुनासिब तजवीज है, दोदिनके झूंठे वाहवाहके वास्ते काहेको जन्मभरके लिये शोकका सामान किया जाय। अच्छा और क्या तजवीज पास हुई है।

(दे० सु० कुँ०) हमारी जातिमें स्त्रियोंके पढाने लिखानेका रिवाज कम क्या कुछभी नहीं था, इसीसे औरतैं बेशहूर और वाहियात होतीथीं, न उनको घरगृहस्थीका कुछ ढंग आताथा, न धर्म अधर्मकी कुछ बातैं जानतीथीं, अपनी बेशहूरीसे आपतो निरादरतादिकका क्लेश पातीहीथीं मर्दोंकी जिन्दगी भी नष्ट भ्रष्ट कर देती थीं ।

सो सभासदोंने यह तजवीज कियाहै कि "लडकियोंको हिन्दी अर्थात् देवनागरी अक्षर सिखलाया, भाषा विद्या पढ़ाया जाय, स्त्री शिक्षाके विषयमें अच्छे अच्छे ग्रंथ देखलाये जायँ, इसके सिवाय सीना पुरना, कशीदा काढ़ना, पायतांवा गुलूबन्द बनाना यह सब सिखलाया जाय ।

(दे० चं० कुँ०) तो अब जो स्त्रियोंको पढाया लिखाया जाताहै तो क्या इसी सभाके तजवीजसे ?

(दे० सु० कुँ०) बेटी ! और क्या, आगे इतना पढने लिखनेका रवाज कहां था ।

(दे० चं० कुँ०) अम्मा ! "आगे" शब्दसे आपका क्या तात्पर्यहै, अर्थात् जबसे सृष्टिहै तबसे नहींथा वा कबसे ?

(दे० सु०कुँ०) बेटी ! जब इस भारतवर्षका राज्य हिन्दुओंके हाथमें था, तबतो पढने लिखनेका चर्चा बहुत था, स्त्री पुरुष सभी संस्कृतविद्या पढते और जानतेथे पर जबसे मुसलमानोंका राज्य हुवा, तबहीसे संस्कृतविद्याके पठनपाठनका व्यवहार उठ गया, मर्दोंने संस्कृतविद्याका पढना त्याग, फारसी अरबी पढना प्रारंभ कर दिया, तो जब पुरुषोंनेही छोडदिया, तो स्त्रियां कहांसे पढें ।

(दे० चं० कुँ०) अम्मा ! किस कारणसे पुरुषोंने संस्कृत विद्या छोड फारसी अरबी पढना प्रारंभ किया ?

(दे०सु०कुँ०) बेटी ! हमारी जाति सदा राज दरबारोंमें नौकरी करके अपना गुजारा करती थी, मुसल्मान बादशाहोंके दरबारमें फारसी अरबी पढनेवालोंको नौकरी मिलती थी, इसी हेतुसे उन्होंने फारसी अरबी पढना शुरू करदिया, तबहीसे हिन्दुओंकी स्त्रियां बिलकुल अशिक्षित और निकम्मी होने लगीं।

पर अब हमारी बादशाह जो श्रीमहारानी मलका मोअज्जिमाहैं "परमेश्वर उनके राज्यको जबतक सृष्टि रहे तबतक निर्विघ्न स्थित रक्खै" इस न्यायकारी और प्रजापालक बादशाहके जमानेमें सर्व विद्याके पढने पढानेकी बाहुल्यता देखकर सभासदोंने एक तजवीज पास करदिया कि "स्त्रियोंको भाषा विद्या पढाया जाय" और उनके शिक्षाके योग्य ग्रंथ रचे जायँ" तबसे फिर स्त्रियां पढने लिखने लगी हैं।

(दे०चं०कुँ०) तो अम्मा सभाका हम स्त्रियोंपर बडा उपकार है परमेश्वर इस सभाको दिन दूनी और रात चौगुनी तरक्की देवै।

बोध २८.

(अथ चन्द्रकलाका विवाह)

अब चन्द्रकला १५ वर्षकी हुई और जैसे पूर्णिमाका चन्द्रमा अपने पूर्ण प्रकाशसे सबको सुख देता है उसी तरह चन्द्रकलाभी विद्या बुद्धि गुण ढंग शील स्वभावसे पूर्ण हो माता पिता कुटुम्ब परिवार सबको सुख देने लगी।

दीवानजीने उसके ब्याहकी चिन्ताकरि कई जगहसे जन्मपत्री मँगा पंडितोंसे गननाय आठ कुंडलीसे राशि वर्ग गन्ना वन्ना सब दुरुस्त आगया, तब घरमें जाय देवी सुबोध कुँवरिसे कहने लगे

(दे० सु० कुँ०) हमारी जातिमें स्त्रियोंके पढाने लिखानेका रिवाज कम क्या कुछभी नहीं था, इसीसे औरतें बेशहूर और वाहियात होतीथीं, न उनको घरगृहस्थीका कुछ ढंग आताथा, न धर्म अधर्मकी कुछ बातें जानतीथीं, अपनी बेशहूरीसे आपतो निरादरतादिकका क्लेश पातीहीथीं मर्दोंकी जिन्दगी भी नष्ट भ्रष्ट कर देती थीं ।

सो सभासदोंने यह तजवीज कियाहै कि "लडकियोंको हिन्दी अर्थात् देवनागरी अक्षर सिखलाया, भाषा विद्या पढ़ाया जाय, स्त्री शिक्षाके विषयमें अच्छे अच्छे ग्रंथ देखलाये जायँ, इसके सिवाय सीना पुरना, कशीदा काढ़ना, पायतांवा गुलूबन्द बनाना यह सब सिखलाया जाय ।

(दे० चं० कुँ०) तो अब जो स्त्रियोंको पढाया लिखाया जाताहै तो क्या इसी सभाके तजवीजसे ?

(दे० सु० कुँ०) बेटी ! और क्या, आगे इतना पढने लिखनेका रवाज कहां था ।

(दे० चं० कुँ०) अम्मा ! "आगे" शब्दसे आपका क्या तात्पर्यहै, अर्थात् जबसे सृष्टिहै तबसे नहींथा वा कबसे ?

(दे० सु० कुँ०) बेटी ! जब इस भारतवर्षका राज्य हिन्दुओंके हाथमें था, तबतो पढने लिखनेका चर्चा बहुत था, स्त्री पुरुष सभी संस्कृतविद्या पढते और जानतेथे पर जबसे मुसलमानोंका राज्य हुवा, तबहीसे संस्कृतविद्याके पठनपाठनका व्यवहार उठ गया, मर्दोंने संस्कृतविद्याका पढना त्याग, फारसी अरबी पढना प्रारंभ कर दिया, तो जब पुरुषोंनेही छोडदिया, तो स्त्रियां कहांसे पढें ।

(दे० चं० कुँ०) अम्मा ! किस कारणसे पुरुषोंने संस्कृत विद्या छोड फारसी अरबी पढना प्रारंभ किया ?

(दीवानजी) अच्छा यह तीसरी कुंडली रामनगरके वासी मुन्शीशिवसाहबसिंह डिपुटी कलक्टरके लड़केकी है, इसवक्त अव्वल नम्बरके डिपुटी कलक्टर हैं डेढ़सौ १५० गांव इनके हैं, लड़का सत्रह वर्षका है, अंग्रेजी पढ़ताहै, कर्जभी इनके नहीं है, मगर कुछ कुछ ग्रहदोषहै, एक न एक खटराग लगे रहताहै, कभी कोई बीमार पडि जाताहै, कभी अन्यायसे घरमें आग लग जातीहै, कभी कोई बौडाय जाताहै बाकी और घर वर सब अच्छाहै ।

(दे० सु० कुँ०) इसकोभी अलग कीजिये, जब कहीं दुनियामें घर न मिलैगा, तब ऐसे वर्जित कुलमें व्याह करैंगे ।

दोहा–दोषीघर जाको भयो, तहां नहीं कल्यान ॥
तहां उचित सम्बन्ध नाहिं, वर्जित व्याह विधान ॥

(दीवानजी) यह ४ चौथी कुंडली मुन्शी बिन्दवासनी प्रसादके लड़केकी है जो छपराके जिलेमें रहतेहैं, वहभी बे तिलकके राजाहैं उनके घरमें कोई दोष नहींहै, जातपांतकेभी बहुत अच्छे हैं, लड़काभी पढे लिखेहै, बाकी माताजीके निकसारीमें एक आंख उसकी जातीरही ।

(दे० सु० कुँ०) आपतो न मालूम कहांका तमाम अखोर बटोर लायेहैं. घरमें कोई दोष नहीं, तो वरमें तो दोषहै, अच्छा और कहिये कहां का है ।

(दीवानजी) यह ५ पांचवीं कुंडली मुन्शी परमेश्वरीदयाल सद्रेसदूर जिले चम्पारनके लड़केकीहै, उसी जिलेमें उनका घरभीहै उनके घरमें पुराना रुपया अशर्फी बहुतहैं, और इनकी कमाईका भी ठेकाना नहीं है, लड़काभी बीस वर्षका सबकुछ पढेलिखेहै मगर उसके दादाको बुढोती समयमें कोढ होगया था, और अब लड़केके चाचाको शुरू होगयाहै ।

(दीवानजी) देखो नौ९जगहसे मैंने जन्मपत्री मँगाया है उस मेंसे आठकुंडलीसे गन्नाबन्ना बनिगया है उन सबका वृत्तांत मैं तुमको अलग अलग सुनाता हूँ, जहांका तुम पसंद करो, वहां बात-चीत कीजाय ।

१ यह कुंडली तिलोकपुर वासी मुन्शी परमानंदके लडकेकी है, चारि गाँवमें उनका आठ आठ आना हिस्सा है, सीरपसार लाला साहिये होती है, लड़का तेरह १३ वर्षका है, द्वारपर मियांजीसे फारसी पढ़ता है, लड़का देखनौक है, बाकी दो तीन हजार रुपया उनके ऊपर ऋण है, और कोई नौकर चाकर नहीं है।

(दे० सु० कुँ०) इसको अलग कीजिये, इसमें तीन ३ दोप हैं।

१ लड़केकी उमर लड़कीसे कम ।

२ मियांजीसे फारसीका पढ़ना ।

३ कर्जदारी ।

दोहा–जहँ शिक्षा विधिवत नहीं, अल्प आयु वर होय ॥
ऋणी होय जो घर तहां, व्याह न कीजो कोय ॥

(दीवानजी) यह दूसरी कुंडली कंचनपुर वासी मुन्शी सुख-राम सिंहके लडकेकी है, जो आगे फौजदारीके सिरिस्तेदारथे, यह पचास गांवके ताल्लुकेदार हैं लडकाभी १६ वर्षका है, अंग्रेजी पढता है, परन्तु स्थान नहीं है और इनके पुरनियोंके वक्तसे कुछ उनके घरकी बदनामी भी चली आती है ।

(दे० सु० कुँ०) इसकोभी अलग कीजिये, इसमें एक दोप प्रसिद्ध है अर्थात् जिस घरकी कुछ बदनामी हो वहां संबन्ध करना उचित नहीं है ।

(दोहा–जाके कुलमें होय कछु, बदनामीकी बात ॥
ता घर व्याह न कीजिये, नहिं यह सुंदर नात ॥

(दीवानजी) अच्छा यह तीसरी कुंडली रामनगरके वासी मुन्शीशिवसाहबसिंह डिपुटी कलक्टरके लड़केकी है, इसवक्त अव्वल नम्बरके डिपुटी कलक्टर हैं डेढ़सौ १५० गांव इनके हैं, लड़का सत्रह वर्षका है, अंग्रेजी पढ़ताहै, कर्जभी इनके नहीं है, मगर कुछ कुछ ग्रहदोषहै, एक न एक खटराग लगे रहताहै, कभी कोई बीमार पडि जाताहै, कभी अन्यायसे घरमें आग लग जातीहै, कभी कोई बौडाय जाताहै बाकी और घर वर सब अच्छाहै ।

(दे० सु० कुँ०) इसकोभी अलग कीजिये, जब कहीं दुनियामें घर न मिलैगा, तब ऐसे वर्जित कुलमें व्याह करैंगे ।

दोहा-दोषीघर जाको भयो, तहां नहीं कल्यान ॥
तहां उचित सम्बन्ध नाहिं, वर्जित व्याह विधान ॥

(दीवानजी) यह ४ चौथी कुंडली मुन्शी बिन्दवासनी प्रसादके लड़केकी है जो छपराके जिलेमें रहतेहैं, वहभी बे तिलकके राजाहैं उनके घरमें कोई दोष नहींहै, जातपांतकेभी बहुत अच्छे हैं, लड़काभी पढे लिखेहै, बाकी माताजीके निकसारीमें एक आंख उसकी जातीरही ।

(दे० सु० कुँ०) आपतो न मालूम कहांका तमाम अखोर बटोर लायेहैं. घरमें कोई दोष नहीं, तो वरमें तो दोषहै, अच्छा और कहिये कहां का है ।

(दीवानजी) यह ५ पांचवीं कुंडली मुन्शी परमेश्वरीदयाल सद्रेसदूर जिले चम्पारनके लड़केकीहै, उसी जिलेमें उनका घरभीहै उनके घरमें पुराना रुपया अशर्फी बहुतहैं, और इनकी कमाईका भी ठेकाना नहीं है, लड़काभी बीस वर्षका सबकुछ पढेलिखेहै मगर उसके दादाको बुढौती समयमें कोढ होगया था, और अब लड़केके चाचाको शुरू होगयाहै ।

(दे० सु० कुँ०) महाराज ऐसे कुलमेंभी व्याह वर्जितहै ।

दोहा–जा वरको है खंज तनु, राजरोग कुल जाहि ।
सो घरवर त्यागो सदा, व्याह उचित तहँ नाहिं ॥

(दीवानजी) यह ६ छठी कुंडली झांसीके जिलेमें लाला मोतीलाल ताल्लुकेदारके लड़केकीहै, इनके सातसौ गाँवहैं, चौदह १४ हाथी पचहत्तर ७५ घोडे दरवाजेपर बँधेहैं, एक अंग्रेज उनके इलाकेका मनेजरहै, लड़केकी शादी हुईथी, बाकी ६ महीना हुवा, स्त्रीका देहांत होगया दो लड़के उस स्त्रीके मौजूदहैं, और लड़केकी उमर ४५ सालकीहै ।

(दे० सु० कुँ०) इसे भी तह कीजिये, पैंतालीस वर्षका क्या मेरे जानमें तो ३०-३५ वर्षसे ज्यादा सिनके आदिमीका व्याह ना उचितहै ।

दोहा–पुरुषव्याहकी योग्यता, तीसवर्षलों जान ॥
याते अधिक न व्याहिये, भाषत नीति सुजान ॥

(दी०) यह ७ सातवीं कुंडली मुन्शी वासुदेवप्रसाद रईस पटनेके लड़केकी है, यह दो भाई हैं, एक भाई हाईकोर्टका वकीलहै. और आप ज्वायंट मजिस्ट्रेटहैं, अख्तियार मदार ज़माना सब कुछ अच्छाहै, लड़केकी उमर उन्नीस १९ वर्षकी है. बाकी पढे लिखे ऐसाही तैसाहै, और यहभी सुनाहै, कि, आवाराहै, उसकी चाल कुचालहै, दोदो तीनतीन दिन गायब रहताहै, खोजनेपर कहीं पतुरियोंके घर, कहीं शराबखानेमें, कहीं मदकखानेमें मिलताहै ।

(दे० सु० कुँ०) ऐसा लड़का अपने मां बापको मुबारक रहै, हमारे कामका नहीं है ।

दोहा--जाकी चाल कुचाल अति, निंदित पथरत होय ॥
वरिय न कन्या ताहिसों, भलो कहै नहिं कोय ॥

(दी०) यह आठवीं कुंडली महाराज वीरबहादुर सिंहके दीवान मुन्शी कालीप्रसादके लड़केकी है, सातसौ ७०० महीना तनख्वाह पातेहैं, जगह जिमींदारीभी बहुतहै, लड़काभी अठारह १८ वर्षका है, पढेलिखेभीहै, बाकी सुनाहै कि उसको कोई राजरोगहै, जिससे उसका वदन सूखा, और मुँह पीला रहताहै।

(दे०सु०कुँ०) महाराज! राजरोगग्रस्त वरसेभी व्याह मनाहै औरभी कोई कुंडलीहै।

(दीवानजी) हां एक कुंडली और महाराज दरभंगाके दीवान अनूप नगरके रहनेवाले, मुन्शी हीरालालके लड़केकी है, लड़का पूरे वीस वर्षका है। इलाहाबादमें वरसाहेबके कालिजमें पढ़ताहै, जातपांतके भी बडे उत्तमहैं. कुलमें उनके कोई दोष नहीं है, बाकी अफसोस कि उससे बनतही नहीं, दो नाडीका भेद पड़ताहै।

(दे० सु० कुँ०) दो नाडीके भेदका क्या फलहै?

(दीवानजी) एकका फल तो पंडितजी यह कहते रहे कि पति परदेशमें रहै, और दूसरेका फल यह कि वर कन्यामें बिगाड़ रहै

(दे०सु० कुँ०) वस यही, अच्छा, आयुर्बल, सुतस्थान भाग्यस्थान कैसाहै?

(दीवानजी) पंडितजी कहतेरहे कि यह सब बहुत अच्छाहै।

(दे० सु० कुँ०) तो महाराज आपकी क्या रायहै?

(दीवानजी) आ, जो वनतही नहीं तो कौन राय बतलावें नहीं तो सब तरहसे यह पसंद रहाहै।

(दे०सु०कुँ०) तो अच्छा मेरी रायलीजिये, कुंडलीकी शंका त्यागदीजिये, भगवानको सुमिरि यही व्याह ठीक कीजिये।

(दीवानजी) अरे बिना बने?

(दे० सु० कुँ०) महाराज ! कैसा बिनाबने ? आप तो सकल विद्या बुद्धिके निधान हैं, सब कुछ जानतेहैं, पर मेरी औरतकी युक्तिसेभी यह बात है कि जो और अच्छाहै, तो यह दोष कोई दोष नहींहै, बडे आदमीके लड़के नौकरी चाकरीके वसीलेसे परदेशमें रहतेही हैं तो का यह भी लिखाहै कि परदेशमें रहैंगे और अपनी स्त्रीको अपने पास नहीं बुलावैंगे ।

और दूसरा दोष जो पंडितजी कहतेहैं, कि स्त्री पुरुषमें बिगाड रहैगा, यह पंडितका शिर, चन्द्रकला तो अपने स्वभावसे देवको वश करले. आदिमीका वश करलेना उसको कितनी बडी बातहै, सो महाराज यह तो बेबना नहीं कहलाता, यह तो सब तरहसे बना है, और मैं तो कहतीहूँ कि कुंडलीका बनना बे बनना कोई बात नहीं, सब बात भाग्याधीन है ।

पंडितोंकी लडकियां काहे रांड़ होजातीहैं, जो सबतरह शोध विचारकर करतेहैं ।

काहे क्षत्रियोंके वहां इस बातका बहुत खोज नहीं रहता, दो एक बात देखकर जहां घरवर पसंद आया तहां करलेतेहैं ।

मुसलमान लोग तो इसका नामही नहीं लेते तो क्या उनकी स्त्रियां सुखसे नहीं रहतीं ?

महाराज ! जो कोई मुझसे पूछे तो मैंतो यही कहोंगी कि, जहां घर वर सब पसंद आवे, वहां विना गनाये गुथाये व्याह करले; पंडितोंकी मीन मेख एक न सुनै, सिद्धदाता गणेश कीजिये, और खुद जाके लडकेको देख, बातचीत तै करि आइये ।

(दीवानजी) लड़का देखना क्या है? लडकेको तो नाऊ वारी और पुरोहित सबलोग देखिआयेहैं ।

(दे० सु० कुँ०) महाराज ! गुस्ताखी माफ, लडकेको अपनी आँखसे अवश्य देखलेना चाहिये, नाऊ, वारी, पुरोहितके भरोसे

बहुत जगह धोखा होजाता है यही कुंजविहारी पंडित तो हैं, अभी पारैसाल बख्शी ब्रजमोहनलालकी लडकीका विवाह एक गूंगेसे करादिया था, वीस २०) रुपया लड़केके बापसे लियाथा, और यही लोचनबारी न हैं, जो सुचित्तलालकी लडकीका विवाह एक मौगसे करादिया, क्या आप नहीं जानते. महाराज ! इनके भरोसे कभी न रहिये, अपने आँखसे देखे बिना विश्वास न कीजिये ।

(दीवानजी) तो अच्छा मैंही जाके देखि आऊंगा, बाकी लडकीकी कुंडली वह मांगैंगे; और जब नाडीका भेद देखैंगे तो क्या जानैं न मानैं ।

(दे०सु०कुँ) महाराज कुंडली किसी पंडितसे बनवाय लीजिये, जिसमें नाडीका भेद मिटिजाय. पहिले तो उनसे कहना चाहिये कि कन्याकी कुंडली देखानेका हमारे यहां दस्तूर नहीं है, जो इससे काम चलगया, तो बेहतर, नहीं तो बनीहुई कुंडली देखला दीजिये ।

(दीवानजी) क्या तुमको इस बातका कुछ खटका नहीं है ?

(दे०सु०कुँ०) महाराजके चरणोंकी शपथ मुझे इन बातोंका कुछ खटका नहीं रहता. मैं तो जानतीहूं कि विधाताने ललाटमें जो दुःख सुख, हानि लाभ, लिखदियाहै, वही होगा ।

चौ०—होइहै सोइ जो राम रचि राखा । को करि तर्क बढावै शाखा ॥

(दीवानजी) तो दान दहेज कैसे ते कियाजायगा ?

(दे०सु०कुँ) महाराज ! आप सब बातैं मुझीसे पूछते हैं । भला मैं स्त्रीजाति क्या जानौं, मेरी बुद्धि क्या जो हरबातमें उचित सलाह दौं, वहाँ जाइये, जैसा वहांका रंग ढंग देखिये वैसा कीजिये

और जिसप्रकार हो सभाके नियम अनुसार तैं कीजिये, दानदहेजका करार होने न पावै ।

(दीवानजी) जो बिना दान दहेज करार किये न मानैं ।

(दे०सु०कुँ०) महाराज मैंने सुना है कि वहांभी कायस्थ सभा है, और वह उस सभाके सभापति हैं सो जो वह न मानैं तो आप वापस चले आइये, मैं मनाऊंगी, पहिले मैं वहांकी लोकलसभामें दरख्वास्त करूंगी, वहांसे न कुछ होगा, तो प्राविन्शल (सूबेदार) सभामें विनय करूंगी, वहांभी कोई न सुनैगा तो सदर सभामें हल्ला मचाऊंगी, कोई तो सुनैगा, यह कैसी बात है कि वह न मानैंगे जो लायक होंगे, और कुछ भलमनसाहत होगी तो जरूर मानैंगे ।

(दीवानजी) हँसीकी राहसे–भाई जो तुम्हें इतना आता है, तो तुम्हीं जाकर इस मामिलेको तै करिआवो ।

(दे०सु०कुँ०) भी हँसकर–आप अपनी पोशाक मुझे दें, और मेरा कपड़ा पहिन आप घरमें बैठैं, तो मैं काहे न जाऊंगी ।

इसके बाद दीवानजी जानेकी तैयारी करि, दोचार पंडित साथ ले वहां गये और मुन्शी हीरालालसे मुलाकात किया और परस्पर नमस्कार प्रणाम करि, कुशल प्रश्न पूँछ बातचीत होने लगी ।

(मुन्शी हीरालाल) आपका आगमन हमारे बडे हर्षका कारण है, जो आज्ञा हो वह शीश धरि करूं ।

(मु०सर्वसुखलाल) हम कृतार्थ होनेको आये हैं, आपके साहिबजादेकी कुंडली मेरे यहां गई थी, राशिवर्ग मुवाफिक आगया है, अब विनय है कि इस शुभसंवन्धके कबूल करनेसे हमें बडाई दीजिये ।

इतनेमें घरमेंसे बोलावा आया, मुन्शी हीरालाल उठके घरमें चलेगये, और देवी सत्तवती कुँवारि (मुन्शीहीरालालकी दुलहिन) से बातचीत होनेलगी ।

(दे० स० कुँ) महाराज ! कहांसे वचऊके वर देखहरू आये हैं ।

(मु० हीरालाल) आनंदनगरसे मुन्शी सर्वसुखलाल आयेहैं उन्हींकी कन्याहै; हमसे अभी बातचीत होतीरही, वह कहते रहे कि, गन्ना बन्ना सब बनिगया है, व्याह कबूल कीजिये परन्तु अभी दान दहेजका कुछ जिकिर नहीं आया, इतनेमें तुमने बुलाय-भेजा, सो तुम्हारी क्या राय है, क्या दहेज मांगें ?

(दे० स० कुँ०) महाराज दहेज मांगाजायगा ? आप तो कहते रहे, कि अब सभामें यह तजवीज पास हुईहै, कि "व्याह शादीमें दान दहेजका करार न किया जाय" तो अब आप कैसा कहतेहैं, कि, क्या मांगाजाय ।

(मु० हीरालाल) हां सभामें तो यह तजवीज पास हुई है, बाकी अभी कोई उसपर चलता थोडे है, अभी तो सब कोई दान दहेज ठहरातेहैं, तंग करके लेतेहैं, तो क्या पहिले हमीं इसबातको चलावैं दशआदिमीमें पहिले हमीं नक्कू बनैं ।

(दे० स० कुँ) महाराज नक्कू बनना कैसा, इसबातको आप चलावैंगे, तो बिरादरीमें और आपकी प्रशंसा होगी, कि नक्क बनैंगे, आप तो यहांकी सभाके सभापतिहैं, आपको तो अवश्यही इसबातको चलाना चाहिये ।

और महाराज ! मेरे देखनेमेंभी यह बात बहुत अच्छी है कि, दहेजका करार न किया जाय और मैं तो कहती हूँ, कि, किस मुँहसे लोग दान दहेज मांगतेहैं, क्या उन्हें लज्जा नहीं लगती जो गाय भैंसकी तरह अपने लडकोंका मोल जोल करतेहैं ।

(मु० ही० ला०) तो दहेजका जो करार न कियाजायगा तो कैसे किसी रसममें अडेंगे ?

(दे० स० कुँ०) महाराज अड़ना कैसा ?

(मु० ही० ला०) ब्याहमें सब रसमोंमें अड़ा जाताहै, आज्ञा अँगाई भात खवाई आदिक रसमोंमें तो इतना अडा जाताहै कि, सांझसे भोर और भोरसे सांझ होजातीहै, भात सड़जाताहै, बिगडी बिगड़ा न हो जातीहै, तब जायके रसम तै होतीहै।

(दे० स० कुँ०) छी छी, महाराज दूरकीजिये जानेदीजिये, ऐसी बात मुझसे न कहिये, क्या यह कोई जरूरी बातहै, कि थुक फजीहत हो तबै भात खायाजाय ? यह तो कोई अच्छी बात नहीं है. मेरी जानमें तो महामूर्ख निपट निकम्मे लोग ऐसा करते होंगे।

(मु० हीरालाल) अजी, बड़े बड़े पढे लिखे लोग ऐसा करतेहैं।

(दे० स० कुँ०) ये महाराज, उनके पढने लिखनेको कुकुर भूकैं उनका पढना लिखना ऐसाही होगा, कि लिखलोढा पढ पथ्थर, आप ऐसे लोगोंका जिकिर मत कीजिये, न अपने मुँहसे कभी करारका नाम लीजिये।

(मु० ही० ला०) तो जानिलेव कि जब दहेजका करार न किया जायगा, तो कुल काम सभाके नियमअनुसार करना होगा।

(दे० स० कुँ०) महाराज, अहो हर्ष खुशीसे कीजिये, सभाके नियम अनुसार होनेमें लाभ छोड़ हानि कुछ थोडैहै ?

(मु० ही० ला०) तो जाके कबूल करिलें, दहेजका करार न करैं।

(दे० स० कुँ०) करार करनेको तो मैं कभी नहीं कहूँगी, और न अभी कबूलही करनेको कहूँगी, लड़कीका हाल चाल भी तो कुछ बूझिलेना चाहिये।

(मु० ही० ला०) तो कैसे बूझा जायगा ?

(दे॰स॰कुँ) इसीगावँमें मेरी मौसी व्याही हैं, उनको मैं चिट्ठी लिखतीहूं दो तीन दिनमें हाल आजायगा, तबतक दीवानजीको टिकाइये, भली प्रकार उनकी पहुनाई कीजिये, चिट्ठीके जवाब आजानेपर जैसा मुनासिब होगा कियाजायगा, यह बात हो मु॰हीरालाल बाहर चले आये और दे॰स॰कुँ॰ ने चिट्ठी लिख हरकारा विदा किया।

चिट्ठी।

राम १.

स्वस्तिश्री सर्वोपमायोग्य मौसीजीके चरणोंमें हमारी बहुत बहुत विनय पहुँचै, समाचार यह है कि आपके गाँवसे मुन्शी सर्वसुखलाल जी बचऊके व्याह वास्ते आयेहैं, इन्हींकी कन्याहै, सो आपको जो लडकीका कुछ हाल चाल मालूम हो तो लिखिये, कि उसका रूप रंग, उसका गुण ढंग, शील स्वभाव विद्या बुद्धि कैसीहै जि॰सु॰मि॰ माघवदी २।

प्यारी बहिन चंद्रहासकुँ॰ को हमारा आशिर्वाद, आप तो मुन्शीजीके घर अवश्य आती जाती होंगी, सो आपभी कन्याका हाल चाल और अपने कुशलक्षेमका समाचार लिखना इति।

हरकारा गया और चिट्ठीका जवाब लाय (दे॰ स॰ कुँ॰) को दिया, वह मु॰ हीरालालको बुलाय चिट्ठी बांचनेलगी।

चिट्ठीका जवाब।

राम १.

स्वस्तिश्री बेटी सत्तवती कुँ॰को हमारा बहुत आशिर्वाद, बहुत दिनोंपर तुम्हारी चिट्ठी आई समाचार पाय चित्त प्रसन्न हुवा लडकीका नाम चन्द्रकला है. और जैसेही नामहै, वैसही रूपभी भगवान्ने अनूप दियाहै, शीलकी सागर, विद्याकी खान,

गुणकी आगर, बुद्धिकी निधान है, जिस घर वह जाय उस घरकी अहोभाग्य है, यह ब्याह अवश्यही करने योग्यहै जि॰ शु॰ मि॰ माघवदी ४ ।

श्रीदीदीजीके चरणोंमें चन्द्रहासका करजोरि प्रणाम.मैं मुन्शीजीके घर रोज आतीजातीहूं, और मुझको लड़कीका हाल चाल भलीप्रकार मालूम है नीचेके कवित्तसे उस लड़कीका हाल मालूम होगा ।

सवैया ।

जातिके उत्तम मातु पिता जेहि हैं मरजादनमें अति भारी ।
नाम सुताकर चन्द्रकला विधना निज हाथ सों ताहि सँवारी॥
शीलकी सागर बुद्धिकी खान है है गुण आगर नागर नारी ।
रूपमें जानिये चन्द्रकला वरु चन्द्रकलाहू लजावनहारी॥१॥
बोलनमें सुखफूल झरैं अरु चालहै मन्द गयंदगती है ।
सत्यमें सीता सतीके समान पतिव्रतमें जनु पारवतीहै ॥
रूपकी वाके कहा उपमा मन है वह औ रति येक रतीहै ।
बुद्धिमती मरयादवती सबभांति सुती यह योग पतीहै॥ २ ॥

(हे॰स॰कुँ॰) महाराज! अब लड़कीसेभी इतमीनान होगया, अब आप ब्याह कबूल करलीजिये, दान दहेज का नाम न लीजिये।

मुंशी हीरालाल बाहर आय मुंशी सर्वसुखलालके पास बैठ गये और परस्पर बातचीत होने लगी ।

(मु॰स॰सु॰लाल) मुझको आपके यहां आये कई दिन होगये, और आपकी प्रतिष्ठा, और पहुनाईसे अति संतुष्ट हुवा, अब आज्ञा होय तो अपने नगरको जाऊं ।

(मु॰ही॰ला॰) मैं लज्जित हूँ कि आपके योग्य कुछ सेवकाई और पहुनाई मुझसे नहीं बनपडी, जैसी मरजी हो, मुझको ब्याहके

कबूल करनेमें कोई उजुर नहीं है, और मैं बड़े हर्षसे बिला कौलकरारके मंजूर करताहूँ ।

यह कहि पंडितोंसे कहा "आपलोग तिलक और ब्याहकी साइत स्थूल करिदें" ।

पंडितोंने शोध विचारकर कहा, "धर्मावतार! माघ शु० ४ तिलक और फागुन शुदी ५ ब्याहकी साइत बनै है, यही बात ठीक होगई, तब मुंशी सर्वसुखलाल विदाहो अपने नगरको आये और देवी सुबोध कुँ० से बातचीत होनेलगी ।

(दे० सु० कुँ०) कहिये महाराज कुशल क्षेम, क्या हुवा ?

(दी०जी)सब आनंद मंगल है,सब अच्छा हुवा, ब्याह ठीक होगया लड़काभी अपनी आँखसे देखलिया. लडका देवमूर्त्ति है, मुंशीजीका मिजाजभी बहुत अच्छाहै, माघ शुदी ४ तिलक और फागुन शुदी ५ ब्याहकी साइत बनी है, दान दहेजका कुछ करार नहीं हुवाहै, सो अब दिन बहुत कम हैं, मुझको राजकाजसे छुट्टी नहीं मिलती इसी तरद्दुदमें हूँ कि कैसे सब काम अंजाम होगा ?

(दे० सु० कुँ०) महाराज ! आप तरद्दुदका नाम मुझसे न लीजिये, तरद्दुद आपके शत्रुको भी न हो,आप राजकाज कीजिये यह लौंडी सब सामान करलेगी ।

और हां महाराज कुछ और हाल चाल तो वर्णन कीजिये अर्थात्

१ देश कैसाहै ?

२ नगरकी बस्ती कैसीहै ? और बिरादरीके कितने घर उस नगरमें हैं ।

३ मुन्शीजीके कुल कुटुम्बका क्या हालहै ? कितने प्राणी हैं चलावा कैसाहै ?

४ जगह जिमींदारी कैसीहै ?

(दीवानजी) १ देश बहुत उज्वल है ।

२ नगरकी बस्ती भारी है, सर्वजात बसतेहैं, केवल बिरादरीके लोगोंके दोसौ घरहैं, और सब रईस और अपने दालरोटीसे खुश मालूम होते हैं, नगरके पूर्वदिशा सरयूजी बहती हैं ।

३ एक बूढा बारी मुंशीजीकी डेवढीपर था उससे मुंशीजीके कुल कुटुम्बका इसतरह पर हाल मालूम हुवाथा कि मुंशीजीके पिताका नाम मुंशी नौरतनलाल, यह शाही वक्तमें बावनपरगनेके चकले-दारथे, उनके दो लडके १ मुंशीजवाहिरलाल २ मुंशी हीरालाल. मुं०ज०लाल व्याह होनेके आठमहीने पीछे वैकुंठवास होगये, उनकी स्त्रीकाभी थोडेही दिन पीछे देहांत होगया ।

रहे मुं०हीरालाल, उनके तीन लडके और एक लडकीहै सबसे बडे बाबू सूरजप्रकाश हैं, जिससे चन्द्रकलाका व्याह ठीक हुवाहै इनसे छोटे बाबू रामप्रकाश तब तेजप्रकाशहैं लड़की सबसे छोटीहै और उसका नाम देवी बुद्धिमती कुँ० है ।

बाबू सूरजप्रकाश दशही वर्षकी अवस्थामें इलाहाबाद अंग्रेजी पढ़ने चलेगये और एकदमसे ६ वर्षतक मकानपर नहीं आये, जब मुं०नौरतनलालका देहांत होगया तो उनके काममें तीनदिनके लिये आयेथे, फिर तबसे चारवर्ष हुवा मकानपर नहीं आये ।

पार साल बी. ए. पास कियाहै, अब एम. ए. में पढ़तेहैं, जिस-दिन मैं वहाँ पहुँचा उसीदिन मैंने मुंशीजीसे कहा कि, उनको बुलाभेजिये । मुं० जीने तुरंत तार दिया, वह दूसरे दिन सुबहको आठबजेकी रेलमें आये, और फिर शामको ८ बजेकी रेलमें वा-पस चले गये ।

बाबू रामप्रकाश, और बाबू तेजप्रकाश घरहीपर मियांजीसे कुछ दिनोंतक तो फारसी पढते रहे, अब अंग्रेजी पढतेहैं. ६०) महीनेका एक मास्टर नौकर है।

मुं० नौरतनलाल पुराने खयालके आदमी थे उन्होंने बाबू रामप्रकाशका तेरहें वर्षमें और बाबू तेजप्रकाशका ग्यारहें वर्षमें बलिदान अर्थात् शादी करदिया, मुंशीजीने और उनके घरमें बहुत चाहा कि, अल्प आयुमें व्याह न हो पर मुं० नौरतनलालजीने न माना और कर लिया।

इन दोनों शादियोंमें छानवे हजार ९६०००) खर्च हुवाथा जिसमें छिहत्तर हजार ७६०००) कर्जका था.

मुंशी नौरतनलालको मरे चार वर्ष हुवा. और जब वह मरेहैं एक लाख बारह हजार ११२०००) मय मूल सूदके कर्ज हो गयाथा।

मुंशी हीरालाल हमारेही सरीखे भोलेभाले आदमीहैं, पर उनके घरमें सुनाहै कि, बड़ी लायक होशियार, और मुन्तजिम हैं. उन्होंने इन्तजाम करके चारवर्षमें ६७०००) कर्ज अदा कियाहै, अब ४५०००) और बाकी है।

४ तीस ३० गाँव मुसल्लम और २५ गाँवमें आठ आठ आना हिस्सा है, चौवालिस हलकी सीर होतीहै, मालगुजारी देके बाइस हजार सालमें मुनाफा है।

वह वृंदावारी यहभी कहताथा कि बाबू रामप्रकाश और बाबू तेजप्रकाशके दुलहिनोंका मिजाज बहुत खराब है, न एक अक्षर पढे लिखेहैं, न किसी बातका गुण ढंग है, पर लडकीकी, बहुत तारीफ करताथा और कहताथा कि बाबू वह लड़की है तो अभी बारह वर्षकी पर सीना पुरना कशीदा काढना रसोई पानी लिखना पढना सबमें बहुत हुशियार है यही हाल है यही चाल है।

इतनी बातचीत हो दीवानजी उठके बाहर चले गये देवी सुबोधकुँवरिभी घरमेंसे आय दालानमें बैठगई, जितनी स्त्रियां उस समय वहां थीं सबको जनाया कि चन्द्रकलाका व्याह ठीक होगया यह सुनि चन्द्रकला वहांसे उठि दूसरी जगह चलीगई और स्त्रियां मंगल गाने लगीं नगरमें घरघर चर्चा होनेलगी, झुंडके झुंड स्त्रियां आय आय गाने बजाने लगीं ।

इधर देवी सुबोध कुँवरिने एक फिहरिस्त सब चीजोंकी खडी करके उसके मुताबिक सब सामान करनेलगीं, चावल, आटा, दाल सबका वजन कराय २ बोरोंमें रख जिन्सका नाम और मनकी तादाद ऊपर लिख लिख रखती गईं ।

(बारातकी तैयारीके विषयमें मुंशी हीरालाल और देवी सत्त्ववतीकुँ०की बातचीत)

(मुं० हीरालाल) अब बचऊके व्याहके कुल बारहदिन बाकी रहगये हैं, अभीतक कोई सामान बारातका ठीक नहीं हुवा न अभी तक रुपयाहीका कुछ बन्दोबस्त हुवा, जिससे सब कुछ होनेवालाहै ।

(दे० स०कुँ०) हां महाराज ! मैंभी तो पूछनेवाली ही थी, कि बारातका कैसा सामान आप कररहेहैं, कृपाकरके जरा इस लौंडी सेभी तो वर्णन कीजिये ।

(मुं०हीरालाल) तुम जानतीहो कि, पिताजीने बाबू रामप्रकाश और बाबू तेजप्रकाशका व्याह किस धूमधामसे कियाथा ।

दोनों लडकोंके व्याहमें छानवे हजार ९६०००) रुपया खर्च हुवाथा ।

बाबू रामप्रकाशकी शादीमें पांचसौ ५०० हाथी, आठसौ ८०० घोडे, सातहजार ७००० आदमी बारात गयेथे ।

आतशबाजी पचीस सौ २५००) की।

फूल फुलवाडी बारहसौ १२००) की।

पचीस २५ डेरा तवायफ,और आठ डेरा भांडोंके थे चार हजार ४०००) रुपया कुल मिलाके सिर्फ नाचका देना पडाथा।

बारहसौ १२००) कहार थे, जिनकी कहारी अट्ठारह सौ १८००) देनी पडीथी, घाटका महसूलभी पचीससौ २५००) दियागयाथा. भले याद नहीं है पर डाल गहनाभी बाइसहजार रुपया २२०००) से कममें नहीं था।

इसीतरह बाबू तेजप्रकाशकी शादीमेंभी खर्च हुवा था, मैं चाहताहूँ कि, इससे अधिक इस शादीमें खर्च करूं।

(दे० स० कुँ०) महाराज! यह छानवे हजार ९६०००) जो खर्च हुवाथा, यह कुल घरका था वा कुछ कर्ज काढना पडाथा?

(सुं० ही० लाल) यह तुम क्यों पूछती हो, क्या तुम नहीं जानती हो,कि इसमें केवल बीसहजार२००००)घरका था,बाकी छिहत्तरहजार ७६०००) कर्ज काढागयाथा, जिसका दोही तीन सालमें मय सूदमूलके एकलाख बारह हजार रुपया ११२०००) होगयाथा. पिताजीके वैकुण्ठवास होनेपर जब महाजनोंने बहुत तंग किया और नालिश करनेके फिकरमें हुये,तब तुम्हींने तो पांच गांव कछारके बेचकर पचीसहजार २५०००) कर्ज अदाकियाथा पचीसहजार २५०००) की एवजमें १२ गांव हिस्सेदारीके रेहन किया गया, तुम्हींने तो इलाकेकाभी इंतजाम करके कुछ नकद अदा कियाथा, अबतकभी पैंतालिस हजार ४५०००) बाकी है जिसके लिये तुम सदा उदास रहा करती हो, और कहा करतीहो कि किस तरह यह कर्ज अदा होगा।

(दे० स० कुँ०) तो महाराज ! अब रुपयेकी सबील कहांसे होगी।

(मुं० ही० ला०) कहीं गाडा तो है नहीं कि खोद लिया जायगा वा, टकसाल घरहै नहीं, कि ढाललिया जायगा, फिर सिवाय कर्जके और कहांसे सबील होगी ।

(दे० स० कुँ०) तो महाराज ! अभी पहिले ऋणसे तो छुट्टी नहीं अब फिर भी कर्ज काढनेकी नीयतहै ?

(मुं० ही० ला०) कर्ज काढनेकी नीयत भरशक है, बिना कर्ज काढे काम कैसे चलैगा ? इलाकेकी आमदनी तो तुम्हारे इन्तजामसे पहिले कर्जकी बेबाकीमें दीजातीहै, सिर्फ पांचहजार ५०००) तुमने बचत कायम कियाहै, वही तीनवर्षका पन्द्रहहजार १५०००) बेंकमें जमाहै, फिर इतनेमें क्या होसक्ताहै आखिर बुजुर्गोंके नाम के मुताबिक तौ सब काम होना चाहिये, मेरी जानमें तो पचीस तीस हजार रुपया जब और कर्ज काढाजायगा तब जाके काम चलैगा ।

(दे० स० कुँ०) और नहीं तो नहीं ?

(मुं०ही०ला०)बेशक नहीं, तुम्हीं बतलावो कैसे काम चलैगा

(दे० स० कुँ०) वह काम बतलाइये जिसमें इतना रुपया खर्च होगा ।

(मुं० ही०ला०) अच्छा सुनो—पांचसौ हाथी जिनके घाटकी महाही ५००) और बिदाई ५००) जुमिला १०००)

कहार बारहसौ, उजरत चौवीस सौ, घाटका महसूल एक सौ बारह रुपया, जुमिला २५१२)

नाच पचीस डेरेसे कम न होगा, इसके सिवाय पांच सात डेरा भांडोंकेभी रहैंगे ४०००) इनकाभी रखलो ४०००)

आतशबाजी कमसे कम दोहजार २०००)
फुलवाडी पन्द्रहसौ १५००) जुमिला तीनहजार पांच सौ ३५००)
अंग्रेजी बाजा, पलटनका बाजा और देशी बाजा सब मिलाके एक हजार इसकाभी रखलो। १०००)
जिन्स भी रखलो पाँचहजारका। ५०००)
डाल गहनाभी बीसहजारसे कम न होगा। २००००)
अब सब जोड़ डालो कितना हुवा?

(दे०स०कुँ०) हां जोड़लिया सैंतिस हजार बारह हुवा ३७०१२)

(मुं० ही० ला०) इसके अलावे कपड़ा है घाटकी मल्लाही है और मुतफर्कात् खर्च है गर्जेकि पचासहजारसे कम खर्च किसी तरहपर नहीं हो सकता।

(दे० स० कुँ०) मैंभी कुछ विनय करूं।

(मुं० ही० लाल) शौकसे।

(दे०स०कुँ०) अच्छा आपका तकदमा तो होचुका अब मेरा सुनिये हाथी १५ घाटका महसूल १५) रुखसताना १५) जु० ३०)
कहार पचीस पालकीके दोसौ २००) कहारी चारसौ ४००) महसूल घाट वोन्नीस रुपया जुमिला। ४११)
डाल चार जोड़ा उमदा दो हजारमें २०००) चार जोड़ा मामूली आठसौ में ८००) सात जोडा पौनिवोको ढाईसौमें जु० ३०५०)
बाजा अंग्रेजी १ उजरत २५) रोशन चौकी २ दशरुपया १०) डफला ताशा २ आठरु० में ८) सिंघा ५ दशरुपया जु० ५३)
गहना नदारद सिर्फ एक टीका जायगा और मेरे पास एक टीका फाजिल निहायत उम्दह एक हजारका मौजूद है वही रहेगा, बाकी और गहने जब लड़की आवेगी तो देखाजायगा मेरे पास सोनेचां-दीके दोहरे गहने मौजूदही हैं और आप जानतेही हैं कि मैं सिर्फ

कंठा कर्णफूल कंगन और कडा पहिनती हूं बाकी सब गहने मेरे डब्बोंमें बन्द ही रहते हैं, जब लडकी मेरे घर आवैगी तो मुँह देखवामें मैं सब गहने उसको देदूंगी ।

नाचका मद अलकत, फूल फुलवाडी अलकत, आतशबाजी अलकत ।

जिन्स सिर्फ चावल खरीदा जायगा, और वह मेरे अन्दाजसे दोसौ रुपयाका और सब जिन्स मेरे घरमें मौजूद है गर्जे कि मेरे जानमें पाँच हजारमें छुट्टी ।

(मुं० ही० ला०) नाक भौंह सकोड़ मुँह फेर, हुँह छुट्टी बस छुट्टी होगई ? इसी पाँचही हजारमें लडकेका विवाह होजायगा ।

(दे० स०कुँ०) हां महाराज हो न जायगा और क्या, कैसे न होगा ।

(मुं०ही०लाल) अच्छा अच्छा कहीं हो न जाय, मालूम हुवा कि अबकी मर्तबे तुम हमारी नककटी करावोगी ।

(दे० स०) कुछ मुस्कुरा कुछ प्रेम जना, हाथ जोड ।

महाराज ! क्रोध न करैं, मैं आपकी दासीहूँ, आपकी जैसी मर्जी होगी वैसे ही होगा, पर यहतो फरमाइये कि नककटी कैसी कही ?

(मुं० ही० लाल) हुंह, कहती है नककटी कैसी, हम इतने बडे रईस, हमारा इतना बडा नाम उसके लडकेकी शादी और उसमें नाचनूच नदारद, फूल फुलवाड़ी नदारद, आतशबाजी नदारद, फिर नककटी नहीं तो और क्या है ?

(दे०स०कुँ०) महाराज ! गुस्ताखी माफ, यह नककटीकी बात नहीं, किंतु प्रशंसा योग्य है ।

(मुं० ही० ला०) एक तुम प्रशंसा करोगी, और तो सिवाय निंदा, और उपहासके प्रशंसा कोई न करैगा ।

(दे० स०कुँ०) महाराज मैं किस हिसाबमें हूं, जितने संसारमें बुद्धिमान हैं, और जहांतक कायस्थसभायें हैं. सब आपकी प्रशंसा करैंगी, आपकी बड़ाई, आपका नाम सारे अखबारोंमें दर्ज होगा, जो चिरकालतक स्थित रहैगा।

(मुं०ही० लाल) हां यह बात तो है, सभाके लोग तो अवश्य प्रशंसा करैंगे, पर, मैं और लोगोंसे डरता हूं, कि वे जरूर मेरी निंदा करैंगे।

(दे०स०कुँ०) महाराज! मेरी जानमें तो बुद्धिमानोंकी प्रशंसा और निंदाका ख्याल करना चाहिये, अबुधजनोंकी बातपर बुधजन कान नहीं देते, और फिर महाराज आप देखते नहीं? कि हमारीजात इसी व्याहशादीके फजूल खर्चियोंकी सबबसे कैसे दुर्दशाको प्राप्त होरही है, आप सरीखे उत्तम पुरुषोंको अवश्य ऐसे ऐसे कार्योंमें ऐसा व्यवहार, और ऐसी रीति अंगीकार करना चाहिये जो और सामान्य पुरुषोंके लिये नमूना और उपदेशक हो।

(मुं०ही०लाल) अजी सभामें तो मैं भी यही कहाकरता हूं और अनेकभांतिसे औरोंको सिखावन दिया करता हूँ, पर क्या करूं अपने ऊपर जब आ पडती है, तब सभा वभाका ख्याल सब भूलिजाता है गोसाँई तुलसीदासकी वही कहतूत होजाती है।

चौ०—पर उपदेश कुशल बहुतेरे। जो आचरैं सो नर न घनेरे॥

(दे०स०कुँ०) महाराजका फरमाना बहुत ठीक, अकसर यही हाल है, कि लोग सभामें बैठ, हांमें हां मिलाया करते हैं, लम्बा चौड़ा व्याख्यान दिया करते हैं पर कार्रवाई करतेवक्त कुछ औरही मति होती है. और इसीसे तो अभी हमारी जातिसे दरिद्रता, और तबाही दूर नहीं हुई, नहीं तो अबतक तो कबकी कब हमारी कौमकी हालत सुधर गई होती।

कंठा कर्णफूल कंगन और कडा पहिनती हूं बाकी सब गहने मेरे डब्बोंमें बन्द ही रहते हैं, जब लडकी मेरे घर आवैगी तो मुँह देखउवामें मैं सब गहने उसको देदूंगी ।

नाचका मद अलकत, फूल फुलवाडी अलकत, आतशबाजी अलकत ।

जिन्स सिर्फ चावल खरीदा जायगा, और वह मेरे अन्दाजसे दोसौ रुपयाका और सब जिन्स मेरे घरमें मौजूद है गर्जे कि मेरे जानमें पाँच हजारमें छुट्टी ।

(मुं० ही० ला०) नाक भौंह सकोड़ मुँह फेर, हुँह छुट्टी बस छुट्टी होगई ? इसी पाँचही हजारमें लडकेका विवाह होजायगा ।

(दे० स०कुँ०) हां महाराज हो न जायगा और क्या, कैसे न होगा ।

(मुं०ही०लाल) अच्छा अच्छा कहीं हो न जाय, मालूम हुवा कि अबकी मर्तबे तुम हमारी नककटी करावोगी ।

(दे० स०) कुछ मुस्कुरा कुछ प्रेम जना, हाथ जोड ।

महाराज ! क्रोध न करैं, मैं आपकी दासीहूँ, आपकी जैसी मर्जी होगी वैसे ही होगा, पर यहतो फरमाइये कि नककटी कैसी कही ?

(मुं० ही० लाल) हुंह, कहती है नकक्टी कैसी, हम इतने बडे रईस, हमारा इतना बडा नाम उसके लडकेकी शादी और उसमें नाचनूच नदारद, फूल फुलवाड़ी नदारद, आतशबाजी नदारद, फिर नककटी नहीं तो और क्या है ?

(दे०स०कुँ०) महाराज ! गुस्ताखी माफ, यह नककटीकी बात नहीं, किंतु प्रशंसा योग्य है ।

(मुं० ही० ला०) एक तुम प्रशंसा करोगी, और तो सिवाय निंदा, और उपहासके प्रशंसा कोई न करेगा ।

(दे० स०कुं०) महाराज मैं किस हिसाबमें हूं, जितने संसारमें बुद्धिमान हैं, और जहांतक कायस्थसभायें हैं. सब आपकी प्रशंसा करैंगी, आपकी बड़ाई, आपका नाम सारे अखबारोंमें दर्ज होगा, जो चिरकालतक स्थित रहैगा।

(मुं०ही० लाल) हां यह बात तो है, सभाके लोग तो अवश्य प्रशंसा करैंगे, पर, मैं और लोगोंसे डरता हूं, कि वे जरूर मेरी निंदा करैंगे।

(दे०स०कुं०) महाराज! मेरी जानमें तो। बुद्धिमानोंकी प्रशंसा और निंदाका ख्याल करना चाहिये, अबुधजनोंकी बातपर बुधजन कान नहीं देते, और फिर महाराज आप देखते नहीं? कि हमारीजात इसी व्याहशादीके फजूल खर्चियोंकी सबबसे कैसे दुर्दशाको प्राप्त होरही है, आप सरीखे उत्तम पुरुषोंको अवश्य ऐसे ऐसे कार्योंमें ऐसा व्यवहार, और ऐसी रीति अंगीकार करना चाहिये जो और सामान्य पुरुषोंके लिये नमूना और उपदेशक हो।

(मुं०ही०लाल) अजी सभामें तो मैं भी यही कहाकरता हूं और अनेकभांतिसे औरोंको सिखावन दिया करता हूँ, पर क्या करूं अपने ऊपर जब आ पडती है, तब सभा वभाका ख्याल सब भूलिजाता है गोसाँई तुलसीदासकी वही कहतूत होजाती है।

चौ०—पर उपदेश कुशल बहुतेरे। जो आचरैं सो नर न घनेरे॥

(दे०स०कुं०) महाराजका फर्माना बहुत ठीक, अकसर यही हाल है, कि लोग सभामें बैठ, हांमें हां मिलाया करते हैं, लम्बा चौड़ा व्याख्यान दिया करते हैं पर कार्रवाई करतेवक्त कुछ औरही मति होती है. और इसीसे तो अभी हमारी जातिसे दरिद्रता, और तबाही दूर नहीं हुई, नहीं तो अबतक तो कबकी कब हमारी कौमकी हालत सुधर गई होती।

(मुं०ही०लाल) तुम्हारा कहना यथार्थ है, बेशक अभीतक हमारी कौम अपनी हालत सुधारनेपर मुस्तैद नहीं है, और औरोंको क्या कहूँ, मुझीको देखो, कि क्या क्या खफ्तपनेकी बात मैंने तुमसे कही है, जो तुम्हारी ऐसी समझदार और लायक औरत न होती और इसतरह हमें न समझाती, तो न मालूम हमारा हाल आज क्या हुवा होता, जरूर हम कर्ज काढकर अपने लिये शोकका सामान करलेते ।

अच्छा, अब इस तुम्हारी उचित मतिसे सम्मति करके तुमको धन्यवाद देता हूँ, और आशा करता हूं कि सर्व स्त्रियां तुम्हारी तरह ऐसे ऐसे अवसरों और कार्योंमें अपनी उचितमतिसे व्यर्थ व्ययसे अपने धनोंकी रक्षा करें । अच्छा अब मैं बाहर जाता हूँ दर्बारका कुछ जरूरी काम करना है ।

(दे० स०कुँ)महाराज ! एक बिनय और सुने जाइये ।

(मुं० ही० ला०) कहो ।

(दे०स०कुँ०) महाराज ! वहां लोगोंको नानाप्रकारका खयाल होगा, "कितनी बरात आवेगी" कैसी आवेगी और इस खयालसे ठीकठीक सामान करनेमें बडा पसोपेश होगा, यदि आपकी आज्ञा हो तो एक पाती लिखवाकर भेजदों, जिससे उनलोगोंको एक अन्दाजा मालूम होजाय. और उस मुताबिक सामान करैं

(मुं०ही०लाल) बेहतर ।

यह कहि मुं०हीरालाल बाहर चलेगये और दे० स० कुँ० ने चिट्ठी लिखाय पंडितको दे, विदा किया ।

(मुं०सर्वसुखलाल और देवी सु० कुँ० की बातचीत)

(दी०) अब ब्याहके दश दिन बाकी हैं, बतलावो तो सही क्या काम हुवा, क्या बाकी है ?

(दे० सु० कुँ०) महाराज! यह फिहरिस्त मौजूद है, मुलाहिजा करैं, और भंडार खानेमें चलकर सब चीजोंको देखलैं।

दीवानजी भंडारखानेमें जाय सब चीजोंको देखनेलगे, और उमूदा इन्तजाम और अति सुंदर रीतिसे रक्खा देखि मनमें बहुत प्रसन्न हुये।

(दे० सु० कुँ०) महाराज! और जो काम बाकी हो उसके लिये आज्ञा दी जाय।

(दी०) मेरे जानमें तो अब कुछ काम बाकी नहीं है।

(दे०सु०कुँ०)महाराज! इतना काम और होजाना चाहिये।

१ जिस बागमें जनवासा दियाजाय, उसकी सफाई अच्छी तरह करा दी जाय।

२ जिस स्थलमें खीमा, शाहमिआना रहै वहांकी जमीन अच्छी तरह बराबर करि लिपायदी जाय।

३ खीमें अपने तरफसे आप खडा करा दीजिये, और उसमें फर्शभी अपना बिछवा दीजिये और वहां लिखभेजिये कि आप फर्श और खीमेका तरद्दुद न करैं।

४ बागमें एक किनारे छप्परकी छावनी पडजाय, लकडी, बरतन, जिन्स आदिक जो कुछ बारातका सामान है, वह सब छावनियोंमें अलग २ रखदिये जाँय, मेहनती, मुस्तैद और ईमानदार आदमी हर चीजोंपर अलाहिदे २ तायनात करदियेजाँय।

कुछ सिपाही सब चीजोंके पास हिफाजतके लिये रहैं।

दो चार आदमीके तअल्लुक यह काम कर दीजिये कि वह सबका काम देखा करैं।

एक फिहरिस्त लिख डालिये, जिसमें मालूम रहै कि फलाना काम फलानेके तअल्लुक है।

सबको अच्छी तरहसे ताकीद करदीजिये, कि अपना २ काम बहुत होशियारी और मेहनतसे करैं, और सब काम अपने अपने समयपर अर्थात् ठीक वक्तपर हों, जिसके तअल्लुक चाय और मिठाई हो उस्से कह दीजिये, कि दिन उगते उगते सबको पहुँच जाय, पान, तमाकू, सुरतीवाले लोगभी उन्हींके साथ साथ सब चीज देतेजायँ, और इस अन्दाजसे देतेजायँ कि सबको दिनभरके लिये काफी हो, बारबार उनको मांगना, और हमको देना न पडै।

पहर दिन चढते चढते दोवक्ता जिन्स सबको तकसीम कर दियाजाय ।

लकडी, बरतनभी सबको हिसाबसे दे दियाजाय ।

घोडोंको दाना घास, हाथियोंको रातिब, सब चेत करके बांट दियाजाय ।

जब सब चीज बँटजाय तो सिपाही और मुन्तजिम लोग फिर बारातमें जाय जाय दरियाफ्त करैं, जिसको जो चीज न पहुँची हो, वा कम हो, वह फिर उनको दिया जाय, जिसमें किसीको किसी बातकी शिकायत न हो, बाकी घरमें बनाने भरका जिन्स मैं अलग घरमें रखलेतीहूँ, घरमेंका जो कुछ काम होगा, मैं अपने शागिर्दों समेत कर करायलूंगी ।

और हां महाराज ! एक चिट्ठी वहां अर्थात् अनूपनगरमें लिख भेजिये, कि व्याहका सब सामान सभाके नियमानुसार हो ।

१–डाल गहनाभी उसी नियम अनुसार हो, अर्थात् गहनेके नामपर सिर्फ टीका आवै, और जो कुछ उनको देना होगा, जब चन्द्रकला वहां जायगी तो देलेंगे ।

२–बारातमें बिरादरीके लोग तो चाहे जितने आवें, परन्तु और आदमी कार्यसे अधिक न आवें जिसमें हमसे उनकी सेवा टहल बनपडै ।

३–अगुआनीभी दिन रहते होजाय ।

४–फूल फुलवाडी, आतशबाजीकाभी बहुत सामान नहीं होना चाहिये ।

यह बात होरहीथी कि मनकिया लौंडी बाहरसे दौड़ीआई और कहा "महाराज ! अनूपनगरसे एक पंडितजी आयेहैं और वहांकी एक चिट्ठी लायेहैं" ।

(दी०) जा चिट्ठी इसी जगह मांगला ।

मनकिया गई और चिट्ठी लाय दीवानजीको दिया दीवानजी चिट्ठी ले बांचनेलगे ।

चिट्ठी।

राम १.

स्वतिश्री सर्वोपमायोग्य मर्यादसागर दीवानजीको नमस्ते–यहां सर्वप्रकार आपकी कृपासे आनंदहै, आपका सपरिवार सर्वदा कुशल चाहिये ।

यह हमारे थोडे हर्षका हेतु नहीं है. जो यह शुभ संबन्ध हमारे आपके बीचमें ठहरगयाहै. परमेश्वरसफल और निर्विघ्न समाप्त करै।

दो चार बातोंकी इत्तला देने, और आपकी राय लेनेको यह विनयपत्री लिखनेकी जरूरत हुई ।

हमारी बिलकुल राय है कि व्याहका सब सामान सभाके नियमानुसार हो, परन्तु हमको यह शंकाहै, कि आपके संबन्धी, और सज्जनलोग इसबातको पसंद न करैं जैसे ।

१–गहनेके नामपर सिर्फ एक टीका आवैगा, आपके वहांकी तो मैं नहीं कहिसक्ता, परन्तु अकसर जगहका यह हाल देखाहै कि औरतें कहती हैं ।

" ए मेरी बेटीको डब्बाभर गहना न लावैंगे, तो मैं व्याह न करूंगी" ।

२—बारात थोडी आवैगी, बिरादरीके लोग तो अलबत्ता डेढ दो सौ आदमीसे कम न होंगे, उनके सबबसे जो कुछ बरातकी अधिकता होय, परंतु और जरूरतसे सिवाय आदमी न आवैंगे, हाथी घोडेभी कम आवैंगे, इसके वास्तेभी औरतैं कहीं यह न कह दें, कि ऐ दशो बीस हाथी नहीं लाये, ई कौन टुटहू बरातआई है।

३—हमारी इच्छा है कि द्वारचार दिन आछत होवे जिसमें सब कोई सुबास पावैं ।

४—नाचको हम अभी नहीं कहिसक्ते कि आवैगा या नहीं, परन्तु इतना तो अवश्य होगा, कि, पतुरिया जो अति पापकी मूर्त्ति हैं, इस शुभकार्यमें न आवैंगी, हां अगर समयपर कोई कथक गुणी गवैया मिलगया तो आवैगा, नहीं तो उसकी जगह कभी पंडितोंकी सभा होगी, कभी इधर उधरके लड़कोंका लेक्चर होगा, कभी लडकोंकी परीक्षा होकर उनको इनआम मिलैगा, कभी लेक्चरोंमें सभाओंके फायदे देखलाये जायँगे, इत्यादि व्यवहारोंसे समय व्यतीत, और चित्त प्रसन्न किया जायगा ।

और साहेब, हमारे इहांसे फूल फुलझाडी, आतशबाजीका भी बहुत बन्दोबस्त नहीं हुवाहै, सो इसके वास्तेभी कोई नाखुश न हो।

यद्यपि मुझे यह निश्चय है कि आप सरीखे सदाचारनिष्ठ पुरुषके घरमें कोई ऐसा न होगा, जो इसके विरुद्ध हो, परन्तु अपने मनका खटका मिटानेको यह विनयपत्री भेजीहै ।

आशाहै कि हमारे ऊपर सदा कृपादृष्टि रखकर सपरिवार अपने कुशलानंदसे सर्वदा मुझे याद और कृतार्थ किया कीजियेगा इति।

आपका शुभचिंतक—
हीरालाल,
मिती फागुनवदी ५.

(देवीसु०कुँ०) इन बातोंको सुनि बहुत प्रसन्न हुई, और कहा "महाराज पातीका जवाब लिखवाय दिया जाय, दीवानजी बाहर आय पंडितजीका सर्वप्रकार सत्कार करि, दूसरे दिन पाती दे, पंडितजीको विदा किया, पंडितजी अनूपनगर पहुँचि, पाती मुं० हीरालालको दिया, वे पाती ले, घरमें जाय, देवी सत्यवती कुँ०को सुनाने लगे।

राम १.

सिद्धश्री श्रीमान्, महाशय, नमस्ते २. आपकी कृपापत्रीसे हमको बहुत बड़ाई, और कुशलक्षेमका हाल पायके अति आनंद हुवा. परमेश्वर सदा आपकी कुशलतासे हमको आनंद देता रहै।

समाचार यह है कि जब आपके पंडितजी हमारे द्वारपर आये, उसके थोडे अरसा पहिले घरमेंसे बुलावा आयाथा, मैं घरमें गया तो कहागया कि एक पाती इसमजमूनकी लिखिभेजीजाय, सो अहो हर्ष कि जिन बातोंके लिये आपसे विनय करनेको चिट्ठीके वसीलेसे कहागयाथा, वही कुल बातैं आपकी कृपापत्रीमें लिख आई हैं।

स्त्रियोंके खयाल बेशक बहुधा ऐसेही होतेहैं जैसे आपने लिखेहैं, परंतु यहभी आप जानतेहैं कि जहां औरतें कुछ विद्या पढेनहीं होतीं बिलकुल जाहिलजपट और निपट निकम्मी होतीहैं वहां उनका ऐसा खयाल होताहै।

यहां आपकी कृपासे किसीका ऐसा खयाल नहींहै यहां तो औरतोंका हरबातमें यही इसरार रहताहै कि, कुल काम सभाके अनुसार हो, शास्त्रविरुद्ध कोई काम न हो।

अब यही अभिलाषा लगीहै कि आपके चरण मुबारक हमारे द्वारे आवैं, और हम उनको पूजिकै पावन होंय यहां खीमा, और

फर्स आदिका सब सामान तैयार मिलैगा आपको अपने साथ लानेकी जरूरत नहीं है इति ।

आपका सेवाभिलाषी–

सर्वसुख,

मिती फाल्गुनवदी ९.

इस पातीसे वहांभी बडा हर्ष हुवा ।

(महाराजा धर्मशील और मुन्शी सर्वसुखलालकी बातचीत)

जब व्याहके पांच दिन बाकी रहगये तो राजासाहेबने दीवानजीको बुलायके कहा ।

(राजासाहेब) आपकी कन्याका विवाहहै ?

(दीवानजी) महाराज !

(रा०)तो हमारे योग्य जो कुछ काम हो उसके कहनेमें सकुच न कीजिये ।

(दी०) महाराज ! सब सर्कारहीका भरोसा है, और जो कुछ हुवा, होता है और होगा, सो सब सरकारहीकी कृपासे, अब इतना और हुकुम हो जाय कि, तम्बू, शाहमिआना, कनात पूर्ववाले सरकारी बागमें खडा होजाय, और उसके नीचे बिछावन बिछजाय, हिफाजत (रक्षा) के लिये आदमी तायनात करदिये जांय।

राजाजीने तुरंत नौकरोंको आज्ञा दिया कि सब सामान दीवानजीके इच्छानुसार हो जाय, और पचास सिपाही और दश मुतसद्दी दीवानजीके सुपुर्द करि कहा "जो कुछ काम हो इनसे लीजिये और जो कुछ घटै उसके लिये सर्कारमें इत्तला कीजिये"।

(दीवानजी) उठके प्रणाम किया और चलने लगे ।

(राजाजी) दीवानजी थोडा और बैठजाइये मुझे कुछ और आपसे पूछनाहै ?

(दी०बैठकर)महाराज ! जो आज्ञा ।

(राजाजी) आपने अपनी कन्याको कोई विद्या कोई गुण ढंगभी सिखलायाहै ?

(दी०) महाराज! मैंने तो उसकी शिक्षा उसकी मांके तअल्लुक करदीथी सो उसकी मांने उसे भाषाविद्या, और स्त्रीशिक्षाके विषयमें दोचार ग्रन्थ पढायाहै गणित विद्याभी कुछ उसको सिखलायाहै सीना पुरना, कशीदा काढना थोडा २ यह सबभी उसको बतलायाहै ।

(राजाजी) उसका कुछ कशीदा काढ मुझेभी दिखलाइये और उसको कल्ह मेरे कोटमें भेजदीजिये, तीसरे पहरको पालकी उसके लेनेको जायगी ।

(दीवानजी) बहुत अच्छा जो आज्ञा ।

यह कहि दीवानजी घर आये, और देवी सु०कुं० से सब समाचार कहि सुनाया ।

(दे०सु०कुं०) ने चन्द्रकलासे कहा "बेटी इतने जूनसे कल्ह तीसरे पहरतक जो कुछ कशीदा तुझसे काढते बनै वह काढ, राजाजीने देखनेको मांगाहै, और तुझको भी कल्ह बुलायाहै" ।

यह सुनि चन्द्रकला प्रसन्नचित्त हो कशीदा काढनेका सामान लेकर बैठी, और राजाजीके वास्ते एक रूमालपर सच्चे रेशमका कढाव निहायत सफाईसे किया, और उस रूमालके मध्य कढावहीमें यह दोहा लिखा ।

दोहा–जबलों रवि शशि उदित नभ, धरा धरणि धर शीश ॥
यश प्रताप महराजको, देहिं वृद्धि जगदीश ॥ १ ॥

और श्रीमहारानीजीके निमित्त एक रेशमी चादर पर कढाव करके उसकेभी मध्यमें यह दोहा लिखा ।

दोहा–सिन्धुमध्य जबलों सलिल, इन्दुमध्य परकाश ॥
अचल रहै महरानिको, सुख सुहाग सुविलास ॥१॥

उस रूमाल और चादरपर उसने ऐसा कढाव किया था, कि जो देखता वह देखतही रहिजाता ।

दूसरे दिन तीसरे पहरको सुखपाल और राजमहलकी लौंडियां चन्द्रकलाके लेनेको आई ।

चन्द्रकला बिलकुल पोशाक अपने हाथका सिया कढाव किया पहिन और रूमाल चादर ले सुखपालमें सवार हो राजमहलमें आई, निहायत अदबसे रानीसाहेबके पाँ लागि आशिष पाय बैठ गई, इतनेमें राजाजीभी आय कुरसीपर बैठ गये और कहा "बेटी कुछ अपना कशीदा काढलाई है ? हम देखा चाहतेहैं," उसने अदबसे वह रूमाल निकालके राजाजीके आगे और चादर रानीजीके आगे रखदिया, राजाजी और रानीसाहेब उन्हें देखकर फड़क उठे और उठाय उठाय देख देख अति प्रसन्न हो सराहने लगे, इतनेमें दोहेकी ओर दृष्टि गई, उसको पढा, पूछा कि, बेटी यह दोहा बनाया किसका है, चन्द्रकलाने सकुचसे कहा "इसी लौंडीका" यह सुनि राजाजी अति प्रसन्न हो रानीसे कहा, देखो इसका गुण धन्यहै इसकी मां जिसने ऐसा ऐसा गुण इसको सिखलायाहै, हमको आजतक नहीं मालूम था कि वह ऐसी गुणवानहै, नहीं तो हम अपनी लड़कियोंको शिक्षा निमित्त उनके सुपुर्द करदेते, यह कहि राजाजीने कहा अच्छा सर्वभूषण सोने चांदीके दोहरे दशहजार १००००) के लागतमें और एक जोडा इसके और एक इसके माके वास्ते पाँचहजार ५०००) के लागतमें तैयार कराय इसको देव ।

फिर चन्द्रकलासे कहा बेटी! हम तुझसे अति प्रसन्न हैं कुछ तूभी हमसे माँग. जो माँगैगी सो पावेगी ।

चन्द्रकलाने हाथ जोड विनय किया, महाराज! आपकी प्रसन्नता अति दुर्लभ और सकल सुखकी देनेहारी है, जो आप प्रसन्न हैं तो हमको सब कुछ प्राप्त होगया, पर जो आपकी आज्ञा है तो मैं यह मांगती हूँ कि एक स्त्रीपाठशाला इस नगरमें कायम होजाय और सुबोध सुबोध शिक्षक उस पाठशालामें रहैं, भाषा विद्या और सीना पुरना कशीदा काढना सब सिखलानेका बन्दोबस्त रक्खा जाय मासिकपरीक्षा हुवा करै, प्रवीन पाठकोंको इनआम मिला करै, गरीब लडकियोंके वास्ते खाना कपडा और पढने लिखनेका सब सामान सरकारसे मिलाकरै और नगरमें हुकुम जारी होजाय कि शूद्र छोड और तीन वर्ण अर्थात् ब्राह्मण क्षत्रिय और वैश्यकी लडकियां उस पाठशालामें विद्या पढैं और गुणढंग सीखैं।

राजाजी तो यह जानतेथे कि यह या तो रुपया पैसा वा गहना कपड़ा मांगैगी, परन्तु जब उसने यह माँगन मांगा तो राजाजी उसकी बुद्धिमानीपर आश्चर्य करनेलगे और अति प्रसन्न हो कहा बेटी तेरा मांगन तुझे दिया और यह पाठशाला हम तेरेही नामसे स्थापित करैंगे।

यह कहि सवासौ १२५ अशर्फी उसको देकर विदा किया और कहा गहना जोड़ा कल्ह जायगा।

चन्द्रकला अपने घर आय अपने मांसे सब वृत्तांत कहा, मां अतिप्रसन्न हो उसका मुँह चूमनेलगी और कहा देख बेटी विद्या बुद्धि गुण ढंग ऐसेही चीज हैं यह सब प्रतिष्ठा गुणढंगकी हुईहै तेरे शरीरकी नहीं।

(ब्याहका दिन और देवी सु० कुँ० का इंतिजाम।)

अब आज ब्याहका दिन है, नगरमें कोलाहल होरहा है, स्त्रियां मंगलगान कररही हैं, कामकाजू आदमी अपने अपने काममें लगेहैं दे० सु० कुँ० और दीवानजी निर्जलव्रतहैं।

दीवानजी बाहरका इंतजाम कररहे हैं, देवी सु० कुँ० भीतरका बन्दोबस्त कररही हैं, चन्द्रहास आदिक अपने सब शागिर्दों और बिरादरीकी लायक लायक स्त्रियोंको काम बाँटरही हैं ?

१ देवी सुखराशिकुँ०, देवी हुलासकुँ, देवी नौरतनकुँ०, देवी रूपकलीकुँ०के तअल्लुक रसोइयां बनानेका काम करके कहा "मेरी सरदारिनो ! मेरी सखियो ! आप सबलोग मिलकर रसोई बनानेका काम करैं ! और ऐसा करैं कि दसबजे दिनको और रातकोभी दसही बजेतक सब रसोइयां तैयार होजाया करे ।

लौंगी, इलायची, मद्धो, सिद्धो कहारिनोंको बुलाके कहा "चौका देना, बरतन मांजना, अद्दहन देना, चूल्हेमें आग जलाना, भंडारसे जिन्स लाना, चावल धोना, आटा गूंधना, मसाला पीसना इत्यादिक जेतना चौकेके मुतअल्लिक काम है सो तुमलोगोंके तअल्लुक कियाजाताहै, दिनको सातबजे और शामकोभी सातही बजेके भीतर चूल्होंमें आग जलजाय, रसोइयां बनाना शुरू होजाय और खबरदार अपना अपना काम बहुत सफाई और मुस्तैदीसे करना किसी चीजका जराभी देर या अकाज न होनेपावे, और सिवाय इनकामोंके दूसरे कामोंकी जवाबदिही तुम सभोंसे नहीं लीजायगी" ।

२-फिर देवी चन्द्रहासकुँ०, देवी चन्द्रमुखी कुँ०, देवी रजवंत कुँ० देवी गुणवंतकुँ०से कहा "तुमलोग भंडारखानेमें रहो, कुंजी मुझसे लेलो, और सब चीजोंको देख डालो, जिन चीजोंकी भीतर, वा बाहर जरूरत हो तुम लोग भंडारखानेसे अन्दाजके साथ दिया करो, भीतर रसोइयांके वास्ते लौंगी, और इलायची चीजें मांगें उनको दिया करो और बाहरके लिये मनकिया, और मनोहरीके मांगने मुताबिक दिया करो" ।

३–असौआ बारिन और बुंदउवा नाइनसे कहा "मेरे खासघरकी हिफाजत, और चन्द्रकलाकी खिदमत तुम दोनोंके सुपुर्द कीजाती है,नुनसे चन्द्रकलाको दतुइन कुल्ला कराना पानी पिलाना घरमेंकी सब चीजोंका जतन करना, दूसरा कोई खबरदार बिला मेरे हुकुम घरमें आने जाने न पावे जो चीज गुम होगी, वह तुमलोगोंके जिम्मे होगी"।

४–फिर राजवंशी कुँवरि और सरयूदेइया लौंडिनसे कहा "तुमलोग पान लगाया करो, जो औरतें घरमें आवें जाँय सबको पान इलायची देना, खबरदार बिना पान पाये कोई औरत न रहजाय"।

(वे दोनों) देवीजी बाहरके लियेभी ?

(दे०सु०कुँ) नहीं बाहरके लिये बाहर इन्तजाम है, भीतरसे कोई वास्ता नहीं।

फिर चन्द्रज्योतिकुँ०से कहा,"बेटी तू मेरे साथ साथ रहा कर, और कागज पिन्सिल अपने पास रख जो कुछ मेरे हाथसे खर्च हो, वह बराबर लिखाकर"।

(चन्द्रहास आदिक) देवीजी गीत गाना किसके तअल्लुकहै ?

(दे०सु०कुँ) गीत गाना सबके तअल्लुकहै, जो औसरपर अपने कामसे खाली रहें, और जिनको अच्छे २ गीत आवें।

(चन्द्रहासकुँ० सम्पतिकुँ०) देवीजी हम लोगोंको खूब खूब भडौये याद हैं, हमीं लोग गावैंगी।

(दे०सु०कुँ०) दुर नालायक, भडौवा गाना कैसा रे, खबरदार भडौवा एकभी न होगा, मैं नये रीतके गीत लिखदोंगी, तुम लोग वही याद करके गाना।

(बारातका आना और व्याहका होना)

दो घडी दिन बाकी रहे खबर हुई कि, बारात आपहुँची, नगरमें खडबड हुवा, इधर उधरसे अगुवानी हो द्वारपूजा हुवा, और बारात जनवासेको गई, लड़का घरमें आया, व्याहकी रीत होनेलगी, पंडितलोग शांति पढने लगे, नानाप्रकारके सोहाने बाजे बजने लगे, स्त्रियां झंझाकाल मंगलगान करने लगीं, विधिवत् व्याह हो लडका बारातमें गया, आधीरातके भीतर घराती बराती सब खा पी फरागत होगये, और सबको सब तरहका सुवास दियागया ।

चंद्रकलाकी बिदाईके विषयमें दीवानजी और दे० सु० कुँ० की बातचीत ।

दूसरा दिन है, दोपहरका समय, दीवानजी घरमें लेटेहैं, देवी सु०कुँ० चौकीपर शिरहाने बैठी मोरछल कर रही हैं ।

(दे० सु० कुँ०) महाराज ! एक बातकी सलाह तो हम आप भूलही गये ।

(दी० जी चौंककर) एं कौन बात ?

(दे०सु०कुँ०) महाराज यह बात कि, सब काम तो भगवान्‌की कृपासे लोक वेदकी रीतिसे अच्छा हुवा, बाकी रुखसतीके निस्बत क्या राय है?मेरा मन तो जब चेत करतीहूं कि वह बिदा होगी तो बौडाय जाताहै, बाकी फिर मैं धीरज धरकर यह चाहतीहूँ कि जैसे सब काम विधिवत हुवा तैसे यह कामभी शास्त्रहीके अनुसार हो जाय तो अच्छा है, आखिर तो हमको एक दिन उसके वियोगका दुःख सहनाहीहै, न आज कल्ह सही, तो काहेको शास्त्रीदोष अपने शिर लियाजाय ।

(दीवानजी) यह कौन बात तुम सुनाती हो, मालूम होताहै कि चन्द्रकला तुम्हें भारी होगईहै, उसकी मुहब्बत तुमको नहींहै, भला चन्द्रकला जिस दिन हमारे घरसे जायगी, उस दिन हमारा

घर अंधेरा न होजायगा; क्या फिर हम अपने होशमें रहैंगे ? भाई हमारे सामने उसकी विदाईका नाम न लेव ।

और शास्त्रीदोष क्या है क्या शास्त्रमें लिखा है कि ब्याह पीछे घरमेंसे लडकी निकालदेव ?

(दे० सु० कुँ०) महाराज आप फरमाते हैं कि, तुमको चन्द्रकलाकी मुहब्बत नहीं, तो खैर, यह हाल तो भगवान जानैंगे कि मेरा मन जानैगा, बाकी यह जो आप कहते हैं कि हमसे उसकी विदाईका नाम न लेव, तो मैं आपसे पूछती हूं कि कबतक, क्या हमारे घरसे वह जावैं न करैगी, कि यह साइत नहीं दूसरी साइत, जो कहिये, दूसरी साइत तो क्या दूसरी साइत उसकी मुहब्बत न रहैगी क्या दूसरी साइत में उसके वियोगका दुःख न होगा ।

और शास्त्रीदोष क्या है यह जो आपने पूंछा, तो महाराज मैं स्त्री जात, शास्त्रका हाल क्या जानों, पर इतना जानती हूँ कि जो चीज जिसको दान दियाजाय, वह चीज उसीकी है, जब वर कन्या दोनों सयाने हों, तो गौन अगोरनेका कौन प्रयोजन है ?

महाराज ! अपने लडकेबालेकी मुहब्बत किसको नहीं होती, बाकी संसारका जो व्यवहार है वह सबको करनाही होता है, अब वह अपने घर जाय, कुशल रहै यही आशिर्वाद दीजिये, और उसकी विदाईका सामान कीजिये ।

और मैं तो जानती हूँ कि जैसे यह तजवीज सभामें पास हुई है कि, सयानेपर ब्याह हो वैसेही यह तजवीजभी पास होजाना चाहिये कि ब्याहमें रुखसतीभी होजाया करै, गौनेका मद्दही निकाल दियाजाय ।

(दीवानजी) इससे क्या फायदा होगा ?

(दे० सु० कुँ०) महाराज ! आप सुजान होके अजानकी तरह पूछते हैं ? जिनके घर धन दौलत बहुत है उनके वास्ते तो कोई

बात नहीं, परंतु जो लोग धनहीन हैं उनको तो अवश्यही व्याहमें रुखसती करके अपने शिरका भार उतारदेना चाहिये, इसकी क्या जरूरत कि एकबार तो किसी प्रकार कर्ज वाम लेकर व्याह करैं, और फिर वोतनाहीं खर्च करके गवन करैं, एक काम मानो दोबार करना हुवा ।

और यह भी आप जानते हैं कि इस समय हमारी जातिमें धनी कम और निर्धन बहुत हैं, फिर निर्धन पुरुषोंको तो अवश्यही इस बातसे फायदा होगा ।

फिर दूसरी बात यह है कि व्याहमें रुखसती हुई नहीं, और गौन दो तीन वर्षतक बनता नहीं, जीवनका कोई ठेकाना है नहीं, कदाचित इसीके भीतर पुरुषका मरण होगया, तो बतलाइये उस स्त्रीको कैसा शोक और पछतावाका कारण होगा, और व्याहमें रुखसती होजानेसे यह होगा कि जै दिन दोनों जिये, तैदिन संसारका सुख भोग करके अपने मनका अरमान मिटालिया ।

फिर एक बात इसमें और भी है, कि सयाने पर तो व्याह हुवा, और दो तीन वर्षतक गौना हुवा नहीं, मन जैसा मतंग है वैसा विदितही है "जावनी दिवानी" मसल मशहूर है, कहीं स्त्री, अथवा, पुरुषहीका मन बिगडगया, तो चलिये इहलोक परलोक दोनों नष्ट होगये ।

महाराज ! जो भली प्रकार सब बातोंका विचार कियाजाय तो व्याहमें रुखसती करदेना बहुतही उचित और हित है ।

(दीवानजी) तो हमारे इहां यह बात कैसे होगी ? हमारे इहां तो व्याहमें रुखसती सहतीही नहीं ।

(दे०सु०कुँ०) महाराज ! यह भी तो आपको मालूम होगा कि ·· से नहीं सहती ।

(दी०) आगे तो बराबर व्याहमें रुखसती होती रही और सब तरहसे अच्छे होता रहा-बाकी हमारी छोटी बहिनके व्याहमें रुखसती हुई थी, वह दोई तीन महीनेके अन्दर जातीरही।

(दे०सु०कुँ०) तो महाराज! यह तो एक संयोगकी बात है मरना जीना दैव आधीन है, जिसका जैसा होनहार होता है, वैसेही होता है, क्या आप कहिसक्ते हैं, कि यदि वह व्याहमें रुखसती न होती, तो न मरती?

(दी०) क्या जाने बची जाती।

(दे० सु० कुँ०) महाराज! माफ कीजिये ऐसी भोली भोली बातैं मुझे न सुनाइये, विधि ब्रह्माका लिखंत अटल और अमिट है सहना वेसहना, यह तो मनका एक भ्रम है, मेरे जानमें यह शंका बुद्धिमानोंके निकट महा तुच्छ है।

(दी०) अच्छा भाई जो तुम्हें इसकी शंका नहीं है तो जानेदो बिदाकी तैयारी करदो, पर, यह देखलो कि कल्ह कौन दिन है।

(दे० सु० कुँ०) महाराज कल्ह बृहस्पतिका दिन है।

(दी०) तो बस चलो अब बिदाई हो चुकी।

(दे० सु० कुँ०) एं महाराज क्यों?

(दी०) अजी क्यों क्या, बृहस्पतिदिन तो हमारे इहां मान हैं उसदिन यह शुभकार्य कैसे होगा।

(दे० सु० कुँ०) महाराज "मान" है, इसका क्या मतलब?

(दी०) इसी दिन हमारे पिताका वैकुण्ठवास हुवा है इसीसे यह दिन मान होगया है।

(दे० सु० कुँ) तो महाराज! वैकुंठमें जाना बुरा है जो वह दिन मान होगया।

(दी०) यार तुम तो हिन्दीकी चिन्दी उडाती हो, अजी वैकुंठवाससे यह मतलब है कि "मरगये" चाहे वैकुंठमें गये वा कहीं गये, यह कौन जानता है ।

(दे०सु० कुँ०) महाराज यह आपको मालूम है कि, आपके पिताके पिता और उनके पिता और फिर उनके पिता किस दिन मरे हैं ।

(दी०) यह तो मुझे मालूम नहीं और फिर इस पूछनेसे तुम्हारा हेतु क्या है ?

(दे०सु०कु०) महाराज मेरा हेतु यह है कि, सातही तो दिन ठहरे, फिर जो सात पुरुष इन्हीं सातों दिनोंमें एक एक दिन मरजाँय, तो सातो दिन तो मान होगये, अब शुभकार्य करनेको कहांसे कोई दिन आवेगा ।

दीवानजी यह बात सुन हँसने लगे और कहा ।

(दी०) अच्छा, बिदाकी तैयारी करदो, पर एक दिनमें कौन सामान हम करेंगे ?

(दे० सु० कुँ०) महाराजको कुछ सामान करना नहीं है सब सामान मौजूद है, गहना तो दोहरा सोनेचांदीका उसको आपका बनवाया था, फिर राजाजीके यहांसे बिलकुल गहना सोनेचांदीका इतना आया है कि, कई आदमी पहिनें ।

और वह तो सोनेचांदीका गहना कभी पहिनतीभी नहीं, वह तो सब जेवर फूलोंका ऐसा अच्छा बनाती है कि देखतेही बनता है वह छवि सोनेचांदीके गहनोंमें कहां आती है, जिसदम फूलोंका टीका, कर्णफूल, कंठा, कंगन, हार पहिनती है देखते मन मोहित होजाता है, जब मैं सोनेचांदीका गहना पहिननेको कहती हूँ, तो वह कहती है, कि "मां ! हमको तो सोनेचांदीका गहना भार बुझाता है

नाहक इतना रुपया गहनोंमें खर्च कियाजाताहै, बदनपर भार अलग, जोखिम अलग, कहीं ये हार झनका, कहीं वो हार मनका, कहीं ये हार गिरा, कहीं वो हार अझुराया. सो हमको तो सोने-चांदी का गहना पसंद नहीं है"।

जोडेभी कुछ डालके हैं, एक भारी जोड़ा जो राजाजीके यहांसे उसको मिलाहै वह है, और कई जोडे उसके पास औरभी हैं; सो कपडोंका भी कुछ तरद्दुद नहीं है और सामानभी थोडा २ सब मौजूद है।

(दी०) तो अच्छा देखलो, और जिस चीजकी कमी हो उसको कहो, जो नीज विदाही करनेकी सलाह है तो सब सामान करडालो

(दे०सु०कुँ०) महाराज कोई सामान बाकी नहीं है, अब यही बाकी है कि जब हमारे घरसे वर विदा हो उन्हींके संगही इसकीभी पालकी लगादी जाय, अब तो भगवानने उन्हींका संगी इसको कर दियाहै, अब उन्हींके संग यह कुशल रहै।

यह कह दोनों आदमी प्रेमसे अति व्याकुल हो आंखोंमें आंसू भरिलाये, थोडी देर पीछे धीरज धरकर दीवानजी वाहर चलेगये और देवी सु० कुँ० भी आंसू पोछ बाहर जाय दालानमें बैठगई।

चन्द्रकलाको पहिलेसे इसबातका खटका और खटका क्या निश्चय था कि मा मुझको विदा करैगी, अपने मा का भरा हुवा चेहरा देख ताड़गई कि "बस अब हमारे विदाईकी सलाह होगई" यह समझ मा वापके वियोगका दुःख और सखियोंके बिछुडनेका क्लेश स्मरण करके उसकाभी मन भरि तो आया, पर सम्हालकर इधर उधरकी बातें करनेलगी, और मांके पाससे उठ सखियोंको ले घरमें जा बैठी, पर मन मलीन, चेहरा उदास, आंखोंमें नीर भरभर आताथा, न लाजसे रोसकती थी, न विना रोये मन मानताथा।

यह दशा देख सखियां पूछने लगीं।

(सखियां) क्यों सखी, काहे मन मलीन चेहरा उदास देखपडताहै ऐसे हर्षके समय विस्मयका क्या कारणहै ?

(दे०चं०कुँ०) उसांस लेकर-क्या कहैं सखी।

दोहा—लखो जात नहिं ये सखी, कछु विधनाकी बात।
दिवस कहां धौं जाइहै, कहां सिराइहि रात॥

(सखियां) ऐं, क्या सखीकी विदाईकी सलाह होगई, हमलोगोंने तो अभी इसका कुछ चर्चाही नहीं सुना।

(दे०चं०कुँ०) चर्चा तो हमनेभी नहीं सुना, पर मुझे अटकलसे मालूम होताहै।

(सखियां) येंह, चलो अपना अटकल रहनेदो।

(दे०चं०कुँ०) नहीं सखी, मेरा अटकल झूँठा न होगा,

(सखियां) तो हां, यह कहो कि हमीं चाहतीहैं कि तुम लोगोंको वियोगका दुःख देकर आप सुखचैन मनावैं।

यह सुनि, चन्द्रकला कुछ लज्जा, कुछ मुसकुरा चुप होगई। जब सखियोंने जाना कि चन्द्रकला निश्चय विदा होगी तो बारी बारीसे उसको समझाने लगीं।

एक सखी।

सवैया।

काहेको हे सखी होत उदास तू सास तेरी तेरे मातु समानहै।
और येहैं महाराज बडे तोहिं मानवे को पितु ते अधिकान हैं॥
बंधुसों देवर जेठ तेरे भगिनी ननदी देवरान जेठान हैं।
पी तोहिं प्राणसमान रखैं, ससुरार तो तोको सबै सुखखान है॥

---

१ सासुर।

दूसरी सखी ।

सवैया ।

जातीहै जो ससुरार तू नारि तो बात हमारि हिये गहि राखनो ।
राखनो सांचो सनेह पती संग बात समय अनुसारही भाखनो ॥
भाखनो नीक लहो सबते जो बखानै स्वभाव हजारन लाखनो ।
लाखनों तोहिं बखानैं जबै तबहीं सखिहै फल जन्मको चाखनो ॥

तीसरी सखी ।

सवैया ।

जाती है जो ससुराल तू बोल तौ सुन्दर बोल औ चाल सँवार री ।
वार री प्राणनको पिय पाँयन आश्रय सासुको सेवा सुधार री ॥
धार री ध्यान जेठानके मानको औ ननदी देवरानको प्यार री ।
प्यार री धार सबै जनको यतनी सखि मानिले बात हमार री ॥

चौथी सखी ।

कवित्त ।

जाती ससुरार जो तू बात मानिले हमार, कार घरबारको विचार सों बनावै री । बोल चाल भावसों सनेहके लगावसो, सुभाव सों पियाको हिया भले हरषावै री ॥ सासजीको सेवाते औ शीलते ससुरजीको, मानते जेठान देवरान प्यार लावै री । कोऊ दुख पावै नाहीं सब हरषाइ जाते, धन्य ताके मात कोख धन्य सो कहावै री ॥

अब सब सखियां आशिर्वाद देती हैं ।

सवैया ।

हे सखी तोको मुबारक हो पियको मिलवो पिय कंठ लगाइवो ।
सांचे सनेह सुभायनते पिय प्रीतमके हियको हरषाइवो ॥

नीत सुरीत सुबोल सुचाल सों नीको सबैसन धन्य कहाइबो।
बारहिवार मुबारकहो तोहिं सासुर जाइबो नैहर आइबो॥

इतनेमें सांझ होगई, देवी सु० कुं०को न रहा गया, घरमें जाय चन्द्रकलाको बोला भेजा, आतेही गले लगाय रोने लगीं, चन्द्रकलाभी खूब दिल खोलकर रोई, अब सब जानगईं हल्ला होगया कि, चन्द्रकला विदा होगी, अब किसको चैन है जो सुनताहै व्याकुल हो जाताहै, बस कोई इधरसे कोई उधरसे आय आय गले मिल मिल रोने लगीं, सखी सहेलरियां धाय धाय मिलतीहैं, रोते रोते अचेत हो हो जातीहैं।

दे० सु०कुं० यद्यपि बहुत समझदार और बडी धीरज वाली थीं परन्तु चन्द्रकलाके प्रेमका प्रवाह क्षणक्षण पर उनके हृदयमें ऐसा उठताथा कि अचेत हो हो जातीथी और बारबार चन्द्रकलाको गले लगाय रोदन करती थीं।

दीवानजीभी घरमें आये, देखा कि विषादसे घर भराहुवा है चन्द्रकलाके विलापसे सबका कलेजा फटाजाताहै, यह दशा देख दीवानजी चाहतेथे कि बाहर चलेजायँ पर चन्द्रकला दौडकर पावँसे लपट रोने लगी, दीवानजीभी अति अधीर होकर उसको गोदमें उठाय यतना रोये कि, अचेत होगये, देवीसु०कुँ०ने आयके चुपकराया चन्द्रकला दूसरेको भेंटने चली गई और दीवानजी और दे०सु०कुँ० घरमें जाय बैठे और परस्पर बातचीत करने लगे।

(दीवानजी) क्यों हम कहते न रहे कि, इसके विदाका सामान मति करो आखिर अब उसके वियोगका दुःख देखो किसके सहने सानका है ?

(दे०सु० कुँ०) हाँ महाराज सचहै, पर क्या कियाजाय, संसारका यही व्यवहारहै, जो कार्य जिससमय होना चाहिये उसी समय होनेमें शुभ है, व्याहके साथ विदा अवश्यही करने योग्य है

बाकी रहा मोह मया यह तो देह रहे तक छूटता नहीं अब यह फ़रमाइये कि चन्द्रकलाको कुछ नकदभी दियाजायगा ?

(दीवानजी) जरूर देना चाहिये, पराये घर जाती है, लड़का भी अभी पढताहै, कमाता है नहीं कोई जरूरत इसको पड़जाय तो किससे माँगैगी ?

यह कहि, दीवानजी बाहर चलेगये, दे० सु० कुँ० बाहर आय देखा कि दशबजे रातका समय,बिरादरी और गांवकी स्त्रियां घरमें जमा हैं. इतनेमें आदमी बाहरसे आय जनाया कि, समधी मये बिरादरीके द्वारपर भात खाने आगये, यह सुनि दे० सु० कुँ० ने आदमियोंसे बूझलिया कि,कितने लोग चौकेपर उठनेवाले हैं और उतने आदमियोंके लिये चटपट सब चीजोंका पड़ोसा तैयार कराया, जिसमें चौकेपर बैठते बैठते परसिजाय, देर न लगै ।

इधर गानेवाली स्त्रियां सब इकट्ठे होरहीहैं ढोलककी कड़ियां कसीजातीहैं, मजीरा टुनकाया जाताहै, गानेवाली स्त्रियां शोचरही हैं कि, कौन सी गाली गावैं, कोई कहती है, सखी यह गाली गावो दूसरी कहतीहै, नहीं सखी, वह भडौवा उडावो, जिसमें सिवाय गालीके दूसरी एक बातभी न हो ।

(दे०सु०कुँ०)भी चौकेका सब सामान ठीक करके वहां आय बैठगई, देखा, कि स्त्रियां गालीके गीत गानेको चंचल चित्त होरहीहैं अपने मनमें यह शोचकर कि,गालीके गीत गानेकी रसमको बन्दकरना चाहिये, दे०सु०कुँ० बोलीं ।

(दे०सु०कुँ०) मैं सब सरदारिनोंके पांवलग कर विनय करतीहूँ कि, गालीका गीत न गाया जाय ।

(सब औरतें चौंककर) ऐं क्या कहा ? देवीजी गालीका गीत न गाया जाय ?

(दे०सु०कुँ) हां, मैं आपलोगोंसे विनय करती हूँ कि, गालीका गीत न गाया जाय ।

(सब औरतैं) देवीजी काहे ? क्या यह कोई नई बात है ? यह तो पुरानी रीत है देखिए जब श्रीरामजी जनकपुरमें व्याह करने गयेहैं तब भी गालीके गीत गाये गये हैं सो यह बात कैसे बन्द होसकती है ।

(दे०सु०कुँ) यह सत्य है कि, पुरानी रीतहै और श्रीरामजीके व्याहमें गाली गाई गई हैं, पर आपलोग जानती हैं कि, उस समय कैसे रहस्यके और कैसे छिपे छिपे गालीके गीत गाये जातेथे बड़े बुद्धिमान और तर्कनिपुणलोग तो अलबत्ते जानते थे कि, यह गालीका गीतहै पर सबके समझमें वह गालीका गीत मालूम होजाय, कभी नहीं, हां, वैसी गालियां यदि किसीको मालूम हों तो हर्षसे गावो, मैं मना नहीं करती, बाकी अब जैसी गालियां होतीहैं सबको मालूम है, अब तो ऐसी खुल्लमखुल्ला और वाहियात गालियां गाईजातीहैं कि, जिसको सुनिके मर्दलोग शरमा जातेहैं, पर हाय शोक कि, स्त्रियोंको लज्जा नहीं आती जिन बातोंके सुननेसे स्त्रियोंको लज्जा होनी चाहिये, वही बातैं वही फूहर फूहर गालियां खुद स्त्रियां चिल्ला चिल्ला गला फाड़ २ गातीहैं जिसके सुननेसे युवा स्त्रियों और पुरुषोंके मनमें ऐसी ऐसी बुरी और खराब उमंगैं उठतीहैं जो सब तरह शोक करने योग्य हैं ।

जिन औरतोंकी बोली कभी मरदोंने नहीं सुनी अब उन्हींके मुखसे उन्हींके मां बाप, भाई बहिनके सामने पराये लोग वह वह फूहर २ और घराऊ गालियाँ सुनते हैं कि, हयादारलोगोंको कानही बन्द करलेना पड़ता है हाय राम, यह कितने बड़े शोककी जगह है मैं किसी तरह ऐसी गाली गानेकी रसमको पसंद नहीं करती ।

दखिये, इसी कारण मर्दोंने महफ़िलोंमें गालीकी ग़ज़ल पढने-की रीत बिलकुल बन्द करदियाहै, हमलोगोंको भी पुरानी और निंदित रसमौंका सुधार अवश्यही करना उचितहै।

बहुतसी स्त्रियां गांव घरके नाते देवी सु०कुँ० की ननद वो भौजाई होतीथीं वे बोलीं।

देवीजी आपका कहना तो यथार्थ है पर आजकीतो यही शो-भाहै कि खूब गाली गाय बरातियोंका दिल खुश करैं, एक दिनकी गाली गाने और सुननेसे क्या किसीका दिल बिगडैगा ?

(दे०सु०कुँ०) हां हां साहिबो बहुत ठीक, पर आपलोगोंको जो बरातियोंका जी खुश करना मंजूर है तो हिलमिलके भलीप्रकार उनका जी खुश कीजिये, निरा गाली सुननेसे तो किसीका दिल खुश नहीं होता (इसपर सब औरतैं हँसपडीं)।

और यह जो आपलोग कहतीहैं कि एक दिन गालीकी बातैं सुननेसे क्या किसीका दिल बिगडैगा, सो यह आपलोगोंकी भूल है अरे। विष थोडाभी हो, तो विषही है, इसीतरह खराब बात थोडीभी हो तो खराबहीहै, यह कलियुग है, इस युगमें अच्छी बात बहुत भी हो तो उसका असर (संस्कार) थोडाही होताहै, और खराब बात थोडीभी हो तो बहुत असर फैलाती है।

(बिरादरीकी अच्छी और सरदार स्त्रियां) देवीजी आपका कहना [illegible]त्र सत्यहै, है तो यह बात जरूर वाहियात, कि जहां बाप बैठाहो [illegible]चा हो, भाई हो, औरभी बडे बूढे लोग जमा हों, वहां गाली [illegible]हसे निकालना, चेत करनेसे तो अवश्य लज्जा मालूम होतीहै, [illegible] आप कहिये कि किसतरहसे गीत गावैं, आखिर कुछ तो [illegible]नाही न पडैगा।

(दे०सु०कुँ०) बोलनेहीको थीं कि ननद भौजाइयां बोल उठीं।

(न०भौ०) आज तो न हम देवीजीका कहा मानैंगी न आप लोगोंका, आज तो हम लोग तालियां बजाय खूब गालियां गावैंगी, और बरातियोंको सुनावैंगी ।

(दे०सु०कुँ०)सुनानेसे क्या होताहै जब करके देखलावो, मसल है, "न सौ सुनी न एक देखी" ।

(अच्छी और सरदार स्त्रियां) देवीजी यह लोग तो मदमातीहैं, इनके बन्द अभी ढीले नहीं भये; यह लोग तो ऐसेही अटपट बातैं करैंगी, अब चौकेपर लोग उठतेहैं जल्द कहिये क्या गायाजाय ?

(दे०सु०कुँ०) आपलोग कुछ चिंता न करैं, चन्द्रहास आदिक नये रीतके गीत याद कियेहैं, यह लोग गावैंगी, आपलोग इनका संग दीजिये ।

येतनेमें समधी चौकेपर आया, पडोसे परोसे जाने लगे, इधर चन्द्रहास आदिक ढोलकपर थाप दे गानेलगीं ।

गीत १.

धनि भाग्य हमारे, धनि भाग्य हमारे, समधीजी जेवन आये जी। धनि सकल बराती, धनि सकल बराती, सब हमरे मन भाये जी॥ १॥ प्रभु भोजन कीजै, प्रभु भोजन कीजै, हमहिं बडाई दीजिये । प्रभु भोजन कैके, प्रभु भोजन कैके, आप विमल यश लीजिये ॥ २ ॥ तुम साजन सारे, तुम साजन सारे, हमकहँ पावन कीने सबै। हम राउर चेरी, हम राउर चेरी, आप सबै शिरताजहैं ॥ ३ ॥ मुख एक बडाई, मुख एक बडाई, राउर कैसे बखान करैं । हरिसों हम मांगैं हरिसों हम मांगैं, राउर कुशल अनन्द सदा ॥ ४ ॥ यश तेज प्रतापा, यश तेज प्रतापा, राउर दिन दिन दूनी रहे ॥ ५ ॥

गीत २.

विजय करी जेवनारे लला रौरे बिजय करी जी ॥ चित्तकी चौकी पिरीतको पीढ़ा, तापर समधी पधारे, लला रौरे विजय करी जी ॥ १ ॥ रौरे तो समधी जी सब विधि लायक, हम कहँ तारन हारे, लला रौरे विजय करी जी ॥ २ ॥ कहां रौरे समधीजी बुद्धिके सागर, कहां हम निपट गँवारे, लला रौरे विजय करीजी ॥ ३ ॥ सूखी रूखी है जो कछु आगे, भोजन कीजै सवारे, ल० ॥ ४ ॥ जो समधी चौके पर जूंठ गिराई, अति बड भाग्य हमारे, लला० ॥ ५ ॥ हम सब विनय करत कर जोरे, क्षमिये जो चूक हमारे लला० ॥ ६ ॥

इतना गीत होनेपर, देवीसु०कुँ०की ननद भौजाइयां बोल-उठीं—देवीजी अब रूखे सूखे गीत होगये, अब हुकुम दीजिये, तो एक धड़ल्लोका भड़ौवा उड़ावैं कि, जिसको सुनके बुड्ढे जवान होजायँ, मुर्दे कुलबुलाने लगें।

(दे०सु०कुँ०) हँसकर हाँ हां सच है, आप लोग ऐसही हैं, पर माफ़ कीजिये, योंही यहां बहुत से जवान जुटे हैं, जो बुड्ढेभी जवान होजायँगे तो आखिर आपही लोगोंपर न बीतैगी- अच्छा लीजिये, आप लोगोंके खातिर एक गालीका गीतभी सुनवादेतीहूँ यह सुनि चन्द्रहासने ढोलकपर थाप लगाया, और सब मिलि गानेलगीं।

गीत ३.

जब श्रीसमधीजी जेवन बैठे हो, अति बड भाग्य हमारे, हां सिया रामसे बनी रामजी ॥ १ ॥ आये जो समधीजी द्वार हमारे, तारन कुल परिवारे, हां सियारामसे बनी रामजी ॥ २ ॥ समधीजी हैं शिरताज हमारे हो, हम सब चेरी तिहारे, हां सिया रामसे बनी

रामजी ॥ ३ ॥ समधीजी आप तो ऐलीं बराते हो, समधिन कहां करि आये, हां सियारामसे बनी रामजी ॥ ४ ॥ समधिन मेरी सखी अतिही खेलाड़ी हो, खोजत यार हजारे, हाँ सिया रामसे बनी रामजी ॥५॥ धनि समधी धन समधिन मेरी हो, धन्य सकल सरदारे, हाँ सिया रामसे बनी रामजी ॥ ६ ॥ सकल बरातिन पांयन लागैं हो, करत प्रणाम जोहारे, हां सियारामसे बनी रामजी ॥ ७ ॥

(ननद भौजाइयां) क्या देवीजी आप भी खून लगाके शहीद होने चलीं, भला यही गालीका गीत है राम राम, भला जिस गीतमें खचाखच भचाभच न आवै वह कौन गालीहै ।

(देवीसु०कुं०) सुन मुसकुरा बातोंमें टाल दिया, और चन्द्रहास फिर ढोलकपर थापदे गाने लगी ।

गीत ४.

सखि बड भाग्य हमारे मेरे घर साजन आये, समधीजी काहे रौरे अइली अकेले, समधिन काहे न लाये मेरे घर० ॥ १ ॥ कुशल रहो समधी जुग जुग जीवो, जिन मेरे मन हरषाये, मेरे घर० ॥ २ ॥ धन समधी धन सुन्दर बनरा, लखि सुख हिय न समाये, मेरे घर० ॥ ३ ॥ समधीजी राउर आइव हमकहँ । रंक मनहु निधि पाये, मेरे घर० ॥ ४ ॥ हम सबके सखि भाग्य बडे हैं, जो हम दर्शन पाये, मेरे घर० ॥ ५ ॥ समधी जी राउर चरण मुबारक, फिर कब सुनहिं कि आये, मेरे घर साजन आये ॥ ६ ॥

गीत खेमटा ५.

हमारे घर साजन आये सखीरे।हमारे मन साजन भाये सखी रे ॥ १ ॥
समधीजी जब मेरे द्वारे पधारे । सुनत हिया हरषाये सखीरे ॥ २ ॥
जब समधी जेवनारे पै आये।सखियन हिय हुलसाये सखीरे ॥ ३ ॥
जब समधी मेरे भोजन कीन्हें।सखियन मंगल गाये सखीरे ॥४॥

समधीजी हैं मेरे सांचे सनेही । हम बडे भागन पाये सखीरे॥ ७ ॥
लखि समधी सब भाँति अनूपम, आनँद हिय न समाये सखीरे॥ ८॥

इसके बाद लोग चौकेपरसे उठे, पान इलाइची ले बारातमें गये।

जब सब घराती बराती खाय पी सोये; तो दे० सु० कुँ० ने दे० चं० कुँ० को बुलाय सवासौ १२५) अशर्फी जो राजाजीके वहांसे चं० कुँ० को मिली थीं, और पांचसौ ५००) रुपया अपने पाससे, जिसमें कुछ दुअन्नी, चवन्नी, अठन्नी भी थीं एक संदूकमें रख कर चन्द्रकलाको देखलाय बन्द करदिया और कहा "बेटी इस को जतनसे रखना, समयपर किफायतसे खर्च करना ।

२–फिर दूसरा संदूक जिसमें उसके सीने, पुरने कशीदे काढके सामान थे, मँगाय सब चीजोंको देखलाय बन्द करदिया ।

३–फिर तीसरा पेटारा जिसमें खानखानकी टिकुलियां, तरह तरहकी चमकियां, उमदासे उमदा सेंदुर, अच्छासे अच्छा ईंगुर दशबीस तरहकी कँगहियाँ, हलब्बी आईने बाल गूंथनेको सुर्ख रेशमकी चोटियां, लटोंमें लटकानेको तरहतरहके रेशमी फूलोंके गुच्छे अर्थात् शृंगारके सब सामान थे उसको देखलाय बन्द करदिया ।

४–फिर चौथा पेटारा जिसमें कलमदान, रोशनाई, कलम दावात, पिंसिल, छुरी, कैंची, रंग रंगके सादे कागज़, दो दो चार चार जिल्दें स्त्रीभूषण, स्त्रीशृंगार, स्त्रीसुबोध, रामायण आदिक ग्रंथ रक्खे थे सबको देखलाय बन्द करदिया ।

५–फिर गहनेका डब्बा मँगाय, फिहरिस्तसे उसका मुकाबिल कारि बन्द करदिया ।

६–फिर कपडेका पेटारा देखलाय बन्द कारि सबकी कुंजी चन्द्रकलाको देकर कहा ।

बेटी! सब चीजोंको सहेजके जतनसे रखना, कुंजी सब अपने पास रखना, जो चीज जिस संदूक या पेटारेसे निकालना हो, अपने हाथसे निकालना, फिर चेतसे बन्द करदेना, कोई संदूक या पेटारा खुला न रहै ।

बेटी! सबसे बनाव करके रहना, बड़ोंकी सेवा टहल विनय भावसे, छोटोंको मीठे बोल प्रेम प्रीतिसे राजी रखना अवसर विचारिकै सब काम करना, जो औरतें तुम्हारे घरमें आवैं जाँय, सब की वोर दृष्टि रखना, ऐसा न होय कि हल्ला गुल्ला, भीड भाडमें कोई कुछ चीज उठाय लेजाय ।

जो जिसलायक हो उसका वैसाही मान मर्याद रखना, जो जिस प्रकारसे राजी रहै उसको उसी प्रकार राजी रखना ।

घरका काम धाम बडे शऊरसे करना, कोई किसी बातपर फिस न धरै, हरबातमें सराहना हो ।

बेटी! मैंने सुना है कि तुम्हरी दो देवरानियां हैं, पर अशिक्षित, और स्वभावकी बिलकुल खराब हैं. उनके साथ बडे ढंगसे निबाहना, और जहांतक बनै उनके सुधारनेका यत्न करना ।

बेटी एक बात औरभी तेरे कानोंमें डालदेती हूं कि तेरे घरपर कुछ ऋण है, और इलाकेके इन्तजाममेंभी कुछ गड़बड है, सो यदि कोई अवसर तुझे इन बातोंके सुधार वास्ते मिलिजाय तो चेत करना ।

बेटी! जहांतक मुझे कहना व सिखलाना था वह तो आजतक तुझे कहि और सिखलाचुकी, अब आज क्या कहूँ, और क्या सिखलाऊं, आज तो तेरी जुदाईसे कलेजा फटा जाता है, अब यतना ही कहतीहूँ कि इसतरहसे रहना और इसप्रकार सबके साथ निवाहना कि संसारमें धन्य धन्य हो और तेरा यश सुनिकै मैंभी अपनेको धन्य मानूं

बेटी! अपनी माको भूल न जाना, यह कहि फिर चंद्रकलाको गले लगाय रोनेलगीं, और रोते रोते भोर होगया।

(बारातकी रुख़सती)

अब प्रात हुये बरातके चलनेकी तैयारी हुई, लडका घरमें आया बाहर मिलन बिदाई होने लगी।

दे०सु०कुँ० ने लडकेको अपने घरमें बुलाय सब चीजोंकी फिहरिस्त उन्हें देखलाय फिहरिस्त उनके सुपुर्द करदिया, और बोलीं।

बाबू! मैं आपका पांव पूजिकै पावन हुई, चन्द्रकला मेरी आँखोंकी पुतली, मेरे कलेजेकी ठंढक है अब आपकी सेवकाईमें जाती है, इसको लौंडी समान जानके इसका अपराध क्षमा करते रहना यहभी आपकी आज्ञासे बाहर न रहैगी यतना कहते आँखोंमें आँसू भरिआया, और चुप होगई, बाबू सूरजप्रकाशभी मोहवश हो आंखोंमें नीर भरि लाये, कुछ बोल न सके।

वहांसे उठ माड़ोमें आये सबसे हँसबोल, बात चीतकर नेगदस्तूर पाय द्वारपर आये।

अब चन्द्रकलाकीभी पालकी द्वारपर लगी, उस समय महाविषाद हुआ, कोई इधर रोताहै, कोई उधर विलाप करताहै, कोई इधर सुसुकतीहै, कोई उधर आँसू पोंछती है, चन्द्रकलाभी सबको धाय धाय मिलतीहै, रोती है, सबसे अपराध क्षमा कराती है, सखियोंसे बारम्बार मिलतीहै, गले लपटि लपटि रोती है, और कहती है "सखी सनेह न छोडना, हमारी सुधि लेते रहना" यह कहि अति व्याकुल होय विलाप करतीहै।

फिर देवी सुबोध कुँवरिने यह तियतारकयंत्र देकर कहा. बेटी! इस यंत्रको बारबार पढ़ती, और इसके अनुसार चलती रहना, यह कहि गले लगाय रोदन करने लगीं ।

(अथतियतारक यंत्र)

चौपाई–पतिपद प्रेम तियनका पूजा । देव एक पति और न दूजा॥
सो पति प्रेम निबाहेहु सांची । रहिहौ सकल आपदा बाँची॥
दोहा–मात तात भ्रातादि जे, नात पूज्य जगमाहिं ॥
नीति वेद बुधि जन कहत, तियको पिय सम नाहिं ॥
चौ०-पितुसम ससुर लख्यो नाहिंआना।सेवताहिनितउचितविधाना।
मानेहु तासु वचन हित जानी। रहेहु सदा तासों भय मानी॥
दोहा–सासुरमें रक्षक तेरे, पितुसम ससुरहि जानि ।
आज्ञा पालन तासुकी, करेहु सदा हित मानि ॥
चौपाई–पुत्री अबलग मैं तौ माता । अब ते सासुहि कीन्ह विधाता ॥
विनय प्रीति पुत्री सम तासों । राखेहु सदा लहेहु सुख जासों॥
दोहा–मातु सरीखे सासुरे, सास दुलारनहार ।
ताकहँ सुख दीजो सदा, करि सेवा सतकार ॥
चौपाई–बडभाई सम भसुरहि लेखो । ताकहँ बडो देव सम देखो॥
अदब सनेह उचित करु सेवा । सेवाहीते लहु सुख मेवा ॥
दोहा–जगमें सुखदायक क्रिया, सेवा सम नहिं आन ।
सेवा सुजन महानको, करत सदा कल्यान ॥
चौपाई–तौ पति छोट भ्रात तव देवर। करेहु प्रीति जस लघु भाईपर॥
पालन पोषण सिखवन नीको । करेहु जानि तेहि प्यारो पीको॥
दोहा–देवरसुत लघुभ्रात सम, राखेहु प्रीति पुनीति ।
सब प्रकार परतोषिये, चतुर नारिकी रीति ॥

चौ०-जेठ बहिनसम जानु जेठानी। सेवा तासु करेहु हित जानी॥
राखेहु तासु बडाई माना। हरषित रहहि सो जौन विधाना॥

दोहा-राखिय गुरुता गुरुन की, सनमानिय बहुभांति।
हैं यदि तुमते घाट वे, गुन धन यौवन जाँति॥

चौ०-जो तव ननदि और देवरानी। जानेहु तेहि प्रियबहिन समानी॥
तासन खुनुस कबहुँ मतिमानेहु। प्रिय पुत्रीसमान सनमानेहु॥

दोहा-सासुरमें साथी यही, यहि संगी यहि मीत।
करि बनाव इनसँग रहेहु, लाय सखीपनरीत॥

चौपाई-दस दयादमें हिलमिल रहना। सबसन प्रेम बनावनिबहना॥
गर्ब कियेहु मति निजमें कबहूं। सनमानेहु सब कहँ अबतबहूं॥

दोहा-सब सों हिलिमिलिकै रहेहु, सबसों रखेहु बनाव।
वे तुमते सुख पावहीं, तुम जगमें यश पाव॥

चौपाई-घरको काम बाँटिकै कीजै। जो जेहि लायक तेहि तस दीजै॥
चहै लाखू चहै भीखू घरकी। सब सम रहहु जाय तव सरकी॥

दोहा-जेहि घर दश जन एक मन, तेहि घरकी क्या बात॥
सुख सोहाग सम्पति सुयश, नितनूतन अधिकात॥

चौपाई-कुलकी रीत होयजहँ जैसो। समुझि निबाहेहु सो तहँ तैसो॥
मान आसक्त सो मति त्यागो। जेहि गुरु चलेव ताहि सग लागो॥

दोहा-कबहुँ न त्यागेहु सुंदरी, लोग वेद कुल रीत।
जहँ जैसो व्यवहार है, तहँ तस करेहु सप्रीत॥

चौपाई-पाहुनको बहुविधि आदरहू। पहुनाई तेहि प्रेमसों करहू॥
भोजन पान मान बहु दीजै। लखि रुख समय विदा तेहि कीजै॥

फिर देवी सुबोध कुँवरिने यह तियतारकयंत्र देकर कहा. बेटी ! इस यंत्रको बारबार पढ़ती, और इसके अनुसार चलती रहना, यह कहि गले लगाय रोदन करने लगीं ।

(अथतियतारक यंत्र)

चौपाई—पतिपद प्रेम तियनका पूजा । देव एक पति और न दूजा ॥
सो पति प्रेम निबाहेहु सांची । रहिहौ सकल आपदा बाँची ॥
दोहा—मात तात भ्रातादि जे, नात पूज्य जगमाहिं ॥
नीति वेद बुधि जन कहत, तियको पिय सम नाहिं ॥
चौ०-पितुसम ससुर लख्यो नाहिंआना ।सेवताहिनितउचितविधाना
मानेहु तासु वचन हित जानी । रहेहु सदा तासों भय मानी ॥
दोहा—सासुरमें रक्षक तेरे, पितुसम ससुरहि जानि ।
आज्ञा पालन तासुकी, करेहु सदा हित मानि ॥
चौपाई—पुत्री अबलग मैं तौ माता । अब ते सासुहि कीन्ह विधाता ॥
विनय प्रीति पुत्री सम तासों । राखेहु सदा लहेहु सुख जासों ॥
दोहा—मातु सरीखे सासुरे, सास दुलारनहार ।
ताकहँ सुख दीजो सदा, करि सेवा सतकार ॥
चौपाई—बडभाई सम भसुरहि लेखो । ताकहँ बडो देव सम देखो ॥
अदब सनेह उचित करु सेवा । सेवाहीते लहु सुख मेवा ॥
दोहा—जगमें सुखदायक क्रिया, सेवा सम नहिं आन ।
सेवा सुजन महानको, करत सदा कल्यान ॥
चौपाई—तौ पति छोट भ्रात तव देवर । करेहु प्रीति जस लघु भाईपर ॥
पालन पोषण सिखवन नीको । करेहु जानि तेहि प्यारो पीको ॥
दोहा—देवरसुत लघुभ्रात सम, राखेहु प्रीति पुनीति ।
सव प्रकार परतोपिये, चतुर नारिकी रीति ॥

चौ०—जेठ बहिनसम जानु जेठानी। सेवा तासु करेहु हित जानी॥
राखेहु तासु बडाई माना। हरषित रहहि सो जौन विधाना॥

दोहा—राखिय गुरुता गुरुन की, सनमानिय बहुभांति।
हैं यदि तुमते घाट वे, गुन धन यौवन जाँति॥

चौ०—जो तव ननदि और देवरानी। जानेहु तेहि प्रियबहिन समानी।
तासन खुनुस कबहुँ मतिमानेहु।प्रिय पुत्रीसमान सनमानेहु॥

दोहा—सासुरमें साथी यही, यहि संगी यहि मीत।
करि बनाव इनसँग रहेहु, लाय सखीपनरीत॥

चौपाई—दस दयादमें हिलमिल रहना।सबसन प्रेम बनावनिबहना॥
गर्ब कियेहु मति निजमें कबहूं।सनमानेहु सब कहँ अबतावहूं॥

दोहा—सब सों हिलिमिलिकै रहेहु, सबसों रखेहु बनाव।
वे तुमते सुख पावहीं, तुम जगमें यश पाव॥

चौपाई—घरको काम बाँटिके कीजै।जो जेहि लायक तेहि तस दीजै॥
चहै लाखू चहै भीखू घरकी। सब सम रहहु जाय तव सरकी॥

दोहा—जेहि घर दश जन एक मन, तेहि घरकी क्या बात॥
सुख सोहाग सम्पति सुयश, नितनूतन अधिकात॥

चौपाई—कुलकी रीत होयजहँ जैसो।समुझि निबाहेहु सो तहँ तैसो॥
मान आसक्त सो मति त्यागो। जेहि गुरु चलेव ताहि सग लागो॥

दोहा—कबहुँ न त्यागेहु सुंदरी, लोग वेद कुल रीत।
जहँ जैसो व्यवहार है, तहँ तस करेहु सप्रीत॥

चौपाई—पाहुनको बहुविधिआदरहू। पहुनाई तेहि प्रेमसों करहू॥
भोजन पान मान बहु दीजै।लखि रुख समय विदा तेहि

दोहा–पाहुन पहुनाई करेहु, बहु प्रकार सनमानि ॥
यश बाढै संसारमें, सुमिरै तोहिं बखानि ॥

चौ०–पति पुरजन सब कहँ बड मानेहु । सबसों मीठे वचन बखानेहु
छोटेहु सनमानेहु बहु भांती । रहहु जगतमें भलो कहाती ॥

दोहा–जगमें जीवन तासुको, सफल सकल विधि जान ।
जाके शील स्वभावको, सब मिलि करत बखान ॥

चौ०–धन रक्षन कर जतन विचारेहु । घर संचनकर सुरतसम्हारेहु ॥
इक तिल व्यर्थ होय वय नाहीं । यह तुम चेतत रहेहु सदाही ॥

दोहा–निजपति पति धन धामको, रक्षा करेहु विचारि ॥
तब प्यारी कहलाय हू, गारहस्थकी नारि ॥

चौ०–मीठे वचन मोहनी डारो । मिलै तोहिं जो है तव प्यारो ॥
आदर मान ज्ञान गुन भाऊ । वशकरु सबहि सुशील स्वभाऊ ॥

दोहा–मान दीजिये आनको, निज अमान रखु वान ।
मेरे मते सुमंत्र यह, वशीकरनको जान ॥

चौ०–आवैं मिलनदयादिन तुमसों । सखिपनरीतिमिलहु तुम उनसों
विनय प्रेम आदर सनमानी । परतोषेहु सबकहँ मृदुवानी ॥

दोहा–नयन वयन अरु सयनते, परतोषहु सब नारि ।
मगमें जाहिं बखानते, तव यश गुण विस्तारि ॥

चौ०–जो तुम गोत दयादमें जाहू । सब सन मिलेहु सप्रेम उछाहू ॥
बडो छोट जो जेहि विधि जानेहु । सबकहँ यथायोग्य सनमानेहु ॥

दोहा–छोटनपर कीजै कृपा, वडन नवाइय शीश ॥
समसों सखिपनते मिलो, तव तुम नारि रईस ॥

चौपाई–चेत रखेहु गृहकारज केरो। होय न तनिक अबेर सबेरो ॥
भोजन पान समय पर दीजै। सब गृहकाज समय पर कीजै ॥

दोहा–गृह अनाज, तन, बसन को, औ हिसाबकी बात।
नियत समय पर साफ रखु, तब तुम चतुर कहात ॥

चौ०-गर्व किहेहु मति कबहुँ सयानी। विषसम जानु ताहि दुखदानी॥
सबसों यह पाजी कहलावै। और कछू तेहि हाथ न आवै ॥

दोहा–धनमद यौवन रूपमद, पति सुतमद यह पांच।
भले लोग नहिं करत हैं, करैं सो मतिकी कांच ॥

चौ०-दया रखेहु दुखियनपर भारी। हँस्यो कबहुँमति लखि दुखियारी
सबकर क्षमा करेहु अपराधू। जनिरिस,हठ,काहुहि परसाधू॥
दोहा–जिमि घन नव पल्लवित तरु, शीतल रखहु सुभाव।
जो आवै सो सुख लहै, मनको ताप नशाव ॥

चौ०–सबपर सबते उत्तम जानहु। पतिसेवा तन मन धन आनहु॥
जेहि विधि हरषित रहै तासु हिय। सोय करेहु तब होहु सुभगतिय
दोहा–तियन धर्म यहि व्रत यही, यही नेम आचार।
पति प्रसन्न जेहिविधि रहै, सोइ करिय व्यवहार ॥

चौ०–कबहुँ न प्रियपति आज्ञा टारेहु। सदा तासु सेवा परवारेहु ॥
समय संगदै पिय सुख दीजै। आप सुखी ह्वै जग यश लीजै ॥

दोहा–तिय तारक यह यंत्र है, बांधेहु उर गरमाहिं ॥
तरै अवशि जो तस करै, यामें संशय नाहिं ॥

अब चन्द्रकला डोलीमें सवार कराईगई, सवार होतेही चुप होगई, नादान औरतोंकी तरह नहीं कि रास्ते भर रोती, और पंपं-करती जाय, अब दुलहा दुलहिनकी एक साथ पालकी उठी।

विहंग तट निकट न जाते हैं । शुद्ध है जाते जग यमसे छुटिजाते जीव, ये हो मात गंग तू चरण बलि जाते हैं ॥ १ ॥

केतेको उबारे आप नामके पुकारे मात, केतेको सुधारे जिन ध्यान हिय धारेहैं । एक पशु धारे तव मारग मँझारे मिलै, कोटिन हजारे यज्ञफल बे शुमारे हैं॥ पहुँचत किनारे जनु भवसरते पारे भयो, धामको सिधारे जिन डुबकीको मारे हैं । केते अघी तारे केते अधम उधारे आप, जातगने तारे गनेजात पै न तारे हैं ॥ २ ॥

सुंदर सुखारा अतिपावन करारा दोऊ, साधक सुजान सतीसिद्धन अगाराहै । मुक्तिको मोहारा और भुक्तिहूँको द्वारा यही, दोऊको किनारा भरो सुखको भंडाराहै ॥ सांझ औ सकारा यहपार वह पारा जन, न्हात मँझधारा फल लहत अपाराहै । कहत जनसारा सब करतहैं पुकारा यही, गंगाजीकी धारा पाप काटनेकी आराहै ३॥

शीशको नवावों तव चरण बलिजावों मातु, विनती सुनावों वरदान यही पावों मैं । सुंदर सुभावों आछे गुणन प्रभावों नित, सासु ससुर चित्त हर आन हरषावों मैं । पतिको रिझावों अति सुंदर अदावों सेती, त्यागि तेहि चरण क्षण एक ना बितावों मैं । भलो कहलावों दाग कुलको लगावों नहीं, सासुरमें जाय मातु विमल यश पावों मैं ॥ ४ ॥

यह स्तुति और प्रणाम करि नौकापर सवारहो कुशलक्षेमसे डोली उसपार उतरी ।

जब डोली अनूपनगरके सिवानेपर पहुँची तो उसने पालकी उतरवाय पृथ्वीको प्रणाम करि कहा "हे पृथ्वी ! तू धन्यहै जहाँ मेरे स्वामीके चरण फिरते हैं" ।

फिर जब डोली नगरमें पहुँची तो उसने उस नगरको मनहीमन प्रणाम करि कहा हे नगर ! तू हमारे लिये वैकुंठके बराबरहै" ।

अब डोली द्वारपर उतरी, और जगत्की रीति अनुसार सास आदिक चन्द्रकलाको डोलीसे उतारि घरमें लिवायलेगईं, अमौआ बारिन और बुदौआ नाइन जो चन्द्रकलाकी डोलीके साथ गईथीं, उन सभोंने सब चीज असबाब सहेज २ घरमें पहुँचवाया, चन्द्र-कुँवरिने सब पेटारोंका ताला देखलिया, और जो चीजैं ऊपरथीं सबको सहेजलिया।

अब (दे० चं० कुँ०) दुलहिन बलहिनहो शिर निहुड़ाये घरमें बैठीं, पर उस समयभी अपनी सब चीजोंकी बराबर निगहबानी रखतीथीं. प्रयोजनसे अधिक वस्तु ऊपर नहीं रहतीथी, पेटारोंका ताला कभी बिना प्रयोजन खुला नहीं रहताथा, जेतनी स्त्रियां उस घरमें आती जातीथीं, सबकी ओर चन्द्रकुँवरिकी दृष्टि रहतीथी क्या मजाल कि कोई किसीतरहकी चालाकी वा एकतृ-णकी चोरी करने पावै।

बिरादरीकी स्त्रियां जो उनके देखने और मिलनेको आतीथीं, उनसे यद्यपि बहुत बातचीत करना दुलहिनपनेकी रीतिके विरुद्ध समझती थीं, तौभी अपने सलज और सनेहभरी चितवन, और अतिहर्ष बढानेवाली मंदमुस्कानसे जादूका काम करतीथीं जिससे कुछ बोलदेतीथीं, उसे विना दामों मोल लेलेतीथीं।

उस नगरकी हमजोली लड़कियोंका तो यह हाल होगया कि जो आतीं फिर घर जानेको चित्त नहीं चाहताथा, जब अतिविलम्ब होनेसे दे० सत्यवती कुँ० बहुत कहती तो वे अपने घरोंको जातीं पर मन चन्द्रकलाहीके पास छोड जातीं, और घरका इधर उधर काम काज करि फिर चली आतीं, कोई समय ऐसा नहीं रहताथा, कि भलेआदमियोंकी दो चार लड़कियां चन्द्रकलाके पास न रहतीं निदा बुद्धिकातो इनके अभी कोई हाल क्या जानताथा पर इनके

रूपकी, शील स्वभावकी गांवमें ऐसी प्रशंसा होने लगी कि जहां दो स्त्रियां बैठतीं आपुसमें यही कहतीं मुन्शीजीकी जो नई पतोह आई है, ऐसी सुंदरहै कि मानो भवानीकी मूरतहै।

छोटी बड़ी जो कोई उनके पास जातीहैं सबकी ऐसी खातिर करतीहैं कि वश करलेतीहैं उनके पाससे उठने का जी नहीं चाहता। भगवान ऐसी पतोह सबको दे।

अब थोडासा चन्द्रकलाकी देवरानियोंके स्वभावका और जिस प्रकारचं० कुँवरिने उनको सुधाराहै, वह हाल लिखा जाताहै

(दे०चं०कुँ०) की दो देवरानियां, दे०अजानकुँ०, दे० गुमान कुँ० यह दोनों सगी बहिन, कुडंत नगरके रहनेवाले मुन्शी हतभाग्यसिंहकी लडकियाँ थीं,थींतो यह बडे दौलतमन्दकी लड़कियां पर कारियो अक्षरसे इन्हें भेंट नहींथी, न किसीतरहका गुणढंग था स्वभावभी इनका ऐसा खराब कि डाइनभी डाहखातीथी, जितने निंदित स्वभावहैं, एककीभी इनमें कमी न थी।

इनका यही कामथा कि घरमें पलँगपर भैंसकी तरह पड़ीरहैं, लौंड़ियां पान मिठाई खिलाया करैं, शिरमें तेल लगाया करैं, जब घरमेंसे बाहर आँगन दालानमें निकलीं तो मानो कोई बला निकली. गजब होगया, कहीं उन्हें घुडुक, कभी इन्हें डांट, कभी किसीको मारनेदौडीं, कहीं किसीपर चमुवाने लगीं—(या भगवान् ऐसे स्वभावयुक्त स्त्रीसे तू रक्षा कर)।

जिन वृद्ध व युवा काम काज करनेवाली स्त्रियोंको "यद्यपि वे नीचही कीथीं" तौभी दे० सत्त्वती कुँ० कभी उनके तैं तुकारतक नहीं करतीथीं, यह साहेवजादियां उन स्त्रियोंकी क्याक्या दुर्गति नहीं करडालती थी वह कौनसी गाली है जो इन साहेवजादियां (नहीं हरामजादियां) के मुँहसे नहीं निकलती थी।

कभी चक्कीके पास आगईं तो नाहक विना प्रयोजन चभुवाकर आटा पीसनेवालियोंको कहने लगीं "क्योंरी पाजी क्योंरी मर्दमारी ऐसाही आटा पीसाजाताहै (लात उठाकर) मारों एक लात तेरी कमर टूटजाय, आटा चालनेवालियोंके पास आकर, क्योंरी निगोड़ी क्योंरी पूतकाटी ऐसाही चालाजाताहै (एकलात जड़कर) दूरहो सूवरकी जनी।

या भगवान्–कामकाजू स्त्रियोंकी नाकमें दम रहताथा, पर क्या करें, दे० सत्यवती कुँ०का ऐसा स्वभाव था कि सब वशमें रहती थीं, उन पाजियोंके घुड़क भुड़कका कुछ ख़्याल नहीं करतीथीं।

गांवकी स्त्रियां जहां दोचार इकट्ठी होतीं आपसमें यही कहतीं।

अय सखी! "दोनों मुन्शीजीकी पतोह कहनेको तो बड़े आदमीके घरकी हैं, पर मेरे जानमें दो कौडीकी हैं"।

"हम इन लोगोंको किसीसे सीधी बात बोलते कभी देखै नहीं? जब देखो तब डाइनकी तरह चांयचांय मचाये रहती हैं।

फुलझरिया, मनझरिया, सोनझरिया, यह विचारी जो उनके घरका काम काज करतीहैं अदनी अदनी बातपर ऐसा उनको तंग करतीहैं कि एको नौबत नहीं उठाय रखतीं, उन सभोंसे जब भेंट होती है,तो नौ नौ पांति आंसु उनके आँखोंसे चलताहै, और सब यही कहतीहैं, "न मालूम कब इनका पर्दा अन्ध होगा कि हमलोग मुसीबतसे छूटैंगी" जब मैं कहती हूँ कि उनकी नौकरी क्यों नहीं छोड़ देतीहो, तो वे सब यही कहतीहैं कि "देवी सत्यवती कुँ०के स्वभाव और खातिरदारीसे हमलोग वश रहती हैं"।

"अय सखी! भगवान् ऐसी पतोह किसीको न देवैं, थू ऐसे कुमानको, और लानत है ऐसे जीनेको"।

गर्ज़ कि उन दोनोंके कुमानसे बाहर मुन्शीजी शिर धुनते थे अन्तर दे० सत्यवती कुँ० अति शोकवान हो मनमें कहती थीं "हे

नारायण ! मैंने क्या ऐसा अपराध कियाथा; जिसके फलमें मुझको इन डाइनोंसे पालापडा" ।

जिस दिनसे चन्द्रकला आई, और उसका बोल व्यवहार रूप रंग देखा, उस दिनसे दे०स०कुँ०का सब शोक संताप दूर होगया।

चन्द्रकलाकुँवरिभी जानेके दूसरेही तीसरे दिनसे दे०स०कुँ०का पांव दाबना, समयपर पान सुरती देना, उनका बिछावन बिछादेना इत्यादिक काम अपने हाथसे करने लगी, और जबतक पांव दाबती, अनेक ऐसी विचित्र और मीठी २ बातें करती कि दे०स० कुँ० मारे हर्षके विह्वलहो, अपने मनमें कहती, या भगवान मैंने कौन ऐसा तप किया था जिसके फलमें ऐसी अद्भुत पतोह मुझको प्राप्त हुई ।

दे०चं०कुँ० अपनी उन देवरानियोंका यह स्वभाव और व्यवहार देख मनमें शोचने लगी कि इनको किसीप्रकार सुधारना चाहिये यह शोच, एक दिन अपने साससे कहने लगी ।

(दे०चं०कुँ०) अम्माजी हमारी देवरानी साहेब लोग तो अजब महात्मा मालूम होतीहैं, मुझको आये पन्द्रहदिन होगये पर मेरे घरमें कभी भूलसेभी न आईं, आप मुझे आज्ञा दीजिये तो मैंही कभी २ उनके पास जा बैठाकरूं ।

(दे०स०कुँ) बेटी उन नालायकोंका जिकिर मेरे सामने मतकर मैंतो बिलकुलही उनका चेत भूली रहतीहूं चेत करने पर तो मारे रंजके अचेत हो जातीहूं ।

बेटी मैं सच कहतीहूं कि तू अबतक जो न आई होती तो इन डाइनोंके कोपसे मैं अबतक जीती न रहती; भगवान तेरा सुखसोहाग दिनदिन दूनाकरैं कि तेरे शीलसनेह; समझ स्वभावसे मेरा सब दुःख दूर होगया ।

बेटी तू उनके घरोंमें क्या जायगी, मैंतो भगवानसे मनातीहूँ कि ऐसे प्राणीका मुझे दर्शन मत करावो।

जबतक वे महारानियां अपने अपने घरोंमें रहतीहैं तबतक तो मैं बाहर रहकर घरका काम धाम करती करातीहूं, पर जब उनके कैंवाड़का पट खुला मैं चट अपने घरमें जा बैठतीहूं जब वे अपने घरोंमें जाती है तब फिर मैं बाहर निकलतीहूँ।

पहिले २ मैं कुछ दिनोंतक इनको कभी कभी कुछ कहिदेतीथी पर एक कहती तो दो सुनतीथी, फिर मैंने शोचा कि अपनी इज्जत अपने रखनेसे रहतीहैं, मैं चुप होगई, पूरे दो साल होगये कि न मैं उनसे बोली न वे मुझसे, मैं अपनी राह, वे अपनी राह।

दोनों लडके मेरे सालभरतक तो घरमें गये आये पर सालही भरमें, वे इनके स्वभावोंसे ऐसे तंग होगये, कि दो साल होगये घरमें जानेका नामतक नहीं लिया, कितना मैंने समझाया कितना उनके लालाने कहा पर नहीं गये।

बेटी उनकी लियाकत तो तू इसीसें जानले कि वे लोग तुझसे पदमें छोटीहैं पर आजतक तेरे पास न आईं तो तू क्या उनके पास जानेका हौसिला करतीहै, जानेदे दूरकर।

(दे॰चं॰कुँ॰) अम्माजी आपका फरमाना सब सत्यहै, पर मुझे आज्ञा दीजिये, मुझको बड़े छोटेका कुछ खयाल नहीं है, मैं यह शोचतीहूँ, कि यह मेरी देवरानहैं, मुझे इनके संग रहनाहै किसी तौरसे जो इनके स्वभाव सुधरिजायँ तो अच्छाहै।

(दे॰स॰कुँ॰) बेटी। मैं हर्षसे आज्ञा देतीहूं, तू जाया आया-कर क्या जाने भगवान तुझे यश देदे. पर मेरे जानमेंतो यह बातहै कि "मूरख हृदय न चेत, जो गुरु मिलें विरंचि सम"?

इतनी बातचीत हो दे॰स॰कुँ॰ किसी कार्यको चलीगई और चन्द्रकलाने उनकी लौंडीको बोलाय, कहा 'तुम जाके अपनी

नारायण ! मैंने क्या ऐसा अपराध कियाथा, जिसके फलमें मुझ-को इन डाइनोंसे पालापडा" ।

जिस दिनसे चन्द्रकला आई, और उसका बोल व्यवहार रूप रंग देखा, उस दिनसे दे० स० कुँ० का सब शोक संताप दूर होगया।

चन्द्रकलाकुँवरिभी जानेके दूसरेही तीसरे दिनसे दे० स० कुँ० का पांव दाबना, समयपर पान सुरती देना, उनका बिछावन बिछादे-ना इत्यादिक काम अपने हाथसे करने लगी, और जबतक पांव दाबती, अनेक ऐसी विचित्र और मीठी २ बातें करती कि दे० स० कुँ० मारे हर्षके विह्वलहो, अपने मनमें कहती, या भगवान मैंने कौन ऐसा तप किया था जिसके फलमें ऐसी अद्भुत पतोह मुझको प्राप्त हुई ।

दे० चं० कुँ० अपनी उन देवरानियोंका यह स्वभाव और व्यव-हार देख मनमें शोचने लगी कि इनको किसीप्रकार सुधारना चाहिये यह शोच, एक दिन अपने साससे कहने लगी ।

(दे० चं० कुँ०) अम्माजी हमारी देवरानी साहेब लोग तो अजब महात्मा मालूम होतीहैं, मुझको आये पन्द्रहदिन होगये पर मेरे घरमें कभी भूलसेभी न आईं, आप मुझे आज्ञा दीजिये तो मैंही कभी २ उनके पास जा बैठाकरूं ।

(दे० स० कुँ) बेटी उन नालायकोंका जिकिर मेरे सामने मतकर मैंतो बिलकुलही उनका चेत भूली रहतीहूं चेत करने पर तो मारे रंजके अचेत हो जातीहूं ।

बेटी मैं सच कहतीहूं कि तू अबतक जो न आई होती तो इन डाइनोंके कोपसे मैं अबतक जीती न रहती, भगवान तेरा सुखसो-हाग दिनदिन दूनाकरैं कि तेरे शीलसनेह, समझ स्वभावसे मेरा सब दुःख दूर होगया ।

तेउ अपने सेखिएमें आन्हर रहैलिन, सास हैं तो जेइसन हैं तेइसन सलामत रहैं,

यह बात चन्द्रकलाकी उन सबोंको बहुत भली मालूम हुई, और बहुत खुश हो कहने लगीं।

आ ये दीदीजी का हमलोग अबले रउरे लगे नाहीं अवती बाकी काकरीं, सास गोसाईंसे हमलोगनसे पटत नाहीं, ऊ चाहैलिन कि ईलोग हमार दबायल होयके रहैं, आ हमलोग एक चटाँक, काकरैंके हम लोग उनके दबायल होईं, दबायल तो हम अपने महतारी बापके नाहीं भइलीन जेकरे कोंखसे पैदा भइलीं, महतारी जो एकबेर डाटै तो हमलोग चारि बेर डांटी।

और ये दीदीजी इनकै चालभी हमलोगनके नाहीं पसंद है, इनके ई हाल हैं कि जो नान्हो जात चाहै यह गाँवके चाहै दूसरे गांवके आय गइलिन तो ऐसन आवभगत करैलिन कि बुझाला इनकै नानिऐ महतारी हैं।

चमारिन छोडके और जेभर अहिरिन कोइरिन एकठे बूढ़ तेलिन हे एकठे हरामजादी बूढ गडेरिन हे जबई सभ अइलिन तोई बुझाला कि इनकै पीरै उतारि अइलेहैं "ले आव चटाई वोरै बिछायदे" फलनियां तैं पीढे पर बइठिजा" लगैलिन हल्लाकरैं, भला कहीं दीदीजी ई जूता कै मनई तेकर अइसन खातिर।

नौकर चाकर लौंडी नफर केहूके कचों मरतिन कि गारिओतिन तो हमलोग जनतीं कि बडे आदमीके घरके मेहराह्र हैं, अरे ईतो सबके साथ हँसते बोलते रहैलिन, नउज अइसन स्वभाव बड़े आदमीके होई, मरलिन बोरिहैलिन।

इतो हमलोग जबसे अइलीं हैं तबसे इकुल चोदनी कायल भइलिन हैं, जब हमलोग घरमेंसे बाहर दालानमें निकुरलीं तो हरजनी तो आहट पवतैं खसक देलिन, बाकीजे मिलि गइल तेके बिना हुइ-

ठाकुराइनोंसे कहिदो, कि वह आपके पास आया चाहतीहै जो किसीतरह पर आपको तकलीफ न हो" ।

लौंडी गई और चन्द्रकलाका संदेशा कहा, यह सुन ।

"एकबोली, का इहां अइहैं कौनों लोना धइलबाय" ।

दूसरी "अच्छा ये दीदी आवै न देव, आखिर उहैं न आवत बाटिन, हमलोगतो नाहीन गइली कि कौनों छोटाइ भइल, जारी जा कहिदे आवै" ।

लौंडीने जाके कहा, चलिये ।

चन्द्र०कुँ० बेतकल्लुफ जाके उनके पास बैठगई और कुछ इधर उधरकी बात करि कहने लगी ।

(चं०कुँ०) हमारा कसूर आपलोग माफकरो हमके येतना दिन अइले भइल हम आप लोगनके पास नाहीं अइली, जीतो रोज चहत रहल कि चलैं बाकी सकुचत रहलीं कि काजानी आप लोगनके कवनो तरहकै तकलीफ होय, बाकी आज आपलोगनके मुहब्बत ऐसन जोर कइलस कि बिना अइले नाहीं रहि गइल ।

(वे दोनों) रूखे सूखे मनसे--अरे अच्छा आय गइली तो कौन हरज, आवै जायके कुछ मना थोड़ैहै ।

(चं० कुँ०) का करीं ये बहिन, आप लोग यह खंडमें रहीला हम अकेले वह खंडमें रहीला, अकेलै बइठल बइठल जी घबड़ाय जाला ।

(वे दोनों) अरे रवरे केहसे अकेले रहीला, एक जने बुद्धि-मती (बुद्धिमतीको) ननदहैं तेरहबैकरैलीन, सास आछो आछो कइलही रहैलिन, तइओ नकहीला कि हम अकेले रहीला ।

(चं०कुँ०) मनमें--या भगवान बड़े मूर्खोंसे पालापड़ा, प्रगट जायदेइ भला उन्हन लोगनसे हमारामन खुश होवैकेहै, ननदकै

अपने पाससे शृंगारकी विचित्र चीजैं लेजाकर उनका अपूर्व शृंगार करदेती, कभी चौपड मंगाय खेलने लगती।

अब दशही पांचदिनमें उसने अच्छी तरहसे उनसभोंको अपना मुरीद बना लिया, अब यह उनके पास जानेको बाकीए रेहती की वेही सब इसके पास पहुँचि जातीं।

अब चन्द्रकलाने शोचा की इनके सुधारका यत्न करना चाहिये यह शोच अब जब उनके घरोंमें जाती कुछ कागज रद्दी फर्दी हाथमें लिये जाती, और मनहीं मन पढने लगती।

एक दिन उन सभोंने कहा "दीदीजी! इका रउरे जब आईला, तब एक लुंडाकागजके लिहले आईला"।

(चं० कुँ०) ये सखी! ई कागजका लुंडा नहीं है ई भगवती जीका वचनहै, यह गोडधरने योग्य है।

वे सब भगवतीजीका नाम सुनतेही उस कागजको गोड धरने लगीं, और कहा, "दीदीजी! तेनी सुनाईत, कैसे भवानी माताका कहले हइन"।

(दे० चं०कुँ०) कागज हाथमें ले पढने लगीं।

एकस्त्री भगवतीजीका बडे प्रेमसे पूजा कियाकरती, जब उसका व्याहहो गवनका दिन रक्खा गया तब विदा होनेके एक दिन पहिले भगवतीजीके मंडपमें जाय, बडेप्रेमसे पूजन करि, विनय करने लगी "हे मातु, हे जदम्ब जोमैं मन वच कर्मसे आपकी सेवक हूं तो आज मुझे दरशन देकर कृतार्थकरो"।

उसकी विनय सुनकर भगवतीजी प्रगट होगईं, और बोलीं, हेपुत्री! मैं तेरे पूजा और प्रेमसे प्रसन्नहूं, जो तुझे मांगनाहो सो मांग"।

उस कन्याने हाथ जोड विनय किया, "हे मातु! आपके दर्शनमात्रसे मेरा सब मनोरथ पूर्ण होगया, अब मैं कल्ह ससुराल

चारि गारी दीहलें बिना दुइचार अँड लगवले हमलोग नाहीं रहतीं तबसे अलबत्ते सब लोगही जानैंलिन कि बडे आदिमीके घरकै मेहरारू ऐसन होलिन तो हमलोगतो ए दीदीजी ऐसन तेइसन घरकै तो हई नाहीं, हम लोगनकै तो महतारीभी ऐसन तेजधारी हैं कि गांवभर उनसे तंग रहैला, उनके सामने जात गायके तरहसे सब कापैंला,तो काहे यहीसे कि ऊ अन्या सो दशगारी सबके दीहल करैलिन, तेनी एक मजूरिनसे जो कौनो काम बिगरी जाय तो मारै फजिहत करके छोडदें ।

सो ए दीदीजी येही कुलसे हमलोग वह खण्डमें नाहीं वहुत आईला जाईला. आपन अलग खाईला तानकै सूतल रहीला ।

दे०चं०कुँ० उनकी बातें सुन मनमें कहती है "हेनारायण! तेरी यह आश्चर्यमय सृष्टि है, इनको तूही अपने आचिंतशक्तिसे सुधारै तो सुधारै मानुषके मानका नहीं है फिर अपने मनमें शोचती है, मैं जो अभी इनके बातोंके विरुद्ध बातचीत करूं तो ऐसा न हो कि मुझसे खटक जाँय, और फिर मेरे फंदेमें न आवैं, यह शोच बोली ।

(दे० चं० कुँ०) हम पहिलही आप लोगनकै हाल सुन चुकलबाटीं जवन आदमी कहलस तौनतो ईकहलस कि सब बडीपाजी हैं, बाकी हम अपने मनमें जानिगइली कि हैं लोग अमीरकी लडकी और अपने मनमें बहुत खुश भइली कि हमसे भले पटी-से ए बहिन जाय देई अम्माजी जेइसन मनहोथ तेइसन रहैं हमलोग आपन वैसनै रहैके ।

चन्द्रकलाने उसवक्त अपना ऐसा अन्दाज बनाया कि उन सभों को यह मालूम हुवाकि बिलकुल हमारे स्वभावकी है और पहिले ही दिन ऐसा मेल जोल होगया कि मानो जन्मकी संघतिया हैं ।

अब चन्द्रकला प्रतिदिन एकवार उनके पास जाती और जब-जाती कभी पान लगाके खिलाती,कभी शिरमें तेल लगाती, कभी

इहै कुल होत होत आखिर दुइ बरिस भइल लोग घर त्यागी दीहलैं, औ हमहूँ लोग अइसन सेखीबाज हईं कि अकेले पडल झंखीला, बाकी आजुले चिरौरी करै नाही गइलीं ।

(चं०कुँ०)ये बहिन हमरो मिजाज तो अइसनै रहल, हमहूं ऐसनै गुनले रहलीं कि अपने पतिकै एको बात नाहीं मानब, बाकी जबसे इहै भगवतीजीकै वचन पढली हैं तबसे अइसन डर शरीरमें समाइल बाय कि हे भगवान ! केइसे निवाह होई, जो भगवतीजीकै वचन नाहीं मानब तो भगवतीजी रिसिआय जइहैं, और जगदम्बाके रिसिआयले भला हमरनकै कहाँ निबाहहै ।

(वे सब) तो ये दीदीजी बताई न काकरेके होई ?

(चं०कुँ०) भाई तू लोग जवन चाहो तवन करो, मैं तो अबसे कान ऐंठतीहूँ कि कभी उनका वचन न टालूंगी, जो कहैंगे आगमें कूद पडो तो कूद पडूँगी ।

(वे सब) तो ये दीदी जी हमरनोंकै निबाह करी, जेइसे कहिदेई तेइसे हमलोग रहीं बाकी हमरनके तो अब लाज लागत बाय कि कहां उनके डाटत रहीलीं कहां उनके वचन मानैकै ।

(चं०कुँ०) नाहीं सखी, यहमें लाज कुछ नाहीं है, भल बुझी तो कि इनहीं लोगनसे हमरनकै कुल सेखी शान है, भगवान ऐसन न करै, बाकी आज जो ऊ लोग न रहैं; तो देखीत कि हमरनकै केइसन दशा ह्वैजाइ; औ हमलोग दुइकौडीकै ह्वैजाईं, केहू बात न पूछै, कुलसेखी सान भूलि जाय ? तो भला उन लोगनसे कौन लाज महाराज है "परदा कौन भतारसे जिन देखा सब देह" ।

सेकमार सलाहतो इहैहै कि आपलोग कहलाय भेजी, कि हमरा नकै कसूर माफ कैकै दर्शनदें ।

जाऊँगी,ससुरालमें जाकर मुझे और सर्वस्त्रियोंको जिसके साथ जिसतरह रहना और निबहनां चाहिये वह उपदेश मुझे कृपाकर दीजिये" ।

(भगवती उवाच) "हेपुत्री! अबतक जैसे मेरा प्रेमऔर पूजा तू कर तीथी; वैसही प्रेम और पूजा अबसे अपने पतिका किया करना, पतिको कभी जवाब न देना, पतिसे कभी कपट छल न करना, पतिका वचन सदा मानती रहना, किसी व्यवहारसे अपने पतिको कभी रंज न करना, जो अपने पतिको तिल बराबरभी रंज करती है, मैं उसपर पहाड बराबर कोप करके उसका धन दौलत लडके बाले सबको हरलेतीहूं और मरनेपर नरककुण्डमें डाल कर बड़ी शासत करतीहूँ" ।

येतना सुन वे सब कुछ मनमें सहमकर कहने लगीं, येदीदीजी ईफुरो भगवतीजीका वचनहै ? ।

(चं० कुँ०) हांहां सखी, भला मैं तुमसे झूठ कहोंगी ?

(वे सब) तो येदीदिजी हमलोग तो आजले एकोबात उनलोगनकै नाहीं मनलीं, जब कुछ कहैं की अइसे रहो, तब हम लोग घुड्डुक देई, कहिदेई चलो चलो अपने महतारी बहिनंके सिखाओ, हमलोग बहुत सिखलेवाटीं जब, रीसकरैं तो हमलोग खिसदेई हँसदेई और कहिदेई "चलो २ जायके लौंडी नफर पर रिसकरो, हमका तुहार लौंडी नफरहै" जब कहैं कि तेने महतारी कै पैर दाबदीहल करो, तो हमलोग कहि देई "हमार लुअटजाय ईकुल करैं" जब बहुत रिसिआँय, तो कहैं "अच्छा तू लोग हमार कइल नहीं मानतिहो तो हम लोग घरमें नाहीं अइबै, कहीं चलिजावै, बाकी हमलोग तेनिक नाही डेराई और कहि देई "हमारे तरवाके धूरसे चालिजावो"

(देवर) भाउज साहेब, आज क्या है, हमलोगोंपर बडीकृपा मालूम होती है, जो आज्ञाहो सो करैं।

(चं०कुँ०) भला बाबू आपलोगनसे बढकर के प्यारा होई जेके प्यार करब, शास्त्रमें (द्विवर) शब्द लिखा है जिसको लोग देवर कहते हैं, इस शब्दका अर्थ यह है "द्वितीयवर, अर्थात् दूसरा वर, वा दूसरा पति" मेरी जानमें इसका तात्पर्य यह है कि जैसे पतिका प्यार और स्नेह स्त्रीको उचित है वैसही देवरकोभी भोजनादिक क्रियामें प्यार करना चाहिये, और जैसे पोषण, औ शोषण पतिपर उचित है, वैसही देवरकोभी अपने भाउजका खयाल रखना चाहिये कि पति पीछे उसको भोजन वस्त्रादिककी किसी तरहपर तकलीफ न हो, अबतो देखिये कि पतिपीछे तो देवरलोग जो दुर्दशा भौजाई की करते हैं वह तो करतेही हैं पति आछत बात नहीं पूंछते।

(देवर) भाउज साहेब आपका फरमाना सब सत्य है, हमलोगोंनेभी धर्मशास्त्रमें यह सब बातैं देखा है।

आपको यहां आये १ महीना दश दिन होगया, आप जैसा हम लोगोंका प्यार और बात बातमें खातिर करती हैं कि हमलोगोंको मांका प्यार भूलिगया है, कभी ऐसी नौबत नहीं आई कि हम-लोग दुःख करसकैं, और आपका भेजा मिठाई मेवा हमलोगोंको न मिलाहो पान कभी हमलोगोंको माँगनेको नहीं पडा, समय समयपर आप भेजा करती हैं, सचमुच आपका प्यार माके प्यारसे अगर बडा नहीं है तो कमभी नहीं है।

(चं० कुँ०) बाबू यह आपलोगोंकी लयाकत है नहीं तो मैं क्या और मेरा प्यार क्या, अच्छाईतो कहीं कि जो कौनो बात हम आपलोगनसे कहीं तो मानब कि नाहीं।

(दे लोग) एकबात छोडके और जवन कहब तौन मानब।

(वे सब) कुछ सकुच, कुछ मुसकुरा, "दीदीजी हमरनसे तोई कुल कहत कहवावत पार नाहीं लगी" ।

(चं०कुँ०) कुछ मिजाज बनाकर "न पारलगै भाई खुशी तुम्हारी जाने दो ! इधर तुम लोग पडी झखो, उधर बाबू लोग रंजमें पडे रहैं(हाथोंसे अंचल पकर जमीनपरलाय शिरपर चढाय) हेजग- दम्बा ! धर्म तुहार" यह कहि चलने लगी, वे दोनों झपटके उसका दामन पकड कहने लगीं दीदीजी रउरे तो रिसिआय जाइला अरे हमलोग छोट न हई ।

(देवर) भाउज साहँब, आज क्या है, हमलोगोंपर बडीकृपा मालूम होती है, जो आज्ञाहो सो करैं।

(चं०कुँ०) भला बाबू आपलोगनसे बढकर के प्यारा होई जेके प्यार करब, शास्त्रमें (दिवर) शब्द लिखा है जिसको लोग देवर कहते हैं, इस शब्दका अर्थ यह है "द्वितीयवर, अर्थात् दूसरा वर, वा दूसरा पति" मेरी जानमें इसका तात्पर्य यह है कि जैसे पतिका प्यार और स्नेह स्त्रीको उचित है वैसही देवरकोभी भोजनादिक कियामें प्यार करना चाहिये, और जैसे पोषण, औ तोषण पतिपर उचित है, वैसही देवरकोभी अपने भाउजका खयाल रखना चाहिये कि पति पीछे उसको भोजन वस्त्रादिकको किसी तरहपर तकलीफ न हो, अबतो देखिये कि पतिपीछे तो देवरलोग जो दुर्दशा भौजाई की करते हैं वह तो करतेही हैं पति आछत बात नहीं पूंछते।

(देवर) भाउज साहेब आपका फरमाना सब सत्य है, हमलोगोंनेभी धर्मशास्त्रमें यह सब बातैं देखा है।

(चं०कुँ०) मुस्कुराकर-वह एक बात कौन, जरा मैंभी सुनलों।

(वे लोग) अच्छा, आपकहीं तो का कहब।

(चं० कुँ०) नहीं नहीं, वह बात मालूमतो होजाय, का जानी हम उहै बात कही, तो आपलोग न मानी तो रंज होई, और मालूम रही तो नाहीं कहब।

(वे लोग) घरमें सोनेके वास्ते मति कहब।

(दे० चं० कुँ०) आईतो हमके मालुमै नाहीं कि आपलोग घरमें नाहीं सूतीला, भला ई कबसे।

(वे लोग) भाउज साहेब दो बरससे।

(चं० कुँ०) भला काहे?

(वे लोग) क्या कहें भाउजसाहेब, हमलोग बडे बदकिस्मतहैं जिसकी औरत खराब मिलै,उसके बराबर खराब नसीबा किसीका नहीं है,हमलोग तो इन पाजियोंसे ऐसे तंग होगये,देश कोश गाँव घरके लोगोंसे इनकी बदनामी सुनसुन ऐसा कोत्फ होगये कि यही कहते हैं कि भगवान, या इन्हें मौतदे,या हमीलोगोंको मारडाल।

यह कहते मारे रंजके आँखोंमें आंसू भरलाये, चं० कुँ०ने चट आचलसे आंसू पोछ कहा "बाबू नादानहौ, ऐसा रंज करते हौ, भगवानकी विचित्र सृष्टि है, किसीका कैसा स्वभाव, किसीका कैसा मिजाज बनादिया है, और फिर यह थोडै है, कि जैसा स्वभाव आज रहै, वैसही कलहभी रहै? मुमकिन (संभव) है कि जिसका स्वभाव आज खराब है, कलह दैवसंयोगसे, वा किसीकी शिक्षासे बदलजाय नेक होजाय"।

आपलोग ऐसा रंज न करें, भगवान चाहैंगे तो आपलोग उनकी नेकनामी सुनैंगे, उनके स्वभावसे आपलोग प्रसन्न रहैंगे।

(वे लोग) भला भाउज साहेब, हमारे भाग्य कहां, जो यह जिंदगीमें उनकी नेकनामी सुनैंगे, यह तो अनहोनी बातहै।

(दे०चं०कुँ०) बाबू ऐसा नहीं, भगवान सर्वशक्तिमानहै उसके नजदीक कोई बात अनहोनी नहीं है।

(वे लोग) तो आप क्या कहतीहैं ?

(चं०कुँ०) मैं यही कहतीहूँ कि, आपलोग आज अपने अपने घरोंमें जाकर सोरहैं, जोतो आगेसे उन साहेबजादियोंका हाल कुछ अच्छा देखनेमें आवै तो खैर, नहीं कल्हसे आपलोगों को अख्तियार है।

(वे लोग) नहीं २ भाउजसाहेब, और जो आज्ञा दीजिये सो हम करनेको हाजिरहैं, पर उनदुष्टोंका मुँह हमें न देखलाइये।

(चं०कुँ०) नहीं बाबू यह कोई बात नहींहै, भला आपलोग हम लोगोंसे जो ऐसा क्रोध करैंगे तो हम मूर्ख अबलावोंका कैसे निस्तार होगा, मैं आपलोगोंके पांव लगतीहूँ मेरा कहा मानो, आज अपने घरोंमें जाकर सोरहो।

(वे लोग) तो अच्छा, जो हमने लालाका कहा न माना सा-का कहा टालदिया, पर आपका कहा टालते नहीं बनता, हम-लोग जायँगे, पर हम आपसे यहभी कहिदेते हैं कि एको व्यंग्य-वचन जो सभोंने कहा, वा किसी तरहपर अपमान किया, तो आपके चरणोंकी शपथ फिर उमरभरको त्याग करदेंगे।

(चं०कुँ०) हां मैं इसबातको मानतीहूँ, जो जराभी दूसरा भाव देखिये तो फौरन उठके मेरे घरमें चले आइये; सुबहीं तो देखिये कि मैं कैसा धम मचातीहूँ, मैंभी तो एक निराले ढिब आदमीहूँ सुबही तो उनका लेन देन करके उन्हें उनके घरोंको पहुँचाऊँगी, और आपलोगोंका इसीलग्नमें दूसरा ब्याह कराऊँगी आपलोग कुछ चिन्ता न करें और जाकर सोरहें।

(वे लोग) बहुत अच्छा, आपका हुकुम शिर आंखोंपर, यह कहि बाहर चलेगये ।

वे सब आहट लेतीरहीं, जब जानाकि वे लोग चलेगये, तब वे दोनों चन्द्रकुँ०के घरमें आय हँसहँसके बैठगईं ।

चं०कुँ० बनावटकी राहसे अपना मन उदास करके बैठीरही कुछ न बोली, वे दोनों हँस हँस, एक इधरसे एक उधरसे हाथ पकड़ पकड कहने लगीं "दीदीजी काहे रउरे उदास बोटीं तेनी बताईं तो का भइल का गइल" ।

(चं० कुँ०) का भइल का आपलोगोंने बाबूलोगोंको ऐसा रंज कर रक्खाहै कि किसीतौरसे आनेको कबूलही नहीं करते ।

जब मैंने कहा कि घरमें जाकर सोरहो तो येतना रंज किया कि आंख डबडबा आई और कहने लगे "भाउज साहेब किसका चित्त नहीं चाहता कि अपनी प्यारी स्त्रीके साथ हँसीखुशीसे दिन बितावे पर क्या करैं हमारे भाग्यमें सुख नहीं तो कैसे मिलै उन लोगोंने ऐसा अपना स्वभाव बिगाडा येतनी बदनामी अपनी कराया कि अब यही जी चाहताहै कि जहर खाके मरजाँय या जोगी फकीर होजांय" ।

सो आपलोगोंको ऐसा उचित न था, भला अपने प्राणकोभी कोई इसतरह रंज करताहै, क्या आपलोग नदानहैं ? मेरे देखनेमें तो आपलोग बहुत अच्छी और समझदार मालूम होतीहैं । यह क्या आपलोगोंने किया कि उनका रंज देखकर मैं रोने लगी ।

अच्छा आपही लोग सच सच कहैं कि दोबरससे वे लोग घरमें नहीं आये तो क्या इसका कुछ रंज कलक आपको न होगा जरूर होगा फिर भला उन लोगोंके साथ सेखी करनेका कौन काम था क्यों आरजू मिन्नत करके आपलोगोंने नहीं बोलवाया क्यों अपराध

क्षमा नहीं करवाया, आखिर येतना रंज आपलोगोंने बढादिया कि अब बाबूलोग कहतेहैं उमरभर घरमें नहीं जांयगे"।

मैंने उनको बहुत समझाया कि बाबू आपलोग येतना रंज न करैं वे लोग कुछ बुरी नहींहैं अमीरोंकी लडकियां हैं, अभी लडकपनका मिजाजहै, जब समझैंगी तो ऐसी अच्छी होजांयगी कि आपलोग खुश होजांयगे, जैसेही बदनामी सुनाहै, उससे बढकर नेकनामी सुनैंगे क्या वे लोग ऐसे तैसे घरकी थोडेहीहैं।

जब मैंने यह कहा तब कहने लगे अच्छा जब वे लोग समझैंगी अच्छी होंगी तबहीं हमलोग जांयगे।

मैंने कहा बाबू वे लोग अच्छीहैं कौन लुच्ची उनको बुरा कहतीहै, आप लोग जाकर देखिये, जो अच्छी वे न हों तो मुझे बुरा कहियेगा।

खैर ये सखी बहुत मनाते जोनाते समझाते बुझाते किसी तरहसे कबूल किया, पर यह कहि दिया कि मैं आपके हठसे जाताताेहूँ पर जो जरासी कोई बात विरुद्ध देखैंगे तो लालाकी कसम फिर उमर भर मुँह न देखैंगे, न फिर आपकी कोई बात मानैंगे।

सो भाई जो कुछ बात नीच ऊँचकी थी, मैंने आप लोगोंसे कहि दिया अब आपलोगोंको अख्तियारहै जैसा चाहिये वैसा रहिये, पर मैं हाथ जोडतीहूँ कि ऐसी कोई बात न कीजियेगा कि मेरा सराहना झूठा होजाय।

अब उठके अपने घरोंमें जाओ, पलंगका बिछावन दुरुस्त कर-डालो; अच्छा चलो मैंभी चलतीहूँ, यह कहि दोनोंका हाथ पकड़ उठी: और उनके साथ उनके घरमें जा, पलंगका बिछावन अपने हाथसे दुरुस्त करदिया, फिर तस्तरी मँगा मेवा मिठाई, पान इला-यची सब करीनेसे रखदिया और कहा "सखी अब कहोतो अपने घरमें जाऊं" उन सभोंने हाथ पकड़ कहा "दीदीजी नेनी

और बैठजांई तब जाव" चन्द्रकला बैठगई और कहा "अच्छा आपलोग यह तो कहैं कि जब वे लोग आवेंगे तो आपलोग क्या व्यवहार करैंगी"।

येकने हँसकर कहा "मैंतो घरमेंसे भागजावोंगी"।

दूसरीने कहा मैंतो कहदोंगी कि "कहां आतेहो, बाहरचलो" खैर इसपर आपसमें सब हँसने लगीं।

फिर चन्द्रकलाने कहा कि "अच्छा आपलोगोंके मनमें जो आवै सो करना, पर थोडीसी मेरीभी सुनलीजिये, कि जब वे लोग आजाँय तो आपलोग चरणोंको पकड शीश चरणों पर रखदेना; जब उठावैं तो उठिजाना, फिर जब चारपाईपर बैठजाँय, तो मेवा मिठाई आगे रखदेना, पानी देदेना, फिर पान इलायचीकी तस्तरी आगे रखदेना जब वे लेटजांय, तो पांवदाबने लगना, जो पैर दाबते दाबते उनको नींद आजाय, तो आपलोगभी सोरहना, वा जैसी उनकी रुचिदेखना, बेउजर वैसही व्यवहार करना. खबरदार, जो जराभी कोई व्यवहार विरुद्ध करोगी, तो बहिन, मैं जरूर तुमलोगोंको मारूंगी"

वे सब हँसकर "अच्छा राउर मार सहब बाकी ई कुल हमरनसे नाहीं पारलागी कि ई करब ऊ करब, हमरनकेतो लाज लागत बाय"

(चं०कुं०)आज लाजको मुझे दीजिये, मैं अपने पेटारेमें बन्द करदोंगी, और जो कुछ मैंने कहाहै, उसमें फरक न पडै, अच्छा अब मैं जातीहूँ भोजनका समय निकट आगया, यह कहि चलदिया।

इसके बाद भोजनका समय हुवा, और सबलोग भोजन करके सोये, जब समय हुवा, तो चन्द्रकलाने लौंडी भेजकर देवरोंको कहला भेजा कि अपने घरोंमें जाकर सोरहैं, वे लोग अपने घरोंमें गये, चन्द्रकला अपने घरमें सोरही।

चं०कुँ० को इस बातका खटका लगाथा कि यह सब नान्हें की बिगडैलहैं, देखैं क्या व्यवहार करतीहैं।

सुबह होतेही जब बाबूलोग दतुइन कुल्ला करचुके तो चं०कुँ०ने लौंडीसे कहा "जाके बाबूलोगोंसे कहिदे, यहीं आके पानी पीयें लौंडी गई, और चं०कुँ०का संदेशा कहा, वे लोग तुरत उसके साथ चले आये, और मुसकुराते हुये चं०कुँ०को नमस्कार किया चन्द्र कलाने कहा "मुबारक २ पहिले पानी पीलीजिये" फिर मैं आप-लोगोंसे बातचीत करूंगी, यह कहि मेवा मिठाई उनके आगे रख-दिया, उन लोगोंने पानी पीलिया, तब चन्द्रकलाने कहा "कहिये क्या हाल चालहै? मिजाजतो प्रसन्नहै" उन लोगोंने कुछ सकुच कुछ मुस्कुरा कहा "आप धन्यहैं, न मालूम आप कौन भवानी पूजतीहैं, या कोई जादू जानतीहैं, कि जिस बातकी कभी उम्मेद न थी, वह बात देखनेमें आई, परमेश्वर आपको सलामत रक्खै कि हमलोगोंका जीवन जो व्यर्थ होचलाथा, आपने सफल किया, जैसा कुछ उचित व्यवहारहै वैसा सभोंने किया, कोई व्यवहार शिकायतके लायक उन सभोंके तरफसे प्रगट नहीं हुआ"।

(चं०कुँ०) बाबू! मैं आपलोगोंसे कहती न थी कि वे रईसकी लडकियां हैं, जब चेत करेंगी, तो सब निंदित स्वभाव छोडदेंगी, अब आपलोग देखेंगे कि वे कैसी सुशील और गुणमान होतीहैं. अच्छा अब आपलोग जाइये, अपना २ काम कीजिये अब मैं जरा उनलोगोंके पास जातीहूं।

वे लोग बाहर चलेगये, और आप उठ अपनी देवरानियोंके घरमें गई।

वे सब मुस्कुराती हुई, चं० कुँ० के पाँव लगीं, और आशिष पाय, शिर नीचा कर बैठगईं ।

चं०कुँ० ने हँसकर, हाथसे उनका शिर पकड, कहा " अहा सखी ! जरा आँख उठाकर मेरी तरफ तो देखो, मिजाज कैसाहै ? जरा रातकी बाततो कहो, क्या हुवा ? क्या गया ?" ।

वे सब हँसहँस लोटगईं, फिर कहा "क्या हुवा क्या ? आये तो मैंने चिढादिया, और कहदिया, आखिर बेबुलाये आये, बेआये नहीं रहागया " ।

दूसरीने कहा "मैंने तो आतेही कहिदिया, जहां रोज रहतेहो वहीं चलेजाव, यहां क्या कामहै ?" बस वे चलेगये ।

इसीतरह कुछदेरतक आपसमें हँसबोल फिर चं० कुँ० अपने घरमें चली आई ।

अब चं०कुँ०ने उन सभोंको ऐसा अपने वश करलिया, कि जो चाहती सो कराती,और जैसा कहिदेती वैसेही वे सब रहतीं, समय समयपर स्वभाव सुधारक शिक्षा और नसीहत कियाकरती,हरबातोंका गुणदोष जनाते२ऐसा सभोंको सीधा करलिया,कि न किसी को घुडुकना,न झिडिकना न गाली न गुफता, सीधे आना, सीधे जाना सीधे बोलना, सीधे बतिआना ।

थोडेही दिनोंमें, सासके पासभी लेजाकर उनसभोंको पाँवपर गिरवाया, उनका अपराध क्षमा करवाया, और उसकी प्रेरणासे बराबर वे सब सासकी सेवामें तत्पर रहने लगीं ।

अब तमाम गांवमें यह चर्चा होनेलगी "कि मुन्शीजीकी जो नई पतोह आईहैं,न मालूम केतनी वडी लायकहैं, और क्या जानतीहैं कि अपने ऐसे बिगडेहुये स्वभाववाली देवरानियोंको ऐसा सीधा करदिया, कि बुझातिही नहीं यह वही लोगहैं" ।

दे० स० कुँ०भी यह व्यवहार देख अपने मनमें अतिप्रसन्नहो, बार बार चं०कुँ०को सराहती, उसका मुख चूमकर कहती "बेटी! तू धन्यहै, यह तेराही कामथा कि ऐसे बिगडैलोंको ऐसा बनादिया, भगवान तेरा सुख सोहाग दिनदिन दूना करै"।

बोध४.

(दे०चं०कुँ०) का स्त्रीसभा स्थापन करना और अपने नैहरको जाना।

चन्द्रकलाका यह नितनियमथा कि जाडेके दिनोंमें दोघडी रात बाकी रहे उठती; और हाथ मुँह धोय, आग अंगीठीमें जलाय, सासके चारपाईके निकट लेजाती, वह उठि, हाथ मुँहधो, बैठकर हाथपाँव सेकतीं और चन्द्रकलाभी भोरहोने तक इन्हीके पास बैठकर यहां वहांकी बातैं कियाकरती।

एकदिन चन्द्रकलाके जीमें यह आया, कि यहां शिक्षितास्त्रियां बहुत हैं, और बिरादरीकीभी कसरत (अधिकत्त्व) है एक स्त्रीसभा इसजगह कायम करूं; और उसमें निंदित व्यवहारके तिरस्कार, और वन्दित व्यवहारके प्रचार अर्थ व्याख्यान दियाकरूं।

यह शोचि, अपनी साससे जबकि वह उनके पास बैठी ताप रही थी, बोली।

(दे० चं०कुँ०) अम्माजी एक बात मैं शोचती हूँ, जो आज्ञा हो तो विनय करूं।

(दे० स० कुँ०) बेटी तेरे बचन विचित्र होते हैं, और मेरा चित्त तेरे वचनोंसे अतिप्रसन्न होता है; जो बात तेरे हृदयमें हो उसको अवश्य प्रगट कर।

(दे० चं० कुँ०) जैसे दश पांच बुद्धिमान पुरुष इकट्ठे होकर सभा करते, और उसमें अपने सुधारका काम उठाते हैं, इसी प्रकार यदि दश पांच शिक्षित स्त्रियां, एक नियत दिन और समयपर एक-

त्रित होकर सजातीय व्यवहारके सुधार अर्थ तजवीजें पेश और पास किया करैं, व्याख्यान दियाकरैं तो क्या यह कोई अनुचित बात होगी, क्या स्त्रियोंको इससे कुछ लाभ न होगा ?

(दे०स०कुँ०) बेटी यह बाततो तूने अनोखी निकाली, आजतक स्त्रियोंकी सभा कहीं कायम नहीं हुईथी, पर हां मैं तो इसबातको बडे हर्षसे पसन्द करतीहूं, और आशा करतीहूं, कि यदि शिक्षित स्त्रियां पुरुषोंकी सभाके नियम अनुसार स्त्रीसभाको स्थापन करके उसमें अच्छी अच्छी बातोंका प्रकाश कियाकरैं और उनपर व्याख्यान दियाकरैं तो एकदिन ऐसा देखोंगी, और मैंने न देखा तो तुमलोग देखोगी, कि स्त्रियोंके अशिक्षितपने और निन्दित स्वभावसे पुरुषोंका जो नाकमें दम होरहाहै, गृहस्थ आश्रमका पुरुषोंको हमारे कुभाव और मूर्खतासे जो कुछभी स्वाद नहीं मिलता, और स्त्रियांभी जगत्में अनादरता और अयशका दुःखसहिकर अंतकाल नरकमें जातीहैं, यह सब बातैं निवृत्त होजांयगी; वही पुरुष हम लोगोंके अच्छे स्वभाव और उचित बर्तावसे प्रसन्न रहाकरैंगे, गार्हस्थ आश्रमको वही पुरुष त्यागसे उत्तम समझने लगैंगे, और हम लोगभी जगत्में यश पाकर अंतकाल सत्यलोकमें निवास करैंगी सो मेरी आज्ञाहै कि तू अवश्य इसका प्रबन्ध कर ।

(दे० चं०कुँ०) अम्माजी ! मुझमें इतनी बुद्धि कहां, और मैं किस योग्यहूं, जो ऐसे भारी विषयमें कुछ करसकूं, हां आपके सिखलाने और बतलानेसे मैं सब कुछ करसकतीहूं ।

(दे० स० कुँ०) बेटी ! यह तेरी सुघरता और सुशीलताहै, नहीं तो तू सबकुछ जानती और बहुत कुछ करसकतीहै, अच्छा तू

एक निवेदनपत्र लिख, और यहां चालीस घर हमारी जातके हैं हर घरोंकी एक एक सरदारिनोंका नाम इसके नीचे लिखकर भेजवायदे और कल्ही सभाका प्रवन्ध करदिया जाय।

चन्द्रकलाने आज्ञापातेही उसीदम निवेदनपत्र लिखकर तैयार करदिया, और कहा "अम्माजी तैयार है"।

(दे० स० कुँ०) वेटी क्या लिखा, पढोतो।

चंद्रकला पढने लगी।

निवेदनपत्र।

श्रीगणेशाय नमः।

मुझको सजातीय व्यवहारके विषयमें आपलोगोंसे कुछ विनय करना है, ताते सर्ववडभागी और बुद्धिमान सरदारिनों और सखियोंसे आशा है, कि कल्ह २ वजे दिनको मेरी झोपडीमें आकर मुझको दर्शन और वडाईदें।

आपलोगोंकी शुभचिंतक

सन्वती.

मिती कार्तिकशुक्ल ४ सं० १९५१.

(दे०स० कुँ०) वेटी। यह तो तैंने खूब दोटप्पी उडाई, अच्छा अब इसको किसी ऐसी लौंडीके सुपुर्द कर जो हिन्दी पढेहो, और ताकीद करदे कि सबको देखलाय सबका चिह्न बनवाय लावे।

चन्द्रकलाने (अमीना) को देकर विदाकिया, वह गई और दो तीन घडीमें सबका चिह्न बनवाय, नोटिस (निवेदनपत्र) दे० स० कुं०के सुपुर्द करदिया।

पहिली सभा १.

दूसरे दिन और होतेही चन्द्रकला सब ननद भौजाइयोंके देवीसरस्वतीकुंवरिके पास आ, करजोडि, खडीहो बोली।

(दे॰चं॰कुँ॰) अम्माजी, आजके लिये जो जो उचित व्यवहारहो, उसके लिये आज्ञा दीजिये, हमलोग उसी अनुसार अंजाम करैं ।

(दे॰स॰कुँ॰) पश्चिमका दालान मेरे जानमें सभाके योग्य है, उसको साफ कराय उसमें फर्श विछवादो, पान इलायचीका बन्दोबस्त करडालो, फर्शके बीचमें एक मेज रखवादो, उसपर अच्छा साफ कपडा डालदो दो चार ताव कोरा कागज और अपना कलमदान रखवादो ।

चन्द्रकला आदिक बडेहर्ष और बड़े उछाहसे सबसामान दुरुस्त करके देवी सत्वती कुँवरिसे कहा "अम्मा ! सब तैयार है" ।

(दे॰स॰कुँ) सब तैयार है तो अच्छा है, पर मैं एक बात पूछती हूँ कि तू सदा मुझको अम्माजी कहा करती थी, आज क्या कारण है जो केवल अम्मा कहा है ?

(दे॰ चं॰ कुँ॰) हाथ जोडकर, आज मुझको बडाहर्ष होरहा है मैं उसी धुनमें (जी) शब्द भूलिगई, क्षमा कीजिये ।

दे॰स॰कुँ॰ ने हँसकर गले लगालिया ।

(फिर दे॰चन्द्रकला कुँ॰से) क्यौं बेटी ! सभाकरने और उनमें लेकचर देनेके लिये दश पांच शिक्षित स्त्रियां भी तो चाहिये, सो पांचतो हमहींलोग हैं,पर मैं चाहती हूँ कि दो चार और बडे आदमीके घरोंकी स्त्रियां बुलाकर उनको सभाके किसी नियममें नियत करदो अच्छा बतलावो तो इस गाँवमें कितनी शिक्षित स्त्रियां हैं ।

(दे॰नु॰ कुँ॰) अम्मा ! सिवाय आपके शागिर्दोंके और कौन शिक्षित हैं ।

(दे०स०कुँ०) बुधिया !

(बुधिया) हां सर्कार हाजिरहूँ जो आज्ञा ।

(दे०स०कुँ०) तू जा, और बबुई गुनवन्त कुँवरि, बबुई रजवन्त कुँ०, बबुई शीलसागर कुँ०, बबुई रूपउजागर कुँ० से मेरा आशिर्वाद कहि यह कहना "कि आपलोगोंको बुलायाहै" ।

(बुधिया) बहुत अच्छा सर्कार, यह कहि गई और सबको लेवाय लाई ।

इन्हें आतेदेख, चन्द्रकला बडेहर्पसे उठीं, और मुसकुरातीहुई सबसे मिल भेंटि, हाथोंमें हाथ मिला सभाके कमरेमें लिवाय लाई वे सब दे०स०कुँ० के पांवलगि आशिर्वादपाय बैठगईं और बोलीं ।

(दे०गुण०कुँ०) देवीजी यह क्याहै ? गांवभरमें आपने आज खडबड मचादियाहै, मर्दलोग सुनसुनके हँसते, और आश्चर्यमानहो कहतेहैं "भाई पुरुपोंकी सभातो देखा था, पर यह स्त्रीसभा नई बात सुननेमें आईहै, देखैं स्त्रियां जुटके किसबातका सुधार करती हैं" ।

(दे०रजवन्तकुँ०) देवीजी जबसे आपका नोटिस घूमाहै तबसे घरघर यही चर्चा होरहाहै कि "देवीजी आज स्त्रीसभा कायम करेंगी" सो हमलोगोंके सुपुर्द जो सेवकाई करदीजिये उसको हम लोग अपने विद्या, बुद्धि, बल, पौरुप अनुसार अंजाम करें ।

(दे०स०कुँ०) यहतो तुमलोग जानही गई कि आज हम स्त्रीसभा कायम करेंगी जो जिसतरहपर आज कार्रवाई होगी उसका एक परोग्राम (कार्रवाईका नियम) आपलोग मिलके दुरुस्त करलें ।

परोग्राम दुरुस्त हुआ ।

परोग्राम ।

१ हाजिरी लिखी जायगी, तअल्लुक बुद्धिमती कुँ० ।

२ ईश्वरकी प्रार्थना होगी, तअ० चन्द्रकला कुँ० ।

३ श्रीअम्माजी (दे०स०कुँ०) सभा कायम होनेकी आवश्यकता (जरूरत) वर्णन करैंगी, उसकी ताईद १ चं०कुँ०२ बुद्धिमती कुँ० बुद्धिसागरकुँ० करैंगी, समय शेष रहनेपर सभासद नियत कियेजांयगे ।

(दे० सत्वती कुँ०) अच्छा अब ९ बजैगा, तुमलोग अपने २ घरजावो, और खाय पीके जल्दी चली आवो, हमलोगभी तैयार होजातीहैं ।

वे लोग अपने २ घरगईं, और देवी सत्वती कुँ०मय चन्द्रकला आदिकके भोजनादिक क्रियासे निवृत्त होकर सभाके कमरेमें जा बैठीं ।

सबसे पहिले देवी गुणवन्त कुँवारि आदिक चारों एक साथ आईं तत्पश्चात् झुंडकी झुंड स्त्रियां आने लगीं ३२ पालकी और १२ सुखपाल दीवानजीके द्वारपर आलगीं और जिनका घर निकट था वह पैदल खिडकीकी राहसे आने लगीं ।

जो खिडकीकी राहसे आतीथीं उन्हैं देवी चन्द्रकला कुँ० और जो द्वारसे आतीथीं उनको देवी बुद्धिमती कुँ० आगे पहुँचि मुस्कुराती और प्रियाभाव जनाती मिलि हाथोंसे हाथ मिलाय आदरपूर्वक उनको ले सभाके कमरेमें बैठालने लगीं, वहां देवी रूपउपजागरकुँ० सबको पान इलायची देने लगी ।

देवी सत्वती कुँ० भी बारीबारीसे सबसे यथायोग्य मीठी २ बातैं करि अनेक प्रकारसे मानमर्याद बढाय चित्त प्रसन्न करतीथीं।

जब सब स्त्रियां जुटचुकीं तो देवी बुद्धिमती कुँवारि हाजिरी लिखने लगीं ।

फिहरिस्तहाजिरी ।

१ दे० आदिज्योतिकुँ०	२६ दे० रामराजीकुँ०	५१ दे० जीअनकुँ०
२ दे० परमज्योतिकुँ०	२७ दे० सामराजीकुँ०	५२ दे० नौरंगीकुँ०
३ दे० मर्यादकुँ०	२८ दे० मनराजीकुँ०	५३ दे० जगरानीकुँ०
४ दे० अह्लादकुँ०	२९ दे० भगवंतीकुँ०	५४ दे० सुलमानीकुँ०
५ दे० सुखबासकुँ०	३० दे० रजवंतीकुँ०	५५ दे० लगनमानीकुँ०
६ दे० रूपराशिकुँ०	३१ दे० दमयंतीकुँ०	५६ दे० सुघरकुँ०
७ दे० रक्षपालकुँ०	३२ दे० लेखराजकुँ०	५७ दे० महारानीकुँ०
८ दे० हरपालकुँ०	३३ दे० सुखराजकुँ०	५८ दे० हुलासकुँ०
९ दे० सुखपालकुँ०	३४ दे० रघुवंशीकुँ०	५९ दे० पार्वतीकुँ०
१० दे० खुशहालकुँ०	३५ दे० सूर्यवंशीकुँ०	६० दे० हनिवंताकुँ०
११ दे० फुलमानकुँ०	३६ दे० राजवंशीकुँ०	६१ दे० शिवराजीकुँ०
१२ दे० भगमानकुँ०	३७ दे० सम्पतीकुँ०	६२ दे० सूर्यदेईकुँ०
१३ दे० रूपकलीकुँ०	३८ दे० दुर्पतीकुँ०	६३ दे० यमुनाकुँ०
१४ दे० सूर्यकलीकुँ०	३९ दे० गुजरातीकुँ०	६४ दे० गंगजलाकुँ०
१५ दे० नौरतनकुँ०	४० दे० बरसातीकुँ०	६५ दे० गनपतीकुँ०
१६ दे० सुखसदनकुँ०	४१ दे० सुखदेईकुँ०	६६ दे० जगपतीकुँ०
१७ दे० सिरताजकुँ०	४२ दे० महादेईकुँ०	६७ दे० ठकुरानीकुँ०
१८ दे० रसराजकुँ०	४३ दे० मौलश्रीकुँ०	६८ दे० सुभागकुँ०
१९ दे० मनहरनकुँ०	४४ दे० सूर्यमुखीकुँ०	६९ दे० अनुरागकुँ०
२० दे० चन्द्रवदनकुँ०	४५ दे० जनकदुलारीकुँ०	७० दे० जगदेईकुँ०
२१ दे० चन्द्रज्योतिकुँ०	४६ दे० रामदुलारीकुँ०	७१ दे० रामदेईकुँ०
२२ दे० चन्द्रहासकुँ०	४७ दे० श्यामदुलारीकुँ०	७२ दे० स्वरूपाकुँ०
२३ दे० [illegible]कुँ०	४८ दे० गुलाबकुँ०	७३ दे० अनंदीकुँ०
२४ दे० [illegible]कुँ०	४९ दे० चम्पाकुँ०	७४ दे० मंगलकुँ०
२५ दे० नगरानीकुँ०	५० दे० [illegible]कुँ०	७५ दे० सुभद्राकुँ०

परोग्राम ।

१ हाजिरी लिखी जायगी, तअल्लुक बुद्धिमती कुँ० ।

२ ईश्वरकी प्रार्थना होगी, तअ० चन्द्रकला कुँ० ।

३ श्रीअम्माजी (दे०स०कुँ०) सभा कायम होनेकी आवश्यकता (जरूरत) वर्णन करैंगी, उसकी ताईद १ चं०कुँ०२ बुद्धिमती कुँ० बुद्धिसागरकुं० करैंगी, समय शेष रहनेपर सभासद नियत कियेजांयगे ।

(दे० सत्वती कुँ०) अच्छा अब ९ बजैगा, तुमलोग अपने २ घरजावो, और खाय पीके जल्दी चली आवो, हमलोगभी तैयार होजातीहैं ।

वे लोग अपने २ घरगई, और देवी सत्वती कुँ०मय चन्द्रकला आदिकके भोजनादिक क्रियासे निवृत्त होकर सभाके कमरेमें जा बैठीं ।

सबसे पहिले देवी गुणवन्त कुँवारि आदिक चारों एक साथ आई तत्पश्चात् झुंडकी झुंड स्त्रियां आने लगीं ३२ पालकी और १२ सुखपाल दीवानजीके द्वारपर आलगीं और जिनका घर निकट था वह पैदल खिडकीकी राहसे आने लगीं ।

जो खिडकीकी राहसे आतीथीं उन्हैं देवी चन्द्रकला कुँ० और जो द्वारसे आतीथीं उनको देवी बुद्धिमती कुँ० आगे पहुँचि मुस्कुराती और प्रियाभाव जनाती मिलि हाथोंमें हाथ मिलाय आदरपूर्वक उनको ले सभाके कमरेमें बैठालने लगीं, वहां देवी रूपउपजागरकुँ० सबको पान इलायची देने लगी ।

देवी सत्वती कुँ० भी वारीबारीसे सबसे यथायोग्य मीठी २ बातें करि अनेक प्रकारसे मानमर्याद बढाय चित्त प्रसन्न करतीथीं।

जब सब स्त्रियां जुटचुकीं तो देवी बुद्धिमती कुँवारि हाजिरी लिखने लगीं ।

फिहरिस्तहाजिरी ।

१ दे० आदिज्योतिकुँ०
२ दे० परमज्योतिकुँ०
३ दे० मर्यादकुँ०
४ दे० अहलादकुँ०
५ दे० सुखबासकुँ०
६ दे० रूपराशिकुँ०
७ दे० रक्षपालकुँ०
८ दे० हरपालकुँ०
९ दे० सुखपालकुँ०
१० दे० खुशहालकुँ०
११ दे० फूलमानकुँ०
१२ दे० भगमानकुँ०
१३ दे० रूपकलीकुँ०
१४ दे० सूर्यकलीकुँ०
१५ दे० नौरतनकुँ०
१६ दे० सुखसदनकुँ०
१७ दे० शिरताजकुँ०
१८ दे० रसराजकुँ०
१९ दे० मन्हरनकुँ०
२० दे० चन्द्रवदनकुँ०
२१ दे० चन्द्रज्योतिकुँ०
२२ दे० चन्द्रहासकुँ०
२३ दे० शीलसागरकुँ०
२४ दे० रूपउजागरकुँ०
२५ दे० मजराजीकुँ०
२६ दे० रामराजीकुँ०
२७ दे० सामराजीकुँ०
२८ दे० मनराजीकुँ०
२९ दे० भगवंतीकुँ०
३० दे० रजवंतीकुँ०
३१ दे० दमयंतीकुँ०
३२ दे० लेखराजकुँ०
३३ दे० सुखराजकुँ०
३४ दे० रघुवंशीकुँ०
३५ दे० सूर्यवंशीकुँ०
३६ दे० राजवंशीकुँ०
३७ दे० सम्पतीकुँ०
३८ दे० दुर्पतीकुँ०
३९ दे० गुजरातीकुँ०
४० दे० वरसातीकुँ०
४१ दे० सुखदेईकुँ०
४२ दे० महादेईकुँ०
४३ दे० नौलखीकुँ०
४४ दे० सूर्यमुखीकुँ०
४५ दे० जनकदुलारीकुँ०
४६ दे० रामदुलारीकुँ०
४७ दे० सामदुलारीकुँ०
४८ दे० गुलाबकुँ०
४९ दे० चम्पाकुँ०
५० दे० वासमतीकुँ०
५१ दे० जीअनकुँ०
५२ दे० नौरंगीकुँ०
५३ दे० जगरानीकुँ०
५४ दे० गुलमानीकुँ०
५५ दे० लगनमानीकुँ०
५६ दे० सुवर कुँ०
५७ दे० महारानीकुँ०
५८ दे० हुलासकुँ०
५९ दे० पार्वतीकुँ०
६० दे० हनिवंताकुँ०
६१ दे० शिवराजीकुँ०
६२ दे० सूर्यदेईकुँ०
६३ दे० यमुनाकुँ०
६४ दे० गंगजलाकुँ०
६५ दे० गनपतीकुँ०
६६ दे० जगपतीकुँ०
६७ दे० यदुरानीकुँ०
६८ दे० सुभागकुँ०
६९ दे० अनुरागकुँ०
७० दे० जगदेईकुँ०
७१ दे० रामदेईकुँ०
७२ दे० स्वरूपाकुँ०
७३ दे० अनंदीकुँ०
७४ दे० मंगलकुँ०
७५ दे० सुभद्राकुँ०

तत्पश्चात् देवीचन्द्रकलाकुं० मेजके पास पूर्वमुंह खडीहो प्रार्थना करने लगीं ।

प्रार्थना ।

हेसर्वशक्तिसम्पन्नजगदीश्वरी, हेब्रह्मसेअभिन्नमाहेश्वरी, हम अबलान आपके पांव लगतीहैं, आपके चरणकमलोंको बलि बलि जातीहैं अबलानके बल और तियानके तारनेवाली आपही हैं, निज भक्तोंकी रक्षक, और दुष्टोंकी मारनेवाली आपहीहैं, आप हमें सुबुद्धिदें, आप हमारी सहायता करें, कि हमलोग अपनेव्यवहारका सुधार करके अपना उद्धार करलें ।

यह कहि बैठिगई ।

तत्पश्चात् देवीसत्यवती कुं० उठीं ।

(व्याख्यान दे० स० कुं)

मैं सर्वसर्दारिनों और सखियोंके पांव लगतीहूँ, और उनके पांवको बलि बलि जातीहूँ, जिन्होंने कृपा करके आज इसस्थानको और मुझको पवित्र कियाहै ।

सर्दारिनो ! आपलोग जो मेरे बुलानेका आदरकरके यहांतक आईं तो मुझे आपलोगोंने बिना दामों मोल लेलिया. मैं आपलोगोंके येतने बडे उपकारका यश जो अपने छोटे मुँहसे वर्णन करूं तो मुझपर यह मसल घटि जायगा कि (छोटामुँह बडीबात) ताते मैं केवल नमस्कारही पर संतोष करके उसहेतुको वर्णन करतीहूँ, जिसके लिये हमलोग एकत्रित हुईहैं, अर्थात् अपने उस अभिप्रायको प्रगट करतीहूँ जिसके लिये आपलोगोंके कोमल कोमल पग मगकी कठिनता सहन करके यहांतक आयेहैं ।

सखियो ! मानुष कोटिमें दोवर्ग एक स्त्री, दूसरे पुरुष, जो इंद्रियां और अन्तःकरण पुरुषकेहैं वही स्त्रियोंकेभीहैं, फिर क्या कारणहै

कि पुरुष उच्च और उत्तम और हम स्त्रियां नीच और निकृष्ट मानी जाती हैं।

मेरी बुद्धिमेंतो इसका कारण सिवाय इसके दूसरा नहीं ठहरता कि पुरुष विद्या पढ़ते हैं,और विद्यासे उनकी बुद्धि उज्वल होजाती है जिससे वे उच्च २ कार्य और उत्तम २ विचार करते हैं, और हम-स्त्रियां सिवाय त्रियाचरित्र विद्याके जिसको हम मांके पेटइमेंसे सीखे आती हैं, और कोई स्वभाव सुधारक विद्या नहीं पढतीं इसीसे हम बिलकुल जाहिल जपट और निपट निकम्मी होती हैं न कुछ काम करनेका लूर न भलाबुरा पहिचाननेका शऊर आताहै।

इसी अशिक्षताके कारण हमारे व्यवहारोंमें ऐसीऐसी निंदित रीती पडी हुई हैं जिससे पुरुष लोग सदा हमलोगोंको बेधडक और ऊंचेस्वरसे कहते हैं कि (स्त्रीजात बडी बेवकूफ होती है) सो सच कहते हैं हमारी बेवकूफीने तो देशका अर्थात् सारे गृहस्थ आश्रम वालोंका दम नाकमें करदिया है।

अब जो कोई मुझसे प्रश्न करै कि तब फिर, अर्थात् तब क्या कियाजाय, तो इसका उत्तर वही होगा जो मेरा आज अभिलषित प्रयोजन है, अर्थात् अपने व्यवहारके सुधार और निंदित व्यवहारके तिरस्कारके वास्तेही मैं चाहती हूं कि जैसे पुरुष लोग सभाको अपने सुधारका निमित्त मानलिया है, वैसेही हमलोगभी स्त्रीसभा कायम करके नियत दिनपर सबकोई एकत्रित होजाया करैं. तुरत और दृष्टिलाभ तो हमको उससे यह होगा कि हम सब सखियां एक दिन एक जगह होजायंगी, और आपुसके दरशन दीदार, मेल मिलापसे चित्त प्रसन्न करैंगी।

फिर हमलोग अपने हित अनहितका विचार करैंगी; जो बात अथवा जो रीती हमलोगोंके व्यवहारमें निंदित हो उनको हमलोग सम्मती करके निकालदें।

स्त्रीशिक्षाकी तजवीज पास करके साथही उसके सबकोई अपनेर छोटीबडी लडकियोंको जिस प्रकार होसकै विद्या, आरंभ कराती जाँय, इसप्रकार अपने सुधार और उन्नतिके विषयमें चर्चा और प्रचार किया करैं ।

सो इस स्त्रीसभा कायम होनेके विषयमें जो बुद्धिमान सखियां मेरे मतिसे सम्मति करैं कुछ कहैं, तत्पश्चात् असम्मति करने वालियां कहैं इति । यह कहि बैठगईं ।

(दे० बुद्धिमतीकुँ०का व्याख्यान)

श्रीमती बुद्धिनिधान श्रीमाताजीने जो आवश्यकता और जो-लाभ स्त्रीसभा स्थापनके विषयमें वर्णन किया है, वे सबही योग्य और माननीय हैं ।

कौन नहीं जानता कि इसी सभाकी बदौलत पुरुषोंने कितना कुछ अपने व्यवहारका सुधार करलिया, और करते जाते हैं क्या हमलोगोंको उचित नहीं है कि जहां२ दश पांच विरादरीके घरहों, वहां सबघरोंकी स्त्रियां एक दिन पंचाइत, वा सभाका रक्खैं, उस दिन इकट्ठे होकर अच्छा २ विचार, विद्या वृद्धिका प्रचार करैं जिनके निंदित स्वभावहों उनको सर्वस्त्रियां सखीपनेकी रीतिसे सुधारैं दो चार घडी आपसमें मिलिजुलि हँसिबोलि फिर अपने अपने घरोंको चलीजाँय मेरे जानमें यह व्यवहार अतिहर्षका कारण और सुधारका साधन होगा ।

यह कहि बैठगई, और देवी बुद्धिसागर कु०उठीं ।

(दे०बु०सा०कुँ०का व्याख्यान)

श्रीदेवीजीकी मति अतिउत्तम और आदरणीय है, जब पुरुषों ने अपने सुधारका साधन सभाहीको निश्चित किया है, तो

हमलोगभी अपने भलाइयों और सुधारका आधार इस सभाको क्यों न स्थापन करैं? इति।

यह कहि बैठगई, और दे॰चं॰कुँ॰उठी

(व्याख्यान दे॰चं॰कु॰ कुँ॰)

परमेश्वरकी आज्ञा व्यवहारके सुधारके लिये जैसेही पुरुषोंकोहै वैसेही स्त्रियोंकोभीहै पर हमलोगोंकी दशा तो अशिक्षितपनेसे ऐसी बिगडगईहै कि सिवाय बिगाडके सुधारका नामही नहीं जानतीं हमलोगोंको बहुत आवश्यकता इस बातकीहै कि हमलोग सभा-करके शोचैं कि हमलोगोंको कैसा होना चाहिये और कसे हमहैं, किस राह हमको जाना चाहिये, और जाती किस राहहैं?

हमारे स्वभावमें क्या अवगुणहैं जिससे हमारा पतिभी जिसके हम प्राणसेभी अधिक प्रिय होने चाहियें, वह हमको कहताहै "दुर्नालायक, दुलुच्ची तेरे ऐसी खराब औरत कोई नहींहै, हम तुझसे कभी खुश नहीं रहे" इत्यादिक अनेक प्रकारके निरादरता सूचक वचन सुनतीहैं।

क्या हमको इसकी लज्जा नहीं करनी चहिये, ? क्या हमको अपने अनादरताजन्यक्लेशके मिटानेका औषध इस सभारूपी वैद्यसे नहीं लेना चहियें ? अवश्य चाहिये।

सखियो सभाहीको सत्संगभी कहतेहैं, तात्पर्य यह कि "जो बटोर दोचार भले आदमियोंका किसी लौकिक वा, पारलौकिक व्यवहारके सुधार अर्थ हो उस बटोरको सत्संग कहतेहैं, जेते लाभहैं ते सब सभा वा सत्संगसे प्राप्त होतेहैं, इसमें गोसाईं तुलसीदासजीका वचन प्रमाणहै।

चौपाई-मति कीरति गति भूति भलाई। जो जेहि जतन जहां जेइपाई॥ सो जानव सत्संग प्रभाऊ। लोकहु वेदन आन उपाऊ॥

अच्छा एक कबित्त मुझसेभी सुनिलीजिये।

स्त्रीशिक्षाकी तजवीज पास करके साथही उसके सबकोई अपने२ छोटीबडी लडकियोंको जिस प्रकार होसकै विद्या, आरंभ कराती जाँय, इसप्रकार अपने सुधार और उन्नतिके विषयमें चर्चा और प्रचार किया करैं ।

सो इस स्त्रीसभा कायम होनेके विषयमें जो बुद्धिमान सखि मेरे मतिसे सम्मति करैं कुछ कहैं, तत्पश्चात् असम्मति वालियां कहैं इति । यह कहि बैठगईं ।

(दे० बुद्धिमतीकुँ०का व्याख्यान)

श्रीमती बुद्धिनिधान श्रीमाताजीने जो आवश्यकता लाभ स्त्रीसभा स्थापनके विषयमें वर्णन किया है, वे स और माननीय हैं ।

(दे०स०कुँ) हां यह लिखलियाजाय, पर जब सभा कायम होनेकी राय होगई तौ सभाके ओहदेदार (नियामक) भी नियत होजाने चाहिये ।

हरसभामें एक प्रेसीडेंट (सभापति) और एक सेक्रेटरी(प्रचारक वा नियामक) अवश्य हुवा करतेहैं इनके सिवाय जहां जरूरतहो वहां नायब सभापति, और नायब सेक्रेटरीभी होतेहैं सो इस विषयमें जैसी सबकी रायहो वैसा लिखा जाय, यह कहि बैठगई और दे० रजवंतिकुँ० उठीं ।

(दे०रजवंति०कुँ०) पहिले हमको यह विचारना चाहिये कि सभापतिमें कौन कौन गुण होने चाहिये और वे गुण अस्मदादिकोंमेंसे किसमेंहैं, मेरे विचारसे इतने गुण होने चाहिये ।

१ आयुमेंभी वृद्धहो, अर्थात् निरी छोकडी न हो ।

२ विद्या बुद्धिवालीहो ।

३ सभाके कामोंमें उसका जी लगताहो ।

४ जाति उन्नतिमें जिसका परिश्रम और स्नेहहो ।

अब आपलोग विचार करैं कि यह सब बातैं किसमेंहैं मेरे देखनेमें तो यह सब बातैं श्रीदेवी सत्वती कुँवरिमें हैं और वेही इस अधिकारके योग्यहैं ।

यह कहि बैठगई—उसकी ताईद करने देवी गुणवंतिकुँ०उठीं ।

(दे०गु०कुँ०) मैं ताईद करतीहूं कि श्रीदेवी सत्वती कुँ० इस सभाकी सभापति नियत कीजाँय क्यौंकि आपसे बढकर हममें इस अधिकारके योग्य दूसरी कोई नहींहै ।

(सर्व स्त्रियां प्रसन्न मुख हाथ उठाकर) हम सर्वको सम्मतहै ।
तत्पश्चात् दे० स० कुँ० उठी ।

सवैया ।

सारे भलाईको साधन जानिये मानिये जाको सबै सुख कारण ।
बुद्धिसुधारको द्वार कहैं जिसे यार कहैं जिसे दोषनिवारण ।
जाते अनेक बनें बनतेहैं बनैंगे अभी बहुलाख हजारन ।
मेरेमते सो सभा सत्संगहै गंग सोहै जो तियानको तारन ॥

यह कहि बैठगई फिर दे०सकुँ० उठ खडी हुई ।

सखियो सम्मति (ताईद) तो होचुकी, अब इससमतिसे जिसको असम्मति (तरदीद) करनाहो वह कहै ।

(सभाकी सब स्त्रियां) देवीजी ! आपकी राय लाखटकेकी है, भला कौन ऐसी मूर्ख है जो इस सुमतिसे असम्मति करे ।

(पढी और बेपढीस्त्रियां आपुसमें धीरेधीरे)

१ एक न भइयाराज न भइयाराज सइयांराज टिहुक्कावाज, इनके सासको देखा न उन्होंने कभी सभा किया न इनके सासके सासने न कहीं संसारमें सुना कि स्त्रियां सभा करती हैं, अबकी बिटिये जवन चाहैं तवन करैं ।

२ दूसरी ये दीदीजी रौरे नाहीं समुझली, ईकलऊ न है कलऊकी बिटिये जवन करडारैं तवन तअज्जुब नाहीं " भला मेहरारुनसे सभासे का मतलब" ?

३ तीसरी आ बइठल चुपचाप सुनल करी हमरनसे कौनो मतलब बाय, अबके बिटियनके आगे हमरनके कुछ चलन न बाय, अब्बै जो कुछ कही तो सब हमरही लोगनके उल्लू बनायलीहैं ।

बुद्धिमतीस्त्रियां इनलोगोंके वचन सुनि मुँह फेर हँस रहीहैं ।

(दे०चं०कुँ०) तो अब आजकी कार्रवाईमें यह लिखिलिया कि स्त्रीसभा कायमहोनेकी तजवीज पास हुई ।

(दे०स०कुँ) हां यह लिखलियाजाय, पर जब सभा कायम होनेकी राय होगई तो सभाके ओहदेदार (नियामक) भी नियत होजाने चाहिये।

हरसभामें एक प्रेसीडेंट (सभापति) और एक सेक्रेटरी(प्रचारक वा नियामक) अवश्य हुवा करतेहैं इनके सिवाय जहां जरूरतहो वहां नायब सभापति, और नायब सेक्रेटरीभी होतेहैं सो इस विषयमें जैसी सबकी रायहो वैसा लिखा जाय, यह कहि बैठगई और दे० रजवंतिकुँ० उठीं।

(दे०रजवंति०कुँ०) पहिले हमको यह विचारना चाहिये कि सभापतिमें कौन कौन गुण होने चाहिये और वे गुण अस्मदादिकोंमेंसे किसमेंहैं, मेरे विचारसे इतने गुण होने चाहिये।

१ आयुमेंभी वृद्धहो, अर्थात् निरी छोकडी न हो।

२ विद्या बुद्धिवालीहो।

३ सभाके कामोंमें उसका जी लगताहो।

४ जाति उन्नतिमें जिसका परिश्रम और स्नेहहो।

अब आपलोग विचार करैं कि यह सब बातैं किसमेंहैं मेरे देखनेमें तो यह सब बातैं श्रीदेवी सत्वती कुँवरिमें हैं और वेही इस अधिकारके योग्यहैं।

यह कहि बैठगई—उसकी ताईद करने देवी गुणवंतिकुँ०उठीं।

(दे०गु०कुँ०) मैं ताईद करतीहूं कि श्रीदेवी सत्वती कुँ० इस सभाकी सभापति नियत कीजाँय क्योंकि आपसे बढकर हममें इस अधिकारके योग्य दूसरी कोई नहींहै।

(सर्व स्त्रियां प्रसन्न मुख हाथ उठाकर) हम सर्वको सम्मतहै। तत्पश्चात् दे० स० कुँ० उठी।

सखियो ! जो बडाई और जो अधिकार आपलोगोंने मेरेलिये तजवीज कियाहै यद्यपि मैं उसके योग्य कदापि नहीं हूं तथापि आपलोगोंकी आज्ञाका पालन मुझे अवश्य कर्तव्य है इसलिये मुझको इसमें कोई उज्जुर नहींहै, और मैं आपलोगोंकी आज्ञाको बडे हर्षसे शिर और आँखोंपर धरतीहूं ।

अब जिसको सेक्रेटरीका अधिकार देना आपलोग पसंदकरैं उसको दियाजाय यह कहि बैठिगईं ।

(सर्वस्त्रियां) इस अधिकारकी योग्यता विधाताने श्रीदे० चं०कुं०के ललाटमें पहिलेही लिखदियाहै इसलिये इसमें राय लगानेकी जरूरत नहीं है ।

बाकी रहे नायबसभापति और नायबसेक्रेटरी सो दे० बुद्धिमतीकुं० नायब सेक्रेटरी, और दे० गुणवंतिकुं०और दे० बुद्धिसागर कुं० नायब सभापति नियत कियेजांय ।

यही बात सबके तजवीजसे मञ्जूर हुई और कार्रवाईमें लिख लीगई ।

फिर सभा समाप्त हुई और सब स्त्रियां प्रसन्नचित्त अपने अपने घरको चलीं ।

(रास्तेमें जातीहुई स्त्रियोंकी आपसमें बातचीत)

१ एक–देवीजी मानुष नहीं सचमुच देवीजी हैं ।

२ दूसरी–जो सुनाथा कि फलानी ऐसा बोलतीहैं मानो फूल झरता सो इन्हींमें देखती हैं यह जब बोलतीहैं तो यही चित्त चाहता है कि यह बोलाही करैं ।

३ तीसरी–आ इसीसे ऐसी भाग्यमती भी तोहैं कि चन्द्रकला ऐसी पतोह पायीहै, क्या वह किसी गुणमें उनसे कमहैं ?

४ चौथी–ये सखी मेरे जानमें तो अधिकहैं ।

५ पांचवीं–आ, ये बहिन ! मेरे जानमें तो देवीजीसे उन्होंने सभाका प्रेरणा कियाहै, नहीं तो देवीजीको तो बीसवर्षसे अधिक गौना आये हुवा, कभी सभाका जिकिर किया था ?

६ छठी–ये भाई बडीपूर्वकी कमाईसे सुघरप्राणी घरमें आताहै, नहीं तो हैं तो चालीसो घर मिलायके दो तीनसौ स्त्रियां, फिर कौन चन्द्रकलाके टक्करहै ?

७ सातवीं–अरे ई तो (चं०क०) बुझातीहै कि मानो साक्षात् भवानीहै, रूप देखो तौ अनूप, व्यवहार देखो तौ अमोल ।

८ आठवीं–इसके माताकी कोख धन्यहै जहां यह जन्मी है ।

९ नवीं–जिसकी ऐसी प्रशंसा और बखान हो उसीका संसारमें जन्मभी सफलहै ।

ऐसे अनेक वचन कहती अपने अपने घर गईं ।

नतीजा (फल) नेकका नेक जिकिर ।

(दूसरी सभा)

आज स्त्रीसभाका दूसरा जलसाहै, घरघर चर्चा होरहीहै कि आज फिर सबकोई सभामें चलेंगी ।

कोई बाल मलतीहै ।

कोई शिरमें तेल लगातीहै ।

कोई बाल गुँधाती है ।

कोई अपनी धोलाई सारी खोज रहीहै ।

कहीं बडेघरोंकी स्त्रियोंके पालकीके लिये कहार खोजे जातेहैं । कहीं किसीके सुखपाल सजेजातेहैं ।

यहां चन्द्रकला आदिक–

कहीं सभाके कमरेकी सफाई करारही हैं, फर्श बिछवाय रही हैं, कोई पानके बीडे लगा रहीहैं, कोई लौंगसे बीडे खिलरही हैं, कोई इलायची तस्तरीमें लिये मेजपर रखतीहैं।

अब एक बजे दे॰चं॰कुँ॰ आदिक सभाके कमरेमें जा बैठीं। देवी चन्द्रकला कुँ॰प्रोग्राम दुरुस्त करती हैं।

(प्रोग्राम)

१ हाजिरी लिखी जायगी, तअल्लुक दे॰बु॰कुँ॰
२ प्रार्थना की जायगी, तअल्लुक दे॰चं॰कुँ॰
३ यह तजवीज दे॰स॰कुँ॰पेश करैंगी।
"स्त्रीशिक्षाका प्रचार कियाजाय"
ताईद १ दे॰ चं॰ क॰ २ दे॰बु॰कुँ॰ ३ दे॰ गु॰कुँ॰।

अब एक बजके ३५ मिंट गुजरे, स्त्रियोंकी आमद होने लगी। दे॰ चं॰ कुँ॰ आदिक धाय २ हँस २ हाथ मिलाय २ नमस्कार करि २ आदरपूर्वक सभाके कमरेमें बैठालती हैं।

सब बैठचुकीं पान इलायची तकसीम हुवा दे॰ बुद्धिमती कुँ॰ ने हाजिरी लिखलिया।

दे॰चं॰कुँ॰ प्रार्थना करने उठीं।

(प्रार्थना)

जय जय जगदम्ब तुही जगकी कारणिहो।
विधि हरि हर तव शक्ति भक्तका भयहारणिहो॥
तुम्हरो रूप अनूप नामते तारनिहारो।
तुमको शीश नवावों जावों बलिचरण तिहारो॥
हम अबलनकी आशको मातु पुरैये मातु अस।
जाते हम या सभामें गुणसीखैं पावैं सुयश॥

मातु हमहिं बुधि देहु सभाको प्रिय जानैं हम ।
जाते होय विवेक नेक बद पहिचानैं हम ॥
सीखैं पतिव्रतधर्म सबहि पतिको मानैं हम ।
जेते शुभ व्यवहार सबहीको हिय आनैं हम ॥
लाभलहैं या सभाते बुद्धिहोय हमरी विमल ।
मातु पुकारत तुमहिं हम हो अबलनके तुमहिं बल ॥

यह प्रार्थनाकरि बैठगईं. तब दे०स०कुँ० उठीं ।

(दे०स०कुँ०) सखियो ! मैं परब्रह्मभगवानका यश गातीहूँ, उनको शीश नवातीहूँ; जिनकी कृपासे दूसरे जलसेका आज यह दिन हमलोगोंको प्राप्त हुवा ।

सखियो ! यह सभा केवल इतनेही लिये नहीं है कि हम दश स्त्रियां वा दश छोकडियां इकट्ठी हो, पान सुर्ती खाय, हाहा ठीठी कर घरको चली गईं ।

नहीं यह सभा ऐसा स्थानहै जहां हमको यह शोचना चाहिये कि हमारा हित किन बातोंमें है, और वह हममें हैं वा नहीं और शोच शोचके उसके संबंधी तजवीजोंको पेश और पास कियाकरैं।

आज मैं जिस तजवीजको पेशकरना चाहतीहूँ मेरे जानमें वह अतिआवश्यक और उत्तम है और वह तजवीज यहहै ।

तजवीज ।

१ यह सभा तजवीज करतीहै कि स्त्रीशिक्षाका प्रचार कियाजाय, अर्थात् सर्व स्त्रियां अपनी २ कन्यावोंको जब वह पांच वर्षकी होजाँय तबहींसे भाषाविद्या आरंभ करावैं, ऐसे ऐसे ग्रंथ उनको पढावैं जिनमें बोलचालके गुण दोष और उनका फल वर्णन कियागयाहो । देवनागरी अक्षर इतना लिखना बतावैं कि शुद्धतासे शब्द लिखलें ।

यह कहि बैठगईं, और दे०चं०कुँ०उठीं ।

(दे० चं० कुँ०) श्रीदेवीजीने जिस तजवीजको पेश कियाहै वह ऐसी तजवीजहै कि जितने हमारे हितके साधन और हमको उनकी आवश्यकताहै उनमें यह अव्वल नम्बरहै।

शिक्षाकी जैसी हमलोगोंमें कमीहै, वह सर्व बुद्धिमती सखियाँ जानती हैं इसी शिक्षाकी न्यूनतासे हमलोगोंके स्वभाव ऐसे बिगड़े होतेहैं कि हमारी संगतिसे पुरुष पनाह मांगते हैं, क्या २ शोक करनेयोग्य दशाको वे प्राप्त नहीं होते?

शिक्षाही बिना हमलोगोंकी कन्यायें बारह २ तेरह २ वर्षकी होजातीहैं, पर सूईमें तागा डालने, वा तवेपर रोटी सेकनेका शऊर नहीं आता, उनके स्वभाव ऐसे बिगड जातेहैं कि वे औरसे क्या हमीसे लडने और ढिठाई करने लगतीहैं, हमारी बातको वे तृण बराबर समझतीहैं, हम डाँटि रही हैं वे घूमने चली जाती हैं, मर्द मनाही कररहेहैं, वे खिडकीकी राह ननिऔरे चली जातीहैं।

सखियो! नीतिमें लिखाहै (विद्याविहीनाः पशुभिः समानाः) अर्थात् जो विद्या नहीं जानता वह मनुष्य पशुतुल्यहै, यह विदितहै कि स्त्रियोंमें अनेक प्रकारके अवगुण स्वाभाविक रहतेहैं, फिर जो हमको विद्यासेभी वैर रहा तो कौन आशाहै कि हमारे स्वभावसे अवगुण निवृत्त होंगे।

हमलोगोंको बहुत उचितहै कि अपनी अपनी कन्यावोंको विद्या पढावैं, अनेक प्रकारके गुणढंग सिखलावैं जिसमें वह सुघर और सुबोध स्त्री होकर आप प्रसन्न रहैं और अपने स्वभावसे सारे संबंधियोंको प्रसन्न रक्खें।

यह कहि वैठगई, और दे० बुद्धिमती कुँ० उठीं।

(दे॰बु॰कुँ॰) मैं अपने सवर्ग और सजातीय सखियों और सरदारिनोंके पाँवलगती और विनय करती हूँ, आपलोग विचार करैं कि जितना इस तजवीजके योग्य होनेके विषयमें बुद्धिमती और गुणनिधान दे॰चं॰कुँ॰ का व्याख्यान हुवा है अब उसमें कौन बात शेष रहगई है जो मैं कहूँ, पर इतनाही कहिके जो बैठजावों तो आपलोग हँसैंगी और कहैंगी कि यह कैसी बेतुक उड़ानेवाली है, ताते मैं कुछ कहनेको आज्ञा मांगती हूँ।

बुद्धिमती सखियो! शिक्षाकी आवश्यकता मनुष्यमात्रको है, चाहै वह स्त्रीहो वा पुरुष, जब बालक उत्पन्न होता है, तो देशकालके अनुसार दो तीन चार पांच वर्षतक तो उसका बाला मतवालापन होता है, तत्पश्चात् वह होश सम्हालता है, उसकी बुद्धि कुछ चमत्कार होने लगती है, अर्थात् शरीरके साथ बुद्धिभी बढने लगती है उससमय जो बात वह औरोंसे सुनता है उसको जानता है।

हम पहिलेसे नहीं जानती थीं कि इसका नाम आग और इसको पानी कहते हैं, हमको याद नहीं था कि सूर्य चन्द्रमा यही हैं हम आपसे कहा जानती थीं कि इसको पृथ्वी और इसको आकाश कहते हैं।

ज्योंज्यों हम मां बाप भाई बहिनसे सुनती गईं त्योंत्यों जानती गईं।

बुद्धिमती सखियो! यही समय शिक्षाका है, इस समय जिस प्रकार हम शिक्षादेंगी, उसी प्रकार बालक शिक्षित होंगे।

और जो यह कहिये कि शिक्षा न दीजाय तो क्या हर्ज है? तो मैं कहती हूँ कि जब हम होश सँभालैंगी तो सांसारिक पदार्थोंको जिनका स्वरूप हम आंखसे देखें और उसका नाम हृदयमें जान-

सकती हैं जानजांयगी, पर विना शिक्षाके उस वस्तुका गुणदोष नहीं जानसकती हैं ।

जैसे यह तो जानजांयगी कि मुखसे जो बोला जाता है वह बोल, और पैरसे जो चलाजाता है उसको चाल कहते हैं, पर विना शिक्षाके यह नहीं जानसकतीं कि किस प्रकारका बोलचाल निंदित और किसप्रकारका वंदित कहलाता है ।

मैं यह तो जानजाऊँगी कि यह मेरे पति और मैं इनकी पत्नी हूं पर विना शिक्षाके यह न जानोंगी कि स्त्री पुरुषको आपुसमें किस योग्यता और धर्मसे रहना चाहिये ।

तातें शिक्षाकी अत्यंत आवश्यकता है, सोभी हम स्त्रियोंको कि जो विना शिक्षाके अत्यंत दुर्दशा और दुर्गतिको प्राप्त होरही हैं, और अपनी मूर्खता और कुभावसे पुरुषोंकीभी दुर्दशा कररही हैं, फिर ऐसी शिक्षाकी आवश्यकता सिद्ध करनेके लिये हमको बहुत युक्ती और अधिक बात कहनेका क्या अवसर है ।

सचतो यह है कि, जैसे भूखेको भोजन और प्यासेको पानीकी जरूरत है, वैसेही किंतु उससेभी अधिक हम स्त्रियोंको शिक्षाकी आवश्यकता है, तातें मैं श्रीमती देवीजीकी मतिसे अतिहर्ष सहित सम्मति करती हूं ।

(चन्द्रकला अपने मनमें विचार करती है कि इसका व्याख्यान मेरे व्याख्यानसे अच्छा हुवा) ।

ज्योंही दे० बु० बैठी त्योंही चं० कुँ० फिर उठ खडीहुई ।

(दूसरा व्याख्यान दे० चं० कुँ० का)

सर्दारिनो ! यद्यपि मेरा फिर उठिखडीहोना आजके प्रोग्रामके विरुद्ध है तथापि आप सखियो और सर्दारिनोके दर्शन और बुद्धिमती दे० बु० कुँ० के व्याख्यान सुननेसे आज ऐसा हृदयमें हुलास

और चित्तमें बिलास होरहाहै कि यह ढिठाई करतीहूं आपलोग क्षमा करेंगी।

(यह सुनि पांचसात स्त्रियोंने) सभाका समय २ बजेसे ४ बजेतक था, अब सवाचार बजगयेहैं अब अधिक कार्रवाईका अवसर नहीं है।

(सौ सवासौ स्त्रियोंने कहा) नहीं नहीं चार और सवा चारका कुछ कर्ज खायेहैं? भला यह बात कहतीहैं कि मिश्रीकी डली उगिलतीहैं, जिसदिन पुत्र उत्पन्न हुवा था उसदिनभी ऐसा हर्ष नहीं हुवाथा जैसा आज इन प्यारी बहू दे० चं० कुँ० के वचनोंसे होरहाहै मेरी प्यारी सखी तुम जरूर कहो।

(दे० चं० कुँ०) सखियो! शिक्षा "अति उत्तम और सुखदाई पदार्थहै" ऐसा कहना ऐसे कहनेके बराबरहै कि "सूर्य प्रकाशवालाहै" तात्पर्य यह कि यथार्थ वचनहै।

देखिये पुरुष जो हमलोगोंको नीच समझतेहैं क्यों इसी शिक्षाकी न्यूनतासे, नहीं तो और किस बातमें हम पुरुषसे कमहैं?

क्या हम मानुष कोटिमें नहीं हैं?

क्या स्थूल सूक्ष्म कारण यह तीन शरीर पुरुषकेहैं और हमारे नहीं हैं?

क्या रक्त मांस चर्म अस्थि मेद मज्जा और वीर्य इन सप्तधातुवाला पुरुषका स्थूलशरीरहै तो हमारेमें क्या छही धातुहैं?

श्रोत्र त्वक चक्षु रसना घ्राण यह पंच ज्ञानेन्द्रिय और वाक पाणि पाद उपस्थ पायु यह पंच कर्म इन्द्रिय प्राण अपान समान व्यान उदान यह पंच प्राण और मन बुद्धि चित्त अहंकार यह चार अन्तःकरण पुरुषहीके सूक्ष्म शरीरमेंहैं क्या हमारेमें ये कोई कमहैं?

क्या उनका कारण शरीर अज्ञानमेंहै तो हमारा क्या ज्ञान मेंहै?

क्या जाग्रत स्वप्न सुषुप्ति अवस्था उन्हींपर बीततीहै, हमपर नहीं?

जैसे सूक्ष्म शरीरका स्थूलशरीरमें रहना रूपजीवन पुरुषोंकाहै वैसेही हमाराभी है ।

और जैसे स्थूल और सूक्ष्मका परस्पर अलग बिलग होजाना रूप मृत्यु पुरुषोंकी है वैसेही हमारी भी है ।

जीवात्मा जैसेही उनका चैतन्य और आनन्दरूप है, वैसेही हमाराभी है ।

फिर वह क्या बातहै, जो उनमेंहै और हममें नहींहै, मेरे विचारसे यही शिक्षाहै, वे शिक्षित होतेहैं और हम नहीं होतीं इसीसे हम नीच और निकृष्ट मानी जाती हैं ।

सखियो ! हम अपने मुँह मियां मिट्ठू चाहै बनीरहैं पर इस अशिक्षितपनेसे जैसी हमारी दुर्गति होतीहै और जैसे हम बदनाम और दुर्दुरु होकर सबसे अपमान पाती हैं, सर्व बुद्धिमती सखियोंपर विदितहै ।

दैव न करै कि अशिक्षित लडकी ससुरालमें जाय, ऐसी अशिक्षित युवतियां वह दुंद मचाती हैं वह कुभाव प्रकट करती हैं कि राम राम पुरुषकी नाकमें दम करदेती हैं और आपभी औरोंसे तो क्या खुद अपने पतियोंसे जूता खाती हैं हा ! हम मातुवोंका बालकोंपर बडाही जुलमहै जो उन्हें शिक्षा नहीं देतीं ।

सर्दारिनो ! शिक्षाकी आवश्यकता, और सुधारका साधन होनेके विषयमें कुछ अधिक कहना मेरे जानमें तो सूर्यके देखनेके लिये कोई यत्न करनेके बराबरहै ।

पुरुष हो वा स्त्री, जिसने कुछ अच्छी बुद्धि पाई, जो जगतमें भला कहलाया, शिक्षाहीके प्रतापसे ।

जिसने बोलमें मधुरताई, और चालमें सुघरताई पाई शिक्षाहीसे दे० शिक्षाकुँवारिकीही यह शक्तिहै कि मनुष्यसे देवता और स्त्रीसे भवानीरूप बनादेतीहै किसी कविने सच कहाहै ।

(कवित्त)

शिक्षा बिनु कौनकों भलाई पाई जगमाहिं, शिक्षाबिनु काके बोल-चाल सुधरे रहैं। शिक्षा बिनु रक्षा कौन करत हैं गाढसमै, शिक्षा-बिनु कौन नीक मारग धरें रहैं॥ मेरेजान शिक्षाहू सरबकों सुधारे तारे, धारे जिन शिक्षा तिन परीक्षा करे रहैं। मातनकों योग्य निज पुत्रिनकों शिक्षादेबो, जासों गुण ज्ञान सुख सबही भरे रहैं॥ १॥

दोहा—शिक्षाही सुखमूरिहै, शिक्षाही सुखदाय।
ताते शुभ शिक्षित करैं, निजपुत्रिनको माय॥

सरदारिनो! शिक्षा दो प्रकारकी है, एक विद्याकी शिक्षा दूसरी स्वभावकी शिक्षा, नहीं नहीं मैं भूलतीहूँ, विद्याहीकी शिक्षामें स्वभावकी शिक्षाभी अंतर्गतहै अर्थात् विद्याहीसे सर्वसुधारकी सुधि और सुधारके प्रकारकी बुद्धि आती है।

विद्यामें यह स्वाभाविक गुण है कि वह अवगुणोंको दूर और गुणोंसे भरपूर करै आपलोग जानतीहैं कि स्वाभाविक अवगुण जितने स्त्रियोंमें रहतेहैं उतने न सांप बिच्छूमें रहतेहैं, न भूत और डाइनमें।

पुरुषोंपर हमलोगोंके निंदित स्वभावोंका विष जितना असर करताहै उतना काले नाग और भूरे बिच्छूका विष असर नहीं करता।

हमलोग अपने बुरे स्वभावोंसे पुरुषोंको जैसी दुःखदायी हो रहीहैं, वैसे भूत और डाइनभी नहीं होसकतीं।

मैं सच कहतीहूं कि, अशिक्षितपनेसे हमलोग अपना जन्म और कर्मतो नष्ट करही रही हैं, पुरुषोंकीभी हमलोग ऐसी दुर्दशा करती हैं कि वेही जानतेहैं।

जैसे सूक्ष्म शरीरका स्थूलशरीरमें रहना रूपजीवन वैसेही हमाराभी है ।

और जैसे स्थूल और सूक्ष्मका परस्पर अलग बिलग रूप मृत्यु पुरुषोंकी है वैसेही हमारी भी है ।

जीवात्मा जैसेही उनका चैतन्य और आनन्दरूप है, हमाराभी है ।

फिर वह क्या बातहै, जो उनमेंहै और हममें नहींहै, मेरे विचारसे यही शिक्षाहै, वे शिक्षित होतेहैं और हम नहीं होतीं इसीसे हम नीच और निकृष्ट मानी जाती हैं ।

सखियो ! हम अपने मुँह मियां मिट्ठू चाहै बनीरहैं पर इस अशिक्षितपनेसे जैसी हमारी दुर्गति होतीहै और जैसे हम बदनाम और दुर्दुरु होकर सबसे अपमान पाती हैं, सर्व बुद्धिमती सखियोंपर विदितहै ।

दैव न करै कि अशिक्षित लडकी ससुरालमें जाय, ऐसी अशिक्षित युवतियां वह दुंद मचाती हैं वह कुभाव प्रकट करती हैं कि राम राम पुरुषकी नाकमें दम करदेती हैं और आपभी औरोंसे तो क्या खुद अपने पतियोंसे जूता खाती हैं हा ! हम मातुवोंका बालकोंपर बडाही जुलमहै जो उन्हें शिक्षा नहीं देतीं ।

सर्दारिनो ! शिक्षाकी आवश्यकता, और सुधारका साधन होनेके विषयमें कुछ अधिक कहना मेरे जानमें तो सूर्यके देखनेके लिये कोई यत्न करनेके बराबरहै ।

पुरुष हो वा स्त्री, जिसने कुछ अच्छी बुद्धि पाई, जो जगतमें भला कहलाया, शिक्षाहीके प्रतापसे ।

जिसने बोलमें मधुरताई, और चालमें सुघरताई पाई शिक्षाहीसे दे० शिक्षाकुँवरिकीही यह शक्तिहै कि मनुष्यसे देवता और स्त्रीसे भवानीरूप बनादेतीहै किसी कविने सच कहाहै ।

अच्छा अब घड़ीमें ६ बजगये, अब आज सभा समाप्त कीजाय और सिक्रेटरी सभाका दिन नियत करदें कि उसदिन फिर हमलोग आयके यह लाभ लहैं।

सिक्रेटरी–आजके पन्द्रहवें दिन रविबारको फिर सभा होगी।

यही बात सबको मंजूरहुई और सभा समाप्त होकर स्त्रियां अपने २ घरगईं।

(स्त्रीसभाका ३ तीसरा जलसा)

आज स्त्री सभाका तीसरा जलसा है, स्त्रियां सभाके कमरेमें बैठी हैं, पान इलायची बँटरहा है, दे० बुद्धिमतीकुं० हाजिरी लिख रही है दे० चं० कुं० प्रार्थना करि कहने लगी।

(व्याख्यान दे०चं०कुँ०)

सरदारिनो! यह थोड़े हर्षका कारण नहीं है, और परमेश्वरकी यह थोडी कृपा नहीं है, कि हम सर्वस्त्रियां जो पहिली सभामें एकत्रितथीं, आजभी इससभामें विद्यमान हैं।

यह तो विदित है कि सजातीयसे सजातिको मेल और हर्ष होता है एक फारसीका मसल है (कुनद हमजिन्स बा हमजिन्स परवाज) एक दोहाभी इसी अर्थका है।

दोहा–है जगको व्यवहार यह, देखि हिये करि गौर।
निज सजातिसों सब मिलै, क्या मानुष क्या और॥

(बूढी और निपढ स्त्रियां बाततो समझती न थीं, हक्का बक्काहो दे० चं० कुँ० का मुँह ताकती थीं, जब फारसीका मसल और हिन्दी का दोहा सुना तो आपसमें धीरे २ बात चीत करने लगीं)

१ "एक–बाबू ईतो गजबकी मेहरारू है पंडितनके तरह श्लोक भी झाडती है, और मियां लोगनकी नाईं फारसीभी उडाती है न जानै यह कहा कुल सीखे हैं।

हा, भगवानने हमको पुरुषोंके सुखका साधन बनाके उनका संगी बनाया, और हमारी यह गति कि अपने अशिक्षितपनेसे उनके दुःखका कारण होरही हैं ।

जिन पुरुषोंके वचन न माननेसे स्त्रियोंको नरक होताहै, इन्हीं पुरुषोंकी हम स्त्रियां बात मानना कैसा उलटके उन्हें डाट बतारही हैं, क्या यह शोक करने योग्य अवसर नहीं है ?

सखियो ! शास्त्रने जो हमलोगोंको अधम नारि कहाहै क्या समझके ? यही समझके कि हम स्वाभाविक बडी निर्दयी और मक्कार होती हैं, हमसे कौन पनाह नहीं मांगता, हम ऐसी होती हैं कि जानतीभीहैं कि पुरुषकी बात टालना पापहै, और पापका फल नरक और नरकका फल दुःखहै फिरभी इसी शिक्षा बिना उनका वचन मानना कैसा ? हम अपनेही वचन उनसे मनवारही हैं हमको उनसे नम्रताई और सकुचसे बोलना कैसा ? हम उलटके उनको घुडक रहीहैं हा ! हमलोगोंको महाराज यमराजजी-काभी भय नहीं है ।

सखियो हमारा यह निंदित स्वभाव और किसी प्रकारसे बद-लनेवाला नहीं है है तो इसी एक शिक्षासे ।

हमारे स्वाभाविक विकारोंके निवृत्त होनेकी कोई आशा नहीं है, है तो इसी एक शिक्षासे, ताते अवश्य यह तजवीज पास होने योग्यहै।

यह कहि बैठगई ।

(सर्वसभाकी स्त्रियां) धन्यवाद २ बलिहारी आप देवियों के, आपलोग वचन क्या कहतीहैं कानमें अमृतका

आज मैं आपलोगोंके यहां कृपा करनेसे ऐसी वंदित और आनंदित होरहीहूं कि क्या कहूँ घडेमें समुद्र समाता नहीं, इसीतरह मेरे छोटे मुखसे इतना बडा आनंद कहा जाता नहीं. जो कारण पूछिये तो एक कारण तो मैं ऊपर वर्णन करचुकी कि, सजातिसे सजातिको मेल और उससे हर्ष होताहै. दूसरा कारण यहहै कि हमलोग अपनी भलाई और अपने व्यवहारोंके सुधार अर्थ उपाय शोचनेके लिये एकत्रित हुई हैं. फिर आज हमको हर्ष न होगा तो कब होगा?

ताते मैं आपलोगोंको धन्यवाद देतीहूँ, और परमेश्वरसे प्रार्थना करती हूँ कि हम सर्वस्त्रियां, हम सर्वसखियां सुखी रहकर सदा सभा में परस्पर मेलमिलापका आनंद लहाकरैं. यह कहि बैठगई।

तब देवी बुद्धिमती कुँ० उठीं।

(व्याख्यान दे० बु० कुँ०)

मेरी बुद्धिमती सखी दे० चं० कुँ ने सजातीयपनसे जिस आनंद, और जिस उत्साहका होना वर्णन किया है सो उनके हृदयमें तो समुद्ररूप है पर उस समुद्रके शब्दरूपी लहरोंसे मेरे हृदयमें भी एक ऐसी आनन्दकी हवा बहिगई है कि मैंतो बिलकुल भूलही गईहूं कि मैं कौनहूं और कहांहूं, क्या कहना चाहिये और क्या कहतीहूं।

जैसे कली सूर्यकी गर्मी और हवासे खिलजाती है, उसी प्रकार दिलका दस्तूर है कि जब सजाति दर्शनरूपीसूर्यकी गर्मी और परस्पर संभाषणरूपीहवा लगतीहै तो हृदय कमल विकसित होजाताहै.

इस विषयमें, कि सजातिके दर्शन दीदार और मेल मिलापसे हर्ष होताहै, अधिक कहनेका प्रयोजन नहींहै मनका यह स्वभावहै कि जहां स्वइच्छादिसे व्यवहार वर्तनेमें कोई सकुचका कारण होताहै, वहां जैसे सूर्यके रहते कमलिनी सकुची रहतीहै, वैसेही मन सकुचा रहताहै और जहां सकुचता नहीं रहती, अपने मनमाने

२ दूसरी–आ, ये दीदीजी, रौरे इनके कशीदा काढनाहीं न देखलहै अरे बुझाला कि मानो विलाइतके कलकै बनल है ।

३ तीसरी–आ, ये दीदीजी ! ईपूर्वजकै कमाई है नाहीं तो एक मेहरारू तो हमहू लोग हैं कि बूढी होयगइली अवहिनले दहिना बायां हाथ नाहीं जनलीं, आ येह छोकडिया कै देखीं कि अवहिन का येकर उमिर होई तवन येतनै दिनमें नजानी कहांसे कुल सिखिलिहलस" ।

इनकी बात सुनि दे० स० कुं० की शागिर्द दे० सुखराजकुं० ११ वर्षकी बोलउठी ।

"पूर्वजकी कमाई नहीं खाक, यह उनके माताके शिक्षाका प्रताप है कि आज वह हम सबलोगोंमें ऐसी शोभा पारही हैं जैसे तारोंमें चन्द्रमा" ।

(वे बूढीस्त्रियां) ये बिटिया, हमलोग आपसमें न बतिआवत हुई, तूलोग अबकै बिटियाहौ आपसमें बतिआवो हमरनके बातमें दखल न देव, हमलोग बडी न हैं ।

(दे० सु० कुं०) धीरेसे–बडी नहीं खाक, पढे न लिखे वडी होने चली हैं मुँहफेर हँसने लगीं ।

इधर अधिक बातचीत होनेसे सिक्रेटरीने पुकारा, सावधान ! सावधान ! ! सब चुपहुई फिर दे०चं०कुं० कहने लगी ।

सखियो ! मैं सच कहती हौं कि यहां आये मुझको चारवर्ष व्यतीत हुये, आजतक कभी ऐसा हर्ष नहीं हुवाथा जैसा आज आपलोगोंके दर्शन दीदारसे होरहा है ।

जैसे भक्तजनोंका हृदय भगवानसे और आत्मवादियोंका ज्ञानसे भरपूर रहता है वैसाही आज मेरा हृदय हर्षसे भर पूरहो रहा है ।

आज मैं आपलोगोंके यहां कृपा करनेसे ऐसी वंदित और आनंदित होरहीहूं कि क्या कहूँ घडेमें समुद्र समाता नहीं,इसीतरह मेरे छोटे मुखसे इतना बडा आनंद कहा जाता नहीं. जो कारण पूछिये तो एक कारण तो मैं ऊपर वर्णन करचुकी कि,सजातिसे सजातिको मेल और उससे हर्ष होताहै.दूसरा कारण यहहै कि हमलोग अपनी भलाई और अपने व्यवहारोंके सुधार अर्थ उपाय शोचनेके लिये एकत्रित हुई हैं.फिर आज हमको हर्ष न होगा तो कब होगा?

ताते मैं आपलोगोंको धन्यवाद देतीहूँ, और परमेश्वरसे प्रार्थना करती हूँ कि हम सर्वस्त्रियां, हम सर्वसखियां सुखी रहकर सदा सभामें परस्पर मेलमिलापका आनंद लहाकरैं. यह कहि बैठगईं।

तब देवी बुद्धिमती कुँ०उठीं।

(व्याख्यान दे०बु० कुँ०)

मेरी बुद्धिमती सखी दे०चं०कुँ ने सजातीयपनसे जिस आनंद, और जिस उत्साहका होना वर्णन किया है सो उनके हृदयमें तो समुद्ररूप है पर उस समुद्रके शब्दरूपी लहरोंसे मेरे हृदयमें भी एक ऐसी आनन्दकी हवा बहिगई है कि मैंतो बिलकुल भूलही गईहूं कि मैं कौनहूँ और कहांहूं, क्या कहना चाहिये और क्या कहतीहूं।

जैसे कली सूर्यकी गर्मी और हवासे खिलजाती है,उसी प्रकार दिलका दस्तूर है कि जब सजाति दर्शनरूपीसूर्यकी गर्मी और परस्पर संभाषणरूपीहवा लगतीहै तो हृदय कमल विकसित होजाताहै

इस विषयमें, कि सजातिके दर्शन दीदार और मेल मिलापसे हर्ष होताहै, अधिक कहनेका प्रयोजन नहींहै मनका यह स्वभावहै कि जहां स्वइच्छादिसे व्यवहार वर्तनेमें कोई सकुचका कारण होताहै,वहां जैसे सूर्यके रहते कमलिनी सकुची रहतीहै, वैसेही मन सकुचा रहताहै और जहां सकुचता नहीं रहती, अपने मनमाने

बोलना, बतिआना, उठना, बैठना आदिक व्यवहार रहताहै वहां हर्षवृत्ति फुरआतीहै, इसपर मैं आपको दो एक दृष्टांत भी देतीहूँ क्योंकि कोई बात बे युक्ति, बेदृष्टांत, बे प्रमाणके सिद्ध नहीं होती।

दृष्टांत १–जैसे लड़के जबतक मियांजीके सामने रहतेहैं तबतक वे सकुचे रहते हैं उनको हर्ष नहीं होता, हेतु, स्वइच्छासे वे अपना व्यवहार करने नहीं पाते और जब बृहस्पतिके दिन मियांजीको घरका रास्ता देखलाके पलटतेहैं तो ऐसा हर्ष करते आते हैं कि मानों श्रीरामचन्द्रजीकी सेना लंकाजीतके अवधको पलटी आतीहै,और मारे हर्षके वे ऐसा धूम मचाते आतेहैं कि नरांतककी सेना भी उनके आगे मात है।

दृष्टांत २–जैसे बन्दीमें पडेहुये पुरुषोंको हर्ष नहीं होता क्योंकि स्वइच्छा अनुसार वे अपना व्यवहार करने नहीं पाते और जब वे छूटते हैं तब जो हर्ष उनको होताहै वेही जानते हैं, क्योंकि स्वइच्छासे व्यवहार वर्तनेमें समर्थ होतेहैं ।

तीसरा ३ दृष्टांत–कहिये तो आँखोंसे देखलादों, अर्थात् अभी एक बडे बूढे पुरुषको यहां बोलावो तो आप लोग देखैं कि,इसवक्त जैसे कमलकी तरह सबके हृदय खिलरहे हैं एकबारगी कैसी सकुच वृत्ति आजाती है कि सबका पेट फूलने लगैगा ।

बुद्धिमान् सखियां यह शंका करैंगी कि इस व्याख्यानसे "सजातीयपनसे हर्ष होताहै" यह सिद्ध नहीं होता, किंतु "जहां स्वइच्छासे व्यवहार वर्तनेमें आताहै वहां हर्ष होताहै,चाहै सजातिमें हो वा विजातिमें" सो मैं इनकी इस शंकाको आदर देके कहतीहूँ कि मेरा इस व्याख्यानसे कभी यह तात्पर्य नहींहै कि "सजातिमें हो वा विजातिमें जहां यहच्छासे व्यवहार वर्तनेमें आवै वहां हर्ष होता है" मैं आगे यह सिद्ध करूंगी कि यहच्छासे व्यवहार वर्तना जैसा सजातिमें होसकताहै वैसा विजातिमें होही नहीं सकता ।

मान लीजिये कि हमारा सगाभाई है पर जैसा हम अपनी सगी प्यारी बहिनकी संगतिमें यदृच्छासे वर्त सकती हैं वैसा उस भाईकी संगतिमें कभी नहीं।

मैं कहती हूँ कि कैसहू बूढीसे बूढी और बडीसे बडी कोई स्त्री यहां आजाय, तो हमको उसके सामने इतना लिहाज और सकुच न होगा जितना एक छोटेसे छोटे पुरुषके सामने, क्योंकि सजाति और विजातिका भेद पडाहुआहै।

अय सखियो! जो बात प्रत्यक्ष प्रमाणसे सिद्धहो उसमें दूसरे प्रमाणकी अपेक्षा नहींहै, यह बात कि "सजातीयपनसे हर्ष होता है" इसी समयके आपसके हर्षसे जो सबके दिलोंमें दरियाकी लहरोंकी भांति हलोरा लेरहाहै, सिद्ध होरहाहै, फिर दूसरे प्रमाणकी कौन जरूरतहै।

तातें मैं दे०चं०कुं० की इसबातको कि "सजातिसे सजातिको हर्ष होताहै" बडे आदरपूर्वक मानकर उसकी ताईद करती हूँ यह कहि बैठगई।

(दे०चं०कुं०)अपने व्याख्यानसे बढाहुआ व्याख्यान दे०बु०कुं० का देख फिर उठ खडीहुई त्योंही दे०स०कुं० इस भेदको जानकर आप खडीहो उन्हें प्यारसे बैठाला और आप कहने लगीं।

(दे० स० कुं०) सरदारिनो! मैं आपलोगोंसे उस आशयके प्रगट करनेकी आज्ञा मांगतीहूँ जिस आशयसे मैंने दे०चं०कुं०को कहनेसे रोककर बैठाल दियाहै।

मेरी प्यारी बहू दे०चं०कुं० जो मुझे प्राणसे भी अधिक प्यारीहै और जिसका अपने घर आना और अपनी बहू कहलाना अनेक जन्मके सुकृतका फल समुझतीहूँ वह श्रीसर्वोपमायोग्य दे०सु०कुं० से शिक्षित हैं, और यह बुद्धिमती थोडा घना मुझसे पढे लिखे है जैसा कि आप सबलोग जानतीहैं।

व्याख्यानमें यह दोनों ननद भौजाइयां परस्पर अभिलाष रखतीहैं कि हमारा व्याख्यान अच्छाहो, इसी हेतुसे बारबार एक दूसरेके बाद कहनेको उठ खडी हुआ करतीहैं, यद्यपि यह अभिलाषा अति उत्तमहै, इससे विद्या बुद्धिकी वृद्धि और वाक्यशक्तिकी सिद्धि होतीहै, तथापि मैं दोनोंके व्याख्यानोंको अपने २ रंगमें निराला और उक्तियुक्तिमें विचित्र देखकर दोनोंके व्याख्यानोंको अति आदर देती और उनकी सराहना करतीहूं. फिर भी मैं कहतीहूं कि श्रीमानि दे०सु०कुँ०जी जो मेरे बडे भाग्योंसे मेरी समधिन कहलातीहैं उनकी विद्या बुद्धिके आगे मेरी विद्या बुद्धि कैसीहै, जैसे एक बडे समुद्रके आगे एक छोटी नदीका जल ।

मैं यह कभी आशा नहीं करती कि उनसे शिक्षा पाईहुई स्त्री जैसी बुद्धिमती और व्याख्यानमें कुशल होगी वैसी मेरी शिक्षित होसकतीहै ।

इसवक्त जो मैंने दे०चं०कुँ०को कहनेसे रोक कर बैठाल दिया है उसका कारण यहहै कि सभाका समय बीतनेके निकट आगया और कार्य कुछ न हुआ, अब आज इतना समय कहां है कि यह पिछले प्रसंगपर फिर कुछ कहें, अब जो यह कुछ कहनेलगैंगी तो जानलीजिये कि जैसे सावनकी झड़ी लगतीहै वैसही इनके वचनोंका तार नहीं टूटैगा, और फिर सभाका आज कुछ कार्य न होगा ।

अब मैं चाहतीहूं कि आज यह संकेत करदिया जाय कि किस शिक्षाको स्त्रीशिक्षा कहैंगी और इसको दे०चं०कुँ० कहैंगी यह कहि बैठगईं ।

और दे०चं०कुँ० उठ खडीहुईं ।

(व्याख्यान दे०चं०कुँ०)

सर्दारिनो । जब मैं अपने मांसे विद्या पढती थी तो एक दिन मुन्शी अजायबलालके घरगई, वह मेरे बिरादरीमें थे, और हमारे

घरसे मिलाहुआ उनका घर था, उनकी पतोहूकी एक लडकी छा सात वर्षकी थी मेरी प्रेरणासे वह हिन्दीकी पहिली पुस्तक पढ़ती थी, उसदिनभी वह पुस्तक लिये मुझसे पढरहीथी कि इतनेमें मु० अजायबलालजी जिनकी उम्र ८६ वर्षकीथी घरमें अचानक आगये और उस लडकीको पढते देख, बहुत खफा हुये, और उसे मारनेको दौड़े मैं, वह, और सर्वस्त्रियां घरोंमें भागगई ।

वे बूढे मुन्शीजी यह कहतेहुये बाहर चलेगये "हुँह अबकी छोकडियां पढने चलीहैं, पढपढके तो यह सब और खराब होजाती हैं" ।

मैं इन बातोंको सुनि पहिले तो आश्चर्यमें हुई, कि अैं, विद्या सुधारके निमित्तहै, वा बिगाडके, पर पीछे उनका तात्पर्य मैंने समझ लिया, इससमय मुझको उस अपने समुझेहुये तात्पर्यके कहनेका अवसर आगया ।

सखियो ! क्या वेही, अक्सर बूढे और पुराने समयके आदमी इस बातको कहि उठतेहैं कि "स्त्रियोंको पढना नहीं चाहिये, वह तो पढपढके बिगडि जातीहैं" अब इस वचनका अर्थ इसप्रकार किया जाय, सीधी सीधी रीतिसे तो यह वचन बिलकुल विरुद्ध सिद्ध होताहै, पढानेसे जो विद्यासे तात्पर्य लिया जाय तो यह किसी तरह सिद्ध नहीं होता, कि विद्यासे बिगाडहो, क्योंकि विद्याको सर्व प्रकार सुधारका साधन बुद्धिमानोंने मानाहै ।

कवित्त ।

मातुसों दुलारै रु पितासों प्रतिपारै जौन, गुरुसों उधारै तारै यहि जगजालसों । इष्टसों सम्हारै याहि कठिन कुऔसरमें, मित्रसों विचारै हितहेतुहरहालसों ॥ रावसों नेवारै दोष दुख दिल दर्दहूको, हरिसों उबारै यह जात मुखकालसों । विद्यापरवारै ना विसारै इसे

छन एक, धारै चित चन्द्रकला शौकके कमालसों ॥ १ ॥ विद्या बडी चीज अनमोल यह वस्तु अहै, स्वार्थ परमारथको भेद बतवैयाहै। मइयासों अधिक ये मितैया करै औसरमों, पितुसों सवैया सुख सुबुधि देवैयाहै ॥ अचल यो धन है जाको भैया ना बटैया करै, रैया चोरचैया जाको कोऊ न लेवैया है। दोष हरवैया दुख दूरि करवैया यही, चन्द्रकला लेती मातु विद्याकी बलैयाहै ॥ २ ॥

फिर सखियो जब विद्याकी ऐसी उपमा कविजनोंने कियाहै, तो मैं कैसे कहिसकतीहूं कि पढानेसे उनका तात्पर्य इसी विद्या पढानेसे है, मेरी जानमें यहां जिस पढानेसे मतलब रक्खाहै और उसका फल बिगाड वर्णन कियाहै वह यह पढानाहै कि केवल ककारादिक अक्षर, और अकारादिक मात्रा पढाय, शब्दपढने और लिखनेकी शक्ति दिलाय छोडदिया, आगे न तो ऐसे ग्रन्थ उनको पढाये, जो उनके स्वभावका सुधार करैं, न यही बतलाया कि तुमको किसप्रकार किसके साथ रहना चाहिये।

सखियो! यही पढाना वह पढानाहै जिसका फल वृद्धपुरुष बिगाड कहतेहैं, अर्थात्, जब उन्हें शब्द पढने आगया तब उन्होंने अपनी तबिअतसे ऐसी ऐसी पुस्तकें देखना आरंभ किया, जो यातो निरर्थकहों, वा ऐसी हों जो मनमें अनेक प्रकारके बेढंग उमंगोंको उत्पन्न करैं, जैसे तोता कहानी, वहाबका बारहमासा, ब्रजविलास आदिक।

अब इसके उपरांत और क्या हुवा, कि जब वे दशवर्षसे ऊपर बढीं, तो बहनोई आये उनसे भेंटकिया, नंदोई आये उनसे बोलीं बतिआई, उनसे प्रेमबढाया, जब वे घर चलेगये, तो लिखनेतो आता हीहै अब उनको पाती लिखना प्रारंभ किया, अब मारे प्रेमके, और प्रेम क्या? मारे लुचपनके दिनभर पातीही लिखती रहगई, जबलों पूरा ताव न रंगगया तबलों तो जीवे नहीं मानता, वहांसे उन्होंने

भी भली लम्बीचौडी पाती भेजा, इसी तरह लिखापढी होते और दिल बिगडते २ एकदिन नरकमें जानेका पाठभी पढ़लिया।

सखियो! इसी हेतुसे बूढेलोग कहतेहैं कि औरतें पढ़पढ़के खराब होजातीहैं।

१ चाहिये यह कि जब अक्षर पढने लिखने आयजाय तो अच्छे २ ग्रन्थ पढावें जिसमें बोलचालके, शीलस्वभाव के गुण-दोषका वर्णन हो।

२ कुछ गणित विद्याभी उनको पढाना और सिखलाना चाहिये जहांतक घर गृहस्थीके विषयमें स्त्रियोंको काम पडताहै।

३ नारिधर्म अर्थात् पतिव्रत धर्मकी भलीप्रकार उनको शिक्षा देना चाहिये।

४ कूटने पीसने आदिकी रीतियोंसे उनके शरीरकी पुष्टता और आरोग्यताकाभी यत्न करना चाहिये।

५ पाक अर्थात् रसोई पानीमेंभी पक्की करदेनी चाहिये।

६ सीना, पुरना, कशीदा काढना भी सिखलाना चाहिये।

कवित्त।

अक्षरं लिखावो, सिखलावो शब्द बांचनको, ग्रंथन पढावो, जो स्वभाव सुधरैयाहैं। गंणित बतावो जहां तक उन्हें आवे काम, धर्म-को जतावो जो तियन तरवैयाहैं॥ बुद्धिको बढावो, अरुकछुकंक-ढावो, कशीदाकाढ, पाकं पकवावो जेहि वंदत जेंवैयाहैं। मेहनतं करावो, शुभ गुंणन सिखावो उन्हें, चन्द्रकला शिक्षा यही तियन सुखदैयाहैं॥ १॥

सखियो! हम स्त्रियां संतान उत्पत्तिकी अर्मानमें जान देतीहैं, पर यह नहीं जानतीं कि संतानके साथ मातावोंका क्या धर्म है?

मैंने एक घरका हाल देखा कि बहुतदिनोंपर और बडे अर्मानसे एक जनीके एक कन्या उत्पन्न हुई, जब वह बढी तो शिक्षाकी तो हमलोग वैरिहीहैं, शिक्षा उसको वह क्या देतीं, मारे दुलार और प्यारके उसके मां बापने उसको ऐसा स्वतंत्र करदिया कि जहां वह चाहती चलीजाती, जबतक चाहती घूमा करती, आखिर जब उसका चौदह १४ वर्षका सिन हुवा, तो गोसांई तुलसीदासजीका वचन (ज्यों स्वतंत्रह्वै बिगडहिं नारी) सुना गयाथा कि उसने अपने कुचालसे अपने मां बापको क्या सारे संबंधियोंको शोक उत्पन्न कर दिया ।

कहिये ऐसी पुत्रीसे उसके मांको क्या सुख और लाभ हुवा ।

वेदमें परमेश्वरकी यह आज्ञाहै "पुत्रकी रक्षा और शिक्षा पिता-पर उस समयतक जबतक वे सयाने न हो जांय और कन्याका पालन और सिखावन मातापर उससमयतक जबतक उनका ब्याह होकर वे अपने पतिके संग न जांय उचित्त कर्तव्यहै" ।

पिता तो अपने कर्तव्यको करतेहैं, अर्थात् बालकोंको समय पर शिक्षा देतेहैं, पर हम मातायें कन्यावोंके साथ कुछभी नहीं करतीं और सखियो ! करैं कहांसे, अभीतो हम आपही नहीं जानतीं कि शिक्षा किस पशुका नामहै ।

हमको बहुत उचित है कि हम आप शिक्षितहों और जैसे पुरुष बालकोंको शिक्षा देतेहैं,वैसेही हम अपनी कन्यावोंको भाषा विद्या पढालिखाके, उनका चाल व्यवहार बनाके उनको सब प्रकारका गुणढंग सिखलाके इसतरह उनको शिक्षित और सुघर करदें कि जिस घर वे जांय उस घरवाले अपनी भाग्य सराहैं, जिस पुरुषके साथ उसका सम्बंधहो, वह पुरुष गृहस्थाश्रममें ... सुखका स्वाद पावै ।

सर्दारिनो! अब मेरी ढिठाई क्षमा कीजिये, मेरी उखडी पखडी बातोंके सुननेसे आप लोगोंको बडी तकलीफ हुई।

अब जिस शिक्षाको मैंने स्त्रीशिक्षा नियत किया है उसके सम्मति वा असम्मतिमें मैनाकी तरह बोलनेवाली और अपने वचनोंसे बिनादामों मुझे मोल लेनेवाली मेरी प्यारी सखी दे०बुद्धिमतीकुं० कुछ कहै यह कहि बैठगई और दे०बु० कुँ० उठखडी हुई।

(व्याख्यान दे० बु० म० कुँ।)

सखियो! मुझको आश्चर्य है कि मेरी बुद्धिमती सखी दे०चं० कुँ० फरमाती है कि "मेरे वचनोंसे सम्मति वा असम्मति करें" भला मैं क्या मेरा फिरिस्ताभी आपके वचनोंसे असम्मति करनेको योग्य नहीं होसकता, आपको तो मैं साक्षात् भवानी और आपके वचनोंको आकाशवाणी समझती हूं।

जिन बातोंकी शिक्षाको दे०चं०कुँ०ने स्त्रीशिक्षा नियत किया है। वे बडेही योग्य और माननीय हैं।

यह शिक्षा नहींहै, यह हमारे मूर्खतारूपी रोगका परम औषधहै।

यह शिक्षा नहीं है, यह हमारे त्रियाचरित्ररूपी विषके उतारनेका परममंत्र है।

यह शिक्षा है, कि हमारे स्वभावकी सुधारनेवाली सखी है?

यह शिक्षा है कि, हमारे हृदयकी ताप बुझानेवाला चन्द्रमाहै?

अक्षर लिखपढ लेनेके उपरांत स्वभावसुधारक ग्रन्थोंका पढना हम बालावोंको अति आवश्यकहै, इन्हीं ग्रन्थोंके पढे बिना तो जो कुछ हम पढती भी हैं वह हमको विष समान होजाता है।

आपलोग विचार करैं कि जिस पढनेसे हमारे स्वभावका सुधार न हुवा, हम वैसेही भैंसकी भैंसही रहगईं, और वह हमारा पढना केवल इतनेही काममें आया कि "यार दोस्त, नातवांतको प्रेमभरी

मैंने एक घरका हाल देखा कि बहुतदिनोंपर और बडे अमानसे एक जनीके एक कन्या उत्पन्न हुई, जब वह बढी तो शिक्षाकी तो हमलोग वैरिहीहैं, शिक्षा उसको वह क्या देतीं, मारे दुलार और प्यारके उसके मां बापने उसको ऐसा स्वतंत्र करदिया कि जहां वह चाहती चलीजाती, जबतक चाहती घूमा करती, आखिर जब उसका चौदह १४ वर्षका सिन हुवा, तो गोसांई तुलसीदासजीका वचन (ज्यों स्वतंत्रह्वै बिगडहिं नारी) सुना गयाथा कि उसने अपने कुचालसे अपने मां बापको क्या सारे संबंधियोंको शोक उत्पन्न कर दिया ।

कहिये ऐसी पुत्रीसे उसके मांको क्या सुख और लाभ हुवा ।

वेदमें परमेश्वरकी यह आज्ञाहै "पुत्रकी रक्षा और शिक्षा पिता-पर उस समयतक जबतक वे सयाने न हो जांय और कन्याका पालन और सिखावन मातापर उससमयतक जबतक उनका व्याह होकर वे अपने पतिके संग न जांय उचित्त कर्तव्यहै" ।

पिता तो अपने कर्तव्यको करतेहैं, अर्थात् बालकोंको समय पर शिक्षा देतेहैं, पर हम मातायें कन्यावोंके साथ कुछभी नहीं करतीं और सखियो ! करैं कहांसे, अभीतो हम आपही नहीं जानतीं कि शिक्षा किस पशुका नामहै ।

हमको बहुत उचित है कि हम आप शिक्षितहों और जैसे पुरुष बालकोंको शिक्षा देतेहैं,वैसेही हम अपनी कन्यावोंको भाषा विद्या पढालिखाके, उनका चाल व्यवहार बनाके उनको सब प्रकारका गुणढंग सिखलाके इसतरह उनको शिक्षित और सुघर करदें कि जिस वर वे जांय उस वरवाले अपनी भाग्य सराहैं, जिस पुरुषके साथ उसका सम्बंधहो, वह पुरुष गृहस्थाश्रममें अत्यन्त सुखका स्वाद पावै ।

चीर हरलिया इसप्रकार सबको नंगी देखा, कुंजनमें फलानीको अकेली पकडा, इनकी अंगिया फाडी, उनकी चोली मसकाया, इत्यादिक" तो अब कहिये, ऐसे भावोंका स्मरण करके अपना मन खराब उमंगोंसे भर न देंगी; अवश्य ऐसे भावोंके स्मरण और चिंतनका बुरा असर हमारे दिलोंपर पडैगा।

हमको अभी इतनी बुद्धि कहांकि हम यह समुझें, कि ऐसे ग्रन्थोंसे हमको यह शिक्षा लेना चहिये।

"जैसे गोपियोंने भगावन श्रीकृष्णचन्द्र आनंदकंदको अपना पति मानकर, उनके प्रेममें सर्व सुध बुध बिसार दिया, इसीप्रकार सर्वस्त्रियोंको उचितहै कि अपने पतिके प्रेममें वे ऐसी मग्न रहैं, कि दूसरे पुरुषका चेत स्वप्नमेंभी न आवै"।

इसहेतुसे मैं कहतीहूं कि ऐसे ग्रन्थोंको शिक्षित और देशकाल देखीहुई स्त्रियां पढ़ैं, शिक्षाकी अधिकारी स्त्रियां व्रजविलास और प्रेमसागरकी जगह रामायण पढैं और अपने मां बाप वा भाई बहिनसे कुछ अर्थभी पढतीजाँय तो अधिक शान्ति और सुधारका कारण होगा।

मैं यह नहीं कहती कि कोई ग्रंथ अच्छे नहीं पर इतना अवश्य कहोंगी कि श्रीगोसांई तुलसीदासजीने इसग्रंथमें सबके योग्य व्यवहारोंको वर्णन कियाहै, नीतिसे भरीहुई यह पुनीत पुस्तकहै, चतुराईकी भी खानही जानना चहिये।

इन बातोंसे मेरातात्पर्य यहहै कि जब बालकोंको अक्षरका बोध होजाय तिसके उपरान्त स्वभावसुधारक ग्रंथोंका पढाना अतिआवश्यकहै।

(यहाँ तक व्याख्यान होजानेके उपरांत घडीकी तरफ देखकर, और देर होनेसे सबका चित्त उद्विग्न(चंचल)देखकर, दे०कु०कुँ० यह कहि बैठिगई)।

पाती लिखना, और उनकी पाती पढना, और सर्वबिधि शोक करने योग्य, और हरतरह अनर्थकर व्यवहारोंके सिद्धी अर्थ जतन शोचते रहना" तो यह पढना हमारा विषसमान नहीं हुवा तो क्या हुवा ?

विषतो मारही डालता है, और यह तो बदनामीका बीज बोके जीतेहुये मरेकी नाईं करडालता है, जो भले आदमीको सर्वप्रकार शोक करने योग्य है ।

अब इन बदनामियोंसे बचानेवाला मित्र कौन है यही ग्रंथ हैं जिनमें स्वभावका स्वरूप, भले बुरेका विचार वर्णनहो, स्त्रीधर्म जिनमें विशेष करके लिखेगयेहों, कुछ और ऐसी बुद्धिमताई और चतुराईकी बातेंहों जो घरगृहस्थीके विषयमें स्त्रियोंके काम आती हैं।

अच्छा अब मैं चाहती हूं कि, कुछ ग्रन्थोंके नामभी संकेत करदिये जांय, पर नहीं नहीं यह निरर्थक श्रम है यह बात बुद्धिमान मां बापके अधीन है कि जो ग्रंथ स्वभावसुधारक हों उन्हीं ग्रंथोंको पढावें, निरर्थक ग्रंथोंको हाथसेभी न छूनेदें ।

हां मैं एक बात औरभी कहना चाहती हूं, पर आपलोग तुरतही यह अनुमान सिद्ध न करलें कि यह परमेश्वरकी शत्रु हैं, आदि अंत सुनकर तब जो चाहियेगा सो कहियेगा ।

इस देशमें व्रजविलास, प्रेमसागर आदिक ग्रंथोंके पढानेकाभी बहुधा दस्तूर देखनेमें आता है, पर मेरी रायमें जबतक स्त्रियां अपने धर्ममें पक्की न होजांय, कुछ देशकाल न देखलें, तबतक उनको ऐसे २ ग्रंथ देखना लाभदायक होनेकी तो क्या आशा, अनर्थकर होजांय तो आश्चर्य नहीं ।

हम चौदह पन्द्रह वर्षकी छोकडियां जब व्रजविलास पढेंगी और उनमें भगवानके बड बड रहस्य देखेंगी "इसतरह गोपियोंका

चीर हरलिया इसप्रकार सबको नंगी देखा, कुंजनमें फलानीको अकेली पकडा, इनकी अंगिया फाडी, उनकी चोली मसकाया, इत्यादिक" तो अब कहिये, ऐसे भावोंका स्मरण करके अपना मन खराब उमंगोंसे भर न देंगी; अवश्य ऐसे भावोंके स्मरण और चिंतनका बुरा असर हमारे दिलोंपर पडैगा ।

हमको अभी इतनी बुद्धि कहांकि हम यह समुझें, कि ऐसे ग्रन्थोंसे हमको यह शिक्षा लेना चहिये ।

"जैसे गोपियोंने भगावन श्रीकृष्णचन्द्र आनंदकंदको अपना पति मानकर, उनके प्रेममें सर्व सुध बुध विसार दिया, इसीप्रकार सर्वस्त्रियोंको उचितहै कि अपने पतिके प्रेममें वे ऐसी मग्न रहैं, कि दूसरे पुरुषका चेत स्वप्नमेंभी न आवै ।

इसहेतुसे मैं कहतीहूं कि ऐसे ग्रन्थोंको शिक्षित और देशकाल देखीहुई स्त्रियां पढ़ैं, शिक्षाकी अधिकारी स्त्रियां ब्रजविलास और प्रेमसागरकी जगह रामायण पढैं और अपने मां बाप वा भाई बहिनसे कुछ अर्थभी पढतीजाँय तो अधिक शान्ति और सुधारका कारण होगा ।

मैं यह नहीं कहती कि कोई ग्रंथ अच्छे नहीं पर इतना अवश्य कहोंगी कि श्रीगोसांई तुलसीदासजीने इसग्रंथमें सबके योग्य व्यवहारोंको वर्णन कियाहै, नीतिसे भरीहुई यह पुनीत पुस्तकहै, चतुराईकी भी खानही जानना चहिये ।

इन बातोंसे मेरातात्पर्य यहहै कि जब बालकोंको अक्षरका बोध होजाय तिसके उपरान्त स्वभावसुधारक ग्रंथोंका पढाना अतिआवश्यकहै ।

(यहाँ तक व्याख्यान होजानेके उपरांत घडीकी तरफ देखकर, और देर होनेसे सबका चित्त उद्विग्न(चंचल)देखकर, दे०बु०कुं० यह कहि बैठिगईं) ।

सखियो ! सभाका समय४बजेतक था, और अब सूई ठीक ६ बजेपर पहुँचिगई,अब मैं चाहतीहूं, कि सभा समाप्त हो और सेक्रेटरी सभाका दिन नियत करदें यह कहि बैठगई ।

(दे०चं०कुँ०) खडी होकर—सखियो ! आजके वीसवेंदिन शिवरात्रिहै, वह दिन सभाके लिये अतिउत्तम मालूम होताहै, यही बात मंजूरहुई और सभा समाप्त हुई ।

स्त्रीसभाका चौथा जलसा ।

१ तायदाद सभ्य १८३ जिसमें ८ वर्षसे १३ वर्षतककी ६५ और १४वर्षसे २० वर्षतककी ५६ और २१ वर्षसे ३० वर्षतककी ३९ बाकी इससे अधिक उमरकी स्त्रियां ।

२ दे० चं०कुँ० प्रार्थना करि कहनेलगीं ।

मैं सर्वसर्दारिनो और सखियोंको करजोरि शीशनवाय नमस्कार और रोमरोमसे उनका आदर सत्कार करतीहूं, आप लोगोंके दर्शनसे जैसा हर्ष मेरे हृदयमें होरहाहै, उसको वाणीसे मैं नहीं कहसकतीहूँ क्यों ? "गिरा अनयन नयन विनुबानी " ।

पिछली सभामें यह नियत करदियागयाथा कि इनबातों की शिक्षा स्त्रीशिक्षा समुझना चाहिये और उसके पहिले प्रकारपर दे० बुद्धिमती कुँ०ने अतिउत्तम व्याख्यान दिया, अब और प्रकारोंपर व्याख्यान देनेकी कोई आवश्यकता नहीं जनाती ।

अब मैं प्रार्थना करतीहूं कि श्रीमतीसर्वोपमायोग्य श्रीअम्माजी नई तजवीजोंको पेश करैं और जिसको आज्ञा दें वह उनपर व्याख्यानदे. यह कहि बैठगई, और देवी सत्वतीकुँ० उठखडी हुई ।

(दे० स० कुँ०) बुद्धिमानदेवियो ! और बातें तो ग्रंथोंसेभी मालूम होसकतीहैं, इससभासे हमको अपने व्यवहारोंके सुधारका लाभ जहांतक होसके लेना चाहिये,तातें मैं आज चार तजवीजोंको पेश करतीहूं ।

१ सिवाय नीचे लिखेहुये पुरुषोंके, नंदोई, बहनोई, वा किसी पराये पुरुषसे स्त्रियोंको एकांतमें बैठके भेंट करनेकी रसमको यह सभा नापसन्द करतीहै और आज्ञा देती है कि इस व्यवहारका अवश्य तिरस्कार कियाजाय. पिता, पुत्र, भ्राता, नाना, मामा।

२ यह सभा पराये पुरुषोंको पाती लिखने पढ़नेका रसम निंदित समझतीहै, और आज्ञा देतीहै कि सिवाय नीचे लिखेहुये पुरुषोंके और किसी परपुरुषको स्त्रियाँ चिट्ठीपत्री न लिखाकरैं, पति,पिता, पुत्र, भ्राता।

३ भिखमंगीके बहाने स्त्रियोंका बाहर जाना यह सभा निषेध करतीहै और आज्ञा देती है कि भले आदिमीकी स्त्रियां इस बहाने कदापि बाहर न जाँय।

४ दशवर्षसे अधिक बैसकी लडकियाँ, अपनी माताका संग छोडकर किसी दूसरे स्थानपर चाहै वह ननिआउर (नानिहाल) हो, वा बहनिआउर, वा कोईहो एक दिनसे अधिक अकेले न रहाकरैं।

१ पहली तजवीजपर पहिले दे॰गु॰कुँ॰ का, फिर चं॰कु॰ का व्याख्यान होगा।

२ दूसरी तजवीजपर पहिले बु॰ म॰ का फिर चं॰ कुँ॰ का व्याख्यान होगा।

३-४ तीसरी चौथी तजवीजोंपर अकेली चं॰ कुँ॰ का संक्षिप्त व्याख्यान होगा, यह कहि बैठगई, और दे॰गु॰कुँ॰उठ खडी हुई।

(व्याख्यान दे॰ गु॰ कुँ॰ १ तजवीजपर)

पहिली तजवीज जो पेशहुईहै, उसके हितकारक और सुधारक होनेमें तो कुछ कहनाही नहीं है, छोटी और कमीनी स्त्रियोंकी बात

में नहीं चलाती, पर भले आदमीकी स्त्रियोंको पराये पुरुषोंसे अकेलेमें बैठके भेंट करना बहुतही निंदित और उपद्रवकर व्यवहारहै, मेरी जानमें तो यह व्यवहार ऐसा खराबहै कि हम भलेआदमियों की स्त्रियाँ तुरत कसमही खाजाँय किचाहै बहनोई साहेबहों,वा नंदोईसाहेब कोई हों पर अकेलेमें बैठके कदापि भेंट न करैं, कहिये क्यों? तो मुझे इसके हेतुवर्णन करनेमें लज्जा और सकुच आतीहै मेरी उमर आपलोग जानतीही हैं कि अभी १७वर्षकीहै, और सिवाय दिनरात लिखने, पढने,कशीदाकाढ़में रहनेके और बहुत मैं न कहीं आवों न जाँव फिर संसारका कुछ व्यवहार न जानो, पर इतनेही उमरमें आंखोंसे तो नहीं पर कानोंसे जरूर सुना कि ११ जगह ऐसे व्यवहारसे अनर्थ होगया, स्त्री पुरुष दोनोंके मुखमें कालिख लगगया।

भला सखियो ! आप लोग जरा विचार नहीं करतीं कि शून्य स्थान, और उसमें युवा स्त्री पुरुष प्राप्त हो और अनर्थ न हो ?

दोहा–तिय पावक घृत सम पुरुष, वायु शून्य अस्थान ॥
सब संयोग प्रापत भये, पति राखै भगवान ॥

इस प्रसंगपर यह शंका होसकतीहै, कि "जो बहनोई नंदोईसे भेंट न करैंगी तो उधर वे नाखुश होंगे इधर बहिन और नँनद मुँह फुलावैंगी तो और अमर्ष करैंगी" सो यह शंका मेरी जानमें अति तुच्छहै ।

आप लोग विचार करें कि किसीका जरासा नाखुश होजाना अच्छा, वा किसीको अपना हरलोक परलोक विगाडके खुश करना अच्छा ।

और फिर में कहतीहूँ कि हमको प्रसन्नता वा अप्रसन्नता अपने पतिकी देखनी चाहिये,वा सारे संसारकीहां यह माना कि "सबको राजी और सबको खुश रखना स्त्रीहो वा पुरुष सबका धर्महै"

पर यह दूसरी बात है, इसका तात्पर्य यह है कि अपने सच्चे और निष्कपट व्यवहारसे सबको खुश रखना चाहिये, यह मतलब नहीं है कि अपना धर्म बिगाडो और दूसरेका दिल खुश करो।

सखियो ! मेरी मति तो यह है कि अपना धर्म रहै तो सारा संसार नाखुश रहै तो कुछ चिंता नहीं; इस बिषयमें दो सती स्त्रियों की वार्ता मुझे नहीं भूलती और इस अवसरमें उनकी वार्ता कहे बिना मुझसे रहा नहीं जाता।

इतिहास १.

बम्बई शहरमें दो सगी बहिनैं थीं, इन दोनों बहिनोंको विद्या पढनेका बडा शौकथा, एककी उमर २० वर्ष, और दूसरी की २५ वर्ष कीथी, पर उन्होंने अबतक अपना व्याह शादी नहीं किया था उनका चित्त संसार व्यवहारसे निरस होकर विद्याहीमें रत होगया था।

उस शहरमें एक स्थान बहुत ऊंचा शहरके बाहर था वहां लोग सैरको जाया करतेथे।

किसी दूसरे शहरका एक धनी आदिमी वहां आ टिका और उसने एक कुटनीसे कहा कि किसी स्त्रीको बुलालावो।

उसी दिन संध्यासमय संयोग वश वे दोनों बहिनैं सैर करने उस स्थानमें जा निकलीं, उस पुरुषने जाना कि कुटनीकी भेजी हुई ये स्त्रियाँ हैं, यह समझ जब वे दोनों ऊपर चढने लगीं तो यह भी उन के पीछे चला ज्यौं ज्यौं वे ऊपर जाती थीं, त्यौं त्यौं यह नीचेके किंवाड़ बन्द करता ऊपरको चलाजाताथा, जब वे दोनों ऊपर चढ गईं तो यह भी ऊपर पहुँचा और उनसे अटपट बातैं करनेलगा जब उन दोनोंको मालूम हुवा कि यह अधर्मरत पुरुष है, और हमारी पति लिया चाहता है, तब और कोई मार्ग धर्मरक्षाका न

देखकर दोनोंने अपनेको उसस्थानसे जो ताडसे भी ऊंचाथा गिराकर प्राण गवाँदिया ।

हा, हा, धन्य है ऐसी स्त्रियां, जिन्होंने अपनी पतिको प्राणसे अधिक प्यारा समझा ।

इतिहास २.

अभी थोडे दिन हुये, एक अखबारमें यह समाचार लिखाथा, कि एक स्त्री जिसकी गोदमें एक वर्षका बालकथा, अपने पति समेत रेलपर सवार हो कहीं जातीथी किसी स्टेशनपर संयोगवश उसका पति रेलपर सवार होगया, और वह स्त्री मय बालकके छूटगई ।

वह स्त्री रूपवान्‌भी थी इसलिये स्टेशनवाले पुरुषोंके मनमें बेईमानी बसी, और उस स्त्रीसे कहा "तुम स्टेशनके कमरेमें आके बैठो, अभी दूसरी रेल आती है तुम उसमें सवार हो लेना" ।

वह बेचारी पतिव्रता स्त्री पतिके बिछुडनेसे व्याकुलथी, उन सभोंका छल न जानकर स्टेशनके कमरेमें जा बैठी ।

वे लुच्चे और धर्मगत लगे इधर उधरकी बातें करने और हाथ बढाने, जब उसने देखा कि यह खोटे पुरुष हैं और जबरदस्ती इज्जत लिया चाहते हैं, तो उसने बालक वहीं छोड कहा "हम अभी बाहरसे हो आती हैं तब देखाजायगा" ।

उस बालकके छोडनेसे उन पुरुषोंको विश्वास होगया कि यह अवश्य आवेगी, उसने क्या काम किया कि बाहर आय चट केंवाडका पट वन्द कर बाहरसे जंजीर चढादिया ।

तब उन सभोंको खटका हुवा और कहा "केंवाड़ा खोल" उसने न खोला, तब उन पुरुषोंने उसके बालकको झरोखेकी राहसे देखलाके कहा "केंवाडा खोल, नहीं तो इस तेरे बालकको मार डालेंगे" उसने कहा "जो चाहो सो करो, मैं केंवाडा न खोलूंगी"

तब उन निर्दयी और हत्यारे पुरुषोंने उस बालककी एक उँगली काटकर झरोखेकी राह उसके आगे फेंका, और कहा "अबभी केवाडा खोल, नहींतो तेरे बालकके सब अंग काटकाट फेंकदेंगे" तबभी उसने केवाडा न खोला ।

तब उन सभोंने उस बालकके टुकडे २ कर उसको देखा २ बाहर फेंकना आरंभ किया ।

उस बालककी यह दशा देख यद्यपि उस स्त्रीका हृदय विदारित होगया, तौभी (वाह री स्त्री, तू धन्यहै, तेरे पांवोंको बलिबलि जातीहूँ) धीरज धरकर मनहीमन कहनेलगी हे नारायण । पतिकी रक्षाकरो, ऐसे लाख सुतकी मुझे परवाह नहीं जो पति रहजाय।

थोडीदेरमें दैवसंयोगते एक ट्रेन वहां आपहुँची उसपर पुलीस मन (पुलिसके आदिमी) सवारथे, ट्रेन आतेही उस स्त्रीने विलाप और प्रलाप करना शुरू किया और सब वृत्तान्त कहिसुनाया, पुलिस वालोंने चट रेलसे उतर पट सभोंको गिरफ्तार कर चालान करदिया और साहेब सेसनजजबहादुरकी इजलाससे वे सब अधर्मी फांसी पागये । इति

सखियो आपलोग विचार करें कि पुत्र जो प्राणहूते अधिक प्यारा होताहै उसका बध अपनी आंखोंसे देखा पर धर्मकी रक्षा किया, तो हमलोग जो धर्मकी रक्षा निमित्त किसीकी जरासी नाखुशी सहलें तो क्या बडीबातहै ?

और फिर मैं पूछतीहूं कि कोई हमसे नाखुश क्यों होनेलगा, हमसे भेंट करनेका किसी पराये पुरुषको कौनसा हकहै, मैंतो जानतीहूँ कि बुद्धिमान पुरुष इसबातके लिये कभी हमसे नाखुश न होंगे, किंतु हमारी प्रशंसा करैंगे ।

सखियो ! यह कलिमहाराजका युगहै इस युगमें ऐसा अधर्म प्रगट होगयाहै कि स्त्री हो वा पुरुष कोईभी अपने धर्मपर नहींहै न किसीके मनमें धैर्यहै, इस हेतुसे जिस व्यवहार, वा जिस अवसरमें जराभी अधर्म प्रगट होनेका खटका रहै, उन व्यवहारों और अवसरोंसे हमको कोसों दूर रहना चाहिये, ताते मैं इस तजवीजके पास होनेमें सम्मति करतीहूँ कि "स्त्रियां अकेलेमें बैठके किसी पराये पुरुषसे भेंट मुलाकात वा संभाषण न करैं । इति

यह कहि बैठगईं, और दे०चं०कुँ० तुरत वहां खडी होगईं ।

(व्याख्यान दे०चं०कुँ०)

प्यारी सखियो ! उठनेको तो मैं उठचुकी पर आपलोगोंकी ओर जो दृष्टि जापडी तो ऐसा हर्ष उत्पन्न होगया, कि उस बातहीको भूलगई जिसके कहनेको मैं उठीहूँ, "जरा ठहरकर" हां याद आगया ।

सखियो ! पराये पुरुषसे एकान्त स्थलमें बैठके बातचीत वा भेंट मुलाकात करना, यह अति अधर्म प्रगट होनेका समयहै, मैं यह नहीं कहती कि हर ऐसी जगहमें अधर्म प्रगट होहीजाताहै, पर येतना जरूर कहोंगी कि ऐसे अवसरमें अधर्म प्रगट होनेका सौ अंश और न प्रगट होनेका एक अंश आशा की जातीहै ।

इस तजवीजमें जिन पुरुषोंके साथ अकेलेमें बातचीत वा भेंट मुलाकात करना निषेध नहीं किया गयाहै वह यद्यपि योग्यहै, तथापि चाहै मुझे आपलोग बिलकुल खराब खिस्ता, लुच्ची पाजी कहैं, पर मैं समयका हाल देखकर यही कहूंगी कि न साहेब ना किसीसेभी अकेलेमें न मिलो, कहिये क्यों, तो कारण यहहै, कि यह मन यदि योगी जनोंके वशमें नहीं आता, तो कौन आशा है कि हमारे वशमें रहैगा ?

सखियो! मैं यह सकुचतीहूँ कि अपना उपद्रव हम आपही करें, अर्थात् जिस स्त्रीकी बात कहोंगी वह सजातिपनसे मानो अपनीही बात हुई, देखा नहीं तो सुना तो अवश्यहै कि इसी अकेलेमें भेंट करनेसे माता और पुत्रके बीच, गुरु और शिष्यके साथ अनर्थ होगयाहै तो भला मैं दूसरेकी क्या बात कहों ?

श्रीमद्भागवतमें लिखाहै ।

श्लोक–"मात्रा स्वस्रा दुहित्रा वा न विविक्तासनो भवेत् ।
बलवानिन्द्रियग्रामो, विद्वांसमपि कर्षति" ॥ १ ॥

अर्थ–इन्द्रियां बलवानहैं, विद्वानके मनकोभी खैंचलेती हैं, इस हेतुसे मां, बहिन, वा लड़कीसेभी अकेलेमें नहीं मिलना चाहिये ।

सखियो! जब शास्त्रहीकी यह आज्ञाहै तो इस विषयमें अधिक कहनेका क्या प्रयोजन है ?

अब इस विषयमें कविजनोंकी रायभी सुनिये ।

कवित्त ।

शून्य असथानमें प्रापत युवा नर नारि, येहो देव कैसे बेडा पार यह लागैंगे । करैंगे अनंग जब अंगन को तोड़ तंग, भंग होंगे धर्म औ अधर्म रंग पागैंगे ॥ चन्द्रकला संगते अनंग उतपतिहोत, ताहि ते उमंग धीर धर्म दूरि भागैंगे । येहो सखी ताते हम तियन उचित नाहिं, बैठिकै अकेले परपुरुष ऽनुरागैंगे ॥ १ ॥

पितुसों न भ्रातसों न सगे प्रिय नातसों न, बैठके अकेली प्यारी भेंट तुम कीजो ना । याहिमें अनेक भांति पडेहैं अनर्थ हेतु, ताते कधीं भूलेहू या मग पग दीजो ना ॥ चंद्रकला शून्यधाम तामें युवा पुर्ष वाम, धर्मरह्यो या को प्रतीत कभी कीजो ना । भागो दूरि भागो सखी ऐसे व्यवहारनते, जानी बूझ हेरी सखी विषप्याला पीजो ना॥२॥

सखियो । इसी अर्थकी एक कुंडलिया और एक दोहाभी मुझे यादहै उसेभी सुनलीजिये ।

कुंडलिया ।

चाहै कोऊ नातहै, भ्रातहोय कै तात ।
युवा नारि एकांत थल, मिलै न कौनिहु भांत ॥
मिलै न कौनिउभांति दैवलागी यह गतिहै ।
कौन कहै बुधिमान, रहैं या अवसरपतिहै ॥
हाहा यह व्यवहार अंतमें ल्यावत ख्वारी ।
ताते याते रहो दूर दोनहु नर नारी ॥
निरजन थलमें मतिकरो कबहुँभेंट मुलकात ।
चाहै कोऊ नातहै भ्रातहोय कै तात ॥ १ ॥

दोहा—शून्यठाम नर वाम तहँ, युवा सजोर शरीर ॥
चन्द्रकला ऐसे समय, पति राखैं रघुवीर ॥

सखियो ! यह समय ऐसाहीहै कि बहुत पांव सम्हालके रखिये, भले आँखोंसे देखते चलिये तो निबहै तो निबहै, नहीं तो निबाह, नारायणहीके हाथहै ।

तातें मैं इसतजवीजमें इतना अधिक होनेकी प्रार्थना करतीहूंकि । "सिवाय वृद्ध पिता, वृद्ध पुत्र, वृद्ध भ्राताके और किसी पराये पुरुषसे स्त्रियां अकेलेमें भेंट न करैं" इति ।

यह कहि बैठगई और दे०स०कुँ०, दे०चं०कुँ०के इस चतुराई भरे व्याख्यानको सुनकर अति प्रसन्न हो कहने लगीं ।

(दे० स० कुँ०) सर्दारिनो ! दे० चं० कुँ० ने जिस अधिकता के होनेकी इस तजवीजमें प्रार्थना कीहै वह बहुतही योग्य और आवश्यकहै और मैं बडे हर्षसे इस अधिकताको अंगीकार करतीहूं ।

अच्छा अब दूसरी तजवीजपर व्याख्यान हो, यह कहि बैठगई और दे० बु० कुँ० उठीं ।

व्याख्यान दे० बु० कुँ०का ।

यह दूसरी तजवीज जो पेश हुईहै वह अति उत्तम और वंदनीयहै, इसकी ताईदमें बहुत कहनेकी कोई आवश्यकता नहीं है चिट्ठी पत्री लिखनेसे दिल बिगडजाताहै, चित्तमें पराये पुरुषका प्रेम होजाताहै और जब प्रेम उत्पन्न हुवा तो प्रीतमसे मिलनेकी अवश्य चित्तमें दुराशा होजातीहै जो सर्वप्रकार स्त्रियोंको वर्जनीय और नरकप्राप्तिका हेतुहै ।

दोहा-प्रीति होत देखनहितै, नियम नहीं यह बात ।
कहन सुननहूते बहुत, प्रीति हृदय ह्वैजात ॥

और मैं कहतीहूं कि जब यह रीति हमारे नारिधर्मकेभी विरुद्धहै तो हमको प्रयोजनही क्याहै कि हम पराये पुरुषोंको प्रेमभरी पाती लिखनेमें अपना सुंदर समय व्यतीतकरैं, ताते मैं इस तजवीजके अवश्य पास होनेकी आशा करतीहूं ।

यह कहि बैठगई और दे० चं०कुँ० उठ खडी हुई ।

व्याख्यान दे० चं० कुँ०का ।

सखियो ! पराये पुरुषको प्रेमभरी पाती लिखना क्याहै कि विषका बीजबोना और नरक मार्गमें चलनेके लिये पैर उठानाहै इसका हेतु और सबब कहलानेका क्या प्रयोजनहै ? इन कानोंसे बारबार सुना और इन आँखोंसे हजारवार देखाहै कि ऐसे व्यवहारसें प्रायः अनर्थ प्रगट होगयेहैं ।

इस चित्तका स्वभावहै कि जिस बातका अधिक चिंतन वा स्मरण होताहै उसका संस्कार हृदयमें जमजाताहै, जब पुरुषने पाती लिखा "मेरी प्यारी जीवन अधारी तुम्हारी प्रीति हमारे

हृदयमें ऐसी होगईहै कि दिन रात तुम्हारे ध्यानमें रहतेहैं, तुम्हारे मिलनेकी ऐसी चिंता होरहीहै जैसे चातकको स्वातीके बूंदकी इच्छा रहती है ।

दोहा–हम पंछी तुम कमल दल, सदा रहो भरपूर ।
हमपर कृपा जु राखिये, कहा नेरे कहा दूर ॥"

इसपातीको पढकर स्त्रीने विचार किया कि "यह तो हमारे बडे स्नेही यार मिले, हमकोभी अवश्य इनके साथ प्रीति करना चाहिये" आपने भी जावाब लिखा "हे प्रीतम ! आपका प्रेम मेरे हृदयमें आपसे अधिक है, जबसे आपकी पाती आईहै तबसे मेरे चित्तकी यह दशा होरहीहै कि जैसे जलसे जुदी मीन तडफै वैसे मैं आप बिना तडपरही हूं, वह दिन भगवान कब देखलावेंगे कि आपके मिलनेसे हृदयकी तपन बुझाऊंगी ।

दोहा–जी चाहत की उड मिलों, पर बिन उड़ा न जाय ।
काह कहौं करतारको, पर नाहिं दिया जमाय ॥

बस चलिये, जब इहांतक लिखापढी होचुकी तो भला यह कब संभवहै कि दोनों अपने काबूभर मिलनेके हेतु यत्न न करैं ।

यातो यह ठहरगई कि अच्छा आनेदो मोहर्रम देखलेंगे वा यह सलाह होगई कि बाले मियांके मेलेमें मुराद मिलजायगी वा संदेशियोंकी मार्फत दूसराही प्रकार मिलनेका ठहराय लियागया, बस चलिये कई जन्मके लिये युवावस्थामें विधवा होनेका सामान कर लियागया ।

हाय, ऐसी स्त्रियोंको धिक्कारहै जो क्षणभरके झूंठे सुखकी आशामें अनेक कल्पोंतक नरकदुःख भोग करनेका हेतु करलेतीहैं।

सखियो ! एक लुची स्त्रीने एक अच्छे पुरुषको पाती लिखी, जिसमें अनेक प्रकारसे अपना प्रेम, और अनेकभांतिके निंदित मनोरथ प्रगट कियाथा ।

उस साधु पुरुषने जो जवाब उसका लिखा, वह अति सराहने योग्यहै वह जवाब यहहै।

कवित्त।

होतो तू कुलीन वधू कीनी पर नीक नाहीं, मोपै जो सनेहभरी भेज्यो यह पातीहै।काहेको कौनहेतु चाहत कथा याते तुम, हाहा यह बात मोहिं नेकहू न भातीहै। है तो यह रीति जाते नर्कद्वार देख पडें, होत जगहँसी मुखमसी लगि जातीहै। ताते समुझाती बहु भांती तोहिं चन्द्रकला, योग्य नहि लिखवो परपुर्षनको पातीहै॥१॥

सखियो इसीतरह एक लुचे पुरुषने एक सती और अच्छी स्त्रीको पाती लिखीथी, उस स्त्रीनेभी जो जवाब लिखा वहभी बहुतही आदर देने योग्यहै।

कवित्त।

आप परपुरुष औ मैंहूं पराई नारि, पाती मोहिं भेज्या कहो कौन नांत मानेहैं।जाने हरजाई कैधौं पातुर पहिचाने मोहिं, साहेब कहोतो जरा होशतो ठेकानेहैं॥मेरे जान चन्द्रकला ऐसे नर बुद्धिहीन, दीन हैं मलीन ज्ञान छीनहैं दिवानेहैं।निपट नदाने अघअवगुनके खाने, जिन पत्रिकाकी रीति परनारिनसों ठानेहैं॥ २॥

सखियो! कुंडलियाभी सुन लीजिये।

कुंडलिया।

काहुहि पाती ना लिखो, पर पूरुष पर नारि।
अंतहु यह निंदित व्यसन, देते धर्म बिगारि॥
देते धर्म बिगारि, अंतमें यह व्यवहारा।
दोउ चित हुलसै प्रेम, करैं फिरि मिलन विचारा॥
बुद्धिभ्रष्ट ह्वैजाय दोउ, मुख कालिख पोते।
लहि जग अयश अपार, नरक दुखसहि फिर रोते॥

चन्द्रकला व्यवहार यह, जानहु अयश पेटारि ।
काहुहि पाती ना लिखो, पर पूरुष पर नारि ॥१॥

सखियो ! एक दोहाभी सुन लीजिये ।

दोहा–लिखो न पाती नारि नर, परको परकर प्रेम ।
चित बिगरत जैहै बिगारि,सकल धर्म व्रत नेम ॥

अच्छा, एक चौपाईभी इसी आशयकीहै ।

चौपाई–लिखो न कोउ परको परपाती ।यह व्यवहार अंतमें घाती॥

सखियो ! मैं बहुत क्या कहूं, यह व्यवहार ऐसा बुरा जानके त्याग करने योग्है,जैसे अति विषधर सर्प,वा विच्छूभरे मार्गको,ताते मैं इस तजवीजके पास होनेकी अवश्य आशा करतीहूं । इति ।

यह कहि बैठगई, और दे०स०कुँ० अतिप्रसन्नहो उठीं ।

(दे०स०कुँ०) सखियो ! श्रीदेवीचन्द्रकला कुँवरि, जो मेरी प्यारी बहूहै उनके उक्तियुक्तिसहित वचनोंसे मेरा चित्त ऐसा प्रसन्न होताहै कि रोम रोम हर्षसे पूरित होजाताहै ।

मैं अपने पूर्वले पुण्य और इस शरीरके भाग्यको सराहती हूँ जो यह मेरी बहू कहलाई ।

मैं सत्य कहतीहूं कि मुझेभी अपनी विद्या बुद्धि,चतुराई वकताईका बडा घमंड था, पर इनकी विद्या बुद्धिके आगे मेरा घमंड ऐसा टूटा ऐसा टूटा,जैसे हजारपतीका घमंड करोडपतीकी विभूति देखनेसे टूटजाताहै ।

मुझे देखिये कि और बुद्धिमानोंके वचनतो मुझे अनेक यादहैं पर अपनी उक्तिसे छंद कवित्त क्या, एक चौपाईका चौथाभागभी न मैंने कभी कहा न कहसकतीहूँ, और इन्हें देखिये कि कोई व्याख्यान इनका ऐसा नहीं होता जिसमें दो एक कवित्त छंद दोहा, चौपाई न हों, और तारीफ यह कि इधर बनाती उधर कहती चलीजाती हैं ।

(हँसीकी राहसे) नाजानूं किस कविके प्रसंगका फल इनकी माताको मिला जिनकी शिक्षासे इनका यह हालहै ।

(चन्द्रकला शिर निहुराये, निरअभिमान, शांतहो बैठी है और मनहीमन अपनी माताका यश और विद्याकी प्रशंसा कररहीहै, "माता, तेरे चरण बलि २ जानेयोग्यहैं, तेरा बडा उपकारहै कि तेरी शिक्षासे आज मुझको यह यश प्राप्त होताहै, विद्या तू धन्य है कि तेरे संग्रहसे आज हमको यह बडाई बडोंसे मिलतीहै) ।

अच्छा; अब तीसरी तजवीजपर दे०चं०कुँ०कुछ कहैं, यह कहि बैठगईं, और दे०चं०कुँ० उठ खडीहुई ।

(३ तजवीजपर दे०चं०कुँ० का व्याख्यान)

सखियो ! तीसरी तजवीज यहहै कि "भिखमंगी आदिकके बहाने भले आदिमीकी स्त्रियां चाहै वे नान्हींहों वा सयानी बाहर न जायाकरें" अब इस व्यवहारकी बुराइयोंको मैं क्या कहों, जैसे सूर्यमें प्रकाश, और चन्द्रमें उजास प्रगटहै वैसेही इस व्यवहारमें बुराइयां प्रगटहैं ।

भला यहभी कोई भलमनसाहतहै कि भले आदिमीकी स्त्रियां भीख मांगने बाहर चलीजांय ? राम राम यहतो हम लोगोंके लिये अति हँसीकी बातहै और हँसीकी बाततो हई है. इसी हँसीमें रोनेका भी हेतु प्रगट होजाताहै, युवा युवा स्त्रियां बाहर गईं, दश आदिमियोंसे आंख मिलाया, रातको बिराने गांव पराये घरोंमें टिकीं, यह कलियुग हईहै, किसका मन कैसा, किसकी नीयत कैसी, कौन जानै, जो कहीं किसी पुरुषकी आंख लडगई, तो चलिये उसके रोनेको क्या, उसके सात पुस्तके रोनेका हेतु होगया—और यह न भी हो तो इतनाही केतनी बडी लज्जाकी बातहै, "क्यों साहब यह कहांकी स्त्रियांहैं ? और क्या करने आई हैं ? साहब यह फ़लाने रईसके घरकी

लड़कियां हैं भीख मांगने आई हैं" लीजिये भला यह व्यवहार निंदित नहीं, तो क्या वंदितहै ? एक कविने सच कहाहै।

कवित्त।

धिक् धिक् व्यवहार भीख मांगनको खडी द्वार, एहो नारि काकी बहू बेटियां कहातीहौ। लाज नहीं आती तुम्हें कछु सरमाती नहीं, यारनते हाटनमें आंखैं जो लडातीहौ। हायहाय मिटाती क्यों मातु मरयाद अंक, काहेको कलंक पितु नामको लगातीहौ। मनमें लजाती हुई जाती घर लौट क्यों ना, खाती क्यों न कसम जो भीखमांगे जातीहौ ॥ १ ॥

(बूढी और जाहिल स्त्रियां उचक्का होकर आपुसमें)

एक–ये बाबू हे देखो, ईतो सब भवानियोंकी बातमें लगलिन दखल देवै।

दूसरी–न जानी ये दीदीजी ईसब बिटियै का करवैयाहैं, भला इन सबनके भवानियों माताकै तनिको डर नाहींहैं।

तीसरी "हाथोंसे अंचल पकड, भुइँछुवाय, शिरचढाय," हे जगदम्बा ! रउरे सबसे बडीहईं, हम राउरगोड धरत हईं, यह अज्ञान बालकनपर क्षमाकरब,अभी ई सब राउर महिमा का जानैं।

सेक्रेटरी–सावधान सावधान।

बूढीस्त्रियां–चुपरहो ये बाबू इन सब बिटियनके मारे बोलैके आफतहै।

सखियो ! जो कोई यह शंका करै कि "भवानीकी भीख न मांगेंगी तो भवानी हमपर कोप करैंगी" सो यह मूर्खोंकी शंकाहै, भवानी भीख मांगनेकी आज्ञा कभी नहीं देतीं।

यहतो लुच्चे लोगोंका जैसे धूर्त भंड़ेरिये, वा पाखंडी और नरकी बोझे सोखे हुये उनका कामहै, किसीसे कहदिया "हमनेंतो स्वप्न

देखा है, भवानी मुँह मुँह बोल गई हैं कि सब कोई तीन दिनकी हमारी भीख मांगें " एकने दूसरेसे, और दूसरेने तीसरेसे कहा बात फैलते फैलते फैल जाती है, गांवभर जानगया, अब वे दूसरे गांवपर भीख मांगने गईं, उस गांववालोंने पूँछा "क्या है भाई" आ भवानीका हुकुमहै तीन दिन भीख मांगनेको, चलिये भेडिया-धसानकी रीतिसे गांवकी गांव भीख मांगने उठ खडी होगईं, किसी निर्बुद्धिने यह विचार नहीं किया कि क्या झूँठ क्या सांच है ।

सखियो ! भवानी किसको कहते हैं ? यह भी तो जान लेना चाहिये कि चट भीखही मांगने चल देना चाहिये ।

मुझसे सुनिये, " भव जो संसार तिसकी उत्पत्ति जिससे होय उसको भवानी कहते हैं, ऐसी जो परमात्माकी शक्ति तिसके दो रूप हैं, एक अरूप और अव्याकृत, जैसे पुरुषके शरीरमें बल और अग्निमें जलनशक्ति अरूप होके रहती है उसीतरह सर्व जगत्की कारण रूप शक्ति परमात्मामें रहती है ।

उसके अनन्त नाम हैं, माया, अविद्या, अव्याकृत, प्रकृत आदि इच्छा, परा, परमेष्ठी, सर्वेश्वरी, सर्वाधार, निराकार, निरञ्जनी, कलानिधि, केवलतत्त्व, त्रयगुणेश्वरी, ब्रह्मण्डेश्वरी, सदा अतीत, शब्द, ब्रह्म, आदिक ।

दूसरा रूपवान्, जो अनेक रूप धारण कर संसारमें पूज्य हैं, सतोगुण रूप धारण कर महालक्ष्मी नामसे विष्णुजीके धाम और रजोगुण रूप धारणकर ब्रह्माणी, और महासरस्वती, नामसे ब्रह्माजीके स्थानमें, और तमोगुण रूप धारण कर रुद्राणी और महाकाली नामसे रुद्रजीके निकट विराजमान हैं ।

सखियो ! मैं ऐसी भवानीको अवश्य पूजती हूँ, और सच्ची पूजा उनकी यहहै कि " उनका भय हृदयमें धारण कर कभी हम पापकी ओर मन न चलावैं " ।

सखियो ! ऐसी पूजासे भवानी और भवानीके पति श्रीशङ्कर महाराज सब प्रसन्न होजाते हैं ।

बाकी यह जो कोम्हार मिट्टीका हाथी बनाकर किसी जगह रख देते हैं, और उसको हम भवानी मानती और शीश नवाती हैं, यह हमारी निपट मूर्खता है, हम भवानीको मानती क्या हैं कि उनका उपहास और फजीहती करती हैं, अर्थात् इतनी बड़ी शक्तिस्वरूप भगवतीको मट्टी बराबर मानतीहैं. हाय मूर्खतासे क्या नहीं होजाता एक कविने सच कहा है ।

सवैया ।

यह मूरखता मरिजाय सखी जो बिगारत काम है दोनों जहांके।
मनमें विष बोवत याही सखी, यही खोवत है हित पीरो जवांके ।
चन्द्रकला नहिं सूझ पडे कछु, धर्म अधर्म है क्या निसवांके ।
मूरखताईहिते सजनी नहिं होत हैं कामके यांके न वांके ॥ १ ॥

सखियो ! अब मैं अपनी संक्षिप्त वार्ताको समाप्त करतीहूं और कहती हूँ, कि हम स्त्रियां इस बातका जराभी शङ्का न करैं कि हम भवानीकी भीख न मांगैंगी तो भवानी हमपर कोप करैंगी ॥

मैं सच कहती हूँ कि यदि हम भले आदमीकी स्त्रियां, अपने घरमें रहके अपना धर्म निबाहैंगी तो भवानी हमसे ऐसी प्रसन्न होंगी कि साक्षात् हमारे दाहिने वायें खड़ी रहैंगी, और हमारे सर्व संकट निवारण करती रहैंगी ॥

सखियो ! हम सब ही देवियां और भवानी हैं, जो हममें सत्त हो, शील हो, धीर्य हो, और सन्तोष हो, नहीं तो डाइनकी नानी तो हुई हैं, यह कहि बैठगई और दे०स०कुं०उठ खडी हुई ।

---

१ दुष्ट । २ की ।

(दे०स०कुँ०) सर्दारिनो ! चौथी तजवीज यह है, "दश वर्षसे अधिक उमरकी लड़कियां अपनी माताका संग त्याग कर किसी दूसरी जगह न रहैं।

दे०चं०कुँ०का व्याख्यान अति उत्तम होता है इस लिये मैं चाहतीहूँ कि इस तजवीजपर भी इन्हींका व्याख्यान हो, यह कहि बैठ गईं और दे० चं० कुँ० बडे हर्षसे उठ खडी हुईं।

(चौथी तजवीजपर दे० चं० कुँ०का व्याख्यान)

सखियो ! जिस अभिप्रायसे यह चौथी तजवीज पास होनेके लिये पेश कीगई है, उस अभिप्रायको अति संक्षिप्त रीतिसे प्रगट करनेकी आज्ञा मांगती हूँ।

यह तो आप लोग जानतही हैं, कि यह कलि महाराजका राज्य है, जिसके काम, क्रोध, लोभ, मोह आदिक सेना हैं, इन महाराज कलिका यह खास हुक्म है कि किसीके तनमें न धर्म रहै न मनमें धीर्य, जैसे वधिक शिकारके लिये घातमें लगा रहता है वैसेही महाराज कलिके अनुचर काम क्रोधादिक घातमें लगे रहते हैं, तनिक अवसर पाया कि जीवको वध किया।

आप लोग कहैंगी कि "वध करना तो कहते हैं मार डालने को, सो काम क्रोध आदिक तो किसीको मार नहीं डालते," सो यद्दि आप लोगोंका कहना सत्य है तथापि मैं कहती हूँ कि वध करना दो प्रकारका है, एक तो यह कि जानसे मारडालना, दूसरे ऐसा अपक्रम कराना, जिससे संसारमें बदनामी और परलोकमें नरक प्राप्त हो, अच्छे लोग जानसे मरजानेको तो अच्छा कहतेहैं पर जीतेहुए अयश और बदनामी रूपी वधको महावध समझतेहैं।

शास्त्रमें लिखा है, " मृत्युश्चेकोवा ऽपयशः स्वकीयम्" अर्थ-अच्छे लोग अयश और बदनामीको मृत्यु समझते हैं " किसी कविने कहा है।

सवैया।

गिरिते गिरिके मरि जाय सखी, विष खाय सखी मरनो भलहै॥
जरिजाय सखी बरु पावकमें, जलडूबि मरै तउ उज्जल है॥
कहै चन्द्रकला है भलेको भला, मरै काटि गला जो अशीतल है।
भल है करनो वह काम नहीं, बदनामी सखी जेहिको फल है॥ १॥

बुद्धिमती सखियां अपने मनमें यह अवश्य कहती होंगी कि तजवीज क्या है और यह क्या कहती चली जाती हैं, पर सखियो जरा भी प्रसंगसे अलग मेरा वचन नहीं है, मेरा तात्पर्य यह है कि जब बाउर उद्यम अर्थात् वह कर्म जिससे बदनामी हो ऐसा बुराहै जिसको अच्छे लोग मृत्युसे भी बुरा कहते हैं, तो हमको अवश्य वह बातैं वह घातैं शोचना चाहिये, जिससे हम बदनामी-जनक कर्मोंसे बची रहैं।

यह तो प्रगट है कि, लड़कियां जेतना मां बापका अदब और डर मानती हैं, वोतना दूसरोंका नहीं, और सन्तानकी भलाईका खयाल जेतना मां बापको रहता है उतना दूसरेको नहीं, फिर यह बहुत उचित और योग्य है कि लड़कियां अपने मां बापहीके संग रहैं, उनका संग त्यागिकर कदापि दूसरी जगह न रहैं।

अबकी जाहिल और अबूझ स्त्रियोंका यह दस्तूरहै कि अपनी लड़कियोंको नानिहालमें, फूफूके पास, वा बहिनके घर अकेली छोड़ देती हैं, और यह नहीं जानती कि इनका अकेले रहना हमारे वास्ते क्या फल प्रगट करैगा।

नानिहालमें रहीं, फूफूके घर रहीं मालूम नहीं कि उस गांवमें कैसे लोग हैं उस घरमें कैसे लोगोंकी आमदरफ्त (आवाजाही)

रहतीहै, फिर दैव न करै कि चाहै वह छोकडी बारहै वर्षकी हुई तो क्या ? पर जरा सूरत शकलकी अच्छीहो, और उसपर किसी ऐसे पुरुषकी आँख गडिजाय, जिसको अपने मुखमें कालिख लगाते, वा, नरक मार्गमें पांव उठाते कुछ देर नहीं लगती, तो फिर मैं कहतीहूं कि हरिके हाथ निवाह अर्थात् उस बेचारी छोकडीकी रक्षा नारायणहीका चक्र सुदर्शन करै तो होय, नहीं तो और कोई आशा इस बातकी मैं नहीं रखती कि उसका सत्त रहजाय, परमेश्वर ऐसे पुरुषोंका जिनको परायेकी इज्जत बिगाडते भय नहीं लगती सत्यानाश करै।

सखियो ! यह जमाना ऐसा जरने लायकहै कि ममेरा भाई हुवा तो क्या ? और फुफेरा भाई हुआ तौ क्या ? किसीका भी विश्वास करना योग्य नहींहै, और सच तो यहहै, कि यदि मैं सगेभाईका विश्वास नहीं करती, तो औरोंका विश्वास करनेको मैं कैसे कहि सकतीहूँ।

और यदि आपलोग कहैं कि कहीं ऐसा हुवा वा होताहै तो मैं कहतीहूँ कि घरतो नहीं पर कोई गांव जहां भारी वसगित होगी ऐसा न होगा जहां यह व्यवहार हुवा, होता न होगा।

और यदि आपलोग कहैं कि तुझको किसी गांव घरकी क्या खबरहै ? क्या तू वाकियानिगार (समाचारलेखक) है, तो मैं कहतीहूं कि जैसे दुरबीन आंखोंमें लगानेसे बहुत दूरतककी चीज देखाई देतीहै उसीतरह जिनके चित्तका आदर्श (दर्पण) शुद्धहै उनको सारे संसारका व्यवहार उसमें देख पडताहै, एक मसलहै कि "खुदाको आंखोंसे नहीं देखा पर अक्कसे पहिचानतेहैं"।

सखियो अब मैं अपने अति संक्षिप्त व्याख्यानपर संतोष करतीहूँ और अधिक कहनेसे आपलोगोंको शिरदर्दकी तकलीफ न देकर विनय करतीहूँ कि यह तजवीज अवश्य पास होने योग्यहै।

यह कहि बैठगईं और नियत समय व्यतीत होनेसे सभा समाप्त हुई, और सब स्त्रियां हर्षितमन अपने २ घरको सिधारीं।

(पांचवें जलसेकी कार्रवाई)

२ बजेका समयहै, स्त्रियां सभाके कमरेमें जमाहैं।

दे० चं० कुँ० और दे० बु० कुँ० आदिक पान इलायची बांट रही हैं।

दे० चं० कुँ० ने प्रार्थना किया।

तब दे० स० कुँ० तजवीज पेश करने उठीं।

(दे० स० कुँ) सखियो ! आज हम लोगोंकी सभाका यह पांचवां जलसाहै, और परमेश्वरकी कृपासे पिछली सभावोंमें बहुत अच्छी तरहसे कार्रवाई हुई है, इसका बहुत बहुत धन्यवाद श्रीजगदीश्वर महाराजको देना चाहिये।

आजके जलसेमें चार तजवीजोंको मैं पेश करना चाहतीहूँ और सबपर दे० चं० कुँ० का व्याख्यान होगा, क्योंकि इनका व्याख्यान अतिविचित्र और श्रवण वो मनको अतिसुखदायक होताहै।

१–बालकोंको भूषण पहनानेका दस्तूर बंद कियाजाय।

२–स्त्रियां जो बाहर भीतर नंगे पांव आती जातीहैं यह दस्तूर भी बन्द कियाजाय, और यह सभा आज्ञा देतीहै कि स्त्रियां जूता वा खडाऊं समय अनुसार पहिना करैं।

३–दशवर्षसे अधिक उमरका नौकर घरमें न आवै जाय।

४–यह सभा आज्ञा देतीहै कि स्त्रियां पांयतावा गल्बन्द कशीदा काढसे कुछ कमानेका ढंग जारी करैं।

इन तजवीजोंको पेश करके दे० स० कुँ० बैठगईं और दे० चं० कुँ० उठीं।

पहिली तजवीजपर दे० चं० कुँ० का व्याख्यान।

(दे०चं०कुँ०) मैं अतिलज्जितहूँ कि मुझ ऐसे अबोध और अबुधको श्रीअम्माजी इतनी बडाई देतीहैं, इसका एवज सिवाय इसके कि उनके पाँवोंको सच्चे मनसे प्रणामकरों और क्या करसकतीहूँ, यह नई नहीं किंतु पुरानी रीतिहै कि बडे लोग छोटोंको बडाई देते आतेहैं, और यह बडाई छोटोंकी नहींहै, किंतु बडोंकीही बडाई इससे सूचित होतीहै।

सखियो! "लडकोंको जेवर पहिनाना" मानो उन्हें मौतके मुँहमें डालनाहै, इससें अधिक कहनेका क्या प्रयोजनहै, इसी गांवहीमें आपलोग देख चुकीहैं कि बाबू कौलवानसिंहका लडका एक, मुन्शी सुखरामसिंहका लडका दो, लाला मोतीराम अगरवालकी लडकी तीन, सैयदजुलफिकार अलीकी लडकी चार, हाय! हाय!! इन विचारे नन्हें बच्चोंका इसी जेवरहीकी बदौलत प्राणगया।

सचमुच हमलोग अति मूर्ख होतीहैं जो बालकोंको उनकी शोभा निमित्त भूषण पहनातीहैं, हम यह नहीं विचार करतीं कि यह जेवर बालककी शोभा बढावैगा वा उसके प्राणका घात करैगा और यहभी नहीं शोचतीं कि भूषण आदिकसे वास्तवमें बालकोंकी शोभा बढतीहै, वा विद्या बुद्धि गुण ढंगसे शोभा होतीहै।

हाय हमारी मूर्खता, कि पुरुष कहतेभीहैं कि लडकोंको गहना मति पहिनावो, तो हमलोग कहतीहैं "लडके नाहीं पहिरिहैं तो कारौरे पहिरब, केकर लडका नाहीं पहिरले बाय, भला इस साइत जो लडिका कानमें बाला, गलेमें माला, हाथमें गुडहरा, और पांवमें कडा नाहीं पहिनी तो का बूढन खातिर ई कुलिहै"।

लीजिये साहेब जिन पुरुषोंका वचन टालना हमारे लिये पाप का हेतुहै, उन पुरुषोंका वचन टालके पापभी कमाना, और हाय!

यह कहि बैठगईं और नियत समय व्यतीत होनेसे सभा समाप्त हुई, और सब स्त्रियां हर्षितमन अपने २ घरको सिधारीं ।

(पांचवें जलसेकी कार्रवाई)

२ बजेका समयहै, स्त्रियां सभाके कमरेमें जमाहैं ।

दे० चं० कुँ० और दे० बु० कुँ० आदिक पान इलायची बांट रही हैं ।

दे० चं० कुँ० ने प्रार्थना किया ।

तब दे० स० कुँ० तजवीज पेश करने उठीं ।

(दे० स० कुँ) सखियो ! आज हम लोगोंकी सभाका यह पांचवां जलसाहै, और परमेश्वरकी कृपासे पिछली सभावोंमें बहुत अच्छी तरहसे कार्रवाई हुई है, इसका बहुत बहुत धन्यवाद श्रीजगदीश्वर महाराजको देना चाहिये ।

आजके जलसेमें चार तजवीजोंको मैं पेश करना चाहतीहूँ और सबपर दे० चं० कुँ० का व्याख्यान होगा, क्योंकि इनका व्याख्यान अतिविचित्र और श्रवण वो मनको अतिसुखदायक होताहै ।

१–बालकोंको भूषण पहनानेका दस्तूर बंद कियाजाय ।

२–स्त्रियां जो बाहर भीतर नंगे पांव आती जातीहैं यह दस्तूर भी बन्द कियाजाय, और यह सभा आज्ञा देतीहै कि स्त्रियां जूता वा खडाऊं समय अनुसार पहिना करें ।

३–दशवर्षसे अधिक उमरका नौकर घरमें न आवै जाय ।

४–यह सभा आज्ञा देतीहै कि स्त्रियां पांयतावा गलबन्द कशीदा काढसे कुछ कमानेका ढंग जारी करें ।

इन तजवीजोंको पेश करके दे० स० कुँ० बैठगईं और दे० चं० कुँ० उठीं ।

(दूसरी तजवीजपर दे० चं० कुँ०का व्याख्यान).

सखियो ! यह व्यवहारभी हम लोगोंका अवश्य निंदनीयहै, और निंदनीय नहीं तो फुहडपनतो जरूरहै, पुरुषका पलँग अच्छी तरह सजाहुवाहै, बकुलेके परको मात करनेवाला उसपर चादर पडाहुवा है, और आप दिनभरके नंगेपैर घूमते घूमते बाहर भीतर आते जाते कमसे कम पौनेपांच सेर मिट्टी पैरमें लपेटे, गईं धसदे पलँग पर बैठगईं, पैर जो रक्खा तो बिछावनकी दुर्गति होगई।

भला यह कौनसा रस्म, कौनसा दस्तूरहै, कि हम दिनभरमें तीनदफे तो उबटन लगा लगा हाथ मुँह मले चिकना किये हैं, और पैरकी यह हालत कि नौमन मिट्टी लगीहुई है ।

कवित्त ।

नंगे पांव आंगन घर घूम न कुछ बात नहीं, जात पिछवारे जहां टेहुनभर मैलो है । आईं जो वहांसे नवदान पर बैठगईं, डाले पांव कीचडमें देखो यह सैलोहै । तनिक मनिक धोईं धाईं बैठीं फिर पलँग जाय, हायरे बिछावनको दुर्गतितो भैलोहै । पूछो तो चन्द्र-कला भला जरा पुरुषनते ऐसो फुहडपन पसंद क्यों कैलो है ।

सखियो ! अबतो कहीं कहीं इतनाभी है कि, बाहरजानेको जूता, और पैर धोनेको खडाऊं रखतीहैं, नहीं तो आगे तो यही हाल था कि नौमन गलीजमें जानाहुवा तौ नंगेपैर, और चौकेपर जानाहुवा तौ उसी पैरसे चलीगईं, राम राम, न जानैं कैसी तबी-अत उन स्त्रियोंकीथी जो ऐसा चाल पसंद करतीथीं, हम लोगोंका तो ऐसे व्यवहारके खयाल करनेसे जी घिनायजाताहै ।

पर मैं खयाल करतीहूँ कि इसमें निरा स्त्रियोंहीका कसूर नहीं था कुछ मर्दोंकी हिमाकतभी शामिल थी, वे जूता और खडाऊंका

पहिनना बहुत बुरा और रियासतके खिलाफ समझतेथे, यहांतक कि खडाऊं पहिनेहुये स्त्रियोंको पतुरिया कह बैठतेथे।

एक सवैया पुरानी चलावापर कही है।

सवैया।

रे सखी आगेकी रीति मैं क्या कहों मौन रहों लखि या व्यवहारा।
गाज पडो सखी पुरुष नबूझपै सूझ नहीं उन्हैं नीक विकारा॥
ना पहिनो पग पानहियां तुम है यह पातुरको व्यवहारा।
चन्द्रकला सखी देखो भला यह कौनसी बूझहै कौन विचारा॥

एक जगहका मैंने हाल सुना जिससे मुझको सूचित होगया कि आगे पुरुषोंमें बडी हिमाकतथी।

(इतिहास)

एक श्वसुरजी पतोहूको विदा कराये आतेथे, कहीं पालकी उतरी, लौंडीने बबुई साहबकी फरशी माजने और ताजा करनेको निकाला, श्वसुरजीकी दृष्टि पडगई, पूछा यह किसकाहै? लौंडीने कहादिया, कि बबुई साहेबकी फरशीहै, बस चालिये गजब होगया, आपने हुक्मदिया, कि"डोला वापस, हम पतुरिया अपने घर नहीं लिवाजायँगे"।

भला सखियो! यह श्वसुरजीकी हिमाकत नहींथी तो क्याथी? क्या वह स्त्री जो और सबतरहसे अच्छीथी तो केवल फरशी रखने

हां, हमकोभी इसमें इतना खयाल रखना चाहिये कि हम बडों के सामने मारे शेखीके हरवक्त खटर २ न लगायेरहैं, मौकेसे, लेहाजसे पहिनैं, जूता तो बाहर जानेभरको रक्खैं, बाकी रहा खडाऊं इसको दतुइन कुल्ला करनेके जून, चौके पर जावो, वा चौकेपरसे उठो पहिनलो, इसके सिवाय और समयभी जो घरमें बहुत बडी बूढियां न हों, वा मरदोंके कानतक आवाज न पहुँचने लायकहो, पहिना करो, कुछ मना नहीं, इति ।

(तीसरी तजवीजपर दे०चं०कुँ०का व्याख्यान)

सखियो ! इस तीसरी तजवीजपरभी मुझको अधिक कहना मंजूर नहीं है, इसको निश्चय करके जानलेना चाहिये, कि यह व्यवहारभी एक दिन अवश्य धिक्कारको प्राप्त करताहै ।

पहिले तो यह शरीफोंके घरोंका कायदा नहीं है कि जिस घर में दो चार बहू बेटियां हों, उस घरमें पराये पुरुष आवैं जायँ, दूसरे ऐसे आमदरफ्तसे बहुत जगह अनर्थ प्रगट होजाते हैं ।

देहातोंमें यह हाल देखाहै, कि गांवके अहार कहार नौकर चाकर बेधडक बेभडक बिला रोकटोक घरमें चलेआतेहैं, कहनेको तो वे आते हैं घरकी बूढी सरदारिनोके पास, पर उसी जगह बहू बेटियांभी तो बैठीहैं, क्या वे बूढियोंको देखैंगे तो जवानियोंको छोडदेंगे ।

सखियो ! मैं सच कहतीहूं कि स्त्री पुरुषका भटभेर बुरा होताहै. जिसको एक बारदेखा दो बार देखा जो कहीं दोनोंकी ऐसाही देखादेखी लगगई तो बिना अनर्थ हुये रहिजाय, तो मुझे बांध मारिये ।

सखियो!सबसे सुंदर यहहै कि बाहर काम करनेको मर्द, और भीतर काम करनेको औरत नौकररहैं,क्या जरूरतहै कि मर्द नौकर घरमें आवैंजांय, ताते यह तजवीज अवश्य पास होने योग्यहै ।

पहिनना बहुत बुरा और रियासतके खिलाफ समझतेथे, यहांतक कि खडाऊं पहिनेहुये स्त्रियोंको पतुरिया कह बैठतेथे।

एक सवैया पुरानी चलावापर कही है।

सवया।

रे सखी आगेकी रीति मैं क्या कहों मौन रहों लखि या व्यवहारा।
गाज पडो सखी पुरुष नबूझपै सूझ नहीं उन्हैं नीक विकारा॥
ना पहिनो पग पानहियां तुम है यह पातुरको व्यवहारा।
चन्द्रकला सखी देखो भला यह कौनसी बूझहै कौन विचारा॥

एक जगहका मैंने हाल सुना जिससे मुझको सूचित होगया कि आगे पुरुषोंमें बडी हिमाकतथी।

(इतिहास)

एक श्वसुरजी पतोहूको विदा कराये आतेथे, कहीं पालकी उतरी, लौंडीने बहुई साहबकी फरशी माजने और ताजा करनेको निकाला, श्वसुरजीकी दृष्टि पडगई, पूछा यह किसकाहै? लौंडीने कहदिया, कि बहुई साहेबकी फरशीहै, बस चलिये गजब होगया, आपने हुक्मदिया, कि "डोला वापस, हम पतुरिया अपने घर नहीं लिवाजायँगे"।

भला सखियो! यह श्वसुरजीकी हिमाकत नहींथी तो क्याथी? क्या वह स्त्री जो और सबतरहसे च्छीथी तो केवल फरशी रखने और हुक्का पीनेसे वह पतुरिया होगई।

इसीतरह यह झूँठ नहीं है कि आगेके मर्दलोग औरतोंका जूता वा खडाऊं पहिनना भलमनसाहतके बिलकुल खिलाफ समुझतेथे, पर अब मुझे आशाहै कि शिक्षित पुरुष इस बातको नापसंद न करेंगे।

हां, हमकोभी इसमें इतना खयाल रखना चाहिये कि हम बडों के सामने मारे शेखीके हरवक्त खटर २ न लगायेरहें, मौकेसे, लेहाजसे पहिनें, जूता तो बाहर जानेभरको रक्खें, बाकी रहा खडाऊं इसको दतुइन कुल्ला करनेके जून, चौके पर जावो, वा चौकेपरसे उठो पहिनलो, इसके सिवाय और समयभी जो घरमें बहुत बडी बूढियां न हों, वा मरदोंके कानतक आवाज न पहुँचने लायकहो, पहिना करो, कुछ मना नहीं, इति ।

(तीसरी तजवीजपर दे०चं०कुँ०का व्याख्यान)

सखियो ! इस तीसरी तजवीजपरभी मुझको अधिक कहना मंजूर नहीं है, इसको निश्चय करके जानलेना चाहिये, कि यह व्यवहारभी एक दिन अवश्य धिक्कारको प्राप्त करताहै ।

पहिले तो यह शरीफोंके घरोंका कायदा नहीं है कि जिस घर में दो चार बहू बेटियां हों, उस घरमें पराये पुरुष आवें जायँ, दूसरे ऐसे आमदरफ्तसे बहुत जगह अनर्थ प्रगट होजाते हैं ।

देहातोंमें यह हाल देखाहै, कि गांवके अहार कहार नौकर चाकर बेधडक बेमडक बिला रोकटोक घरमें चलेआतेहैं, कहनेको तो वे आते हैं घरकी बूढी सरदारिनोके पास, पर उसी जगह बहू बेटियांभी तो बैठीहैं, क्या वे बूढियोंको देखैंगे तो जवानियोंको छोडदेंगे ।

सखियो ! मैं सच कहतीहूं कि स्त्री पुरुषका भटभेर बुरा होताहै. जिसको एक बारदेखा दो बार देखा जो कहीं दोनोंकी ऐसाही देखादेखी लगगई तो बिना अनर्थ हुये रहिजाय, तो मुझे बांध मारिये ।

सखियो!सबसे सुंदर यहहै कि बाहर काम करनेको मर्द, और भीतर काम करनेको औरत नौकररहैं,क्या जरूरतहै कि मर्द नौकर घरमें आवैंजांय, ताते यह तजवीज अवश्य पास होने योग्यहै ।

सखियो ! अब व्याख्यान तो मैं खत्म करचुकी, पर यह अफसोस रहाजाताहै कि इस व्याख्यानमें कोई दोहा कवित्त नहीं आया अच्छा क्यौं अफसोस करती जावो, एक तो अवश्य सुन लीजिये।

(कवित्त)

पुरुष भटभेर अलि अतिही बुरो जानो, मानो सखी,याको फुरो वीज विष बोनोहै। सोनोप्रयंकहै कलंकके अवश्य आली अंकमें मलामत लहि पतिको विगोनोहै।चंद्रकला ऐसे व्यवहार अति ख्वार करत, बिगडत इहलोक परलोक सखी दोनोंहै । रोनो औ धोनो है नाम जगखोनोहै, याते सखी क्याक्या न एक दिन होनोहै ।

(दे०स०कुं०) सखियो ! दे०चं०कुं०का व्याख्यान अति सराहने और आदर देने योग्य होताहै, जैसे तीन तजवीजोंपर उनका व्याख्यान हुवाहै वैसही मैं चाहतीहूं कि चौथी तजवीजपरभी वह कुछ कहैं, यह कहि बैठगई, और दे०चं०कुँ०तुरत उठ खडी होगई।

(चौथी तजवीजपर दे०चं०कुँ०का व्याख्यान)

सखियो । यह चौथी तजवीज कि (स्त्रियां पायताबा गुलूबन्द कशीदा काढसे कमानेका दस्तूर जारीकरैं) मेरी जानमें यद्यपि सब तजवीजोंसे उत्तम और आवश्यक है तथापि मुझे तुरत यह खयाल होताहै कि उस जमानेके आदिमी, अर्थात् जो वर्तमान देशकालका हाल नहीं जानते, वे इस बातके सुनतेही भडक उठैंगे कि (ऐं, औरतोंका कमाना) इसको वे गालीसे कम न समझेंगे, पर बुद्धिमान जन, और देशकालके अनुसार व्यवहार पहिचाननेवाले पुरुष कदापि इस तजवीजको नापसंद न करैंगे ।

सखियो । मैं पूछतीहूँ कि (कुछ कमाना) क्या स्त्री क्या पुरुष भला,यहभी कि [illegible] , निंदित व्यवहारसे कमाना

अवश्य वर्जितहै, सो स्त्री पुरुष दोनोंके लियेहै, न तो पुरुषहीको आज्ञाहै कि वे चोरी चमारी ठगी वा वटपारी करके कमायँ, न स्त्रियोंकोही ऐसे प्रकारसे कमानेका आर्डर[1] है।

सखियो! नीतिमें लिखाहै, कि "अपने खाने पीने और मामूली प्रयोजन निवृत्ति करनेको तुम अपने हाथोंसे कमावो, दूसरोंका एहसान मतलो, इस विषयमें मैं नान्हजातकी स्त्रियोंको सराहतीहूं कि वे अपने पुरुषतकका भी एहसान लिया नहीं चाहतीं, किंतु बहुत ऐसी जांगरवाली स्त्रियां होतीहैं कि अपने बलबूत और करतूतसे अपने कुटुम्बभरको पालतीहैं और एक हम भले आदिमीकी स्त्रियां हैं कि मानो हाथ पांव तोडके एक चारदीवारी के अन्दर बैठालदी गई हैं।

हम ऐसी नहीं कि एक पैसेकाभी अपना खर्च अपने कर्तव्यसे चलावैं, किंतु एक अद्धीके लियेभी हमको मां बाप वा, पुरुष पुत्र काही हाथ ताकना पडताहै।

मेरी जानमें हम लोगोंकी दशा उन कैदियोंकी दशासे मिलती हुईहै कि जो शासत घरमें पडेहुयेहैं, और जिनको बाहर निकलनेकाभी हुक्म नहीं है।

सखियो! इस कहनेसे मेरा यह तात्पर्य न समझना चाहिये कि हमलोगोंका बाहर घूमनाभी उचितहै, नहीं हम लोगोंका घरमें रहनाही शोभाहै, पर मैं यह कहतीहूँ, कि घरमें रहके हम लोगोंको कुछ कामभी तो करना चाहिये।

जैसे पुरुषोंके कमानेके नौकरी तिजारत आदिक वसीलेहैं, इसी प्रकार स्त्रियोंके कमानेका वसीला है तो एकही, पर ऐसा उत्तम और उमदा वसीला है,कि यदि हम पूरा २ गुण उसमें प्राप्त करैं, तो

१ हुकुम।

सखियो ! अब व्याख्यान तो मैं खत्म करचुकी, पर यह अफ़सोस रहाजाताहै कि इस व्याख्यानमें कोई दोहा कवित्त नहीं आया अच्छा क्यौं अफसोस करती जावो, एक तो अवश्य सुन लीजिये।

(कवित्त)

पुरुष भटभेर अलि अतिही बुरो जानो, मानो सखी,याको फुरो वीज विष बोनोहै। सोनोप्रयंकहै कलंकके अवश्य आली अंकमें मलामत लहि पतिको विगोनोहै।चंद्रकला ऐसे व्यवहार अति ख्वार करत, बिगडत हरलोक परलोक सखी दोनोंहै । रोनो औ धोनो है नाम जगखोनोहै, याते सखी क्याक्या न एक दिन होनोहै ।

(दे०स०कुँ०) सखियो ! दे०चं०कुँ०का व्याख्यान अति सराहने और आदर देने योग्य होताहै, जैसे तीन तजवीजोंपर उनका व्याख्यान हुवाहै वैसही मैं चाहतीहूं कि चौथी तजवीजपरभी वह कुछ कहैं, यह कहि बैठगई, और दे०चं०कुँ०तुरत उठ खडी होगई।

(चौथी तजवीजपर दे०चं०कुँ०का व्याख्यान)

सखियो ! यह चौथी तजवीज कि (स्त्रियां पायताबा गुलूबन्द कशीदा काढसे कमानेका दस्तूर जारीकरैं) मेरी जानमें यद्यपि सब तजवीजोंसे उत्तम और आवश्यक है तथापि मुझे तुरत यह खयाल होताहै कि उस जमानेके आदिमी, अर्थात् जो वर्तमान देशकालका हाल नहीं जानते, वे इस बातके सुनतेही भडक उठैंगे कि (एं, औरतोंका कमाना) इसको वे गालीसे कम न समझैंगे, पर बुद्धिमान जन, और देशकालके अनुसार व्यवहार पहिचाननेवाले पुरुष कदापि इस तजवीजको नापसंद न करैंगे ।

सखियो । मैं पूछतीहूँ कि (कुछ कमाना) क्या स्त्री क्या पुरुष भला,यहभी किसीको मनाहै ? हां, निंदित व्यवहारसे कमाना

अवश्य वर्जितहै, सो स्त्री पुरुष दोनोंके लियेहै, न तो पुरुषहीको आज्ञाहै कि वे चोरी चमारी ठगी वा वटपारी करके कमायँ, न स्त्रियोंकोही ऐसे प्रकारसे कमानेका आर्डर[1] है।

सखियो! नीतिमें लिखाहै, कि "अपने खाने पीने और मामूली प्रयोजन निवृत्ति करनेको तुम अपने हाथोंसे कमावो, दूसरोंका एहसान मतलो, इस विषयमें मैं नान्हजातकी स्त्रियोंको सराहतीहूं कि वे अपने पुरुषतकका भी एहसान लिया नहीं चाहतीं, किंतु बहुत ऐसी जांगरवाली स्त्रियां होतीहैं कि अपने बलबूत और करतूतसे अपने कुटुम्बभरको पालतीहैं और एक हम भले आदिमीकी स्त्रियां हैं कि मानो हाथ पांव तोडके एक चारदीवारी के अन्दर बैठालदी गई हैं।

हम ऐसी नहीं कि एक पैसेकाभी अपना खर्च अपने कर्तव्यसे चलावें, किंतु एक अद्धीके लियेभी हमको मां बाप वा, पुरुष पुत्र काही हाथ ताकना पडताहै।

मेरी जानमें हम लोगोंकी दशा उन कैदियोंकी दशासे मिलती हुईहै कि जो शासत घरमें पडेहुयेहैं, और जिनको बाहर निकलनेकाभी हुक्म नहीं है।

सखियो! इस कहनेसे मेरा यह तात्पर्य न समझना चाहिये कि हमलोगोंका बाहर घूमनाभी उचितहै, नहीं [illegible] का घरमें रहनाही शोभाहै, पर मैं यह कहतीहूँ, कि [illegible] लोगोंको कुछ कामभी तो करना चाहिये।

जैसे पुरुषोंके कमानेके नौकरी तिजारत आदिक वसीलेहै, इसी प्रकार स्त्रियोंके कमानेका वसीला है तो एकही, पर ऐसा उत्तम और उमदा वसीला है, कि यदि हम पूरा २ गुण उससें प्राप्त करैं, तो

[1] हुकुम।

तवीत

हम सौरुपयारोज कमांय तौ थोडा, और लाख रुपया पैदा करैं तौ कुछ नहीं है।

आप लोग कहती होंगी कि वह कौन बातहै, पर आप सब लोग जानतीहैं कि वह कशीदा काढका गुणहै. यह अमोल वस्तुहै, सुनाहै कि अकबर बादशाह एक हाथ मोरब्या (चौकोर) रूमाल पर ऐसा कशीदा काढतेथे जिसका दाम लाख रुपया होताथा।

फिर उस राजकन्याका वृत्तान्त आप लोग सुनीचुकीहैं कि जिसने इसी कशीदेके बदौलत कईलाख रुपया पैदाकरि राजाकी विभूतिको मात करिदिया था।

खैर, वह कशीदा हम लोगोंको कहां नसीब, पर जेतना इस समय होसकताहै वोतनातो सीखलेना चाहिये, और सखियो! मैं तो कहतीहूं कि जैसा कशीदा हम चाहैं वैसा सीख सकतीहैं, कहो कैसे तो इसतरहपर कि जैसे लडके जो फारसी पढतेहैं वह पहिले काठके तख्तेपर बडी मोटी लेखनीसे लिखना आरंभ करतेहैं, जब वह मोटा अक्षर सुधरिजाताहै, कलम थाम्हनेका बल हाथोंमें आजाताहै तो कई पत्र कागज येकट्ठे करि दफ्ती बनातेहैं और लेखनीभी आगेसे कुछ मिहींकरि लिखने लगतेहैं, जब उसपरभी अक्षर बनने लगा तब कागजपर लिखाये जातेहैं, अब जो लड़का शौकीन हुवा तो लगा अपनी तबियतसे शोचने, कि यह अक्षर ऐसा बनै तो और सुन्दर हो, यह शोचि लगा अपने अक्षरोंको सुन्दर करने, और करते करते ऐसा सुन्दर किया कि छापा झख मारने लगा।

इसी तरह हमलोग सातही वर्षकी अवस्थासे इसको सीखना शुरूकरैं, पहिले मोटेझोंटे कपडोंपर मोटी सूई और तागोंसे बडे बडे डोभोंसे सीना सीखैं, जब बडे डोभोंपर हाथ बेधडक चलने लगै तब बारीक सूई तागेसे छोटा २ डोभ डालें।

इसीतरह खयाल करकर आपही अपने उस गुणको बढाती जाँय, जब अच्छासे अच्छा बखिया करने आजाय, तब कशीदा सीखनेलागो यदि कोई इस फनका उस्ताद मिलजाय तो उससे सीखो नहीं तो अपने उस्ताद तुम आप बनो, इसतरह कि तुम्हारे भाईके लिये कोई टोपी आई उसपर कुछ काढहै, उसको हाथमें लेकर पहिले गौर करो, और सामने रख, अक्कलडाय२ वैसही कढाव काढनेलगो, न एक बेरमें बना फिर बनावो, जबतक न बने न छोडो यह कोई बात नहींहै कि जो बनावै, न बनै और जिसको चाहे वह न मिलै, गोसाँईजीका वचनहै ।

चौपाई–जाकर जेहिपर सत्य सनेहू । सो तेहि मिलै न कछु संदेहू ॥

इसीतरह सीखते सीखते, और अक्क लडाते लडाते तुम ऐसा कशीदा सीख सकतीहो कि अक्बरके कशीदेको मात करदो ।

इसतरह जब सीने और कशीदा काढने आजाय तब टोपियों-पर रूमालोंपर कुरतोंके हाशियां और कंठपर अच्छे२कढाव करके, फिर पायतावा, गुलूबन्द, दस्ताना आदिक अच्छे२ प्रकारके बना कर बेचलो उसी दामसे कुछ सीने पुरनेका सामान मँगायाकरो, कुछ अपने दूसरे कामोंमें खर्च करो, वा जमा करती जाव, जो किसी गाढे जूनमें काम आवे ।

इसीतरह जहांतक तुम मेहनत करो वहांतक कमावो ।

जो स्त्रियां शहरमें हैं उनको तो चीज बिकवाना सहलहै नौकर चाकर वा किसी दरजीके छोकडे के हाथ वा किसी दरजिनके मारफत बेचवाय दिया ।

जहां शहर नहीं है न कोई हाटवाटहै निरा देहातहै, वहां स्त्रियां यह कामकरैं कि चीजें तय्यार कर रखतीजायँ, आखिर नातवात

कोई तो शहरमें होगा, जब अवसर मिला उनके यहां भेजवा दिया उन्होंने बिकवाय दिया ।

और फिर मैं कहतीहूं कि इसका शोच तुम्हैं क्याहै कि कैसे बिकैगा ? तुम बनावोतो सही, बिके बिना थोडाही पडा रहैगा सखियो ! क्या अच्छीबातहो कि हम स्त्रियां दशपांच रुपया महीना इस तौरसे कमाती जाँय एकतो अपनी कमाईका न एक रुपया न दूसरे का सौरुपया. अपने पास अपनी कमाईका दशरुपया रहैगा तो अपना जीभी खुश रहैगा और जूनपर परायेकी चिरौरी करनी न पडैगी, यह तो न होगा कि हमारे पास साड़ी नहीं है तो बारबार बापसे, भाईसे, पतिसे, पुत्रसे, आरजूमिन्नत कररही हैं ।

जो पुरुष तंगहाल(निर्धन) हैं तो चलिये वेभी कहांसे बनवावैं अबचिढ खुझ झंख पटक लाचार मजबूरहो रहिगई ।

यह तो न होगा कि पुरुषकी नौकरी छुटि गई तो खानेका ठेकाना नहीं है ।

सखियो ! मैंने एक स्त्रीका हाल सुनाहै और वह सच है, हमारे नानिहालके निकटही वह गांव कायस्थोंकाहै, उसके पुरुष दशरुपये महीनेके नोकरथे, वह स्त्री कशीदा अच्छा काढतीथी, और १२) रु० महीना कशीदेसे पैदा करतीथी, घरका कुलकाम उसी दश१०) रुपयेसे चलातीथी, और अपनी कुल कमाई संचकर धरे जातीथी ।

दैवसंयोगसे उसके पुरुष नौकरीसे बरखास्त होगये और बहुत उदास हुये कि अब किसतरह गुजारा होगा, उस दिनतक उस स्त्रीने १२००) रुपया जमा कियाथा सब लाके अपने पुरुषके आगे रख दिया और कहा "प्राणनाथ! आप उदास क्यों होते हो, इसी रुपये की जमीन लीजिये खेती कराइये, नौकरीका मुँह मारिये;" फिर हजार रुपयेमें तीस ३०बीघा उमदा खेत रेहन लेलिया, और २००

१००) रुपयासें चारबैल मोल लेकर खेती करानेलगे, और फरागतके साथ उनका गुजर होनेलगा।

सखियो! देखो, जो वह स्त्री इसतरह कुछ रुपया न जमा किये होती, तो नौकरी छूटने पीछे कैसे तकलीफसे उनकी जिन्दगी कटती इसलिये मैं अतिहर्षसे इस तजवीजके पास होनेकी आशा करती हूँ, कि स्त्रियां पायताबा, गुलूबन्द, कशीदा काढनेसे कुछ कमानेका दस्तूर जारी करैं, इति।

यह कहि बैठगई तब दे० स० कुं० उठीं।

(दे० स० कुं०) सर्दारिनो! आज प्यारीबेटी दे०चं०कुं० को सब तजवीजोंपर अकेलाही व्याख्यान देना पडा, ताते अधिक श्रम पाया है, और अब सभाके नियत समयकाभी अंत होगया अब सभा समाप्त हो।

यह सुनि सब स्त्रियां हर्षित मन अपने २ घरको गईं।

(स्त्रीसभाका आखिरी जलसा करके दे०चं०कुं०का अपने नैहरको जाना)

दिनको ३ बजके ५ मिनट बीत चुका है, सोनझरिया, लौंडिन द्वारसे आ दे०स०कुं०से कहने लगी "सर्कार दुलहिन साहेबके गांवसे चार आदमी आये हैं, दो कहारहैं जो भार लिये हैं, और एक ब्राह्मण और उनके साथ एक हज्जाम है" वह यह कहतही थी, कि बाबूतेजप्रकाशने आकर एक चिट्ठी दे०स०कुं०को और एक दे०चं०कुं० को दिया, वे ले पढने लगीं।

(चिट्ठी दे० स० कुं० के नाम)

स्वतिश्री सर्वोपमायोग्य श्रीसमधिन महारानीजीको शुभ सेवाभिलाषीका बहुत २ नमस्कार प्रणाम, लघुको आशिर्वाद, यहां आपकी कृपासे सर्वप्रकार कुशल है आपकी कुशल सर्वद श्रीनारायणजीसे चाहा करती हूँ।

समाचार यह है कि बबुवा भानुप्रताप जीवका विवाह मु॰संग्राम सिंहजीव रईस और तालुकेदार पटनेके वहां ठहर गया है, तिलकभी परसों चढगया, अब मि॰फागुन सुदी १२दिन सोमवारको व्याहकी साइत है, ऐसे हर्ष और उत्सवके समयमें मेरी प्यारी बेटी चन्द्रकलाका रहना अतिहर्षका हेतु समझकर आपसे करजोरि विनय करती हूँ कि यदि किसीप्रकार आपको तकलीफ न हो; और आप की पूरी प्रसन्नता हो तो मुझपर कृपा करके दशदिनके लिये चन्द्रक॰को बिदा करदीजिये, फिर जब आप चाहैंगी उसको बुलालेंगी फा॰शु॰ ४ को उसके आनेकी साइत है उससे एकदिन पहिले कहार पालकी उसके लेनेको जायँगे प्रार्थना है कि मेरी विनय कबूल करके मुझे बडाई और हर्ष दीजिये- जि॰ शु॰मि॰फा॰व॰११

(चिट्ठी दे॰ चं॰ कुँ॰ के नाम)

मेरी प्यारी बेटी चन्द्रकला, तुझको तेरी मां बहुत २ आशिर्वाद देती है कि तू सर्वदा सर्वभांति सुखी रहै।

बेटी! जिस दिनसे तू गई, कोई दिन ऐसा नहीं हुवा कि तेरा शीलस्नेह और सेवा स्वभाव समुझकर तेरे विरहसे मैं शोकमग्न न होजाती हूँ, पर यह समझ २ कि संसारकी गति है,और यह सुन २ कि तू वहां अच्छीतरहसे है, और सास आदिक सर्वजन तेरे व्यवहारसे प्रसन्न और तुझपर प्रेम रखते हैं,संतोष करती और धीर्य धरती हूं।

बेटी तैंने मेरा कोख उजाला किया कि जिससे सुनती हूँ तेरा यशही सुनती हूँ, आजतक किसीसे किसी बातकी शिकायत नहीं सुनी। बेटी यही उचितथा जैसा तूने किया, वह बेटी किसकामकी जो ससुरालमें जाके मां बापको किसी प्रकार अपनी शिकायत सुनवावै।

बेटी ! तेरे प्यारे भैया भानुप्रतापका विवाह मुन्शी संग्रामसिंहजी रईस व ताल्लुकदार पटनेकी लडकीसे ठहरा है, इस शादीमें दानदहेजका बडा बखेडा पडा था, बाहर लोगोंने जुटजुटके सीधे सूधे देवतारूप तेरे लालाका चित्त कुछ ऐसा बिगाड दियाथा कि वे दहेज ठीक करनेपर हठ करनेको थे, कारण यह कि जेतना कोई मांगता उतना वे देने लायकभी थे, इसवक्त तीनसौ गांव उनके मुसल्लम हैं, सवालाखके मालगुजार सर्कार हैं, इन्तजाम उनका ऐसा अच्छा है कि एक पैसा किसीका उनपर ऋण नहीं है, बल्कि चौदहलाख उनका बैंक बंगालमें जमा है, जिसका छै आने।) सैकडा सूद मिलता है, जगह जिमींदारीके अलावे कई तरहकी तिजारत उनके वहां होती है, एक गल्लेकी तिजारतमें ग्यारह लाखकी भरती है।

गरजे कि इसवक्त वह हरतरहसे हमसे हैसियतमें सौगुणे अधिक हैं, इन्हीं वजहोंसे लोगोंने दहेज ठहरानेका लालच बढाया था, पर बडे बडे हिकमतसे मैंने यह मामिला तै किया और क्योंकर तै किया वहभी लिखतीहूँ कि इसबातकी आहट पातेही मैंने लोकलसभाके सेक्रेटरीको एक और एक तार प्राविंशल सभाके सेक्रेटरी साहेबको दिया, वे लोग दूसरेही दिन पहुंचिगये और एक जलसा करके तेरे लालासे प्रार्थना किया कि यह शादी बिला दान दहेजके कबूल कीजिये, तेरे लालाने उसवक्त उन लोगोंसे कहा "मैं अभी आकर जवाब देता हूँ" यह कहकर मेरे पास आये, और कहने लगे "न मालूम प्राविंशल सभा और लोकलसभा"के सेक्रेटरीको किसने जनादिया कि वे लोग आज अचानक मेरे यहां पहुँचिगये, और मुझसे कहते हैं "शादी बिला करार दान दहेजके कुबूल कीजिये" इधर बाबा सठियालसिंह व

बाबा हठधर्मलाल और तमाम गांवके बडे बढे लोग यह कहते हैं, कि जरूर करार करालियाजाय सो मैंतो बडे गाढेमें पडा हूँ कि क्या करों? जो इन बडे बूढोंका कहना न मानूं तो न बनै, जो सभाके लोगोंका कहा न करूं तो कैसे न करूं इसी दुविधेमें पडा हूं, सो तुम जैसा कहो वैसा करूं, मैंने कहा "महाराज अभी आपने चन्द्रकलाका विवाह किया है मुन्शी हीरालालजीने इसी दहेज न ठहरानेसे कैसी नेकनामी संसारमें पाई है, कोई अखबार ऐसा नहीं जिसने मुन्शीजीको धन्यवाद न कहा हो, फिर ऐसा अवसर पाकर आप चूकते हैं यही तो संसारमें प्रशंसा और नेकनामीके अवसर हैं, आप देर न कीजिये तुरत जाकर शादी बिला करार दाद कबूल कर लीजिये।

गर्जे कि तेरे लालाने मेरी विनय मानली, और जाके सभामें बिला करारदाद शादी कबूल करलिया।

तिसपर भी तिलकमें उन साहेबने पांच घोडे सजेसजाये, दो हाथी पांचसौ अशर्फियां, और पचीस हजार रुपया भेजदिया था, उसवक्त भी लोगोंको लालच होगया था कि सबचीजें लेली जायँ, पर मैंने सिवाय एकावन रुपया नकद और एक थाल और पांच जोडे कपडोंके और सब चीजोंको वापस करदिया।

बेटी एक शङ्का तुझको जरूरहोगी कि क्या जानै माने कन्याका कुछ हालचाल बूझलिया है वा नहीं, सो बेटी कन्याका हाल चालभी जहांतक होसका बूझ लिया है पूरा २ हाल तो अभी कैसे मालूम होसकता है? पर इतना हाल तो मालूम होगया कि उस शहरमें एक स्त्रीपाठशाला है जिसमें अंग्रेजी, संस्कृत, उर्दू, हिन्दी सब पढायाजाता है उस पाठशालामें वह कन्या शिक्षा पाती है, अंग्रेजीमें वह इन्ट्रेन्स पास करचुकी है, और दूसरी जबान उसकी संस्कृत है, अब सुना है कि अंग्रेजी आगे नहीं पढेगी, पर संस्कृतमें वह कुछ और पास करनेका इरादा रखती है।

अब आजसे पन्द्रह दिन कुल व्याहको बाकी हैं, घर और गाँवके तमाम लोग रोज यही कहिरहेहैं कि चन्द्रकलाको जल्द बुलवाइये सो तेरी विदाई निमित्त मैंने श्रीदेवी समधिनजीको और तेरे लालाने श्रीमर्यादसागर तेरे ससुरजीको विनयपत्री लिखीहै जैसी उनकी मर्जी हो उसी मुताबिक तूभी अंगीकार करना किसी बातमें हठ मति करना, इति ।

देवी सत्वती कुँ० चन्द्रकलाकी विदाईका समाचार सुनतेही ऐसी व्याकुल होगईं कि अचेत होगईं चं०कला समझगई कि मेरे विरहके भयसे व्याकुल होरही हैं, जब जरा होश हुवा तो चन्द्रकला कहने लगी ।

अम्माजी! आप ऐसी शोकमग्न क्यों होती हैं मैं आपके चरणों से जुदा थोडेही होसकतीहूँ मुझको इससे बढकर खुशी और दूसरा लाभ क्याहै कि आप मुझपर ऐसा प्रेम रखती और मुझसे प्रसन्न रहतीहैं, मैंतो इसीको दुर्लभ, और इसीसे अपना हित समझतीहूं और मुझे आपके चरणोंकी शपथ जबतक आप हर्षितमन मुझसे यह न कहदेंगी कि बेटी जा दशदिनको होआ तबतक मैं थोडेही जासकतीहूं मेरेलिये इससे बढकर कोई धर्म वा हर्षका समय दूसरा नहींहै, कि आपके चरणोंकी सेवा करती रहूं यह तो केवल आपकी मर्जी और कृपापरहै कि आप हुकुम देंगी तो चारदिनको चलीजाऊंगी और मैंतो जाऊंगीभी तोभी मेरा मन आपहीके चरणोंमें रहैगा और व्याह पीछे जब आप चाहैंगी मुझे बुलालेंगी मैं वहां बिला प्रयोजन भला कब एक दिनभी रहसकतीहूं ?

चन्द्रकलाकी यह प्यारी २ बातें सुनकर दे०स०कुं० को और भी मोह उत्पन्न हुवा और थोडी देरतक फिरभी आंसू बहातीरहीं, फिर चन्द्रकलाको गोदमें लेकर कहनेलगीं बेटी तेरे भैयाका विवाह

मुबारक, उसमें तेरा जाना और तेरे दीदारसे माता पितादिक सकल परिवारको हरषाना मुबारक, मैं भला ऐसे समयमें तुझे रोक थोडी सकतीहूं, बाकी रहा मुझे रंज सो यह तो तू जानतीही है कि इस मेरे शरीरकी तूही प्राणहै, तेरा विदा होना मानों इस शरीरसे प्राणका निकलनाहै, पर क्या करूँ संसार व्यवहारसे लाचारहूँ नहीं तो एक छनभी तुझको आंखोंके वोट नहीं करसकती, खैर जा मैं हर्षसे आज्ञा देतीहूँ, पर यह कहेदेतीहूं कि मुझे भूल न जाना, और जल्द मेरी खबरलेना, यह कह फिर आंखोंमें आंसू भरलाई।

थोडी देर पीछे चन्द्रकलासे कहनेलगीं "बेटी! मैं बोलती जातीहूं तू मेरी तरफसे अपनी अम्माको चिट्ठीका जवाब लिखदे"

चिट्ठीका जवाब ।

स्वस्तिश्री प्यारी सखी श्रीसमधिनजीको अतिप्रेमसे नमस्कार करतीहूं, हेदेवि! मेरे घरकी कुशलरूप तो आपकी प्यारी बेटी, और मेरी परम प्यारी बहू देवीचन्द्रकला कुं०है, आपका कुशल सर्वदा चाहतीहूँ ।

आपकी प्रेमपातीने मेरे हृदयमें दो भाव उत्पन्न किया, एक अतिहर्ष, और दूसरा अति शोक, बबुवा भानुप्रतापजीके व्याहका समाचार पायके अति हर्ष हुवा परमेश्वर इस शुभकार्यको निर्विघ्न समाप्त करके वर कन्या सलामत रक्खै, आपने जो चन्द्रकलाके आनेको लिखा, इसने मुझको अतिशोक उत्पन्न किया, हे देवि! मैं सचकहतीहूं कि आपका कोख धन्यहै जहांसे चन्द्रकला ऐसी कन्या प्रगट भईहै जिसने अपनी सेवा और सुशीलतासे मुझको और सारे सम्बन्धियोंको क्या इस गांवकी तमाम स्त्रियोंको वश करलिया ,कौन स्त्री यहांकीहै जिसको चन्द्रकला प्राणके समान प्यारीनहीं है मैं किसीतरह नहीं चाहती कि एक छणभी वह मेरी आंखोंसे जुदाहो, पर आपकी आज्ञा और मर्जी मेरे शिर आंखोंपर, इसलिये नियत

दिनपर वह जायगी, पर अधीर होकर मैं आपसे विनय करतीहूँ कि व्याह बाद जल्द चन्द्रकलाके मुखचन्द्रके दर्शनसे मेरे नयन चकोरको तृप्त कीजियेगा जि०शु० ।

(चन्द्रकलाकी चिट्ठी मांके नाम)

मेरी प्यारी अम्मा ! आपकी प्यारी बेटी चन्द्रकला आपके पावन चरणोंको वारम्वार नमस्कार करतीहै, आजके ऐसा मेरे हर्षका दिन दूसरा कौन होगा ? कि, आपकी प्रेमपाती आंखोंसे लगाती और उसे बांचि २ परमसुख पातीहूं ।

अम्मा ! कोई समय ऐसा नहीं होता कि आपके अमितप्यार और अनंत उपकारका चेत मेरे चित्तसे विसरताहो ।

आपकी गोदमें मेरा मचलना, आपका प्यार करके मेरा मुख चूमना, मीठी मीठी बातें करके मेरा जी खुश करना, मेरे हितके निमित्त अच्छी २ बातोंका सिखलाना पढाना बुझाना समझाना इत्यादिक जब आपके व्यवहार याद आजातेहैं तो यही कहती हूं, कि या भगवान, संसारमें कौन ऐसाहै ? कि जो मां बापके प्यार और उपकारको भूल सकता, वा उसका प्रतिउपकार कर सकताहै ।

यह आपहीका छोहहै कि यहां गांवकी छोटी बडी सर्वस्त्रियां मुझको हितकरके जानती और प्राणसमान मानतीहैं, और श्रीयुत अम्माजीका प्यार और दुलार और उनकी कृपा और दया तो मुझपर ऐसी रहतीहै कि, एक मुखसे क्या कोटिमुखसेभी उसका वर्णन नहीं होसकता ।

मैं सच कहतीहूं कि मेरे सास जैसी देवता और श्रेष्ठ स्त्री इस संसार में कम होंगी, उसके मातृप्यारसे मुझको यह नहीं मालूम होता कि मैं इनकी कन्या और यह मेरी माता नहीं हैं, सच तो यह है कि

जैसे अपने विद्या बुद्धि और गुण ढंगसे आप सरीखी आपही हैं वैसेही इनके समानभी यही हैं, मुझको इसबातका निश्चय नहींहै कि आप और इन दोनों अम्मावों समान कोई श्रेष्ठ स्त्री इस संसारमें होगी ।

आपकी चिट्ठी जब अम्माजीने पढा, और मेरी विदाईका नाम सुना, उससमय ऐसी व्याकुल होगईं कि वह दशा मुझसे कही नहीं जाती, बहुत समुझातेबुझाते किसी तरह धीरज धरीं, पर हां जैदिन मैं इनसे जुदा रहूंगी तैदिन वे खुश नहीं रहसकती हैं, इनके शरीरकी सचमुच मैंही प्राणहूं ।

अम्मा ! बहुत अच्छा हुवा जो भइयाका विवाह ठीक होगया, परमेश्वर जल्द वह दिन देखलावे ।

लालासे शीशनवाय, करजोरि मेरा चरणोंको प्रणाम और भइयासे मेरा बहुत २ प्यार कह दीजियेगा ।

अब मैं बहुत क्या लिखूं अबतो भगवान चाहैंगे, तो आजके आठवें दिन मैं अपनेको आपकी गोदमें मचलती हुई देख पड़ोंगी और अम्मा मैं भइयाके विवाहमें बहुतसा रुपया नेगका आपसे और भइयासे लोंगी० जि० मु० ।

चिट्ठीदेकर आदमी विदा किया ।

(चं०कुँ०) अम्माजी ! सोम्वारको सभाकाभी दिनहै. और इसी दिन मेरी विदाईभीहै, सो सभा बन्द होजाय, यहतो मुझे मंजूर नहीं परन्तु आप आज्ञादें तो एक नोटिस मैं भेजिदों और अपने विदाईके मिससे लिखदों कि सभाका समय ६ बजेसे ८ बजेदिनतक है ।

(दे०स०कुँ०) बेटी जो तेरी मर्जीहो सो कर मैं आज्ञा देतीहूं।

चन्द्रकलाने नोटिस लिखकर सबके पास भेजदिया ।

उस नोटिसके जाने और चन्द्रकलाकी बिदाईका समाचार पानेसे गाँवकी स्त्रियोंका यह हाल होगया कि मानो सबके लड-कीका बिदा ठहर गयाहै,हमजोली स्त्रियां तो चन्द्रकलाके वियो-गके भयसे मानों विक्षित होजायँ ऐसी दशा होगई ।

अब चन्द्रकलाके पास दिन रात गांवकी स्त्रियोंका हजूमरहने लगा, दशजातीं, तो बीस आजातीथीं ।

कोई कहती, सखी ! तुमतो जाती हो पर हम लोगोंका मनभी हर लिये जातीहो ।

कोई कहती, सखी ! आपकी विदाई कौन ऐसी स्त्री इसगांवमें है जिसको नहीं अखरतीहै ।

कोई कहती, सखी ! हमलोगोंको भूल न जाना ।

कोई कहती, सखी ! जबतक फिर आपसे न मिलैंगी तबतक हम लोगोंको चैन न पडैगा ।

इसीतरह अनेक भांतिसे स्त्रियां चन्द्रकलाका प्रेमजनाती और उसके वियोगका पश्चात्ताप करतीथीं ।

अब आज चन्द्रकलाकी बिदा और सभाका दिनहै, भोर होतेही स्त्रियोंसे चन्द्रकलाका घर भरगया, चन्द्रकलाने तुरत सभाकी कार्रवाई शुरू करदिया ।

छठी सभाकी कार्रवाई ।

१ सभासदस्त्रियोंकी तादाद १९६ ।

२ देवीचन्द्रकला कुँ०ने प्रार्थनाकी ।

३ दे०स०कुँ०ने तजवीज पेशकी ।

(दे०सत्वतीकुँ०) सखियो ! आज इस स्त्रीसभाका छठां जल-साहै, और यहभी आप लोगोंपर विदितहै कि आजही प्यारी बहू चन्द्रकलाकी बिदाभी है जिससे मेरा होश ठेकाने नहीं है ।

मैं आज केवल एकही तजवीज पेश करूंगी जिसपर बुद्धिमान बहू चन्द्रकलाका व्याख्यान् होगा ।

(तजवीज)

"स्त्रियां पुरुषोंकी कमाईका आदर करैं" ।

यह कहि बैठगईं, और दे०चं०कुँ० उठखडी हुईं ।

(व्याख्यान दे० चं०कुँ०)

सखियो ! यह तजवीज कि "स्त्रियां पुरुषोंकी कमाईका आदर करैं अति उत्तमोत्तम और आवश्यक तजवीजहै, इसी हम लोगोंके कदर न करनेसे हम लोगोंके पुरुष सदा दुखारी और भिखारी बने रहते हैं ।

वे कमाते २ थकि जातेहैं पर कोई व्योंत नहीं बैठता, वे दिन रात इन्तजामही शोचा करतेहैं, पर कुछ नहीं चलता, क्या कारण?यही कारणहै कि हमलोग पुरुषोंकी कमाईकी कुछ कदर नहीं करतीं।

मर्दोंने दश दिनका जिन्स जोड़के हमारे सुपुर्द करदिया, और जानगये कि, दश दिन जिन्ससे छुट्टी है, अब दश दिनकी कमाई दूसरे कामसें लगावेंगे ।

हमने क्या किया? कि सेरभर जिन्सकी तो चौकेमें जरूरतथी, हमने अपनी बेशऊरीसे डेढसेर पकादिया, जो खायागया सो खायागया, जो बचा वह कुत्ते बिलाईके आगे रखदिया ।

कुछ जिन्स तो इसतौरसे खराब किया और कुछ इसतौरपर कि,-दोचार खवैये और खुशामदी स्त्रियां हमारी संगी बनी हैं, दीदीजी और बहिनीजी कहकर हमें अपने वशमें किये हैं हमने अपनी बेवकूफीसे और उनसे भलभलवा कहलानेको कुछ जिन्स उन्हें देदिया ।

अच्छा और सुनिये नैहर नगीच रहा, भाई भौजाई नालायक वा तंगीमें रहैं, दशसेरमें दोसेर उन्हें भेजवायदिया ।

फिर कहा दो सेर बेचडालो तो तीनआने पैसे पल्ले होजातेहैं, वस बेचडाला ।

अब कहिये कि तमाम जिन्स जो केवल भोजनके लिये रक्खा था वह तो हमने इसतरह अल्लम गल्लम करदिया अब दश दिन चलै तो कहांसे चलै? बस चारही दिनमें बाहर संदेशा भेज दिया कि जिन्स नहींहै अब मर्द उछले, कूदे, झंखे, पटके, पर क्या होताहै, झखमारके फिर उन्हें मँगानाही पडा, अब उनका यह सोचा हुवा कि "दस दिनकी कमाई दूसरे काममें लगावैंगे" ताकही पर धरा रहिगया ।

अब औरभी सुनिये, पुरुषकी औकात थोडी ठहरी वे अपना व्योंत देखकर ढाई =)॥ आने गजकी मारकीनकी सारी लादिये हम मारकीनका नामही सुनते बिगड गईं और सारी उठाके मर्दके ऊपर फेंक कहने लगीं, लेव साहेब लेव अपनी सारी क्या हम कुर-मिन कोहारिनहैं कि ऐसी साडी पहिनैं, यह देदेव मजूरिनको, हम तो बिना चार आना गज तनजेबके सारीके नंगी रहेंगी तो रहैंगी-पर यह सारी न पहिनैंगी ।

कहो सखियो ! अबतो इसपर पुरुषोंको यही न उचित है कि यातो झोंटा पकड़ि कमसे कम सौ सोंटा हमैं लगावैं, वा मारकीनकी जगह गाढेकी सारीदेदें और कहैं झखमारके पहिनो, पर पुरुष सुशील और बुद्धिमान होतेहैं, बदनामीके बचावके हेतु मनहीमन तावपेच खाके रहगये और ॥|=) की जो सारी लाये थे उसकी जगह १॥) की सारी खरीदलाये ।

अब औरभी सुनिये, हमारा नथ २५) काहै और कुटुम्बके किसी दूसरी स्त्रीको चालीस वा इससे अधिककाहै, बस लगीं हम रोज ठुनुकने "हमार नथिया देखी बडा छोटवाय, ऐसनतो कुरमी कोहारिन पहिरेलिन फलानीकै देखी केतना बडा वाय, साठ रुपयाकै है, का ऊ रउरेले ढेर कमात वाटै, नाहीं इज्जतै समझके न बनवौलेहैं रौरे का हमैं दस मनईमें बेइज्जत कराइला, भला जो साठकै नाहीं तो पचासैकै बनवाय देई, नाहींतो हम इहो उताड़के फेंकदेव, नंगे नाक रहब, देखी केकर इज्जत जाला"।

लीजिये साहब, ऐसी ऐसी बातैं और ऐसे ऐसे चोचले हमने किये कि भलमंसीके मारे पुरुषने दशवीस रु० जो महाजन देनेको धरेरहे उसमें लगादिया ।

सखियो ! मैं सच कहतीहूँ पुरुष हमारे साथ बडी भलमनसाहत खर्च करते हैं नहीं तो हमारी मूर्खता हमारा कुभाव ऐसा होताहै कि हमारी नाक काटलीजाय नकि नथ बनवायाजाय । जो स्त्रियां पुरुषके वित्तका खयाल नहीं करतीं, और अपने गहने गट्टेके लिये तंग करके वित्तसे अधिक खर्च करादेतीहैं, सचमुच वे स्त्रियां इसी योग्यहैं कि नाकही नहीं उनका कानभी काट लिया जाय ।

अच्छा सखियो। अब और व्यवहारोंमें हमारी कार्रवाई सुनिये "वेटाभया वस लीजिये अब क्या चाहै पुरुपके पासहो वा न हो पर हमारा तकाजा हुवा कि वेटेकी वधाईमें एक दो सौ रुपयातो खर्च करदो, लग्गूभग्गूके लिये २५ साडियां लावो, फूफूके लिये सलोनिया और ननँदके लिये कंकन बनवादो तमाम विरादरीको खिलावो छट्ठी वरहीके दिन नाचभी जरूरहो" ।

चलिये साहब। बेटेके होनेकी खुशी होतीहीहै और इधर हमभी मजबूर कररहीहैं, पुरुषके पासमें तो कुछ रहा नहीं जाके लाखूसाहु वा भीखूमलके वहां तमस्सुक लिक्खा, रुपया लाये, लुटाय पटायके दोदिनमें छुट्टीकरदिया, ऋण चुकने न पाया कि वह लडकाभी दैव-संयोगसे जातारहा, बस चलिये, पुत्रका शोक अलग, इधर महाजन अलग दुर्दशा कररहाहै ।

जो लड़िका जिया जागा, तो इसीतरह अन्नप्राशन, मुंडन, कर्णछेदन आदिक संस्कारोंमें हम तंग कर करके वित्तसे अधिक खर्च करातीगईं ।

अब बबुआ बडे भये, वर देखहरू आनेलगे, व्याहठहरा, बारातकी तैयारी होने लगी ।

पुरुष साहेब घरमें आये कि चलके जरा सलाह करलें कि क्या खर्च कियाजाय, वह तो कहनेको अभी बाकियेहैं हमीं कहनेलगीं।

(हम) आठसैतो दहेज पावत बाटी सामान केसन होतबाय ?

(पुरुष) आ, येही कुलबातनके सर सलाह खातिर तो एेली हैं।

(हम) येहमें सलाह कौन करैकेबाय, जैसन रउरे बापदादाके वक्तसे होत आवत बाय, वैसनै सब बात होवैके चाही, हमरे इहां दहेजै भरमें तो कब्बों विआह भइल नाहीं जो तिगुना नाहीं तो दूनातो जरूरै कर्जकाढ लगइलहै ।

(पुरुष) आ, तो वोकर नतीजा का भइल, बाप दादाके वक्तमें तो दुइसै बिगहा सीर रहल पन्द्रहगाँवमें हिस्सा रहल, १२००) सालमें मुनाफा होत रहल, आ अब का बाय, चालिसै बिगहा सीर रहि गइल, दुइगाँवमें हिस्सा बचल तवनो रेहन बाय, का तू नाहि

जनतिव कि येही फजूलखर्चीसे महाजनोंने सब विकवाय लिया.तो अबका चाहैलिड कि जौनो वाय तौनो जाय ।

(हम)ये साहेब हमसे सुनी, येह साइत ई कुलबात मतिशोची। आ बेटाके जन्म और विवाह रोज रोज नाहीं होला, यह साइत आँख मूंदके खर्चकरी, न घरमें होय कर्जकाढी, इज्जतै पर कर्ज कुआम होला कि अन्यासै,जिन्दगी रहीतो भरिजाई भला रडरे बाप दादाकै नाव बोरब का, ऊहै मसल तो करब कि "नाव बडा पै दरशन थोड"से यह साइत दूसर बात मती शोची, आठसै दहेज वाय, तो भला नाहीं सिवाय तो आठैसै और कर्जकाढी भलेहौंसिला निकाल लेई ।

सखियो । निदान हमने पुरुषको मजबूर किया कि वे आठसै कर्ज काढैं ।

आखिर जब अदा न हुवा तो महाजनने नालिश किया, आठ सैकी जगह बारहसैकी डिग्री हुई, जारीहोनेपर गाँव नीलाम हुवा, मकान बिका, गल्ला कुर्क हुवा,और अन्दरूनीकुडकी होकर हमारा गहना कपडा तकभी अमीन साहेबके हवालातमें आगया, सब हौसिला भैंसकी च्...में चलागया, एक कविने सच कहाहै ।

कवित्त ।

वित्तको न चित्त धरैं करैं काम मनमाने,नामके बहाने लुटा डालत खजाने हैं। मनके बढानेते बुद्धिके घटानेते,वाहवा कहानेपै भये हम दिवाने हैं। घर द्वार गिरी धरे कर्जलिये साहू जूसों,लेतके महाजन हाय कैसो अनताने हैं ॥ घरलौं बिकाने लगी इज्जत ठेकाने सबै, देखिक सयाने यह रीत पछताने हैं ॥ १ ॥

सखियो! यही सब व्यवहारहैं, जिनमें हम पुरुषोंकी कमाईका आदर न करके, वित्तसे अधिक खर्च करादेतीहैं जिसके सबबसे पुरुषभी हैरान होतेहैं, और हमभी दरिद्री बनी रहती हैं।

सखियो! हमारा यह धर्म है कि हम अपने पुरुषोंकी कमाईकी कदर करैं, अर्थात् हर काममें हर प्रयोजनमें हम देखिलें कि हमारी वित्त केतनीहै, और बहुत चतुराई और बुद्धिमताईसे हर कामके खर्चका तकदमा अपने वित्तहीके अन्दाजेसे कियाकरैं।

सखियो! हम घरकी लक्ष्मी कहलाती हैं, हमको यह नहीं चाहिये कि घर बोहारके छोडदें, हमारा यह कामहै कि हरवक्त हम शोचाकरैं कि एक पैसा हमारा फजूल खर्च न हो, जहां पुरुषोंकी आदत (स्वभाव) फजूलखर्ची की हो, वहां हम मिन्नत करके समुझाय बुझायके इन बातोंसे रोकैं।

हम कर्ज काढनेको गालीसे कम न समुझैं, और सर्वपापोंसे बढकर इसको पाप जानैं।

जबसे हम किसी घरकी मालिकहों, वा नहों, पर उस घरमेंहों, तो नया कर्ज काढनेकी कभी न रायदें, किंतु जब देखैं कि विना कुछ रुपयाके काम नहीं चलता, तो अपना गहना बेचडालें, पर कर्जकी राह न चलैं।

जहां, पुराना कर्जा होवे तो यदि पुरुष गाफिलभीहों, तो हम मौके मौकेसे इसकी याद दिलाती रहैं जब पुरुष कहैं, "हम तुम्हारे वास्ते तनजेबकी सारी लावैं, वा चिकनकी" तो हम कहैं "साहेब हमारे वास्ते मारकीनकी सारी लाइये, पर कर्ज अदा करनेकी

फिकिर कीजिये, कभी हम कहैं साहेब मेरा सब गहना उतार लेजाइये, और कर्ज अदा कीजिये" ।

कभी कहैं "साहेब मेरा जी चाहताहै कि, एक जून खावों और एक जूनका बचाके महाजनको देवँ" इस प्रकार जब दो चारबार पुरुषोंसे कहैंगी, तो अवश्य पुरुषोंकोभी गैरत होगी, चेत करैंगे, और जब जिसबातका खयाल और चेत हुवा, तो वह काम होही जाताहै जब हमारी ऐसी नीयत होगी तौ नारायणभी हमारी मदद करैंगे ।

जब हम देखैं कि हमारे पुरुषकी तनख्वाह ३०) हैं और वहरनी खाने और तनजेब पहिननेसे येतना नहीं बचता कि कुछ कर्जभी दें और कुछ आगमको बचतभी हो, तो वहां हमको वहरनी खाना और तनजेब पहिनना हराम समझना चाहिये, हम मोटाझोंटा अन्न खाँय, और सादा सूदा कपडा पहिनैं पर कुछ कर्ज निकलता जाय और कुछ बचत होतीजाय ।

सखियो ! विचार करनेकी बातहै, कि भोजन है भूख मिटानेको, और वस्त्रहैं तनु ढांकनेको, जैसाही वहरनी खानेसे भूखमिटतीहै, वैसेही भुजिया भात खानेसे, और जैसही तनजेब तनुको ढांकताहै, वैसेही किंतु उससे अधिक मारकीन ढांकताहै फिर हम क्यों न आरवा भुजिया अन्न, और मोटा झोटा वस्त्र अंगीकार करि महापाप रूप जो ऋण तिससे अपना और अपने सारे कुटुम्बका उद्धार करैं ।

सखियो ! जब हम ऐसी खबरदार होजायँगी, हरकाममें हम पुरुषको अच्छी सलाह देनेलायक होजायँगी, दोनों प्राणी एक दिल और एक रायहोकर इन्तजामके साथ कामकिया करेंगी, वहां मैं सच क्या सचसेभी अधिक सच कहतीहूँ कि यदि हमको एकही जून

भोजन और मोटाझोटा वस्त्र मिलैगा, पर जैसी खुशहाल और आनंदित हम रहैंगी वैसी हजार पतियोंकी स्त्री और पुरुष न रहते होंगे।

सखियो! हम पुरुषको जन्मसंघाती मीत मिलती हैं, तो क्या इतनीही मिताईहै? कि पकाई, खाई, सोरही, नहीं हर काममें हर समयपर हम पुरुषोंको मदद देनेके वास्तेहैं, जो इन्तिजाम पुरुष बाँधैं, हमारा यह कामहै कि जहांतक हमारा उससे संबन्ध हो, उस इन्तिजामके चलानेमें पूरा पूरा परिश्रम और यत्न करैं।

सखियो! इसजगह मुझे एक बात और भी याद पड़तीहै, कि स्त्री शिक्षामें जहां और बातैं हैं तहां सीना पुरनाभी नियत कियागयाहै, अब देखिये, इसवक्तभी कितनी उसकी जरूरतहै, जब हम अच्छा सीना पुरना कशीदा काढैजानैंगी, तो हमारे पुरुषोंकी पोशाकका कपडा दरजियोंके पल्ले क्यौं लगाया जायगा, क्यौं हम चार रुपया महीनेमें उन्हें सिलाई देने जायँगी, १२)सालकी सादी टोपियां क्यौं हम खरीदने देंगी, एक रूपयेके तनजेबमें हम उतनीही टोपियां उसी वजे और कितेकी बनाके घरभरको पहिनावैंगी और इसतरह पुरुषोंकी कमाई बचावैंगी।

सखियो! पुरुषोंकी कमाई सचमुच बडे गाढे पसीनेकी होतीहै जहांतक हमारा अख्तियारहो। और जो हमारे योग्य व्यवहारसे होसके हमको अवश्य उसकी रक्षा करनी चाहिये।

जैसे हम कहैं "हम भंगिनको ॥) महीना न देंगी, हमीं कमायंगी" वा "१) महीना धोबिनको न देंगी, हमीं धोलेंगी," यह हमारे योग्य नहीं है. पर यह हमारे योग्य और हमारे अख्तियारमें है, कि अपने घरके पुरुषोंका कपडा हम खुद सीलें और बारह चौक

अडतालीस रुपया जो सालमें दरजियोंके घर हमारे पुरुषोंका जाताहै उसे हम बचालें ।

सखियो ! शास्त्रकी यह आज्ञाहै कि गृहस्थाश्रमी इसप्रकार खर्च करैं कि उनकी कमाईका थोडा हिस्सा बचत होताजाय, हम यह नहीं कहतीं, कि इज्जत गँवायके बचावै,, नहीं अपनी इज्जतभी उतनीही रक्खै कि उसमें खर्च करनेपर कुछ बचतभीहो ।

और जो कहो कि पुरुष तो अपनी कमाई हमको देते नहीं,हम इन्तिजाम कैसे करैं, तो मैं कहतीहूँ कि वे अपनी कमाई आपको क्यों देनेलगैं, जब आपमें कुछ शऊर देखैं, उनको ,इतमीनानहो कि हमारा रुपया इन्तजामके साथ खर्च होगा तबतो दें नहींतो उन्हें देनेका क्या फल मिलैगा ? यातो तुम गहना बनवाय डालोगी, वा बिला प्रयोजन कपडा खरीद करलोगी,नैहर भेजिदोगी, वा कोई खुशामदी और चालाक स्त्री झसलेगी ।

एक स्त्रीकी बात मैं याद करतीहूं, तौ कहतीहूँ कि पुरुष बहुत-अच्छा करते, जो हम लोगोंके हाथमें रुपया पैसा नहीं देते ।

एक पुरुषने चारसौ रुपया,अपनी स्त्रीको सौंप कहा "कि धरे-रहो, किसी गाढे जूनमें काम आवैगा" दैवसंयोगसे थोडेही दिन पीछे किसी फौजदारीके मुकद्दमेमें उस पुरुषपर सौ १००) रुपया जुर्माना हुवा, और यहभी हुकुम हुवा, कि जुर्माना न दे तो चार महीना बन्दीखाना (कैदखाना) ले

उस पुरुषने एक चिट्ठी लिखकर आदमीको दिया कि हमारी स्त्रीको देकर १००) लाना ।

वह आदमी चिट्ठी लेकर गया, और उसकी स्त्रीको दिया मगर हायरे कमबख्त औरत, वह बिलकुल मुकुर गई, और कहि दिया "चलो, रुपया मेरे पास कहां है, चाहै कैदजाँय चाहै फांसी"।

चलो साहब, वह पुरुष कैदखानेमें चलागया।

कहो सखियो! हम लोगोंका तो यह हाल है, अब पुरुष रुपया हमको दें, तो कैसेदें।

हां, आप विद्या बुद्धि प्राप्त करैं, सब बातोंका शऊर सीखैं, पुरुषोंकी कमाई की कदर करैं, तो मैं जिम्मा लेती हूं, कि पुरुष जो कुछ कमांय, वह आपके सुपुर्द करदें जब वह आपको इस लायक देखेंगे, तो अवश्य ऐसा करैंगे, कैसे न करैंगे।

पर अभी हमको इसकी शिकायत क्या है? हां जब कोई दिन ऐसा आवैगा, कि स्त्रियां शिक्षित होकर, सब बातोंके इन्तिजामका ढंग हासिल करलेंगी तब जो पुरुष अपनी कमाई आपको न दें, तो शिकायतका औसर होगा।

सखियो! अब मैं अपने संक्षिप्त व्याख्यानकी इतिश्री करती हूँ और आशा करती हूं कि यह तजवीज अवश्य पासहोने योग्य है।

यह कहि बैठ गई।

इतनेमें बाबू तेजप्रकाश द्वारसे आकर कहने लगे "लाला खफा होते हैं कि बडी देरी होती है, जल्द बिदाई होनी चाहिये"।

यह सुनि दे०स०कुं० उठ कहने लगीं।

(दे०स०कुँ०) सखियो! आप लोगोंके देखनेमें तो मैं वैसी हीहूँ जैसे आगे थी, पर मैं सच कहती हूं कि आज क्या जबसे प्यारी बहू चन्द्रकलाकी बिदाईका दिन ठहर गया है, तबहींसे मैं अपने होश चेतमें नहीं हूँ।

जिस दिन मैंने अपनी लडकीको विदा कियाथा, उसदिनभी मेरा कलेजा नहीं दुखा था जैसा आज दुःखित होरहा है ।

जिस दिनसे यह डोलीसे उतरीं और आजतक इन्होंने अपने शीलस्वभाव सेवा सत्कारसे मुझे ऐसा सुख दिया, कि एक मुखसे क्या कोटि मुखसेभी मैं वर्णन नहीं करसकती, परमेश्वर इनको और इनके संतानको उसका फल देवे ।

यह आनेके थोडेही दिन पीछे मेरे घरका इतना बडा काम, आपलोग जानतही हैं, कुल अपने शिर लेलिया, और जिस प्रशंसनीय प्रकारसे इन्होंने सब कामोंका इन्तिजाम और अन्जाम किया, कोई अच्छा बुद्धिमान पुरुषभी जो करसकता है तो उससे अच्छा नहीं करसकता ।

चारहजार मन गल्ला मेरे यहां बेग दियाजाता है, कुलका हिसाब किताब इनके हाथमें रहता है ।

इलाकेका कुल कागज इनके पास रहता है ।

जिसकदर इलाकेकी आमदनी होती है, और जिसकदर खर्च होता है, कुल इनके पास जमा और इनके मार्फत खर्च होता है, और सबका हिसाब किताबभी जिस सुन्दर रीतिसे यह वनाये रहती हैं कि मर्दलोग देख २ तंग रहजाते हैं ।

सखियो ! आपलोग देखैं, कि इतना बडा काम उठायेहुये तिसपर ।

१ मेरे दतुइन कुल्लाको नित अपने हाथसे पानी रखना ।

२ मुझको स्नान कराना फिर आप स्नान करना ।

२ दो पन्ना रामायणका अर्थ सहित मुझको सुनाना ।

४ फिर पांच चार लडकियोंको पढाना, और इधर पढाना भी, उधर दोचार टोपियोंको, वा दो एक जनाने वा मरदाने कुरतोंका भी सीलेना, उसपर सूफियाना काढभी काढदेना।

५ फिर रातको भोजन उपरान्त मेरा बिछावन बिछादेना।

६ मेरा पैर दाब देना, आदिक यह नितका इनका कामहै।

सर्दारिनो! मैंने इन्हें किसी कामका समय भूलते कभी नहीं देखा कभी ऐसा नहीं हुवा, कि।

१ कोई दतुइन कुल्ला करचुकाहो और तुरंत उसके पानीपीनेको न पहुँच गयाहो।

२ वा, जिसके पान सुरती खानेका जो समयहै, वह बीतगया हो और उसको पान सुरती न मिलाहो।

३ मैंने कभी नहीं देखा कि रातको लौंडीके हाथमें चिराग लिवाकर, और घर घरमें देखभाल केवाडोंको बन्द कराये, ताला लगवाये बिना कभी यह सोईहों।

सखियो! सबसे बढके यह दोनों साहेबजादियां (दोनों पतोह) जो आपके सामने बैठीहैं, इनकी लियाकत और कारगुजारीके नमूना और सबूतहैं, जैसी यह तब थीं वहभी आपलोग जानतीहैं और जैसी यह उनकी सुहबत और शिक्षासे अबहैं वहभी आपलोग देखती हैं, सिवाय इनके किसी दूसरेका यह काम नहींथा कि इनसाहेब जादियोंको वैसेसे ऐसा बनाती।

मैं आश्चर्यमें रहतीहूं कि मैंने पूर्व जन्ममें क्या ऐसा पुण्य और तप किया था जो ऐसी सुन्दर और सुखदाई बहू मुझको प्राप्त हुई।

मैं रोम रोमसे इनको आशिर्वाद देतीहूँ कि परमेश्वर इनको सर्वदा सुख सोहागसे भरपूर और सर्व संकटसे दूररक्खे ।

यह कहि आंसू पोछती हुई बैठगईं ।

(गांवकी स्त्रियां) देवीजी आपका कहना, और इनकी विदाईका शोक करना यथार्थ और योग्यहै, आपकी तो यह पतोहईं हैं पर गांवमें कौन ऐसी स्त्री है जो इनकी विदाईका अफसोस न करतीहो ।

देवीजी सचमुच आप बडी भाग्यमानहैं जो इन ऐसी पतोह पायाहै, गांवमें कौन ऐसी स्त्रीहै जो इनके स्वभावसे वश, और इनको धन्य धन्य न कहतीहो ।

आज इनकी विदाई जैसी हम लोगोंको अखरतीहै हम लोगों का दिलै जानताहै ।

अब हम लोग आपसे विनय करती हैं, कि उन्हें जल्द बुला लीजियेगा और (चन्द्रकलासे) प्यारी तुमसेभी प्रार्थना है कि हमलोगोंकी सुधि न भूलिकर जल्द अपने मुखचन्द्रके दरशनसे हमलोगोंके नयन चकोर तृप्त करैंगी ।

यह कहि आँसू पोछतीहुई बैठगईं।

तब चन्द्रकला उठ खडी हुई ।

(दे० चं० कुं०) आँसू पोछती हुईः—सखियो मैं क्या कहूँ संसारका यही व्यवहार है, बिना आये गये बनता नहीं, नहीं तो श्रीअम्माजीका दुलार और प्यार ऐसा नहीं है कि एकदम इनका चरण छोड कर मैं कहीं रहिसकूं ?

यह सत्य है कि माताकी ममता और छोह बालकपर अधिक होती है पर मैंभी सत्य कहती हूँ, कि श्रीअम्माजीके प्यार और मुहब्बतने मुझे माका मोह छोह भुलवादिया ।

और अम्माजीकी तो मैं पतोहहूंहूं, मैं आपलोगोंका यश नहीं भूल सकतीहूं कि आप सबलोग मुझपर लडकी समान मोह छोह रखतीहैं।

अब मैं श्रीअम्माजी और आप सब लोगोंसे विनय करतीहूं कि मेरी सुध न भूलियेगा।

और जल्द मुझे बुलालेंगी, यह कहते आंसू भरआया और बैठगई।

यतनेमें बाहरसे बाबू रामप्रकाश आकर कहने लगे "अम्मा! लाला खफा होते हैं, क्यों नहीं जल्दी करतीहो"।

यह सुनि देवी सत्वतीकुँ० धाय चन्द्रकलाको गले लगाय रोनेलगीं।

फिर बारीबारी सब स्त्रियोंसे मिल भेंट देवी चन्द्रकला कुँ० डोलीमें सवारहो रुखसत हुई और कुशलक्षेमसे अपने घर पहुँचि माता पितादिकको अपने दीदारसे सुखदिया।

अब इस ग्रंथकी इति होतीहै, सर्वस्त्रियोंको उचितहै कि जिस तरह देवी चन्द्रकला कुँ०ने अपनी विद्या बुद्धि गुण ढंग और शील स्वभावसे सासुरमें यश पायाहै वैसेही सर्वस्त्रियां यश और नेकनामी प्राप्त करैं।

कवित्त।

तियनके बोधहितरचोहै रुचिरग्रंथ, पंथजामेंहित अनहितकोदेखा योहै। चहिये जस तियनको रहनि गहनि जग, सबहीको भेद भली

भाँतिसों लखायोहै ॥ दास हठी आश यह पास बुधजननके, लेहिं-वे सुधार भूल चूक जहँ पायोहै । पढैं जो सुबाल पढि करै कुछ ख्याल हिय, रहैं सो निहाल जग बीच यश छायोहै ॥ १ ॥

दोहा-उनइससौ छप्पन रह्यो, संवत मास कुआँर ।
भई इती या ग्रंथकी, सफल करैं करतार ॥ १ ॥

इति स्त्रीसुबोध चतुर्थ भाग समाप्त ।

मिलनेका पता-खेमराज श्रीकृष्णदास "श्रीवेङ्कटेश्वर" छापाखाना-बंबई ।